

रायबहादुर बुधसिंहजी दुधेरिया

जनधमासधुके आश्रयदाता

जैनधर्मसिंधु.

यथामती संशोधन करके

श्रीपूज्याचार्य श्रीनरपतिचंद्र सूरीश्वर

जीकी आज्ञानुसार

रायबहादुर बाबु साहब बुधसिंघजीकी

सहायतासे

संग्रह और प्रकाश कर्त्ता.

यति मनसुखलाल नेमिचंद्रजीने

मुंबई नगरमें

निर्णयसागर प्रेसमें छापकर प्रसिद्ध किया

वीर संवत् २४३४ विक्रम संवत १९६४ सने १९०८

सब हक्क स्वाधीन

मिलनेका पत्ता

मुंबई

यतिज्ञानचन्द्रजी ठि पायधोणी श्रीशांतिनाथजी जैन मंदिर जैनपत्र ओफीस. ठि कष्टमहाउस रोड मुंबई

सेठ कस्तुरचंद नानचंद ठि आनाकाटा

अहमदनगर

सेठ वाडीलालब्हायीचाई नवी कापडमारकेट.

बालापुर

श्रीजिनमरूली ओफीस नवादेरासर

अर्पण पत्रिका.

रायवहादूर वावु साहव श्रीयुत बुधसिघजी डुधेरिया

जो कि अत्री मुशिदावादातर्गत अजिमगजमें रहते है इनोके आश्रयसें यह पुस्तक प्रकाशित हुवा इस लिए उक्त महोदयका सक्षिप्त जीवन वृत्तात प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखते है

वावुसाहवके पूर्व पुरुषें हरजीमलजी डुधेरिया पहिले मारवारुशे मुशिदावादमे व्यापारके लिए आय वसे थे हरजीमलके पुत्र सवाइसिघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचदजी जो की अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्योपार में कितनाक न्यायोपार्जित द्रव्य उपार्जन किया

वावु साहेव हरखचदजी सने १८६२ में स्वर्गस्थ हुवे जव उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमत कहते थे और वो अच्छी नामदारी धारण करतेथे वे महोदय अपने पीछामी रायवहादुर श्रीयुत बुधसिघजी और श्रीयुत विसनसिंघजी डुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे

यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (वाल्यावस्थामे) थे उन समय अपने पिताकी लक्ष्मी और वमाजारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया यह दोनों महोदयें ज्यों ज्यो वढते गए त्यों त्यों ऐक्य और सलाह सपसें रहते थके द्वितीयाके चंद्रवत् अपना अभ्युदयमें और वलवुद्धी पराक्रममें वढते गए-राय वहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मिलनसार व उद्योगी हुवे

रायवहादुर बाबु विसनसिंघजी बचपन सेंहि व्यापारी लाइनकी अद्भूत शक्ती धारक जिनोमें बुद्धी कला कुशलता, दृढता परिपूर्ण थी सर्वजनोसे हाजिर जवाबी और विशेषकर बहुत परिणाम दर्शी थे

उनोने धीरधारका धधा वढाया और कलकत्ता, सिराजगज, माइमेनसींग, जगीपोर, अजीमगजमें बेङ्कें खोली

यह बेङ्कोंमें बेङ्करोंके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास आनेसें फतेहमद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी रहते रहते जमीनदारो व जागीरदाराकों धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिस्के परिणामसे दोना महोदयें बमे जागीरदार होगए

मुर्शीदावाद, माइमेनसींग, वीरभुम, नदीया, पमीकोट, पूरणीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, भागलपुर, कुमका विगरह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे

दोनो बधु मात्र द्रव्य सपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे एसा नही पर उनके साथ उनोका पुण्यकर्ममेंभी प्रयत्न चालु था

दीन दुःखी और हजारा गरब व लाचारोंकें लिए अन्नक्षेत्र स्थापन कीये जिस्की कार्कीदी अच्छी फलाफल फलकती हे

(जेनमदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें बहुत धन व्यय कीया जिनकी विगत)

प्रथमत अपनी जन्मभूमी मुर्शीदाबादमें श्रीचितामणजी, नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीकें मदीरोंका जीर्णोद्धार कराया

नमीश्वरजीके मदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा हैं और सिद्धचक्रजीका गट्टा हे सो भी उक्त महोदयने स्थापित किये है

अजीमगजसें ७ मीअ अतरसे वासम वजारमे श्रीनेमिनाथजीका मदिरकाभी जीर्णोद्धार कराया जिसे रत्नकी प्रतिमाजी विशेष दर्शनके लायक है

रायबहादुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंहीं नही है परं यत्र यत्र उनोकों आवश्यकीय लगा उहा धर्म धन खर्चनेमेंभी पीछी पानी भरी नही

सुरत पासके कतार गामके जीर्णोद्धारके वास्तेभी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई

छत्रीयकुन्ड और सुविधिनाथ भगवंतके चवन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकदीनगरीके तीर्थमें शीखरबधी मदीर बनाये

महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमी पावापुरीमें और जहा बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारेथे एसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेमीमेभी मदिरजी बनाया

जंगीपुरमेंभी नया मदीर बनाया जाता है और मारवाड़, राजपुताना, अजीमगज, शीखरजी, पावापुरी, काकदी, राणी-गाम, आबुराज, उपरात मुबइमेभी जैन यात्रालुयोंको आश्रय-दायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी भलाभल अचल कीर्ति स्थम्भ रूप सुशोभित है

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुजय तीर्थकी तलहटीमें सदावत दीया जाता है और सिद्धाचलजी, तलाजा, घला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगभी सिर किया गया है

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसंघभी निकालके सघवी तिलकभी करायेथे

उक्त महोदय एसे पुण्य प्रतापी है की जिनकी सपूर्ण प्रशसा लिखनेमें कलमकी ताकत नही है

उक्त महोदयने १९०४ में बरोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कॉनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमे एक अग्रेसरपद लियाथा

उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्ठा विजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यह है की सने १८०० ता २ जानेवारीके रोज बंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायवहादुरका माननीय खिताब समर्पित कीया और मुर्शीदाबाद लालबागकी कचेरीमें ओनररी मेजीष्ट्रेटका माननीय होद्दा इनायत किया और अपनी यस्तावर मर्हुम श्रीमती महाराणीकी कायमरु जुबीलीकि यादगारीके प्रसंगमें ता २० मी जुन स १८९७ के रोज वादशाही मानका " सरीता " दीया गया था तैसेंहि ता १ ली जानेवारी स १९०३ के रोज अपने नामदार शेहेनशाह सातवे एडवरने हिंदुस्थानकी वादशाही स्वीकारी जिस्की यादगारीमें देहली दरबारके भव्य समारंभके समय रायबहादुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितका येकी पीछानमे दुसरी वार " सरीता " दिया गया था यह राजमान होदेकोजी अच्छी तोरसें दीपातेहैं

इस दरम्यान सने १८७७ में दोनो भाइयोने सलाह सपसे अपना अपना व्यापार भिन्नभिन्न चलाना सिरु किया है पर जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योंका त्यों रक्खा है

यद्यपि व्यापारादि कार्य भिन्नथे तथापि पारसरीय सलाह सपसें अभिन्नता समानहि प्रवर्तनथा

सने १८९४ मे रायवहादुर वावु विसनचदजी अपनी पीछे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिघजी नामक कुमारको छोडके यह फानी दुनियाको छोड गएथे

श्रीयुत वावु विसनचदजीके गएवाद अपने छोटे भतीजे और उनकी वडी दोलत समालनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पडाथा

कायदेकी रीतसेंभी मुर्शीदावाद जिल्ले जजकी कोर्टसेंभीउस

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गएथे.

उक्त महोदयने अपनी वहाडुरी और चालाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अच्छी तरहसे बजायके उनकी रुद्धीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीको इंग्लिश, वगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अच्छी केलवणी देके आगे वढाये

वावु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता २२ डीसंबरके रोज लायक उमरवान होनेसे उनकी मिलकतका कबजा सूपरत कर दीया

अच्छी जैसी आशायी वेसेहि वावु विजयसिंघजी एक युवक बुद्धीमान् पराक्रमी पुरुष हुए

वावु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेभी बहुत सतत प्रयत्नशील हुआ

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुबंधी प्राग्भार पुण्यके उदयसे जो जो आनन्दकीय कार्य किये है जिनका पूरेपुरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पडता है

हमारे लोंके गच्छके श्रीमत श्रावक गणमे देशणोंकवाले रायबहादुर चांदमलजी ढढा, रींयावाले राय सेठजी चादमलजी, अजमेरवाले रायबहादुर सेठजी शोभागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लछमीचदजी व गुलाबचदजीढढा,एम ए रायबहादुर गणपतसिंघजी डुगड, रायवहादुर महाराज वहादुर सिंघजी डुगड,रायबहादुर नरपतसिंघजी डुगड, राय लक्ष्मीपति सिंघजी छत्रसिंघजी डुगड, रायवहादुर शताबचदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवतोने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यों करके जैन धर्मको अनेकवार दीपाया है विशेषकर वावु लछमीपति सिंघजीनेभी अनेकानेक स्थानोपर जिन मदिर बन

वाये श्रोर रायवहादुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी सवहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय श्रंजनशलाका करवायके लोंकेगछपर छाय पमता अपजेरोंका आक्षेप दूर कराय दियाथा जिनसे इन महोदयाका इस अवसरपर उपकार मानना दुरस्त धारते हैं उपर लिखे महाशयोने यद्यपि लोंके गछकों शोजाया पर रायवहादुर श्रीमत महोदय श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय लक्ष्मीको सफल करनेमे अत्यतहि अगवानी करी है इतनाहि नहि पर लोंके गछवाले ढुढक हैं एमा जो आरोप था उनको परास्त कर जैन धर्मको अत्यत दीप्यमान करश्रीसघमें (तीसरी कोन्फरन्समें) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि कोटिक गुणगण सपन्न प्राग्भार पुण्यवत सेठजी रायवहादुर श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाकेहि हस्तकमलमे यह अनेकानेक जन मनानद प्रद यह ग्रथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थभेक साथ इनकोभी अचल कीर्तिवत करते हैं जिनके वाचन मनन श्रवण कर अनेकानेक भव्य सत्वोंको अनतानद अक्षय ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अभीष्टार्थ सिद्धी है तथास्तु



प्रथमपरिच्छेदस्य विषयानुक्रमणिका



जाहिर खबर

हमारा तर्फसें "जैन विवेक प्रकाश" मासिक पुस्तक प्रत्येक मास प्रसिद्ध होताहै जिसमें बालबोध लिपी, हिंदी भाषामें धार्मिक, व्यावहारीक, नैतीक, सामाजिक विविध विषये प्रत्येक मास प्रगट होतेहैं वार्षिक लवाजम टपालखर्च एक रुप्या तीन आना

(१) पच प्रतिक्रमण सूत्र	किमत एकरुप्या
(२) जैन सस्कार विधि	किमत एकरुपया
(३) चपक चडावती, गुजराती	किमत चारे आना
(४) जैन गच्छावली	किमततीन आना
(५) बालमित्ररत्नावली भागपहिला	, दो आना
(६) ,, भाग दुसरा	,, चार आना
(७) , भाग तिसरा	,, चार आना
(८) मासन्य मार्थिक गुजरातीवार्ता	,, एक आना
(९) प्रश्नोत्तररत्नमाला, व, मूर्खशतक हिंदी टीका	एक आना
(१०) मूर्त्ती पूजा मडन हिंदी भाषा	किमत एक आना
(११) विदेशी लाडकी नृष्टता	,, एक आना

मिलनेका पत्ता मुबई पायधोणी श्री शातिनाथजी मदिर

यतिज्ञानचद

॥ जैनधर्मसिंधु.

॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ॥

॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं॥१॥नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवझायाणं ॥४॥ नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सवपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मगलाणं च सबेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वय जुत्तो॥ पंचविहायार पालणसमत्थो ॥ पंच समिउ तिगुत्तो॥ छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥ इति ॥२॥

॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं॥जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥३॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो छेजी ॥ स्वामी शाता छेजी ॥ जात पाणीनो लाज देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण सदिसह जगवन् ॥ इरियावहियंपमिक्कमामि ॥ इछ इछामि पडिकमिउं॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणकमणे बीयकमणे हरियकमणे॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कमा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघाश्या सघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया गणाउंगण संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥पायछित्तकरणेणं॥ विसोहीकरणेण ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नज उससिएणं ॥

॥ अन्नज उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंन्नाइएणं उडुएणं वायनिसग्गेणं न्नमलिए पित्तमुञ्जाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं॥सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहि दिठिसंचालेहि ॥२ ॥ एवमाइएहिं आगारेहि ॥ अन्नग्गो अविराहिर्ज ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं न्नगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरेजिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ सन्नव मन्निणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं

च मल्लिं वंदे मुणिसुवय नमि जिणं च ॥ वंदा
मि रिठनेमि ॥ पासं तह वध्धमाण च ॥४॥ एवं
मए अनिथुआ ॥ विहूय रयमला पहीण जर
मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिञ्चयरामे प
सीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जेए
लोगस्सउत्तमासिध्धा ॥ आरुग्ग वोहिलानं ॥
समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल-
यरा ॥ आइच्चेसु अहिय पयासयरा ॥ सागर
वर गंन्नीरा ॥ सिध्धा सिध्धिं मम दिसंतु ॥ ६ ॥
सबलोए० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ए ॥ अथ सामायिकनु पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते सामाइय सावज्जं जोगं पच्च
रकामि ॥ जाव नियम पज्जुवासामि ॥ ज्ञविहं ति
विहेणं मणेण वायाए काएण ॥ न करेमि, न
कारवेमि तस्स नंते पम्किमामि निंदामि गरि
हामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ निय
म संजुत्तो ॥ ग्निइ असुह कम्म ॥ सामाइअ
जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअमि उ कए ॥ स

मणो इव सावज्जे हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधि लीधुं विधिं पारिउं ॥ विधि करतां जे कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायाये करी ॥ मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥१७॥

॥१८॥अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह ॥जग गुरु जगरस्कण ॥ जगबंधव जगसछवाह॥जग भाव विअस्कण ॥ अठावय संठविअ ॥ रुव कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयंतु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहि कम्मभूमिहिं ॥पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण॥कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ बिहुं कोडिहिं वरनाण॥समणह कोडि सहस दुअ ॥थुणि जिअनिच्च विहाणि॥२॥जयउ सामी जयउ सामी॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु नेमिजिण॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ भरुअछहिं मुणिसुव्वय॥

मुहरिपास इह डरिअखंमए ॥ अवर विदेहिं तिछयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती अणागय सपइअ ॥ वंडु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लक्का छप्पन्न अठकोडि ॐ ॥ बत्तीस वासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी बायाल लक्क अम्भवन्ना ॥ छत्तीस सहस असिआइं ॥ सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ ज किंचि नाम तिछ ॥ सग्गे पायालि मा णुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सवा इ वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुण अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराण, तिछयराण, सयं सबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाण पुरिमवरपुंमरी आण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगोत्तमा ण, लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपई वाण, लोगपज्जो अगराणं ॥ ४ ॥ अन्नयदया णं, चक्कुदयाण ॥ मग्गदयाण, सरणदयाणं,

बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिया
णं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर
चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर
नाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं
सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्ख
य मव्वाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम
धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ न
याणं ॥९॥ जेअ अईआ जेअ सिद्धा ॥ जेअ
नवि स्सति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा॥
सवे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥१४॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरि
अलोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्थ
संताइं॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥१५॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय महाविदे
हे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदं
ड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥
॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य
इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥
॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पास वंदामि कम्म
घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नास ॥ मंगलक
ल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥
कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमा
री डुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे
मंतो ॥ तुज्ञ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर ति
रिएसुवि जीवा ॥ पावंती न डुरक दोहग्गं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लध्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवन्नहिए
॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामर ठाणं
॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ न्नत्तिन्नरनिप्भिरे
णहिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं न्नवे न्नवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय
॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह
पन्नावउ न्नयव ॥ न्नवनिब्वेउ मग्गा ॥ णु सारि
आ ठइ फलसिध्धि ॥ १ ॥ लोगविरुध्धाउ ॥

गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वयण ॥ सेवणा आज्ञव मखंडा ॥ २ ॥ वारि जइ जइवि निआण ॥ वंधणं वीअराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ न्नवे न्नवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ डुक्खक्खउ कम्मक्खउ ॥ स माहि मरणं च वोहिलाज्ञो अ ॥ संपज्जउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणा ॥ जैनं जयति शासनम् ॥५॥१८॥

॥ १ए ॥ अथ अरिहंत चेइआण ॥

॥ अरिहंत चेइआण ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ वोहि लाज्ञ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सध्धाए मेहाए धीईए ॥धारणाए अणुप्पेहाए॥ वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥३॥ अन्नत्थ०इति

॥ २० ॥ अथ कल्लाणकंदं स्तुति ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संति तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं ॥ न्नत्तीइ वंदे सिरि वध्धमाणं ॥ १ सं

सारसमुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सवे जिणदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीणवि सालकंदा ॥ २ ॥ निवाणमग्गे वर जाणकप्प। पणासिया सेस कुवाइदप्प ॥ मयं जिणाणं स रण वुहाण ॥ नमामि निच्च तिजग प्पहाणं॥३॥ कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था ॥ सुहाय साअह्म सया पसत्था ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्याविभो शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरस,भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्ट नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशकया ॥ वक्रं यस्य पुन पुन सजयति, श्रीवर्धमानो जिन ॥ १ ॥ हंसासाहत पद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतै ॥ कुंभैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभि काचनै ॥ येषामदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेक कृत ॥ सर्वैं सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषा नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशाल, चित्र वह्वर्थयुक्त मुनिगणवृषभैर्धारित बुद्धि

मङ्गिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञे यभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम नीलद्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं, मत्तं घं टारवेण प्रसृतमदजल पूरयंतं समंतात् ॥ आ रूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामद. काम रूपी, यक्ष. सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजि नचतुर्दशीस्तुति· ॥ ११ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीर ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलि मालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहि तानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चू लावेलं गुरुगममणीसकुलं दूरपारं ॥ सारं वी रागमजलनिधि सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमू

लालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला॥ झंकारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे॥ वाणीसंदोहदेहे भवविरहवर देहि मे देवि सारम्॥ ४॥ इति॥ २२॥

॥२३॥ अथ पुक्खरवरदी॥

॥ पुक्खरवरदीवड्ढे॥ धायइसंडे अ जंबुदीवे अ॥ भरहे रवय विदेहे॥ धम्माइगरे नमंसामि॥ १॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स॥ सीमाधरस्स वंदे॥ पप्फोडिअमोहजालस्स॥ २॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स॥ कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स॥ धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमाय॥ ३॥ सिद्धेभोपयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सब्भुअ भावच्चिए॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं॥ धम्मो वड्ढउ सासवओ, विजयओ, धम्मुत्तर वड्ढउ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए०॥

॥२४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगया णं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ तारेइ नरंव नारिंवा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्टि,अरिठनेमिं नमसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा,सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति२४

॥२५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराण ॥ सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥

॥२६॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥ जगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥२७॥ अथ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥
॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥ इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ ॥ दुब्भासिअ दुच्चिठिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥ २७ ॥

॥२८॥ अथ इच्छामि ठामि ॥
॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्ग ॥ जो मे देवसिउं अइआरो कउं ॥ काइउं वाइउं माणसिउं उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो दुज्झाउं ॥ दुव्विचिंतिउं अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो॥ नाणेतह दसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीण॥चउन्हं कसायण ॥ पचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्ह गुणव्वयाणं ॥ चउन्ह सिक्खावयाण ॥ वारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअ जं विराहिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २८ ॥

॥२९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा॥
॥ नाणमि दसणंमि अ, चरणमि तवंमित हय विरियमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पचहा भणिउं ॥ १ ॥ काले विणए वहुमाणे

उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्र तडुभ ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि अ निकंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठीअ॥ उववूह थिरीकरणें, वछल पभावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ ना यव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सब्भितरबा हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना यव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि या, वित्ती संखेवण रसच्चाउं ॥ कायकिलेसो सली, ए याय बच्चो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय छित्त विणउं, वेयावच्चं तहेव सच्चाउं ॥ जाण उ स्सग्गो विय, अभिंतरउं तवो होई ॥७॥ अण गूहिअ बल विरिउं, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा उत्तो ॥ जुजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरिआया रो ॥ ८ ॥ इति ॥ २९ ॥

॥३०॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणि जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मि उग्ग हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम

णिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभे
ण भे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे ॥ जवणिज्जं
च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक्क
मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥
देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए
ज किंचि मिछाए, मणडक्कडाए वयडक्कडए ॥
कायडक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभा
ए, सबकालिआए ॥ सव मिछोवयाराए, सवध
म्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ
रो कर्ज, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निं
दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बी
जीवारने वादणे आवसिआए ए पद न कहेवुं
अने रात्रियें राइअवइक्कतो, तथा चउमासीये
चउमासी वइक्कतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो सं
वछरीयें सवछरो वइक्कंतो ॥ एवी रीतें पाठ क
हेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवसिअं अलोउं ॥

॥ इछाकारेणसंदिसह भगवन्देवसिअं आ
लोउ इछ ॥ आलोएमि जोमे० ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३१॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंडिय॥बे लाख तेंडिय ॥ बे लाख चौरिंडिय॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पचेंडिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥ एवं कारे चोराशीलाख जीवायोनिमांहि, माहरे जीवे जे कोइजीव हण्यो होय,हणाव्यो होय,ह णता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवेहुं मनेवचने कायायें करीतस्स मिछामि डुक्कडं ॥इति॥ ३१ ॥

॥३२॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्री जे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह उठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कल ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पा

पस्थानमाहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवे हु मनें, वचने, कायाये करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ, डुप्रासी अ डुच्चिठिअ ॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् इछ० ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव सिद्धे, धम्मायरिए अ सव साहूअ ॥ इछामि पमिक्कमिउ, सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, त निंदे त च गरिहामि ॥२॥ डुविहेपरिग्गहम्मि, सावज्जे वहुविहेअ आरंजे ॥ कारावणेअ करणे,पडिकमे देसिअ सव ॥ ३ ॥ ज वद्धमिदिएहि, चउहि कसाएहि अप्पसत्तेहि॥रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाजोगे ॥ अजिउगेअ निउंगे, पडिकमे० ॥ ५ ॥ सका कख वि

गिठा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त स्स इआरे, पमिक्कमे० ॥ ६ ॥ उक्कायसमारंजे, पयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा, उजयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिरकाणं च चउण्ह, पडिक्कमे० ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ए ॥ वहबंध उविछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिवयणविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीय वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरणविरईउ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतूल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं

॥ १५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्क मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पचममि आयरि अ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए, इत्थ पमाय प्पसंगेण ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सु वन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्पयंमि,प डिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसा सु उड्ढं अहेअ तिरिअ च ॥ वुढिसइअंतरध्दा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंस मिअ, पुप्फे अ फले अ गधमल्लेअ ॥ उवभोगे परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सचि त्ते पडिबध्दे, अप्पोल डुप्पोलिअ च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इं गाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्म ॥ वाणिज्जं चेवय दंत, लक्ख रस केस विसविस य ॥ २२ ॥ एव खु जंतपिल्लण, कम्म निल्लंछ णं च दवदाण ॥ सरदह तलाय सोसं, असई पोस च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंत ग, तणकट्ठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणुवट्टण वन्नग, वि

लेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वत्थासणआजर णे, पमिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण नोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥२६॥ तिविहे ङुप्पणि हाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ वितह कए, पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलस्केवे ॥ देसावगासिअंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव नोयणा नोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिस्काव ए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिस्कावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ ङुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं निंदे तच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहू सु संविन्नागो, न कर्ज तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ सते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपर्जगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मज्ज हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पमि

क्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ स्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकाणा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठी जीवो, जइ विहु पाव समा यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निं९ धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपम्किमण, सप्प रिआव सउत्तरगुणं च॥ खिप्प उवसामेइ वाहि व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ गयं, मत मूल विसरया ॥ विज्जा हणति मंते हि, तो त हवइ निव्विस ॥ ३० ॥ एव अठविहं कम्म, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअतो अ निंदंतो, खिप्प हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुस गासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुक्काण मंत किरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, नयसभरिआ पम्किमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, त निंदे त च गरिहामि॥४२॥

तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिउंमि आरा, हणाए विरउंमि विराहणाए ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, नवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो आ॥सम्म हिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥४७॥प मिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पमिक्कम णं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्जं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहि अ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अब्भुट्ठिउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिसह भगवन्, अब्भुट्ठिउंमि, अभिंतर देवसिअखामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ भ

त्ते पाणे विणए वेश्रावच्चे, आलावे संलावे उ
च्चासणे ॥ समासणे अंतरभासाए, उवरिभासा
ए जं किंचि ॥ मज्झ विणय परीहिण, सुहुमं
वा बायर वा ॥ तुब्भेजाणह, अहं न याणामि॥
तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मिए
कुलगणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सवे तिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, भगव
उं अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव खमावइत्ता,
खमामि सवस्स अहयपि ॥ २ ॥ सवस्स जीव
रासिस्स, भावउं धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥
सघ खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयपि ॥३॥

॥३७॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इछामो अणुसठि, नमो खमासमणाणं ॥
नमोर्हत्० ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय
कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषा विकचारविंदराज्या, ज्याय
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति सगत
प्रशस्य, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्रा॰

॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोजत· ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निजो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

॥३ए॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंताशुकेगरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्म पुनातु व ॥ १ ॥ येषामन्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षन्नरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रात· संतु शिवाय ते जिनेंद्रा· ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रन्नाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ए ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुति· ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्ग० ॥ सुअदेवया नगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे नत्ती॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि० ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरउ डुरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्नसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ जुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ जुवण देवयाए करेमि काउस्सग्ग० ॥ यस्या क्षेत्र समाश्रित्य, साधुन्नि साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्न सुखदायिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुताना, नित्यं स्वाध्याय संयमरताना ॥ विदधातु जुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अढाइज्जेसु मुनिवदन ॥

॥ अढाइज्जेसु दीव सुमद्देसु, पन्नरसु कम्मनूमीसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥इति॥४५॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभंवि गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपू जितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥४७॥ अथ लघुशांतिस्तव ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांता शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदै शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नम. शांतिदे वाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक सं पूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडरितौ घनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रहभूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयो गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भ

गवति, विजये सुजये परापैररजिते ॥ अपरा
जिते जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे
॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
जीया ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति
निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अभयप्रदाननिर
ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ए ॥ भक्तानां
जंतूना शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्
दृष्टीना धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
जिनशासननिरताना, शातिनताना च जग
ति जनतानाम् ॥ श्रीसपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविष
विषधर, दुष्टग्रहराजरोगरणभयत ॥ राक्ष
सरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्य ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शांति च कुरु
कुरु सदेति ॥ तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्व
स्तिं च कुरु कुरु त्व ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति
शिवशा, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना
नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रॉं, ह्रीं ह्रूं ह्र ॥
य क्ष ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्ना

मान्दर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते शांति नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजयविनाशी, शांत्यादिक रश्च ज्ञक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा शृणोति ज्ञावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्याम्, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ अथ श्री चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, डुज्जय मयणवाणु मुसुमूरण ॥ सरस पिअंगु वन्नुगयगामिउ, जयउ पासु जुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कांति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणि मणि किरणालिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४८ ॥

॥ ४ए ॥ अथ श्री जरहेसरनी सद्याय ॥

॥ जरहेसर बाहुबली, अजयकुमारो अ ढं ढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज थूलिजद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिउ केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदसण, साल महासाल सालिजद्दो अ ॥ ज द्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो ॥ ३ ॥ जबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अजगिरि अजरक्खिअ, अजसुहत्ती उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पजवो विन्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिजंस कुरगमू अ सिजाजव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता, दितु सुह गुणगणेहि सजुता ॥ जेसि नाम ग्गहणे पावपबधा विलयंजति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयती ॥ नमयासुंदरी सीया, नदा जद्दा सुजद्दा य ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पनावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ वंनी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव ई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गं धारी लक्कमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चना मा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीर्ठ ॥ ११ ॥ जक्का य जकदिन्ना, नूआ तह चेवनूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, नयणीर्ठ थूलिनदस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइर्ठ, जयंति अकलंकसीलकलि आर्ठ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहु अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ नावो अ ॥ सज्ञाय नमुक्कारो, परोवया रो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणि णं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वछल्लं ॥ ववहार स्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

॥ ४९ ॥ अथ श्री जरदेसरनी सद्याय ॥

॥ जरहेसर बाहुबली, अजयकुमारो अ ढं ढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज थूलिजद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिर्ज केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदसण, साल महासाल सालिजद्दो अ ॥ ज द्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहु मुणी ॥ ४ ॥ अजगिरि अजरकिअ, अजसुहत्ती उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पजवो विन्हुकुमारो अदकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिजंस कुरगमू अ सिजजव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता, दिंतु सुह गुणगणेहि सजुत्ता ॥ जेसि नाम ग्गहणे पावपबंधा विलयंजति ॥ ७ ॥ सुलसा चदनवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयती ॥ नमयासुदरी सीया, नदा जद्दा सुजद्दा य ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पन्नावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ वंनी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव ई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लस्कमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चना मा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीर्ठ ॥ ११ ॥ जस्का य जस्कदिन्ना, नूआ तह चेवनूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, नयणीर्ठ थूलिनद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइर्ठ, जयंति अकलंकसीलकलिआर्ठ ॥ अजवि वजाइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आण, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ गविह आवस्सयंमि, उजुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ नावो अ ॥ सञाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वञ्जलं ॥ ववहारस्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

सम विवेक संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ॥ धम्मिअ जण ससग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि वहु मानो, पुत्थय लिहण पभावणा तित्थे ॥ सड्ढाण किच्च मेअं नि च्च सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदु करजोड्य, जिनवरना मे मगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख वत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ वीजे ला ख अठाविश कह्या, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अम लख धार, पाचमे वंदु लाख ज चार, ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ ह जार, नव दसमे वंदु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार वारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढा र ॥ पाच अणुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिका वळी ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेविश सा र, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांवां शो जोजन विस्तार, पचास ऊचां वोहोंतेर धार ॥ ॥ ५ ॥ एकशो एशी बिंब परिमाण, सभासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ शो कोम्न वावन कोम्न स ग्राल, लाख चोराणुं सहस चौंग्राल ॥ ६ ॥ सा तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमु त्रण काल ॥ सात कोमि ने बोहोतेर लाख ॥ जुवनपतिमा देवल जाख ॥ ७ ॥ एकशो एं शी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरशे कोम्न नेव्याशी कोम्न, साठ लाख वंदूं कर जोमि ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उंगणसाठ, ति र्वलोकमा चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर वंडुं तेह ॥ रुषन्न चंडानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जि न वीश, अष्टापद वंडुं चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥ अतरीक वरकाणो पास, जीरा वलो ने थंन्नण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा टण जेह, जिनवर चैत्य नमु गुणगेह ॥ विहर मान वंडुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३॥ अढीद्वीपमा जे अणगार, अ
ढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु
मिती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥
बाह्य अभिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंडं गु
णमणि माल॥नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं,जीव
कहे भवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥५३॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्टान, मधिष्टानं शिवश्रियः
॥ भूर्जुव स्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्म
हे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यनावैः, पुनतस्त्रिजगज्ज
न ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हत समुपास्महे
॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं नि परि
ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषनस्वामिनं
स्तुम ॥ ३ ॥ अर्हतमजित विश्व, कमलाकर
नास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, सक्रातजगतं
स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वनव्यजनाराम, कुल्यातुल्या
जयंतु ता ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंनवज
गत्पते ॥ ५ ॥ अनेकातमताम्नोधि, समुल्लास
नचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, नगवानन्निनद
न ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजिताङ्घ्रिन

खावलिः ॥ जगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वजिम
तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रजोर्देह, जासः पु
ष्णांतु व. श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो
पादिवारुणा. ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महें
द्रमहितांघ्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाजो
गजास्वते ॥ ए ॥ चंद्रप्रजप्रजोश्चंद्र, मरीचि
निचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव
श्रियेऽस्तु व· ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल
यन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिःसुवि
धिर्बोधयेऽस्तु व· ॥ ११ ॥ सत्त्वाना परमानंद,
कंदोद्भेदनवाबुद· ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीत
लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ जवरोगार्त्तजंतुना,
मगदकारदर्शन ॥ नि·श्रेयसश्रीरमण·, श्रे
यास श्रेयसेऽस्तु व ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी
जूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मिति·॥ सुरासुरनरै· पूज्यो,
वासुपूज्यः पुनातु व ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो
वाच , कतकक्षोदसोदरा· ॥ जयंति त्रिजगच्चे
तो, जलनैर्मल्यहेतव ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमण
स्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां व·,
प्रयत्व सुखश्रियां ॥१६॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्थं धर्मदेष्टारं, ध
र्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो
त्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
शान्त्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु व. ॥ १८ ॥ श्री
कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥ सु
रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥
अरनाथस्तु भगवा, श्चतुर्थारनभोरवि ॥ चतु
र्थपुरुपार्थश्री, विलासं वितनोतु व ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्म्मद्रून्मू
लनेहस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुम ॥ २१ ॥ जग
न्महामोहनिद्रा, प्रत्यूपसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्र
तनाथस्य, देशनावचनं स्तुम ॥२२॥ लुठंतो
नमता मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्ल
वाइव नमे, पातु पादनखांशव ॥२३॥ यदुवंश
समुद्रेंदु कर्म्मकक्षहुताशन ॥ अरिष्टनेमिर्भ
गवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशन. ॥२४॥ कमठे धर
णींद्रे च, स्वोचित कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम
नोवृत्ति पार्श्वनाथ श्रियेऽस्तु व ॥ २५ ॥ श्री
मते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानं
दसरोराज, मरालायार्हते नम ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्द्र योर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥ जयति विजितान्यतेजा', सुरासुराधीशसेवित' श्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिजुवनचुमामणिर्न्नगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व्वसुरासुरेद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता', वीरेणाज्ञिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नम ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृतिकीर्त्तिकांतिनिचय' श्रीवीरज्ञद्रं दिश ॥ २९ ॥ ञ्चवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरज्जुवनगतानांदिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरज्जुवनानां ज्ञावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषा वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठितम्॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञ, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकज्जवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो, देव'सिद्धिवधूविशाल हृदयाऽलंकारहारोपम ॥ देवोष्टादशदोषसिधुरघटानिर्भेदपचाननो, ज्जव्यानां विदधातु वांबितफलं श्रीवीतरागो जिन' ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपद सम्मेतशैलाज्ञिध', श्रीमान् रैव

तक· प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंरूपः ॥ वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरि· श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषभादयोजिनवरा· कुर्वंतु वोमंगलम्॥२३॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसवभयं, संति च पसंत सवगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोविजि णवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहिं विउल तवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सवडुक्कप्पसंतीण, सव पावप्पसं तिण॥ सया अजियसंतीण, नमो अजिअसं तिण ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पव त्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ मइ प्पवत्तण, तवय जणुत्तम संतिकित्तण ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअ निचिअं च गु णेहिं महामुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य स ति महामुणिणोवि अ संतिअरं, संयय मम नि वुइ कारणयंचनमंसणय ॥ ५ ॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विमग्गह सु

रक्कारणं ॥ अजिअं संतिं च भावउ, अभ यकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अ रइ रइतिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुड भुअगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ सुनय नय निउण मभय करं, सरण मुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सयय मुवणमे ॥७॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमु त्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तिउयरं, सति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथिअं, थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलायमान वर गंध हत्थि पत्थाण प त्थियं संथवारिहं॥हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअ ग निरुवहय पिंजर, पवर लक्कणो वचिअ सो मचारु रूवं, सुइ सुहमणाभिराम परम रमणि ज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं ॥९॥ वेड्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ स व्वभयं भवो हरिउ ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुध्दउ ॥ कुरु

जणवयदहिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महाच
क्कवट्टिजोए महप्पनावो, जोबावत्तरि पुरवर सह
स्स वर णगर निगम जणवय वइ,वत्तीसा राय
वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
नव महानिहि चऊसठि सहस्स पवर जुवइण
सुदरवइ, चुलसी हय गय रह सयं सहस्स
सामी, उन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो ना
रहमि नयव ॥ ११ ॥ वेढ्ढउं ॥ त संतिं संतिअरं
संतिणं सव नया ॥ संति थुणामि जिणं, संतिं
विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअय ॥ इरकाग वि
देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय
ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ
जियउत्तम तेअ गुणेहि महामुणि,अमिअवला
विऊलकुला ॥ पणमामि ते नवनय मूरण, जग
सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा
णविद चंद सूरवद हठ तुठ जिठ परम, लठ
रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दं
तपति संति सत्ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,
दित्त तेअ विंदधेअ सवलोअ नाविअप्पनाव
णे अ पईअसमे समाहि ॥ १४ ॥ नारायउं ॥

विमल ससिकलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर क
लाइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं,
धरणीधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम
लया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अवले
अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थु
णामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगि
अं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, ते
अ गुणेहि पावई न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे
हिंपावइ नतं तिहसगणवइ, सारगुणेहिं
पावइ न तं धरणिधरवई, ॥१७॥ खिजिअयं ॥
तित्थवर पवत्तयं तमरयरहिअं धीरजण थु
अ च्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं
तिगरण पयर्ड, संतिमहं महामुणिं सरण मुवण
मे ॥ १८ ॥ ललिअय ॥ विणर्उणय सिरिरय
अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विवुहा
हिव धणवइनरवइ, थुअमहिअच्चिअं वहु
सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ,
सप्पभंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ
चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा
ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

ज्जा गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवन ट्टिआहिं ॥ हावभाव विब्भमप्पगारएहिं न च्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि क्कमाकमा ॥ तयंतिलोअ सव्व सत्त संतिकारय पसत सव्व पाव दोस मेस हं नमामि संतिमुत्त मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सि रिवच्छ सुलछणा ॥ दीवसमुद्द मदिरदिसाग यसोहिया, सत्थिअवसहसीहणासिरिवछसुलछ णा ॥३२॥ ललिअय ॥ सहावलठ्ठा समप्पइठ्ठा, अदोस डुठ्ठा गुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसायसिठ्ठा तवे ण पुठ्ठा, सिरीइ इठ्ठा रिसीहि जुठ्ठा ॥३३॥ वा णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्व लोअहिअ मूल पावया ॥ सथुआ अजिअसंति पायया, हुतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरातिका ॥ एवं तव बल विउल, थुअं मए अजिअ सति जिणजुअल ॥ ववगय कम्म रयमल, गय गयं सासय विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ त बहुगुणप्पसाय, मुक्क सुहेण परमे

ए अविसायं ॥ नासेउ मेविसायं, कुणउ अ प
रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउअ
नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमनिनंदिं ॥ परिसा
विय सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥
गाहा ॥ पक्खिअ चाउमासे, संवच्छरिए अव
स्स नणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग नि
वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण
इ,उनउ कालंपि अजिअसंतिथुयं॥न हु हुंति
तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९॥ जइइ
छह परम पयं, अहवा कित्ती सुविछडा नुवणे॥
ता तेलुक्कुद्धरणे,जिणवयणे आयरं कुणह॥४०॥

॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥

॥ नो नो नव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व
मेतत्, ये यात्रायां त्रिनुवनगुरोरार्हतां नक्तिना
जः ॥ तेषां शांतिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रनावा
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
नोनो नव्यलोका इहहि नरतैरावतविदेहसं
नवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं
तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपथा इति भव्यजनैः सहसमागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधायशांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याह पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवंतोर्हंत सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकरा ॥ ॐ १ श्री ऋषभ,२ अजित,३ संभव,४ अभिनंदन,५ सुमति, ६ पद्मप्रभ,७ सुपार्श्व,८ चंद्रप्रभ,९ सुविधि,१० शीतल,११ श्रेयास,१२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत,१५ धर्म्म,१६ शांति,१७ कुंथु,१८ अर,१९ मल्लि,२० मुनिसुव्रत,२१ नमि,२२ नेमि ... ३ वर्द्धमानांता २४ जिना शांता शांतिकरा ... स्वाहा ॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपु ... [illegible] ... स्तु वो नित्यं ... कीर्त्ति, कांतिं,

वुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश
नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंडाः ॥ ॐ
रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशृंखला, वज्रांकुशी, अ
प्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी,
गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुट्या,
अछूप्ता, मानसी, महामानसी, (एता) षोमश
विद्यादेव्यो रक्षतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आ
चार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसं
घस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥
ॐ ग्रहाश्चंडसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्च
रराहुकेतुसहिता सलोकपालाः सोमयमवरुण
कुवेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचा
न्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्री
यंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च
भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रात, कलत्र,
सुहृद्, स्वजन, संवंधि, वंधुवर्ग, सहिताः
नित्य चामोदप्रमोदकारिणो भवतु अस्मिंश्च
भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक
श्राविकाणा रोगोपसर्ग व्याधि डुःख डुर्भिक्षदौ
र्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

ष्टि ऋद्धि, वृद्धि, मागल्योत्सवा. ॥ सदा प्रादु र्भूतानि पापानि शम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रव. पराङ्मुखा भवतु स्वाहा ॥ श्रीमते शातिना थाय,नम· शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा धीश, मुकुटाभ्यर्चिताह्वये ॥ १ ॥ शाति शांति कर· श्रीमान्, शाति दिशतु मे गुरुः ॥ शातिरेव सदा तेषां, येषा शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट, ग्रहगति दु.स्वप्न दुर्निमित्तादि ॥ सपादितहित सप, न्नामग्रहणं जयति शाते. ॥ ३ ॥ श्रीसघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्नि वेशानाम्॥गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याह रेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शातिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्य शातिर्भवतु श्रीजनपदाना शा तिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शातिर्भवतु ॥ श्री राजसन्निवेशानां शातिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकाना शातिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्याना शातिर्भवतु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्य शातिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्री श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा॥ एषा शातिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेपु ॥ शातिक लशं गृहीत्वा,कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्किकाया श्री संघसमेतः शुचिशुचिवपु. पुष्पवस्त्रचंदनाज्ञ रणालंकृत, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमु दूघोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्य मिति॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्ष, सृजंति गायं ति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणज्ञाजो हि जिनाज्ञिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगत', परहितनिरता ज्ञवंतु भू तगणा ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीज्ञव तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिज्ञयरमाया शिवादेवी तुम्हनयर निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं अशिवोपशमंशिवं ज्ञवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपस र्गाः क्षयं याति, छिद्यंते विघ्नवल्लय' ॥ मन. प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधान सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति श्री बृहच्छांति स्तव संपूर्ण ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवन ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरी इ दायारं ॥ समरामि ज्ञत्त पालग, निव्वाणी ग

रुडक्कय सेव ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि पत्ता
ण संति सामिपायाणं, ॐ स्वाहा मंतेणं, सव्वा
सिवडरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐ सति नमुक्कारो,
खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताण ॥ सौं ह्रीं नमोस
व्वो सहि, पत्ताण च देइसिरीं॥३॥वाणी तिहुअ
ण सामिणि, सिरि देवी जक्करायगणिपिडगा ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभ
त्ते ॥ ४ ॥ रक्खतु मम रोहिणी, पन्नतीवज्जसिख
ला सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि
महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गधारी महजाला
माणवीअ वइरुट्टा ॥ अछुत्ता माणसिया, महा
माणसियाउं देवीउं ॥ ६ ॥ जक्का गोमुह मह
जक्का, तिमुहजक्केस तुंवरू कुसुमो ॥ मायगो वि
जयाजिय, बम्भो मणुउं सुरकुमारो ॥ ७ ॥
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव्व तहय ज
क्खिदो ॥ कुबेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमा
यगो ॥ ८ ॥ देवीउं चक्केसरि, अजिआ डुरिआ
री कालि महाकाली ॥ अच्चुअ सता जाला, सु
तारयासोय सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चडा विजयंकुसि
प, न्नइति निव्वाणि अच्चुआ धरणी॥ वइरुट्ट छुत्त

गंधा, रिअंव पउमावईसिध्दा ॥१०॥ इअ तित्थ रक्कण रया, अन्नेवि सुरासुरी चउहावि ॥ वंतर जोइणी पमुहा, कुणंतु रक्कसया अम्हं॥११॥ एवं सुदिठि सुरगण, सहिउं संघस्स संति जिण चंदो ॥ मज्झवि करेउ रक्क, मुणिसुंदर सूरिथुअ महिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्म, दिठि रक्क सरइ ति कालं जो ॥ सवोवद्दवरहिउं, स लहइ सुहसंपयं परम ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरुणं ॥ सुपसाय लध्दगणहर, विद्यासिध्दिभणइसीसो ॥१४॥ इति श्रीसतिकरस्तवनम् ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥ अथ पाक्षिकादि अतिचार ॥

॥ नाणमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिउं ॥ १ ॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध आचारमाहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अजाणतां हुउं होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायाये करीतस्स मिछामिडक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि णए वहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वज ण अत्र तडुभए अठविहोनाण मायारो॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाये भण्यो गुण्यो नहि अकाले भण्यो, विनयहीन, वहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वादणे, पडिक्कमणे, सद्याय करतां भणता, गुणता, कूम्रो अदर कानेमात्रायें अधिको उंगे भण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तडुभ य कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां, साधु तणे धर्म काजे काजो अणुड धरया दांडो अणपम्लिहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असज्जाइ, अणो ज्झाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिध्धांत भण्यो गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प डिक्कमणा, उपदेशमाला प्रमुख सिध्धांत भण्यो गुण्यो, काल वेला काजो अणउध्ये पढियो ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सापमा सापमी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूक लाग्यु, थूके करी अदर माज्यो, उंशीसे

धस्यो, कने छता आहार निहार कीधो, ज्ञानड व्य जक्ता उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणसतो विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तियें सार सन्नाल न कीधी, ज्ञानवतप्रत्यें द्वेष, मत्स र, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ प्रत्ये नणता गणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मन· पर्यवज्ञान, केवल ज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी- कोइ तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचार व्रत विषइउं अ नेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय,निव्वितिगिछा अमूढदिठीअ ॥ उववू ह थिरीकरणे, वछल्ल प्पनावणे अठ ॥१॥ देव गुरू धर्म तणे विषे नि शंकपणुं न कीधुं तथा ए कात निश्चय न कीधो धर्म संबंधीया फल तणे विपे नि संदेह बुद्धि धरी नही साधु साधवीना मल मलिन गात्र देखी छगछा निपजावी कुचा रित्रीया देखी चारित्रीयाऊपर अन्नाव हुउं. मि

ध्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणु कीधुं तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणास्यो, विणसतो उवेख्यो छती शक्तिये सार संभाल न कीधी तथा साधर्मिक साथें कलह कर्मबंध कीधो अधोती, अष्टपड मुखकोश, पाखे देव पूजा कीधी बिंबप्रत्ये वासकूंपी, धूपधाणुं कलशतणो ठबको लाग्यो बिंब हाथथकी पाड्यु उसास निसास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मादिक लोह्यु देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार निहार कीधा, पान, सोपारी, निवेदीया खाधा ठवणाहारी हाथथकी पाडी, पडिलेहवुं विसार्यु, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युनहीं ॥ ५ दर्शनाचा[illegible] .२५ अनेरो जे ~ अतिचार

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १॥ ईर्या समिति ते अणजोए हिंड्या, भाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी, असूझतु लीधु, आदानभंडमत्तनिखेवणा समिति ते अशन शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुलभूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिष्ठापनिकासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि जीवाकुल भूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मन मा आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्यु, कायगुप्ति ते शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्टप्रवचन माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपरे पाल्या नही, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस माही सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुउ होय, ते सवि हु मने,वचने,कायाये करी तस्समिछामि

विशेषत श्राकतणे धर्मे श्रीसम्यकत्व मूल वारव्रत, सम्यक्त्व तणा पाच अतिचार ॥ शका कखविगिह्रा० ॥ शंका श्रीअरिहंत तणा वल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गाम्भीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयाना चारित्र, श्रीजिनवचन तणो सदेह कीधो॥ आकाक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी जूजूआ देव, देहराना प्रभाव देखी रोग आतककष्ट आवे इह लोकपरलोकार्थे पूज्या मान्या, सिद्ध विनायक जीराउलाने मान्यु, इच्छयु, बौद्ध, साख्यादिक सन्यासी, भरडा, भगत, लिगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मत्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाण्याविना भूलाव्या, मोहिया कुशास्त्र शीख्या, साम्भल्या श्राद्ध, सवछरी, होली, वलेव, माहिपूनम, अजापडवा, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपाचमी, झूलणाछठ, शीलसातमी, ध्रुवआठमी,

नोली नोमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वछबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, नोग, उतारणा कीधां, कराव्या अनुमोद्यां. पिपले पाणी घाल्या, घलाव्या, घरबाहिर क्षेत्र, खले, कूवे, तलावे, नदीये, डहे वाविये, समुडे, कुंमे, पुण्यहेतुस्नान कीधां, कराव्या अनुमोद्या. दान दीधां, ग्रहण, शनिश्चर माहमासें नवरात्रि, नाहायां अजाणना थाप्यां अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधा; कराव्यां ॥ वितिगिन्ना धर्म संबंधीया फलतणे विषे संदेह कीधो जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणनणी न मान्या, न पूज्या, महासती, माहात्मानी इह लोक परलोक संबधी या नोग वांछित, पूजा कीधी, रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन नोग मान्या, माहात्मानां नात, पाणी, मल शोन्ना तणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी, चारित्रिया उपर कुन्नाव हुउं, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रन्नावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दा

र, भूमिसंबंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ वाड करता मोटकुं जूठुं वोल्या हाथ पग तणी गाल दीधी करडका मोड्या मर्म वचन वोल्यां ॥ वीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रते पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर वाहिर खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी वावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो तेहने सवल दीधु तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो नवा, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा कूडे काटले, तोले, माने, मापे, वहोख्या दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरांस्यो साटे लाच लीधी कूडो करहो काढ्यो विश्वासघात कीधो. परवचना कीधी पाशंग कूडा कीधा डांडी चढावी. लहके त्रहके कूडा काटला मान, मापा कीधा माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वची किणहीने दीधु जूदी गाठ कीधी, थापण ओलवी किणहीने लेखे पलेखे

मूलव्युं पमी वस्तु उलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विपयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ८ ॥

चोथे स्वदारासंतोप. परस्त्री गमन विरमण व्रतें पाच अतिचार ॥ अपरिग्गहीया इतर०॥ अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गमन कीधुं विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलागना, स्वदारागोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग वचन वोल्या. आठम, चउदग, अनेराइ पर्व तिथें नियम लइ जांग्या घरघरेणा कीधा करान्यां वर वहू वखाण्या कुविकल्प चिंतव्यो अनंग क्रीमा कीधी, स्त्रीना अगोपांग निरख्या पराया विवाह जोड्या. ढिगला ढिगली परणाव्या कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ कुस्वप्न लाधा नट, विट, पुरुपाशु हासु कीधु॥चोथा स्वदारासंतोषव्रतविपयिउं अनेरा जे कोइ अतिचार पक्ष०॥४॥

पाचमे स्थूल परिग्रह परिमणव्रते पांच अतिचार॥ खित्तवत्थू०॥धन, धान्य

वस्तु, रूप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरात वृद्धि देखी मूर्छालगे संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधु नही, लेइने पढिउं नही पढिउ विसार्युं. अ लीधुं मेल्यु नियम विसर्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ५ ॥

छठे दिग्परिमाणव्रते पाच अतिचार ॥ गम णस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ भाग्या अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भुमि गया पाठवणी आघी पाछी मोकली वहाण व्यवसाय कीधो वर्षाकाले गामतरू कीधुं, भु मिका एकगमा संखेपी,बीजीगमा वधारी ॥ छठे दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अ त्तिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमे भोगोपभोग विरमण व्रते भोजन आश्री पाच अतिचार अने कर्महुती पदर अ तिचार एव वीश अतिचार॥सच्चित्तेपडिबद्धे० ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार, डुपक्काहार, तुछोषधि तणुं नक्कण कीधुं. उंबा, उंबी, पोक, पापमी कीधा ॥ सचि त्त दवविगइ, पाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बनदिसि न्हाण नत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा नहीं लेइने नाग्या. बावीश अनदय, बत्रीश अनंतकायमाहि आडुं, मूला, गाजर, पिरू, पिंमालू, कचुरो, मूरण, कुलि आवली, गलो, वाघरमा खाधा. वाशी, कठोल, पोली, रोट, ली त्रण दिवसनु उंदन लीधु मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवमा, अजाण्या फल, टिंबरु, गुंदां, महोर अथाणुं, आमणबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, काचा कोठिंबडा खाधां रात्रि नोजन कीधो लगनग वेलायें व्यालुं कीधुं. दि वस विणउगे शीराव्या तथा कर्मत पंदरक र्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साम्किम्मे, नामिकम्मे, फोम्किम्मे, ए पांचकर्म ॥ दंतवा णिज्जे, लकवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिज्जे, ए पाच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लण कम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए पाच सामान्य, ॥ ए पांच कर्म्म, पाचवाणिज्य पाच सामान्य, एवं पदर कर्मादान वहुसावद्य, महारंभ, रागण, लीहाला, कराव्या. इंट, नि भामा पचाव्या धाणी, चणा पक्कान्न करी वेच्या वाशी माखण तपाव्या तिलवहोख्या फागण मास उपरात राख्या दलीदो कीधो. अगीठा कराव्या श्वान, बिल्लाडा, शूडा, सालहि, पोश्या अनेरा जे काइ वहु सावद्य खरकर्मादिक समा चख्या वागीगार राखी लीपणें, धूपणे, माहा रंभ कीधो अणशोध्या चूला सधूक्या घीतेल, गोल, गश तणाभाजन उघाम्म मूक्या तेमाहि माखी, कुति, उदर, गिरोली पमी कीडी, चढी तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोग विरमणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदम विरमणव्रतें पाच अति चार ॥ कदप्पे कुक्कुए० ॥ कदर्प्पलगे विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज कथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ वात कीधी तथा पैशुन्यपणुं कीधुं,आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कुहाभा, रथ उखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दा-तरमां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां पापोपदेश दीधो अष्टमी चतु र्दशीये खांमवा दलवा तणानियम भाग्या. मूरखपणा लगे असंबध्द वाक्य बोल्या. प्रमा दाचरण सेव्या अंघोले नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध ढांळ्यां झील-णे झील्या जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोया, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा. करकमा मोड्या मत्सर धर्यो संभेडा लगाड्या. सराप दीधा. भेसा, शाढ, हुडु, कू कडा, श्वानादिक झुझाव्या, जूझता जोया. खादिलगें अदेखाइ चितवी, माटी, मीठुं कण, कपाशीया, काजविण चाप्या तेउपर बेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा व्या घणी निद्रा कीधी राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकने मृत्यु हानी वांछी ॥ आठमे अनर्थ दंडविरमणव्रत विषयिउ अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पाच अतिचार ॥ तिवि हे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट, दोहट्ट, चितव्यु सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपडिलेह्यु हलाव्युं छती वेलाये सामा यिक न लीधु सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्या डंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी वीज दीवा तणी उज्जेहि हुइ, कण कपा शीया, माटी, मीठु, खडी, धावडी, अरणेटो पा षाण प्रमुख चाप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभड्या, स्त्री तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ, मुहुपत्तियो संघट्टि, सामायिक अणपूग्युं पाख्यु, पारयु विसार्यु ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस ० ॥ ए ॥

दशमे देशावगाशिकव्रते पाच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे०॥ आणवणप्पउंगे, पेसवण प्पउंगे, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई, बहिया, पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहे बाहेरथी कांई अणाव्युं आपण कन्हेथकी बाहेर काइ मोकल्युं अथवा रूप देखामी, कांकरो नाखी, साद करीआपपणुं छतु जणाव्युं ॥ दशमे देशावगाशिक व्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडा वडा स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां नही मातरूं अणपूंज्युं हलाव्युं अणपूंजी भूमिकाये परठव्युं परठवतां "अणुजाणहजस्स ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे वोसिरे " न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां "निसिही" निसरता "आवस्सहि" वार त्रण भणी नही. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति,

त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपद्रव, हुआ. संथारा पोरिसी तणो विधि नणवो विसार्यो. पोरिसीमाहे उघ्या अविधें संथारोपाथर्यो पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलाये देव न वाद्या पडिक्कमणु न कीधु पोसह असूरों लीधो सवेरो पार्यो पर्वतिथे पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

बारमेअतिथिसंविभाग व्रते पाच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपरवता महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतु कीधु, देवानी बुद्धे परायु फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे सूझतु फेरी असूझतु कीधुं, अणदेवानी बुद्धे आपणु फेडी परायु कीधु, वहोरवा वेला टली रह्या, असूरे करी महात्मा तेड्या मछर धरी दान दीधु, गुणवंत आवे नक्ति न साचवी, छती शक्ते साहम्मी वात्सल्य न कीधु अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तियें उद्धर्या नही, दीन क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधु॥

वारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणालणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउंगे, परलोगासंपप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामनोगासंसप्पउंगे ॥ इहलोके धर्मना प्रनावलगें राजरुद्धि, सुख,सौनाग्य,परिवार, वांउयां परलोकें देव, देवेंड, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी पदवी वांठी, सुख आवे जीवितव्य वाउयुं, डुःख आवे मरण वाउयुं, काम नोग तणी वाउा कीधी ॥ संलेपणाव्रत विपयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार नेद ठ बाह्य, ठ अन्यंतर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण नणीउपवास विशेप पर्वतिथें उती शक्तियें कीधो नहीं, ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नही, वृत्तिसंक्षेप ते ऽव्य नणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या नही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पच्चरकाण न्नांग्यां,पाटलो ऊगमगतो फेड्यो नहीं, गठसी, पोरसी, साढ्ढपोरिसि, पुरिमट्ठ, एकासणुं, वेआसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवुं विसाख्यु, बेसता नवकार न गएयो, उठता पच्चरकाण करवुं विसाख्युं, गंठसीउं न्नाग्यु, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुउं, बाह्य तप विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ १४ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायछित्त विणउं० ॥ मन शुद्धे गुरु कन्हे आलोअणालीधी नहीं, गुरु दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धे पहुचाड्यो नहीं, देव, गुरु, सघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो नहीं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं, वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया, कर्म क्षय निमित्तें लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यतर तप विषयीउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ वलविरजं० ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, जावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणु उतुं वल वीर्य गोपव्युं, रूमा पंचांग खमा समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाच व्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें वेग, उताव लुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार वि षयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पद्म०॥१६॥

नाणाइअठ पइवय,समसंलेहणु पण पनरक म्मेसु वारस तव विरिअतिगं, चजवीसंसय अइ यारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ जिन प्रतिषेध अजक्ष्य, अनंतकाय, बहुवीजजक्षण, महारंज परिग्रहादिक कीधा, जीवाजीवादिक सूक्ष्म वि चार सदह्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोज, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान पैशु, न्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक कीधं

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्यप्रतिक्र मण, विनय, वैयावच न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनु मोद्युं होय ॥ ए चिहु प्रकारमाहे अनेरो जे को इ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जा णतां, अजाणता हुउं होय ते सवि हुं मने, व चने, कायाये करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥१८॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, बा दर, जाणता अजाणता हुउं होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं॥ इति श्रीश्रावकपक्खी, चोमासी, सवछरी अ तिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रभातना पच्चक्काण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहितुं ॥

॥ उग्गय सुरे,नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअ पच्चक्काइ॥चउव्विहपि आहार,असणं पाण खाइ म,साइमं॥अन्नछणाभोगेणं,सहसागारेणं,महत्त रागारेणं,सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे॥६७॥

॥५८॥ बीजुं पोरिसि, साड्ढपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुठिसहिअ, पच्चक्खाइ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ त्रीजुं बीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसि, मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहं पि आहार, असणं, पाणं, खाइम, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेण दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइओ पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खिएण पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण बियासणं, पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आउट्टण पसारेण, गुरु अब्भुठाणेणं, पारिठा वणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्व समाहिव त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेणवा, अ सिछेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चरकाण करवुं होय तो, बियासणंने ठेकाणे एकासणं नो पाठ केहवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं पच्चरकाण समाप्त ॥ ५ए ॥

॥६०॥ चोथुं आयबिलनु पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअ पोरिसिं, सा ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चरकाइ ॥ उग्गए सूरे चउविहपि आहार, असण, पाणं, खाइमं, सा इमं, अन्नडणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नका लेण दिसामोहेण, साहुवयणेण महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण ॥ आयंबिल पच्चरकाइ ॥ अन्नडणाभोगेण, सहसागारेणं, लेवालेवेणं गिहडसंसठेण, उक्खित्तविवेगेण, पारिठावणिया गारेण, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिगारे ण ॥ एगासण पच्चरकाइ ॥ तिविहपि आहार असण, खाइम साइम ॥ अन्नडणाभोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण प सारेणं, गुरुअब्भुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछे णवा, बहु लेवेणवा, ससित्थेण वा, असित्थे णवा॥ वोसिरे ॥ इति आयंबिलनुं पच्चरकाण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अभ्भत्तठं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहार, असणं, खाइमं, साइम ॥ अन्नथणा भोगेणं, सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसि, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चरकाइ ॥ अन्नथणाभोगेणं, सहसागारेणं पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह त्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेणवा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरे ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ छठुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठ पच्चरकाइ ॥ चउव्वि

हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न
त्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागा
रेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांऊनां पच्चरकाण ॥

तहा प्रथम बीयासण, एकासणं, आयं
बिल, तिविहार उपवास, अने छठ जे करे तो
तेणे पाणहारनुं पच्चरकाण करवुं ते आवी रीते —
॥६३॥पाणहार दिवसचरिम पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थ
णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व
समाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ चउविहंपि आ
हार, असण, पाण, खाइम, साइम ॥ अन्नत्थणा
भोगेण, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वस
माहिवत्तियागारेण, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजु तिविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिम पच्चरकाइ॥तिविहंपि आहा
रं, असण, खाइम, साइम, अन्नत्थणा भोगेणं
सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥६६॥ चोथुं डविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ डविहंपि आहा रं, असणं, खाइमं, अन्नवणाभोगेणं, सहसा गारेण, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागा गारेण वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासिय नु पच्चरकाण करवुं तेनो पाठ कहे वे ॥

॥६७॥ देसावगासिअं उवनोगं परिनोगं पच्च रकाइ ॥ अन्नवणाभोगेणं, सहसागारेणं, मह त्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरे ६७

॥६८॥ वहु पोसहनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते पोसहं, आहारपोसहं देसर्ज सव्वर्ज, सरीर सक्कार, पोसहं सव्वर्ज, वंनचेर पोसहं सव्वर्ज, अव्वावारपोसहं सव्वर्ज, चउविहे पोसहं वामि ॥ जाव दिवस अहोरत्तं पज्जुवा सामि ॥ डविहं तिविहेणं ॥ मणेण, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स नंते पडि क्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि रामि ॥ इति पच्चखाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पमिमा, अखंमिआ जीविअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसि पसंसइ नयवं, दढवय त महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधउं विधे पारीउं विधि करता जे कोइ अविधि हुउं होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमासमणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ तथा नवकार तथा करेमि नते समाइअ ॥ एटला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजिठिज्जा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गरुगुणरयणेहि मंमियसरीरा ॥ बहुपमिपुन्नापोरिसि, राइय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेण ॥ कुकुमिपायपसारण अतरत पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संमासा, उवट्ठते अ काय पमिलेहा ॥ दवइ उ

गोमे सासर्ज अप्पा, नाए दंसण संजुर्ज॥सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे संजोगलरकण ॥ १२ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुरकपरपरा ॥ तम्हा सजोग सबंध, सव्वं तिविहेण वोसिरिअ॥१३॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीव सु साहुणो गुरु णो ॥ जिणपन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्तं मए गहि अ ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ सवह जीव निकाय ॥ सिध्धह साख आलोयण ह, मुझह वइर न भाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा क म्म वस्स चउदह राज भमंत ॥ ते मे सव्व ख माविआ, मुझवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ ज जं म णेण बध्ध, ज ज वाएण मासिअ पावं ॥ ज जं काएण कय, मिछामि डुक्कम तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति सथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवदन

॥ तत्र प्रथम सीमधरजिनचैत्यवदन ॥

॥ सीमधर परमातमा, शिव सुखना दाता॥ पुरकल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुम्फरीगिणी, नयरीये शोहे॥ श्री श्रेयास राजा तिहा, भविअणना मन मो

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती ना टक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥ निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥पुं रिक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि म नहरम्॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा॥नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ न मो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शि खर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मवि जय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे॥ नाव धरीने जे चढे, तेने नवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनोराय॥ पूर्व नवाणु ऋखनदेव, ज्यां ठविआ प्रनुपाय

॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहामणो, कविड जक्ष अ
न्निराम ॥ नान्निराया कुलमंडणो, जिनवर करुं
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे मे दिठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकार सार, करुणा रससि
धु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बधु
॥२॥ गुण अनंत प्रन्नु ताहरा ए, किमही क
ह्या न जाय ॥ राम प्रन्नु जिन ध्यानथी, चिदा
नंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे
जावजो ॥ मुज विनतमी, प्रेमधरीने एणि परे
तुमें संन्नलावजो ॥ ए आकणी ॥ जे त्रण्य न्नुव
ननो नायक ठे ॥ जस चोसठ इंडें पायक ठे॥
नाण दरिसण जेहने खायक ठे ॥ सुणो०॥१॥
जेनी कंचन वरणी काया ठे ॥ जस धोरीलंठन
पाया ठे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सु
णो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामिहिं विराजे ठे॥ जस

चोत्रीश अतिशय गाजे वे ॥ गुण पांत्रीश वाणीए गाजे वे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ज्ञविजनने ते पडिबोहे वे ॥ तुम अधिक शितल गुण शोहे वे॥ रूप देखी ज्ञविजन मोहे वे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो बुं ॥ पण ज्ञरतमा डरे वसीयो बुं ॥ महामोह राय कर फसीयो बु ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिबचित्तमा धरीयो वे॥ तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो वे ॥ पण काईक मुजथी मरीयो वे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठे हुवे पूरो॥ कहे पद्मविजय थाउं शूरो ॥ तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवन ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणु करीये विमलगिरी ॥ जात्रा नवाणुं करिये ॥ ए आकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुजगिरि, रुखन्न जिणंद समोसरीये ॥ वि० ॥ १ ॥ कोमि सहस ज्ञव पातक त्रूटे॥शेत्रुंज साहामो मग ज्ञरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात ठठ दोय अठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य

वसाय शुभ्र धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभ व्यी न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥वि०॥ ॥५॥ भुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी परिहरीयें ॥वि०॥६॥ सचित्त परिहारीनें एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीये ॥वि०॥७॥ पडि क्कमणा दोय विधिशुं करीयें,पाप पमल विखहरी यें ॥ वि०॥८॥ कलिकालें एतीरथमोटुं, प्रवह ण जिम भव दरीए ॥वि०॥ ए ॥ उत्तम ए गिरि वर सेवंता, पद्मकहे भव तरीये॥विमल०॥१०॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठो रे॥ सवा लाख टकानो दहामो रे, लागे मुने मी ठो रे ॥ ए आकणी॥ सफल थयो मारा मननो उमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भांग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभु जीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षीणा दीधी रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥दुधडे पखालीने केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

ञाचल नयणें जोता, पापमेवासि धुज्यारे॥ श त्रु०॥३॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे॥वा०॥ वीरजिणंद इम बोले रे ॥ त्रण नुवनमा तीरथ मोटु, नहि कोइ शत्रुजा तोले रे ॥शत्रुं०॥४॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी॥ वा०॥ चाकरी चित्त मा चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज कुंडमा नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ काकरे काकरे श्रीसिद्ध खेत्र ॥वा०॥ साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटु, उद्धार अनंता कीधारे ॥शत्रु०॥६॥नाजिराया सुत नयणे जोता ॥वा०॥ मेह अमीरस वूठ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूठ्यारे ॥ शत्रु० ॥७॥ इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ श्रीशखेश्वरपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ शखेश्वर पासजी पूजिये, नरनवनो ला हो लीजिये ॥ मन वंछित पूरण सुततरु, जय वा मासुत अलवेसरु॥१॥ दोय राता जिनवर अति नला, दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कंचन व र्ण लह्या ॥२॥ आगम ते जिनवरें नाखीयो, ग

णधर ते हीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी यो, ते हुउ शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ शिखामण सझाय ॥

॥ जीव वारुं हुं मोरा वालमां, परनारीथी प्रीति म जोम ॥ परनारीनी सगत नही भली, तारा कुलमा लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव आ ससार वे कारमो, दीसे वे आल पंपाल॥ जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल मारगमे ना खी वे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता भाइ बेनमी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगु, पवे लांबा कीधा जुहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देंहली लगें सगो आगणो, शे रीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगे साजन भलो, पवें हस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जाता थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं भरीयुं ईंधणे, वली खो खरी हाडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न उंलखी, जीव वहुला कीधा पाप जीव सुमतिविजय मुनि एम ऋणे, जीव ऋा वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७७॥

॥ ऋथ श्री ऋनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाम्री चढ्यो, पेखीयो मुनि एकत॥वररूप काते मोहीउं, राय पूठे ए कहोनें विरतत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हु रे ऋनाथी निग्रथ ॥ तिणे मे लीधो रे साधुजीनो पथ ॥श्रेणिक० ॥ ए ऋाकणी ॥ इणे कोसवी नयरी वसे, मुऊ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्यो, हु हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी मे न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउंरम्री, चोरम्री ऋवला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणे न कीधी मोरम्री सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वहु राज्य वेद्य वोलाविया, कीधला कोडि उपाय ॥वावना चदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमाहि को केहनो नही, ते ऋणी हु रे ऋनाथ॥वीतरागना धरमसा

रिखो, नहीं कोइबीजो रे मुक्तिनो साथ ॥श्रे०॥
॥ ६ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे,तो लेउं संजम भा
र ॥ इम चितवता वेदन गई, व्रत लीधुं में हर्ष
अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोमी राय गुण स्त
वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित
पामीयो, वादी पोहोतो रे नगर मऊार ॥श्रे०॥
॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड
गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर
जोड॥श्रे०॥९॥इति अनाथीनी सद्याय ॥८८॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम ऊंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरबेसी, मुहपत्ती डावा हाथमा मुख पासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक नवकार गणी, पचिंदिअ कहीयें; अने जो आगलथी ते स्थानके आचार्यप्रमुखनी स्थापना करेली होय, तो तिहा पंचिंदिय न कहेवु, पछी इच्छामि खमासमण देइ, इरियावहिया०तथा तस्स उत्तरी० अने अन्नच्छ उससीएणं कही,एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥इच्छं"॥ एम कही मुहपत्ति तथा अगनी पडिलेहणना पच्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पछी खमासमण देइ, "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इच्छ ॥ कही खमा० इच्छा० ॥ सामायिक ठाउं, इच्छ" एम कही, बेहाथ जोडी, एक नवकार गणी, इच्छाकार भगवन् पसाय करी,सामायिक दंडक उच्चरावो जी तेवारें वडिल, करेमि भंते कहे, पछी खमासमण देइ इच्छा० ॥ बेसणे संदिसाहुं ॥ इच्छं ॥ खमा०॥ इच्छ० ॥ बेसणें ठाउं ॥ इच्छं ॥ खमा० ॥ इच्छा०॥ सज्झाय संदिसाहुं ॥ इच्छ ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ सज्झाय

(खमा० होय, त्या खमासमण देवु इच्छा० होय, त्या इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कहेवु, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी सन्मुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहु, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे "संदिसह" तथा इरियावहि पडिकमवाना आदेशमा गुरु "पडिकमेह" कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवु)

करुं ॥ इछं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥ पछी वे घमी सज्झाय धर्मध्यान करवुं॥इति॥एद॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपमिक्कमवाथी यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पमिलेही, खमासमण देइ ॥ इछा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इछा० ॥ सामायिक पार्युं ॥तहत्ति॥ कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी "सामाइयवयजुत्तो" कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ एउ ॥

॥ अथ पाच्चखाण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम "इरियावहियाए" पडिक्कमी यावत् "जगचितामणि" नुं चैत्यवंदन "जयवीयराय" सुधी करवुं ॥ पछी "मन्हजिणाए" नी सज्झाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह जगवन् पच्च

क्खाण पारु यथाशक्ति "इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारवुं "तहत्ति" एम कही जमणो हाथ कटासणा अथवा चरवला उपर थापी, एक "नवकार" गणी, पच्चक्खाण कर्युं होय तेनु नाम कहीने पारवु. ते लखीये छैयेः– उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं,पोरिसिं,साढपोरिसिं, गंठिसहिअ,मुठिसहिअं,पच्चक्खाण कर्युं,चउवि हार, आंबिल, निवी,एकासणु, बे आसणु कर्युं, तिविहार पच्चक्खाण, फासिअ, पालिअ, सोहि अ, तीरिअं, कट्टिअ, आराहिअ, जं च न आ राहिअं, तस्स मिच्छामि डुक्कड, एम कही एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ एठ ॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिदिअं कही, इरियावहियाए कहेवु, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवो. पछी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अ थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, उन्ने पगें वेसी मुहपत्ती, चरवलो कटासणुं, उत्तरासणु, धोतं. कदोरो आदि नुं पडिलेहण करवुं ।णी, जीव

पारी वीजी थोय कहेवी ॥ पछी पुक्खरवरदी कही, "सुअस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं वंद णवत्तिआए" कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पछी सिध्धाणं बुध्धा ण० वेयावच्चगराण० करेमिकाउस्सग्ग अन्न छ० नो पाठ कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी "नमोऽर्हत्" कही, चोथी थोय कहेवी ॥ पछी वेशी हाथ जोडीने "नमुठुणं" कही खमासमण देइ, "भगवानहं" कहेवु वली वीजु खमासमण देइ, "आचार्यह" कहेवुं, वलीत्रीजुं खमासमण देइ, "उपाध्यायह" कहेवुं वली चोथुं खमासमण देइ, सर्व साधुभ्योऽहं " कहेवु, ए रीते चार खमासमण देवापूर्वक भग वानादि चारने थोभ वंदन करीये ॥ पछी खमा समण आपी इछाकारेण संदिसह भगवन् "देवसिप्रतिक्रमणे ठाउ" एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा उपर थापीने, इछं सव्वस्सवि देवसिअ० नो पाठ कही उभा थई, करेमि भंते०इछामि ठामि काउस्सगं जो मे देवसिउ० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनीआठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा न आवमती होय तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो॥ पछी बेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवा ॥ पछी ऊना थईने इछाकारेण संदिसह नगवन् देवसिअं आलोउं इछं आलोएमि कही जो मे देवसिउ कहेवुं, पछी सात लाख० कही, अढार पापस्थानक आलोइने, "सबस्सवि देवसियं" कहेवुं ॥ पछी नीचे बेसी जमणो ढीचण ऊनो राखी, एक नवकार गणी, करेमिनंते० इछामि पडिक्कमिउं०कही वंदित्तासूत्र संपूर्ण कहीने वादणां बे देवां ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह नगवन् अप्नुठिउंहं अप्निंतर देवसियं खामेउं एम कही, अप्नुठिउं खामीने वादणां बेवार देवा ॥ पछी ऊना थई "आयरिय उवज्झाय" कही करेमि नंते इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० कह "तस्स उत्तरी" कही बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी सब

उं निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इवं डुकरकउं क म्मरकउं निमित्त करेमि काउस्सग्गं "अन्नत्थ०" कही "संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न वकार" नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते शाति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने "नमोऽर्हत्० " कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे ॥ पढी इरियावही अने तस्स उ त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पढी चउक्कसाय कही, नमुथ्थुणं कही, जावंति चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप त्ति पडिलेहवी ॥ पढी खमासमण देई इच्छाका रेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं. आ स्थानकें जो साक्षात्गुरु विराजमान होय तो ते कहे के "पुणोवि कायव्व" तेवारें शिष्य "यथाश क्ति" कही फरी खमासमण देई इच्छाकारेण संदि सह जगवन् सामायिक पार्युं तेवारें गुरु कहे

" आयरं न मुत्तवं "ते सांजली शिष्य तहत्ति कहे ॥ पछी जमणो हाथ चवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो०' कहीने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार गणी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सामान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वमेराथी समजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लेवुं तेज्यां सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व विधि जाणवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् कुसुमिण उसुमिण राइउवट्टणि पायछित्तविसोहणत्थ काउस्सग्ग करुं इछं करेमि काउस्सग्ग "अन्नछ उससिएणं० „ कही चार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी, कहवं ॥ पछी पर्वोक्त देवसीनी रीतें जगवान

सर्हिं नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत्०कही येंाापछी विशाललोचन,०नमुत्थुणं,०अरिहंत चे इयाणं,०कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्०कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय कहेवी पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी,०सिद्धाण बुद्धाण,०कही अनुक्रमें चार थोयो कहीये ठेये, तिहा सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी नमुत्थुणं०कही भगवान् आदि चारने चार खमासमणे वादवा॥ पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अड्ढाइज्जेसु" कहेवुं ॥ पछी ईशान खुणानी सन्मुख श्रीसीमधरस्वामीनु चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहा सुधी सर्व करवुं ॥ पछी खमासमण देई श्रीसिद्धाचलजीनु चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यत कहीये ठेये, तिहा सुधी सर्व करवुं ॥ पछी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो॥

इति राइप्रतिक्रमणविधि. समाप्त. ॥ २ ० २॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमा वदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस कलाऽर्हतनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक हेवी. पछी खमासमण देईने इछाकारेण संदि सह भगवन् देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इ छाकारेण० पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुं एम क ही मुहपत्ति पडिलेहियें पछी वांदणां बे दीजें, पछी इछाकार० संबुद्धा खामणेण अब्भुठिओहुं अभिंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि अपत्तियं० ॥ कही इछाकारेणसं० ॥ पक्खिअं आलोएमि इछं आलोएमि जो मे पक्खिओ अ इआरो कओ०कही इछाकारेण सं० ॥ पखीअ तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प छी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बा रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायाये करी मिछामि दुक्कडं ॥सघसवि पक्खिअ दुचिंतिअं, दुब्भासिय, दुच्चिठिअ, इछाकारेण संदिस्सह भगवन् तस्स मिछामि दुक्कडं॥इछाका

रि ज्ञगवन् पसाउ करि पक्खि तपप्रसाद करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियें.—च उत्थेणं एक उपवास, बेआबिल, त्रण नीवि, चार एकासणा, आठ बे आसणां, बे हजारस झाय,यथाशक्ति तप करी (प्रवेश) कस्यो होय तो पश्ठी कहियें, अने करवो होय तो तहत्ति कही यें, तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहीयें. पठी वादणां बे दीजें पठी इछाका० ॥ पत्ते अ खामणेणं अप्नुठिउह अप्निंतर पक्खिअं खामे उ इछं खामेमि पक्खिअ पनरस दिवसाणं पन रस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पठी वांदणां बे दीजे पठी देवसिअ आलोइअ पम्किता इ छाका० ॥ ज्ञगवन्० पक्खिअपम्किमुं समपडि क्कमामि इछं एम कही करेमिज्ञत्ते सामाइयं०॥ कही इछामि पडिक्कमिउ जो मे पक्खिउ० कहे वुं पठी खमासमण देइ इछाकारेणसंदि०॥ प क्खिसूत्र पढु एम कही त्रण नवकारगणी सा धु होय तो पक्खिसूत्र कहे अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे पठी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पठी हेठा वेसी

जमणो ढिंचण उन्नो राखी एक नवकार गणी करेमि नंते० ॥ इछामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं कहेवुं पछी करेमि नंते० इछामि ठामि काउ स्सग्गं जोमे पक्खिउं० ॥ तस्सउत्तरी० ॥ अ न्नछ० ॥ कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी क हेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्स ग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही मु हपत्ति पडिलेहिनें वांदणां बे दीजें, पछी इछा का०॥समाप्त खामणेणं अप्नुठिउंह अप्निंतर० ॥ पक्खिअं० ॥ खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पक्खाणं पनरस दिवसाणं पनरस राइया णं जंकिंचि अपत्तिअं कही पछी खमासमण दे इनें इछाका० ॥ पक्खि खापणां खासुं. एम कही एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी एम खामणां चार खामवा. पछी देवसि प्रतिक्र मणामां वंदित्तुं कह्या. पछी बे वांदणा देइने ति हांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देव सीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे "ज्ञानादि"नीथोयो कहेवी.स्तवन अजि

खमा० इछा० सामायिक संदिसाहुं? इछं. खमा० इछा० सामायिक ठाउं? इछं कही बे हाथ जोडी नवकार गणी इछाकारी जगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी, गुरु 'करेमि जंते सामाइय' नो पाठ कहे तेमां एटलुं विशेष जे जावनियमं ने ठेकाणे जावपोसहं कहेवुं. पछी खमा० इछा० बेसणे संदिसाहुं? इछं खमा० इछा० बेसणे ठाउं? इछा. खमा० इछा० सझाय संदिसाहु? इछं. खमा० इछा० सद्याय करु? इछं कही,त्रण नवकार गणवा पछी खमा० इछा० बहुवेल संदिसाहु? इछा० बहुवेल इछं. खमा० इछा० बहुवेल करशुं इछं खमा० इछा० पडिलेहण करुं? इछं कहीने मुहपत्ति विगेरे पाचवाना पडिलेहवा. [1]मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बोलथी, कटासणुं २५ बोलथी [2]सुत्रनो कदोरो १० बोलथी अने धोतीयुं २५ बोल

---

१ मुहपत्तिना ५० बोल पाछल लख्या छे जेटा बोल होय त्यां ते ५० माहेना प्रथमना ग्रहण करवा

२ पोसहमा आनूषण पहेरवा न जोइये कदोरो सुत्रनो जोइये ते छोमी, पमिलेही, पाछो बांधीने ते संबंधना इरियावहीतेज वखत पमिक्कमना (वत्ने टकनी पडिलेहणामा समजवु

थी पमिलेहवु पछी खमासमण दइ, इछाकारी भगवन् पसाय करी पमिलेहणा पमिलेहावोजी. एम कही वडीलनुं अण पडिलेह्युं एक वस्त्र उत्तरासन पमिलेहवुं. पछी खमा० इछा० उपधि मुहपत्ति पमिलेहुं? इछं कही मुहपत्ति पमिलेहवी पछी खमा० इछा० उपधि संदिसाहुं? इछं खमा० इछा० उपधि पमिलेहुं? इछं कहीने पूर्वे पमिलेहतां बाकी रहेल उत्तरासण,मात्रु करवा जवानुं वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली विगेरे २५ पचीस बोलथी पमिलेहवा पछी एक जणे डंडासण जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरियावही पडिकमीने काजो लेवो. काजो[1] शुध्ध एटले तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उभडक बेसीने इरियावही पडिकमवा. पछी काजो यथा योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने परठववो. परठव्या पछी त्रणवार वोसिरे कहेवुं. पछी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव वांदे अने सझाय करे

---

१ काजामा सचित्त एकेंद्री नीकले तो गुरु पासे आलोयण लेवी त्रस जीव नीकले तो यतना करवी.

॥ पोसह पारवानी विधि ॥

खमा० दइ इरियावही पमिक्कमी, चउक्कसा यथी जयवियराय पर्यत कहीने, खमा० इंछा० मुहपत्ति पमीलेहुं ? इछं कही मुहपत्ति पमीलेहवी. पछी खमा० इछा० पोसह पारुं ? यथाशक्ति खमा० इछा० पोसह पार्यो. तहत्ति कही नवकार गणी चरवला उपर जमणो हाथ स्थापीने सागरचंदो० कहे ॥

पछी खमा ०इछा० मुहपति पम्हिु ? इछं कही मुहपत्ति पडिलेहीने खमा०इछा सामायिकपारु? यथाशक्ति खमा० इछा० सामायिक पार्युं. तहत्ति कही,चरवळा उपर हात स्थापी नवकार गणीने सामाइय वयजुत्तो कहे पछी विधि करता जे काइ अविधि थइ होय तस्समिछामी डुक्कमं कहे इति

हवे जेणे सवारे आठ पहोरनोज पोसहली धो होय ते साजना देव वांद्या पछी[1] कुंमल ली धा न होय तो लइने तथा मंमासण अने रात्री

[1] कुडल-रना पुजमा ते वे कानमा राखे जो गुमावेतो आलोयण आवे

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेलुं जाची रा
खीने पछी खमा० दइ इरियावही पमिक्कमीने
खमा० इग० स्थंडिल पडिलेहुं ? इछं कही
चोवीश माडला करे ते आ प्रमाणे–

आ मांमला वडी नीति लघु नीति विगेरे प
रठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते कर
वाना छे तेमा प्रथम संथारापासेनी जग्याए छ
मांडला करवा–

१ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
३ आघामे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
१ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
२ आघामे आसन्ने पासवणे अहियासे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे,
४ आघामे मज्झे पासवणे अहियासे,
५ आघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
६ आघामे दूरे पासवणे अहियासे,

१ अघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
२ आघाडे आसन्ने पासवणे आणाघाडे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
४ आघाडे मज्झे पासवणे आणाघाडे,
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
६ आगाडे दूरे पासवणे आणाघाडे,

बीजा ६ उपाश्रयना बारणानी माहेनी तर फना मान्डला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा ६ मान्डला उपाश्रयना बारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा ६ मान्डला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने करवाना तेमां पण त्रीजा ६ मान्डला प्रमाणे अणाघाडे शब्द कहेवो बाकीना शब्दो उपरना त्रण माडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मान्डला कर्या पछी इरियावही पडिक्कमीने चैत्यवदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत करे. इति श्रीतपगछ प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथखरतरगछप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करिकें सरि॥ तिहुअण जण अविलंघियाण जुवणत्त य सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंत्रणय पुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति झत्ति वर पुत्त कलत्तहि, धण्ण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणजुंजहि रजाहि ॥ पिख्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासप साइण, इयतिहुअण वरकप्परुरक सुरकहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णणहु ठ सुकुठिण, चरकुरकीणखणखुहुनरसल्लिअ सूलिण॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुतिपुणणव, जय धणंतरिपास महवि तुहुं रोगहरो जव॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मत तंत सिध्दिउ अपयत्तिण, जुवणब्जुअ अठविह सिध्दि सिझइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग

गंजइ, इच्छियसव्व अणव्व घव्व निव्वारइ दय करि, इरिअइं दरव सुपासदेव इरिअकरिके सरि॥५॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुध्दर सुरव र, रक्कस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थतित्थभत्तिभ्भरनिभ्भर, रोम चचिअचारुकाय किंणरनरसुरवर ॥ जसु सेवहिं कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु॥७॥ जय जोइअ मणकमलभसल भय पंजरकुंजर, तिहुअणजणआणंदचंद भुवणत्तयदिणयर॥ज य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभ णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवणुअवणु सुणु वणिउ छप्पणहिं,मुरकधम्मु कामत्थकाम नर नियनिय सत्थ हिं ॥ ज जायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिध्दउ, सो जोइअ मण कमलभसलसुह पास पवध्दउ ॥ए॥ भय विब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर लिअ नयणविसण्णुसुण्णगग्गिरगिरकरुणय॥ तइ

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिअ गुरुदर, महवि
जविसजासइपास नय पंजरकुंजर॥ १० ॥ पइं
पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह
पवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मणिमणुसजण
पुणअप्पाणं सुरनर,इयतिहुअण आणंदचंदज
य पास जिणेसर॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
टकारव पिल्लिअ, वल्लरमल्ल महल्लनत्ति सुरवर
गजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहि
महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जयपाससुहु
भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थसत्थविच्छरि
अ पहानर॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो
यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुव
णत्तय दिणयर॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि
त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थवोह कं
दलदल रेइणि॥जायइ फलभरभरिय हरिय डु
हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणव
ल्लिउल्लूरियडुहवणु, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डु
ग्गइगम वारणुं॥जयजंतुहजणएणतुल्लजंजणि

यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं
तुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवासदरिअ
परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दा
सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल
चिट्ठहि, इय तिहुअण वणसीह पास पावाइ प
णासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कररं
जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निल्लु
प्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग
अगजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणयपुर
ठिअ ॥ १७ ॥ मह्मणुतरलपमाणनेय वायावि
विसठ्ठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आल
सविहिलघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण्ण
पवत्तउ, इयमह्माअवहीरपासपालहिविलवं
तउ ॥ १८ ॥ किंकिकप्पिउणेयकलुणकिंकिंवनज
पिउ, किं वनचिठ्ठिउकिठ्ठदेवदीणय मविलंबिउ
॥ कासुनकियनिप्फल्लल्लुअह्मेहिंदुहत्तइ, तह
विनपत्तउताण किंपि पइ पहु परिचत्तइं॥१९॥तु
हु सामिहुतुहुमाय वप्पतुहु मित्तपियंकरु, तुहुग
इतुहुं मइतुहिज ताण तुहु गुरु खेमंकरु॥हउ दु
हभरभारिअवराउ राउलनिब्भग्गउ,लीणउ तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ प
इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल,
मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवछल ॥२१॥
पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्नपयोअण,तुहुं जिण
पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण,माअवहीरिअजु
ग्गउविमइं पासनिरंजण ॥२२ ॥ हउं बहुविहदु
हतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु,हउं सुयणहकरुणि
क्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिणपासअ
सामिसालुतुहुं तिहुअणसामिअ,जं अवहीरहि
मइं झखंतइय पासनसोहिअ॥२३॥जुग्गाजुग्ग
विभागनाहनहुजोअणतुहसमउवणुवयारसहा
वभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किघण
नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधवपासनाह
मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
विअन्नविकिविजुग्गय, ज जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गउ ॥२५॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमए
हि दीएह, जं पास विउवयारुकरइ तुहनाहसम
ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिए तुम्ह प
सीयह, कि असुंण तंचेव देव मामइअवहीरह
॥ २६ ॥ तुह पत्तण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण,हउ डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुक्कउ उस्सु
यमण ॥ त मसउ निमिसेण एण एउविजाइ ल
ब्भइ, सच्च ज ब्रुक्खियवसेण कि उंवरु पच्चइ ॥
॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप
यासिउ, किजाउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि
उ ॥ असु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिसदयास
उ, जइ अवगिएसि तुहिजअहहकिहोइसहया
सउ ॥२८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे
लविउ, तउजाणुजिणपासतुम्हहउअगीकरिअ
उ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउंहावण,
रक्खतह नियकित्तिणेयजुजाइअवहीरण ॥२९॥
एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अण
लिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥
इय मइ पसियसुपासनाहथम्भणयपुरट्ठिअ, इय
मुणिवर सिरि अभयदेव विणवइ अणिंदिअ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक तीर्थराज श्रीपार्श्व नाथस्तवनम् ॥

॥ पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभ. ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभा ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्त परम ठ जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय छ हत्त सत्ताण ताणय, थंभणयठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवुत्तु, भव अवणता णत गुण तुऊ त्तिसंऊ नमोत्तु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक पडिक्कमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशेषत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक भाषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रहा पोशह शा लाये (अथवा) गुरुकने अथवा घरने एक प्र देशे (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पहिले ह्या वस्त्र पहिरी (जो) गुरुनो जोग न हुवे (तो) आप प्रमार्जित थानकै खमासमणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापे (पछे)खमासमण देई कहे इछाकारेण संदिस्सह जगवनसामाय कमुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहे पमिलेह) पछे इछं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले हे जजो होय खमा० कहे ॥ इछा० स ॥ ज० सामायक सदिस्साऊं (गुरुकहे संदिस्सावेह) पछे इछ कही, वलेख० देने कहे इछाका० सं ज० ॥ सामायिक ठाउ (गुरु कहे ठाएह)इछं कही खमासमण देई अर्धावनतकाय जजो रही तीन नवकार गुणी कहे इछकार जगवन पसा व करी सामायक दंड उच्चरावोजी (गुरु कहे उचरावे मो)पछे करेमि जंतेसामाइयं(इत्यादि) सामायक सूत्र गुरु वचन अनुजापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई॥ इछा० सं० ज० इरियावहिय पडिक्कमामि (गुरु कहे पमिक्कम हे) पछे इछ कही॥ इछामि पडिक्क मिउ इरियावहियाए (इत्यादि पाठ कहे) इ रियावही पडिकमि॥ एक लोगस्सनो काउसग्ग करी णमो अरिहंताणं कही काउसग्ग पारीमुखे प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इछा० सं०

ज० वेसणो संदिस्साउं(गुरु कहे संदिस्सावेह) पछे इछं कही खमा० देई इछा० सं० ज० वे सणोठाउं (गुरु कहे ठाए है) पछे इछं कही खमासमण देई ॥ इछा० सं० ज० सिझाय सं दिस्साउं (गुरु कहे सदिस्सावेह) पछे इछ कही ॥ पांगरणोपडिग्घाउं (गुरु कहे पडिग्घा एह) पछे ॥ इछं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करे. इति प्रजातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच गाथा पहलाथी और दोय गाथा छेडानी कही जय महाशय २ कहीने सक्रस्तव आदि चारे थोज देववंदन करीनीचा वेसीने नमोछणं० कहे पछे वादणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपा ध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानजट्टारक श्री पूज्य जीनो नाम लेइ वादीये ३ सर्व साधु साध्वी वाडं ॥ पछे सवसवि राईय देवशिय० करेमि जते० इछामि ठामि० तस्सुतरी० अन्नत्थू० आठ नवकारनो काउसग्गकरे मुंहडे लोगस्स कहे पछे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पडिले

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमी० पछें ठाणेकमणे० पछे चोपुरा दिवसना लघु अतिचार ॥ अढार पापस्थानक आलोई सव्व सविदेवसिय० पछे तीन नवकार तीन करेमि० पछे वंदेत्तूसूत्र कहे पछे वांदणा दोय देवे ॥ पछे अभुठिउंमि कही फेर २ वादणा देई ॥ आय रिउ उवझाए० करेमि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० दोय लोगस्सनो काउसग करे मुंहडे लोगस्स कहे ॥ वदण० अन्नत्थ० पछे एक लोगस्सनो काउ सग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी वड्ढ० वंदण० अन्न० एक लोगस्सनो काउसग्ग मुंहडे सिध्धाण बुध्ध ण० पछे सुहदेवीयाए करेमि काउसग्गं॥अन्न० १ नवकारनो काउसग्ग करे ॥ सुवर्णसालिनीदे यात्० एक गाथा कहे पछे क्षेत्रदेवीयाए करेमि काउस्सग अन्न० १ नवकारनो काउसग करे पछे यासापेत्रगतासति गाथा १ कहे १ नव कारगुणी छठे आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे दोय वार वादणा देवे ॥ इछामो अणुसठियं नमोखमासमणाण ॥ नमोस्तुवर्ध्धमानाय० तीन गाथा कहे ॥ नमोत्थुण कही वमोतवन कहे,

पछे श्री आचार्यजी मिश्र १ श्रीउपाध्यायमिश्र
२ सेवसाधु साध्वी वांडं अक्षा इछो सु० कह
ना फेर खमासमण देइ ॥ पछे देवसीप्रायश्चित्त
विसोधवानिमित्तं करेमि काउसगं अन्न०४ लो
गस्सनो काउस्सग करे पछेमुंहडे लोगस्स कहे
पछे क्षुद्रोपद्रव उड्डावनिमित्तं करेमि काउसग्गं
अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो
गस्स कहे ॥ पछे सिझायं संदिस्साएमि सिझाय
करेमि ॥ पछे श्रीसेट्ठी कहे ॥ पछे नमोत्थुणं०कही
गेटो तवन कहे पछे जयवीराय कहे पछे सिरथं
नणछियपाससामिणो० कहै पछे श्रीथंभना पा
र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स
ग्ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग्ग
करे पछे श्रीखरतरगछशृंगारहारजंयमयुगप्र
धानभट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा
राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि
काउसग्गं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग्ग करे॥
इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो
गस्सनो काउसग्ग पारी एक नवकार गुणी चै
त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै ॥ नमोत्थुण जय

वीरायसूधी पढै लघु शांति कहे पछे सामायक पारे

॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥इछा॰ सं॰भ॰॥ चैत्यवंदन करुं (गुरुं कहे करेह) इछ ॥ कही जय उसामी ? रिसहसेत्तुंज उजित पहुनेमि जिण जयउ वीरसच्चउरमंमण भरुअछहिमुणिसुव्वयम हुरिपास डुहडुरियखंडण अवरविदेहितिछयर चिहु दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसं पयं वंडंजिणसव्वेवि कम्मभुमिहि ? पढमसंघयण उक्कोसउ सत्तरिस उजिणवराणविहरत लप्नई नवकोडिकेवलिण कोडिसहसनव साहू संपय सं पइ जिणवरवीसमुणिडुयकोडिवरनाण समणा कोडिसहसडयथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण वइ सहस्सा लक्का छपन्न अठकोडिउं चउसय छ्यासिया तिल्लुके चेइये वंदे वंदेनवकोडिसयं पणवीस कोडि लक्ख तेपन्ना अठावीस सहस्सा चउसय अठासिया पडिमा॥जं किंचि इत्यादि जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करे ॥ पछे खमा॰ देई ॥ इछाकारेण सदिस्सहे भ॰ कुसुमिण डु स्समिणराई प्रायछित्त विसोहणछ करेमि काउ

सग्गं (गुरु कहें करेह) अन्न० ॥च्यार०॥४॥ लोगस्सनो काउस्सग करी पारी प्रगट लो गस्स कहै ॥ पडिक्कमणो ठाववानो अवसर हूवां १ खमासमण देई॥ (श्री आचार्यजीमिश्र) कही वांदियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय जी मिश्र)पछै वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानभ ट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ वले खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार खमासमणें पडिक्कमण ठावी॥इछकार समस्त श्रा वको वांदूं(कही)गोडा लिये वेसी मस्तक नमावी दोय हाथे मुहपती मुखे देई सव्वसविराईय (इ त्यादि कहै) पिण इच्छाकारेण संदिस्सह (इसो न कहै) पछै सक्रस्तव कही ॥ ऊभो थई करे मि० इच्छामि ठाउ काउस्सगं० (इत्यादि पाठ कही) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध नि मित्तें १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमिते लोगस्स कही सव्वलोए अ रिहंत चेइआणं ॥ करमि काउसग्गं इत्यादि कही १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वड्ढे (कही)

सुयस्स जगवउ करेमि का० वंदणवतीयाए (इ त्यादि कही) काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमांहे चौपुहरी रात्रि मांहे सातलाख इत्यादि आलोय णचिंतवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पछी) काउसग्ग पारी ॥ सिध्धाणं बुध्धाणं कही सडा साप्रमार्जनपूर्वक बेसी मुहपती पडिलेह पछेहो वादणा देई अभ्भुठिउमि खामि वादणा वेदीजे तेविधि देवसीनी परे जा णवुं पछे सबसवि० ॥ इछा० ज० ए पद क हवे करी आलोया अतीचारनो प्रायछित मागे पछे इछ तस्समिछामि डुकडं ॥ पछे जीमणो गोडो उंचो करी तीन नवकार तीन करेमि० इछामि पडिक्कमिउ जोमेराईयो इत्यादि कही वंदितूसूत्र तनिहे तच गरिहामि सूधी कहे ॥ पछे वादणा देवे । पेछे अभ्भुठि० कही फर वा दणां वेदेवा पछे० आयरिउउ वज्ञाए० करेमिभं ते० इछा मिठामि काउसग्गं । तस्सुतरी० अन्न छु० ६ लोगस्सनो काउसग्ग अथवा चोवी न वकारनो काउसग्ग करे ।पछे मुहमे लोगस्स क हे पछे मुहपत्ती पडिलेहे वादणां देवे सग

ला तीर्थानें याद करे पछे पच्चरकाण करे पछे इछामो अणुसठिं (इसोपद कहे,) पछे नमोख मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य पछे संसारदावा० (अथवा) परसमय तिमिरतरणं तीनगाथा कहे नमोत्थुण० अरि हंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्न त्थू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पछे थूईरी १ गाथा कहे पछे लोगस्स कही वंदण० अन्नत्थु १ नवकारनो काउसग्ग पछे थूईरीडुजी गाथा कहे पछे पुष्करवरदी वढे०वंदण०अन्नत्थ०१ न वकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहे पछे सिद्धाण बुद्धाणं कहे पछे १ नवकारनोकाउस ग्ग करी पछे थूईरी चौथी गाथा कहे पछे श्री आचार्यजी मिश्र१ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० स र्वसाधूवांडं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥पछे श्रीसीमं धर चैत्यवदन करवो पछे सिद्धगिरीनौचैत्यवंद न करी सामायकपारवा ॥

॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वं दित्तु सूत्र पर्यंत देवसी पडिक्कमी पछे इछाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोईयं पडिकंतं

पक्खी मुहपत्ती पडिलेह पछे दो वांदणा देवे ॥ पाखी पडिक्कमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे अथवा चोमासी वा संवत्सरी, होय तो सोही नाम लेवे पक्खोवइ कत्तो कहणो ॥ पछे वादणा दिया पछे पुन्यवंतो छींक जयणा करज्यो मधुर स्वरे पडिक्कमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो माण्डल माहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे (थानके) पाखी चोमासी छमछरी जणज्यो ॥ पछे इछाकारेण संदिस्सह जगवन संबुध्धखाम णेणं ॥ अप्नुठिर्जमि अप्निंतर पखीयं खामेमि इछ खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पनरस राईणं (चोमासी) माहे चउन्हं मासाणं अठन्हं पखाणं एकसोवीसराय दियाण (संवत्सरी) पडि क्कमणो हुवे तो डवालसन्नमासाणं चोवीसन्ने पषाणं तीनसे साठ राय दियाण जंकिंचिपतियं सर्वकहणो पछे इछाकारेण सदिस्सह जगवन पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउ अयारोकउ० सर्वकहणो पछे नाणंमिदंसणंमिअ० ए.६ अ तिचार आलोयणा कहणा सव सवि पखिय ३ सर्व कहणो पछे वादणा वे देवे पछे इछाकारेण

संदिस्सह नगवन् देवसिय आलोइय पमिक्कंतं पत्तेय खामणेणं अब्भुठिर्जमि अभितरपखियं लारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पठे वांदणा देवे पठे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेत् कहे पमिक्कमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३ इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि नंते कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुध्दनिमित्तं करेमि काउसग इछामि ठा मि काउसगं जोम० पठे तस्सुतरी० अ न्नछ० पठे पाखी पडिक्कमणे १२ चोमासे २० संवत्सरी ४० लोगस्सनो काउसग करे पठे प्रगट लोगस्स कहे पठे मुहपत्ती पमिलेह दोय वांदणा देवे पठे इछाकारेण छदिस्सह नगवन् समाप्त खामणेणं अब्भुठिर्जमि आभितर पखीयं ३ लारे कह्यो जिणतरे कहे पठे इछा०न०खाम णाखासु पुन्यवंतो एकखमासमण देई तीन तीन नवकार गुणी चार वार पाखीसमाप्त खामणाषा मो पठे खामणा खामी पठे पुन्यवतोपाखीने लेखे एक उपवास अथवा दोय आंबिल तीन नीवी (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिज्झाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने स्थानके देवसी जाणज्यो इम डुणाडुण चोमासि (अने) त्रिगुण सवत्सरीये सर्व कहवो पछे देवसी प्रतिक्रमण ठेज्यो ज्याथी वांदणा अब्भुठ्ठिमि फेर वादणा इत्यादि सर्व करणो देवसीकीरीते समजणो ॥ इति खरतरगच्छसामायिक (तथा) पच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आचलगच्छ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इच्छकार सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता पूछी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो उसग्ग करी(प्रगट)लोगस्सक है (पछी) इच्छाका०सं०जग० गमणागमण आलोउं तेकहे छै

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जाता आव ता पृथ्वी काय अप काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय,त्रसकाय, नील,फूलमाटी,पाणी,कण,कपाशिया, स्त्रीआदी तणो सघट हुवो होय ते सविहुमन वचन कायाये करी तस्स मिच्छामिडुकडं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिकठा वा त्रण नवकार गणुजी एम कही नीचा वेसी तीन नवकार कहे पठी उभा थई इछा० भ० जीवराशी खमाउं पछे सात लाख कही अढार पाप स्थानक आलोवे पठी इछा० भ० गुरु स्थापनाक रुजी एम कही पचेंद्रिय कहे इति(प्रथम)खमासमण ॥ खमासमण पूर्वक नीचे वेसीने इछा० भ० द्रव्य, क्षेत्र काल भाव धारुंजी १

॥ अथ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ॥

॥ द्रव्य थकी लूगमां,लत्ता, घरेणां,गाठा पाथरणुं नोकरवाली,धास्या प्रमाणें मोकलां ठे. क्षेत्र थकी उपागराना बारणानी माहेली कोरें काल थकी समायिक,निपजे,तिहासुधी,भावथकी यथा शक्तिने राग द्वेष रहित व्रतीसंघातें बोलवुं गुर्वा दिक संघातें बोलवानो आगार ठे अव्रती संघातें बोलवानु पच्चरकाण ठे ए रीतें ठे कोटिये करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा (एक)नवकारनो काउसग्गकरुं जी.एम कही उभा थइनेएक नवकार गणीये ॥ पठी इछाकारेण संदिसह भगवन्! सामा यिक व्रत उच्चार करावो

जी पछी गुरु (तथा) वडेरो करेमि भंते कहे ॥ पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बीजा आवश्यक भणी इरियावहियं पडिक्कमुं जी. एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पछी तसउत्तरी०कहेवी पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयुं,पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासगना मुहपत्ति पडिलेहण करवुं पछीइच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजा आवश्यक भणी आवश्यक वांदणा करु जी पछे वांदणा देवे एम गुरु समीपें वांदणा बे वार दीजे, त्यां बीजी वारने वांदणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं, अने राइपडिक्कमणे, राइउं वइक्कंतो कहेवुं (परकीये) परिकउं वइक्कंतो कहेवु(चउमासिये) चउमासिउं वइक्कंतोकहेवु (सवत्सरिये) संवछरोवइक्कंतो कहेवुं ए वांदणा देता ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथु खमासणथयुं. इहा पोंताने मुखें, संध्या होय तो चउविहार अने सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनु पच्चरकाण मनने ज्ञावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥ पछी एक जण उन्नोथइने इच्छामि खमास मण पूर्वक इच्छाका० सं० ज्ञगवन्! चोथा आवश्यक ज्ञणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इच्छं अरिहंतदेव, सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, ज्ञावतो समकित प्रतिपालुं, उव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं ए श्रीसमकित तणा पाच अतिचार शोधुं शंका, कंखा, वितिगिछा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखं डी संथुउं. ए पाच अतिचार मांहे जे कोई अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं, मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कम ॥

१ ए बार व्रतमाहे पहेलुं प्राणातिपात विर मण व्रतस्थूल वेंडियादिक त्रस जीव निरपराध उपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरं

जी पठी गुरु (तथा) वडेरो करेमि भंते कहे ॥ पछी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन्! बीजा आवश्यक भणी इरियावहिय पडिक्कमु जी एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पठी तसउत्तरी०कहेवी पठी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेता दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयु,पठी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इछाकारेण सदिस्सह भगवन् ठेभानुं पडिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासंगना ठेभातु पडिलेहण करवुं पठीइछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजा आवश्यक भणी आवश्यक वांदणा करुं जी पछे वादणा देवै एम गुरु समीपे वादणा बे वार दीजें, त्या बीजी वारने वांदणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवु, अने राइपडिक्कमणे, राइउं वइक्कतो कहेवुं (परकीये) परिकउं वइक्कंतो कहेवु(चउमासिये) चउमासिउं वइक्कंतोकहेवु (सवत्सरिये) सवछरोवइक्कतो कहेवु ए वादणा देता ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति चार शोधु तेनाहमे, तक्करप्पजंगे, विरुध्दरज्जाइ क्कमे,कूम तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे॥ ए पाच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुर्ज होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि हामि डुक्कमं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्तें स्वदारासंतोष, परदाराविवर्जनारूप ए चोथा शीलव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागम णे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनगक्रीमा, पर विवाहकरणे, कामनोगतिवाभिलासे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुर्ज होय, ते सवि हुं,मने वचने,कायायें करी मिहामि डुक्कडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खि त्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिर ण, सुवण, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय. नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पाचमा परिग्रह परिमाणव्रततणा पाच अतिचार शोधुं खित्त वत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरणसुवणपमाणाइक्कमे, धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

ने जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ बंधे, वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवुछे ए ॥ ए पाच अतिचा रमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं मन, वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥१॥

२ बीजु स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचविध, कन्नालीए, गोवालीए, नूमालीए, नासावहारे, कूडसरिकजे ए पाच मोटकां कूम्म आपणने काजे, स्वजनने काजें धर्मने काजे मूकी, परकाजें कूरुं बोलवा नियम, सूक्ष्म अलिक तणी जयणा करु ॥ ए बीजा स्थूलमृषावादविरमणव्रततणा पाच अतिचार शोधुं सहस्साभरकाणे, रहस्साभरकाणे, सदारामंतभेए, मोसोवएसे, कूमलेहकरणे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउ होय, ते सविहु मने, वचने, कायाये करी मिछामि डुक्कड ॥ २ ॥

३ त्रीजु स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीउ पियारुं अणदीधु लेवा नियम. सूक्ष्म तृण, इंधण, पथि पतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

हें जे कोइ अतिचार हुर्ज होय, ते सवि हुं म
ने, वचने, कायायें करी मिछामि छक्कडं. ॥ ७ ॥

॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण
कम्मे, साम्री कम्मे, जामी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत
वाणिज्जे, लस्क वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वा
णिज्जे, केस वाणिज्जे, जतपीलण, कम्मे निल्लंछ
ण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो
सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादान
स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर क
र्मादानमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, तेस
वि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि छक्कडं.

ढ आठमुं अनर्थदंमविरमणव्रत, चतुर्विध.
अवस्ताणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे,
पावकम्मोवएसे॥ए आठमा अनर्थ दंमविरमण
व्रततणा पाच अतिचार शोधु ॥ कंदप्पे कुकुई
ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवत्रोगपरिजो
ग, अइरेगे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ
अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने,
कायायें करी मिछामि छक्कडं ॥ ढ ॥

ए नवमुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

णाइक्कमे,कुवियप्पमाणाइक्कमे ॥ ए पांच अतिचारमांहेजे कोइ अतिहार हुउं होय, ते सवि हु मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

६ छहु दिशिव्रत त्रिविधें जाणवु उड्ढदिसिवए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए छठा दिगिव्रततणा पाच अतिचार शोधुं ॥ उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढि,सयतरध्धा ॥ ए पाचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हु मने, वचने, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमु भोगोपभोगव्रत द्विविध भोजनत कर्मतश्च तत्र भोजनत. "सच्चित्तदव्व विगइ, उवाण तबोल चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बभ दिसिन्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए सातमा भोगोपभोग व्रत तणा पाच अतिचार शोधु ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिबध्धाहारे, अप्पोसहि भरकणया डुप्पोसहि भरकणया तुछो सहिभरकणया ॥ ए पाच अतिचार मा

जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहि यउच्चारपासवणभुमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जि अउच्चारपावसण भूमि, पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुकडं ॥ ११ ॥

१२ वारमुं अतिथिसंविभागव्रत, अतिथि संविभागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्न पाणाइणं, दवाणं, देस, काल, सध्दास क्कार कम्मजोए पराइ भत्तीए आयाणुग्गह वु ध्दिए संजयाण दाणं ॥ए वारमा अतिथि संवि भाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पांचअ तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होयतेसवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुकडं १२

॥ संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधु. इ ह लोगासंसप्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जि विअासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगा

द्यजोगपरिवज्जण,निरवज्जजोग आसेवणं च॥ए नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं मण डुप्पणिहाणे,वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे,सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिह्यामि डुक्कमं. ॥ए॥

१०दशमु देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयगहियस्स, दिसापरिमाणस्स पइदिणं परिमाणकरण ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पाच अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पजगे पेसवणप्पजगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ वहियापुग्गलपरक्खेवे ॥ ए पाच अतिचार माहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिह्यामि डुक्करु ॥ १० ॥

११ इग्यारसुं पौषधव्रत, चिहुं ज्नेदे जाणवुं आहारपोसहे, सरीर सक्करपोसहे, वज्नचेरपोसहे, अवार पोसहे ॥ ए इग्यारमापोषध व्रत तणा पाच अतिचार शोधु ॥ अप्पमिलेहिय डुप्पमिलेहिय सिज्जासयारे, अप्पमज्जिय डुप्पम

जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पमिलेहि यउच्चारपासवणनुमि, अप्पमजिअ डुप्पमजि अउच्चारपावसण नूमि, पोसहोववासस्स सम्मं अणुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारसुं अतिथिसंविन्नागव्रत, अतिथि संविन्नागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्न पाणाइणं, दवाणं, देस, काल, सध्दास कार कम्मजोए पराइ नत्तीए आयाणुग्गह बु ध्दिए संजयाण दाणं ॥ए बारमा अतिथि संवि नाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पाचअ तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होयतेसवि हु मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं १२

॥ संलेषणा तणा पाच अतिचार शोधु. इ ह लोगासंसप्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जि विआसंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामन्नोगा

संसप्पजंगे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं

॥ एवंकारे श्री समकित मूल बार व्रतविषे पंच्याशी अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार, अनाचर, अतिक्रम, व्यतिक्रम, हुउ होय तथा जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, बादर, कानो, मात्रा, मिंडी पद, अक्षर, उंगे, अधिको, हलवो, जारी, आगल,पाछल, कह्यो कहेवाणो होय ते सविहु मने वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं॥

॥ देसावगासिञ्ज उवजोग परिजोग पच्चरकामि अन्नहणाजोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥ इति लघु अतिचार संपूर्णम्. ॥

॥ ए पडिक्कमणानामें चोथु आवश्यक, अने पांचमु खमासमण थयुं पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इछाकारे० संदिस्सह जगवन् चैत्यवदन करु जी ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इछ ॥ जय जय महाप्रजु, देवाधिदेव, स

वंझ, श्रीवीतराग देव ॥ मुह दीठुं परमेसर, सुंदर सोम सहाव ॥ भूरि भवंतर संचिउं,नठो सो सवि पाव ॥ जे में पाप किया बालपणे, अहवा अन्नाणे ॥ अणभवंतर सो सोखंडज यो परमेसर तुह मुंह दिठं सिरि पास जिणेसर ॥ पास पसी पसाउ करी बीनतमी अवधार ॥ संसारडो बीहामणो स्वामीआवा गमणनिवार॥ हवडाते सुलरकणा जेजिनवर पूजंत॥ एके पुणे बाहिरा सो परघर काम करंत कवणेवामीवाविया कवणे गुंथ्या फूल ॥ कवणे जिनवर चाढिया भाव सरीसां मुल ॥ वामी वेलो महोरीयो सोवन कुंपलीए ॥ पास जिणेसर पूजिये पंचेअंगुलीए ॥ दो धोला दो सामला दो रत्तोपल वन्न मरगय वन्ना कुन्नि जिण सोलस कंचनवन्न ॥ नियनिय मान कराविया, भरहेस रनयणानद ॥ ते में भावें वदिया, ए चोवीसे जिणंद ॥

॥ वहु ॥ कम्मभूमीहिं, कम्म भुमीहिं, पढम संघयणि, उक्कोसयसत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भई,नवकोमीहिं केवलीण ॥ कोमीसहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि,

विहु कोडीहिं वरनाण, समणह कोमी सहस्स डुअ, थुणिसु निच्च विहाण ॥ जयउ सामीश्रि सह सिरि सित्तुंजी उज्जंतपहु नेमिजिण; जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ नरुअछेहिं मुणिसुव्वय मु हरि पास डुह डुरिय खंमण, अवरविदेहि तिञ यरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीअणागय सपइय,वदू जिण सव्वेवि ॥ सत्तावणइ सहस्सा, लक्खा उपन्न अठकोडीउं ॥ पंचसयं चउत्तीसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहा चार स्तवन अथवा अष्टोत्तरी कहेवी-पछीजग्रा थइने उवसग्गहरं कहेवुं पछी, वेसीनें जंकिचि नाम तित्थंसग्गे पायालि माणुसे लोए॥ जाइ जिणबिबाइं, ताइ सव्वाइ वंदामि ॥ पछी नमुत्थुण (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए त्रहु खमासमण)पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण सदिसह नगवन्! गुरुवंदना करु जी एम कही गुरुवंदना कहीयें ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अट्ठाजेइसु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म नूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडि

ग्गह धारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वय धारा, अढार स
हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सवे
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि
रिअजरक्खिय, गुरुणो तप्पट्टिय पुज्जजयसिंहा
॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तउ गुरु
णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसि पइअ
जियसिंह वरगुरुणो ॥देविंद सिंहगुरुणो तप्पय
सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंहतिलसूरी,
तप्पइ सिरिमहिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग
गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराउ ॥ ५ ॥ सिरि
जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिध्धंत सायरो सुगुरु ॥
सिरिभावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो
॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कल्लाण सा
यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कल्लाण
कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्टि पुव्व पुव्वय नाणु
विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि,
तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥श्रीकीर्तिसागर
सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंद्रसागरसूरि
श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि
वेकसागर सूरियं वंदे, अचल गच्छनायकं वंदे.

विधिपक्षगच्छनायकं वंदे पहेले पाटें सुधर्मास्वामी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रभवस्वामी, चोथे पाटे सिज्जंभवसूरि, पांचमे पाटें यशोभद्रसुरि, छठे पाटें संभूतिविजय सुरि, सातमे पाटे भद्रबाहु स्वामी, आठमे पाटे थूलिभद्र स्वामी, एवा पाटानु पाट छेला श्री डुप्पसहनामा आचार्य थाशे, तेने महारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपक्षगुरु वंदन ॥ ए सातमुं (खमासमण.)

पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं, सज्झाय सांभलु जी. अहीं नवकार कहीने सज्झाय कहेवी, ॥

॥ अथ सज्झाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज्झ, अरिहंता मुज्झ देवा ॥ अरिहंता कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मुज्झ सिद्धायमुज्झ देवया ॥ सिद्धाय कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगल मुज्झ आयरियामुज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं

मुज्ञ, उवज्ञाया मुज्ञ देवया ॥ उवज्ञाया
कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥
साहु मंगलं मुज्ञ, साहु मुज्ञ देवया॥ साहु कि
त्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ ए पंचे
मंगल मुज्ञ, ए पचे मुज्ञ देवया ॥ ए पचें कि
त्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो
पंच एमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाण
च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगल ॥ ७ ॥ इति स
ज्ञाय ॥ ए आठमु खमासमण ॥ ॥

पठीइलामि खमा०इलाकारेण संदिसह
जगवन् पांचमा आवश्यक जणी दैवसिक प्रा
यश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सग्गं.अन्नत्र०
इत्यादिककहीने चदेसुनिम्मलयरा सुधी
चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पठी
नमो अरिहंताणं, कहीने काउसग्ग पारी
पठी प्रगट लोगस्स कहीये. ए (नवमुं) ख
मासमण फरी इलामि खमासमण पूर्वक इला
कारेण संदिसह जगवन् अजिनव काउस्सग्ग
ठाउं. (इलं) अजिनव अगेप डुक्खक्खय
कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्ग अन्न०

इत्यादिक कहिने " सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं " पर्यंत (पांच) लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पछी नमो अरिहंताणं ए पद कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो ए (दशमुं) खमासमण (अने) पाचमु आव श्यक पूरु थयु, एणें करी पडिक्कमणामांजे अ शुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्स ना काउस्सग्गथी शुद्ध थाय छे ॥

पछी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बइहा आवश्यकभणीपच्चरकाण वां दणा करू जी एम कही बे वार वादणं दीजे पछीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं ए अगीयारसुं खमासमण अने छठ्ठु आवश्यक पूरु थयु

पछी खमासमणपूर्वक हेठा बेशी ने इच्छा कारेण सदिसह भगवन् ! सामायिकीपारवा त्रण नवकार मनमा गणवा पछी नमो अरिह ताणं ए एक पद प्रगट कहीने इच्छाकारेण सं दिसह भगवन्(सामायिक पारवा गाथा भणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ ज ज मणेण बद्ध, जं ज वायाय भासियं

पावं ॥ काएण वि डुक्कयं, मिछामि डुक्कडं त
स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज भ
मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुज्झवि तेह खमं
त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, छव्विह जीव
निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुझ मन वेरन
थाय ॥३॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स
खंम्मियंएगो एगोपुणसामाइयकरेइन पहुप्पयएत
स्स ॥४॥ कुणे पमाए वोलीडं, हुई विरुद्धबुद्धि॥
जिण सासण मे वोलउं, मिछा दुक्कड सुद्धि ॥५॥
॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं,
तीरिअं,किट्टिअं,आराहिअं,विधें,लीधु,विधेकी,
धुं, विधें पाल्युं, विधें करता कीसी अविधि,अशा
तना हुइ होय, ते सवि हूं मनें, वचनें कायायें
करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥पाटी, पोथी, कवली,
ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय
गुरुने आसने,वेसने,उपगरनेपग लगाड्यो,होय
ज्ञान द्रव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि
हुं मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं. अ
ढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

जे कोइ प्रज्ञु श्री वीतराग देवनी आज्ञा पाले पलावे, जणे जणावे, अनुमोदे, तेहने महारी त्रीकाल वदना होजो सीमंधर प्रमुख वीश विहरमान जिनने महारी त्रिकाल वदना होजो, अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्तमान चोवीशीने महारी त्रिकाल वदना होजो. ऋप ज्ञानन, चद्रानन, वर्द्धमान, वारीपेण, ऐ चार शाश्वता जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो, दश मनना, दश वचनना बार कायाना ए बत्री श दोषमांहेलो सामायिकव्रतमाहे जे कोइ दोप लाग्यो होय, ते सवि हु, मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कम, साचानी सद्दहणा, जूठाना मिछामि डुक्कड पछी त्रण नवकार मनमा गणी त्रण खमासमण देइजयणावपूर्क उठवु ए (बारमु) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमण

॥ अथ राइपडिक्कमण ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इछाका र० कहीने इरियावही० पडिकमी पछी तस्स उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं एटले मार्गनेविषे जाता आवतां० ॥ ए कही पछी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें. पछी जीवराशि खमावी अढार पाप स्थानक आलोइ पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही द्रव्य, क्षेत्र,काल, भाव धारवा पछी एक नवकार गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पछी फरी बीजा आवश्यक भणी इरियावही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कही पछी त्रीजा आवश्यक भणी इहं अभिभव अशेष दुरकरकय कम्मरकय निमित्त(पाच)लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स एक प्रगट कही, पछी कुसुमिण दुसुमिण उद्दामि निमित्त करेमि काउस्सग्गं एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो.पछी एक लोगस्स प्रगट कही पछी उत्तरासंगनोठेहमो पडिलेहीपछीचोथा आवश्यकभणी वेवार वादणां देइने पछी एकजण उभोरही पांचमाआवश्यक भणी लघु अतिचार कहे. पछी चैत्यवंदन कही (चार) स्तवन कहेवां. पछी

उवस ग्गहरं० नमुत्थुणं०कही गुरु वंदन करी सज्झाय कहीयें, पछी छठा आवश्यक त्रणी वा दणा वे वार देइने पच्चरकाण करीये. पछी सा मायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें पछी 'जंजं मणेण वद्ध' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण समाप्त करीये ॥ इति विधिपक्ष प्रतिक्रमण· स०

॥ अथ लोकागच्छ प्रतिक्रमण विधि ॥

सामायक लेवानी विधिः

प्रथम पोंताणाना सर्व वस्त्र पडिलेहवां त था यत्नायें आसनियुं पाथरवुं, ते पछी गुरुने इच्छामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वा दणा देवा, पछी श्रीमधरजीनें त्रणवांदणादेई पछी नीचे वेसीने नवकार गणवो, पछी पचें दिअनो पाठ कहेवो पछी इरियावहि० तस्स उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पछी नमो अ रिहं ताण कही काउस्सग्ग पारवो प्रगट लो ग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आज्ञा मागवी (कदापि) गुरु न होय तो सीमंधर स्वामी पासेथी आज्ञा मागीने करेमी भंते

नो पाठ कहेवो पछी डावो ढींचण ऊंचो राखी ने नमोत्थुणंकहेवुं ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधि ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंता णं पूर्वक काउस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स कहीने मावो ढीचण ऊंचो करी नमोत्थुणंनो पाठ कहेवो. पछी सामाइय वयजुत्तो कही, दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, इत्यादि पाठ कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ देवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागीये छैये, तेवी रीते आज्ञा मागीने पछी नवकार गणी, लोगस्स कही, डावो ढींचण ऊंचो करी, नमोत्थुणंनो पाठ कही बे खामणां देवा, तिहां बीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो पछी पडिक्कमण ठाववुं तेमा आवस्सइच्छाकारेण ए पाठ जाणवो पछी ऊभा थइ(नवकार गणवो.) पछी करेमीभंते कहीने इच्छामिठामि०पछी तस्स

उत्तरी०कही आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो पछी नमोअरि हंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्सकही वली बे खामणा देवां, देइने पछी अतिचारनां बे स्थुल तेमा एक तो श्री ज्ञानने विषे अने बीजो दर्शन (ए टले)सम्यक्त्व रत्नने विषे ऐ बे पाठ गुरु पासे कहेवरावया,(अने गुरु न होय)तो पोते कहेवा, ते पछी श्रावकना अतिचार कहेवा.

अथ अतीचार लिख्यते

श्री ज्ञानने विषे जे अतिचार लगा होय ते आलोउ जं वाइद्ध वच्चा मेलिअं, हिणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं जोगहीण घोसहीणं, सुठु दिन्न डुठु पडिच्छियं अकाले, कउ सज्झाउ काले न कउ सज्झाउ, असज्झाएं सज्झायं सज्झाएन स ज्झाय, जे कोइ ज्ञानना चउद अतिचारने विषे, दिवस सवधि दोष लागो होय तस्स मिच्छा मि डुक्कड ॥ १ ॥

दर्शन श्री समकेत रत्नने विषे जे, अतिचार लागो होय, ते आलोऊ, श्री जिन वचन समा सद्दह्या न होय, प्रतीत्या न होय, रोचव्या न

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल प्रत्यें संदेह आण्यो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो होय परपाखमी संघाते आलाप संलाप कीधा होय, जे कांइ समकित रत्नने विषे आठ प्रकारे, जाणतां अजाणता दिवस सबंधि, दोष लगाड्यो होय तस्स मिछामि डुक्कम॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउ. रीशवशें गाढो घाव घाल्यो होय, गाढे बंधनें बांध्यो होय, अवयवनो छेद कीधो होय अतिभार भर्यो होय, भात पाणीनो विछेद कीधो होय, जे काइ दिवस सबंधि दोष लागो होय, तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ ३ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे, जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं छुं. सहसात्कारे कोइ प्रत्यें कूमा आल दीधां होय, रहस्य छानी वात प्रगट कीधी होय,स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्यां होय,कोइने अपाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

लक्कवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवाणिज्जे एवंखुजत पिल्लणकम्मं निल्लंछण कम्म, दवनुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जनना जरण, पोषण कीधा होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंम विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउ छु. कंदर्पनी कथा कीधी होय, जाम्कुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन बोल्यां होय, पापना अधिकरण जोमी मूक्या होय उवजोग परिजोग अधिका वधार्या होय जे कोइ दिवस सबंधि दोप लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमा श्री सामायिक व्रतने विषे जे अतिचार दोप लागा होय, ते आलोउ छु मन, वचन, कायाना जोग पामुवे ध्याने प्रवर्ताव्या होय, सामायक माहे समतान कीधी होय अणपूर्युं पार्युं होय, पारता वीसार्यु होय जे कोइ दिवस संबंधि दोप लागो होय, तस्स मिच्छा० १२

दसमा देसावगासिक व्रतने विषे जे अ० नीमि भुमिका वाहेरथी वस्तु अणावी होय तथा मोकलावी होय, शब्द करी रूप देखामी पु

दृगल नाखी आपणपुं गतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरसुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सज्जा संथारो अप्रति लेख्यो होय, दुःप्रति लेख्यो होय, अप्रमार्ज्यो दु प्रमार्ज्यो होय, उच्चार पासवण ज्ञुमिका अप्रति लेखी होय, दुःप्रति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, दुःप्रमार्जि होय, पोसह मांहें वात विकथा निद्रा प्रमादें करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

बारमां अतिथिसंविज्ञाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्तें करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मत्सर सहित दान दीधुं होय, ज्ञाणे वेहगां साधु, साधवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमोथ्थुण ज्ञण्या गण्या विना व्रत पच्चस्काण पाख्यु होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिच्छामि डुक्कडं ॥

संलेषणा व्रतना पाच अतिचार लागा० इह

लोगा संसप्पओगे परलोगा संसप्पओगे जीवि आ ससंप्पओगे मरणीया संसप्पओगे काम जोगनी वाग कीधी होय, जे कोई दिवस संबं धि दोष लागो होय, तस्स० ॥ १६ ॥

अढारे पापस्थानक लागा होय, ते आलोउ पहेलु प्राणातिपात ॥ १ ॥ बीजु मृषावाद ॥२॥ त्रीजु अदत्ता दान ॥ ३ ॥ चोथु मैथुन ॥ ४ ॥ पाचमुं परिग्रह ॥५॥ छठुं क्रोध ॥६॥ मान ॥७॥ माया ॥ ८ ॥ लोज ॥९॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥ कलह ॥ १२ ॥ अन्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥१४ ॥परपरिवाद ॥ १४ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ माया मोसो॥१७॥मिथ्या दरसण शेल्य॥१८॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय सेवता प्रत्ये अनुमोद्या होय जे कोइ दिवस संबंधि दोप लागो होय तस्स मिच्छामि डु० ॥१७॥

अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार ... उत्तर ... दिवस संबं

१८ ॥

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंम्मियं जं विराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ए ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ डुच्चिंतिअ डुम्भासिय डुच्चिठिअ तस्समि० सूत्रभणेमि सूत्र साभलेमि सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पठी नवकारकही करेमि भंते कहेवुं पठी इछामिठामि कहेवुं. पठी वंदितु सूत्र कहेवुं ते कही रह्या पठी पूर्वोक्त रीते वे खामणा देवा पठी अब्भुठिओमि० कहीने खमाववु पठी सात लाख कहेवा पठी आयरिय उवज्ञाए कहेवुं पठी आवस्सइछाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं प्रायछित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सग्गं ए पाठ कही(१)नवकार गणी करेमिभंते कहेवुंपठी इछामिठामि० तस्सउत्तरी० कही (चार) लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउसग्ग करी नमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखामणा देवा. पठी चउविहारनुं पच्चक्काण लेवुं पठी सामायिक, चउविसत्थो, वांदणां पडिक्कमणुं काउस्सग्ग, अने पच्चक्काण, ए ठ आवश्य

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे प-च्चस्खाण लेवुं, त्यांथी पाछो आलोअंतो निंदंतो पस्खिवअं आलोएमि देवसिअं जणेमि कहिने तेवार पछीतो वंदिता सूत्र कही रह्या पछी जे बे खामणां आपीये छैये, त्यांथी सर्वदेवसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं ॥ इति ॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

पख्खीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ सवच्छरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व विधि जाणवो परंतु एटलु विशेष के जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे अही चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खियं पाठ आवे, ते स्थानकेसवच्छरियं पाठ कहेवो ॥ इति॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संखेवणं रसञ्चार्ज ॥ कायकिलेसो संली, ए आय वद्यो तवो होइ ॥ १ ॥ पायछित्तं विणर्ज, वेआवच्चं तहेव सद्यार्ज ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अभ्भिंतरर्ज तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री रुषभदेव स्वामीने जेणे वरसी तप कर्यु, धन्य श्री महावीरस्वामीने जेणे छम्मासी तप कर्यु, एमज जे पंचमासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य, जे वे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उपवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे, तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य वचनना पांत्रीग उपवास करे, तेने धन्य, जे चोत्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे तेत्रीश आशातना टालवा निमित्त तेत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे वत्रीश योग संग्रहना वत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिद्धना गुण पामवाने एकत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मोहनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे उंगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उंगणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी अठावीस लब्धिना अठावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्तावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे छवीश दशा कल्पना छवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पच्चीश क्रिया टालवाना पच्चीश उपवास करे तेने धन्य, जे चोवीश तीर्थंकरना नामना चोवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडागना त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे वावीश परिसह जीतवाना वावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सवल दोप टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उपवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना उंगणीश अध्ययनना उंगणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अढार पा-

पस्थानक टालवाना अढार उपवास करे, तेने धन्य, जे सत्तर प्रकारे संयम पालवाना सत्तर उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना शोल अध्यनना शोल उपवास करे, तेने धन्य, जे पंदर परमाधामिना कर्म निवारवाना पंदर उपवास करे, तेने धन्य, जे चौद प्रकारना जीवनी दया पालवाना चौद उपवास करे, तेने धन्य, जे तेर काठीआ निवारवाना तेर उपवास करे, तेने धन्य, जे भीखुनी बार पडिमाना बार उपवास करे, तेने धन्य, जे श्रावकनी अगीआर पडिमाना अगीआर उपवास करे, तेने धन्य, जे दशविध यति धर्म पामवाना दश उपवास करे, तेने धन्य, जे नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पालवाना नव उपवास करे, तेने धन्य, जे आठ कर्म टालवाना आठ उपवास करे, तेने धन्य, जे सात व्यसन निवारवाना सात उपवास करे तेने धन्य, जे छकायनी रक्षाना छ उपवास करे, तेने धन्य, जे पांच प्रमाद टालवाना पांच उपवास करे, तेने धन्य, जे चार कषाय टालवाना चार उप-

वास करे, तेने धन्य, जे त्रण दम्भ टाळवाना त्रण उपवास करे, तेने धन्य, जे राग द्वेष टाळवाना बे उपवास करे, तेने धन्य, जे एक उपवास करे, तेने धन्य, आयंबिल करे, तेने धन्य, एकासणुं करे, तेने धन्य, जे एक टाणुं करे, तेने धन्य, जे पूरिमार्ड्ड करे, तेने धन्य, जे पोरसि करे, तेने धन्य, जे नवकारसि करे, तेने धन्य, जे गंठसीउं मुठ सीउं करे, जे कोइ श्री जिनाज्ञा प्रमाणे चाले ते जीवने धन्य छे, धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य नमो अरिहंताण ॥ इति वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ संपूर्ण ॥

अथ नंदीनो पाठ.

जयइ जगजीव जोणी, विआणउं जग गुरु जगाणंदो, जगनाहो जगबंधू, जयइ जगप्पिया महो भयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआणं प्पभवो तित्थयराण अपछिमो जयइ, जयइ गुरुलोगाणं जयइ महप्पा महा वीरो॥२॥भद्दं सव जगुजो, यगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स, भद्दं सुरा सुर नम, सियस्स भद्द धूयरयस्स ॥ ३ ॥ गुण भवण गहण सुयरयण, भरिय दंसण विसुद्द

रञागा, संघ नयर जदंते, अखंड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु वारस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्क सजउं. होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ जद सील पडा गुसियस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स जगवउं, सज्जाय सुंनदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि आनंदि सदा संघने जय जय कारणी आनंद कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेंद्र देव श्रीगुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

सागर गछ प्रतिक्रमण विधि.

सागरगछ प्रतिक्रमण विधि तपे गछ समान जाणना परं विशेष मात्र इतनाहे की प्रतिक्रमणपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

आनंद सूरीयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र सागरगछ प्रमाण जाणना.

वडगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना बिलकुल फरकनहीं.

राजसूरीय गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछ समान जाणना.

लहुडी पोसाल गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समानजाणना

कमल कलसा गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागछ प्रतिक्रमणविधि

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना

विजयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचन्दगछ प्रतिक्रमण

तमामविधि तपगछ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वदनके समय पुक्करवरदीवड्ढे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक सकलना-मात्र भिन्न हे

॥ अथ सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदनप्रारंज ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिजुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमंडण, प्रवरगुण गणजूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोमि पण मुनि मनहर ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगें ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहिं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, दुखविहंडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥७॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजीननु चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिम जिनमजितं ॥ संजवमजिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रज-

राजसूरीय गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछ समान जाणना.

लहुडी पोसाल गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समानजाणना.

कमल कलसा गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागछ प्रतिक्रमणविधि

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना

विजयगछ प्रतिक्रमण विधि

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंदगछ प्रतिक्रमण

तमामविधि तपगछ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वदनके समय पुक्करवरदीवड्ढे प्रमुख न कहते चारों युइ मात्र एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक सकलना मात्र भिन्न हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमंडण, प्रवरगुण गणभूधर ॥ सुर असुर किन्नर, कोडिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि पण मुनि मनहर ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमाहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहि अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंडण, दुखविहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइये ॥ जित कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित [illegible] राज सेवा करण तत्पर, प[illegible] इति चैत्यवंदनं समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजी[illegible]

॥ सुर किन्नरनागनरि[illegible] जिनमजितं ॥ संज[illegible]

मुज्ज्वलधीरमति ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्वं जिनेंद्र महं, चंद्रप्रभमष्टकुकर्मदहं ॥ सुविधिप्रभुशीतल जिनयुगल, श्रेयांसमसशयमतुलबलम् ॥२॥ प्रभुमर्चय नृपवसुपूज्यसुतं, जिनविमलमनतमजिद्भनतम् ॥ नम धर्ममधर्मनिवारिगुण, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥ ३ ॥ कुंथू श्रीअर मल्लीश जिनान्, मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तमसिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रमिचेंद्रसमं, वंदे जिनधीरमचीरुतम ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नाग[illegible]न्नर, नरपुदर, वंदितक्रम, पंकजा ॥ निर्जित[illegible]पु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजा ॥ [illegible], सकलमगल, केलिकानन, सन्निभा, [illegible], हृदयकमले, राजहस, समप्रभा ॥ ५ ॥ [illegible]वैयवदन सपूर्णम् ॥

॥ अथपचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

[illegible] समरु तारु नाम ॥ ज्यां [illegible]तिमा जिनतणी, त्यां त्यां करू प्रणाम ॥ १ ॥ [illegible] श्रीआदिदेव [illegible] ॥ तारगे [illegible] नाथ. [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृगमंडण, प्रवरगुण गणनूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहिं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, ड़ुखविहडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइयें ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि जिनमजित ॥ [illegible]

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सा सोश्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पच मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पच वरस पच मासनी, पचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणु करो जावशु, टाले जवफेरो ॥८॥ एणी पेरे पचमी आराहीयें ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रगविजय लहो सार ॥९॥ इति पचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीनु चैत्यवदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, सजव चवि आयो॥१॥ चउतर वदनी आठमें, जन्म्या रुपज जिणद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिनें, आठ कर्म कर्या दुर ॥ अजिनदन चोथ ... जरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम ... जिणद ॥ आठ जाति कलश ... ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगत्राण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
जाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रजु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रजूतिआदें मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वदीये, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वरचरण विलासी ॥ रुषज अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिववास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालना, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अग लखावीये, एकादश पाठां ॥ पूजणी ठवणी विटणी, मशी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत छांमवां ए, वहो

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोश्वासमे, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसा लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पच मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पच वरस पच मासनी, पचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पचनोए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणु करो जावशु, टाले जवफेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरे पचमी आराहीयेंए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पचमीचैत्यवदन ॥

॥ अथ अष्टमीनु चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, सजव चवि आयो॥ १॥ चइतर वदनी आठमें, जन्म्या रुषज जिणद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिने, आठ कर्म कर्या दुर ॥ अजिनदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगजाण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
जाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रजु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रजूतिआदे मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीये, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वरचरण विलासी ॥ ऋषज अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिववास पास, जवजवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग [illegible] एकादश पाठां ॥ [illegible] विंटणी [illegible] गल काठां ॥ ८ ॥

पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफ
ल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविशस्थानकनु चैत्यवंदन ॥

॥ पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥
त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ न
मोथेराण पांचमे, पाठक गुण ठहे ॥ नमो लोए स
व्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स
आठमे, दर्शन मन भावो ॥ विनय करो गुणवंतनो,
चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभ वयधारीण, तेर
मे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो
जिणाण ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो
तिठस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमता हो
ये सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥ अथ विशस्थानकना काउस्सगनु चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करी
यें ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन ध
र्ये ॥१॥ पच सडसठने दश वली, सीत्तेर नव पणवी
श ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो
गुणीश ॥२॥ विश सत्तर इगवन, द्वादश ने पच ॥
एणी परे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भव सच
॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो
वीश ॥ विश थानक एम जाणीयें, सक्षेपथी लेश
॥ ४ ॥ भाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवंदन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ डुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजे वासक्षेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हे करी धोतीया, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावे नावना नावीये, कीजे जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहु कालें लेइ धूप दीप, प्रनु आगल कीजे ॥ जिनवर केरी नक्तिशु, अविचल सुख लीजे ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये, जिम नावे सताप ॥५॥ कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विधि करो, ज्यु होये नवनो छेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवंदननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमधर प्रमुख नमु, विहरमान जिन वीश ॥ रिखनादिक वली वंदीयें, सपइ जिन चोवीश ॥१॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पचतीर्थ, पचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोके जिनहर नमु, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणु ऊपरें, त्रेविश जिनवर नाख ॥ ३ ॥ एक शो वावन कोडि वली, लाख चोराणु सार ॥ सहस

चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनजवन नमु, सात कोमि बोहोतेर लाख ॥ तेरशे कोमि नेव्याशी कोमी शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमा वली ए, जिन जवन अपार ॥ ते जवि नित्य वदन करो, जेम पामो जवपार ॥ ६ ॥ तिर्ग्रा लोके शाश्वता, श्रीजिनजवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उंगणशाठ, वंदुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणु सहस, त्रणशें विश मनोहार ॥ जिनपमिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करु जुहार ॥८॥ त्रण जुवनमांहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनु चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष ठे, कुंथु अजित वृषजाति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषजदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, वारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो, जगवंत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धा सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रजु पारगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण नविगण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पायनमुं हु नावें, कर जोमीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तू जग जन सज्जन, नय नानदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तू तीर्थंकर सुखकर साहिब, तू निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत नविने हितवत्सल, तूंही कृपारससिंधु नमो अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोकस्वनाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण दुरित उपद्रवनाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार नवो दधितारण, तू शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीर्ज अनुपम दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रज ने वासुपूज्य दोय राता कहीये ॥ चंद्रप्रज ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीये ॥१॥

मल्लिनाथ, ने पार्श्वनाथ,दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अजन सरिखा ॥२॥ शोले जिन कचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल प डित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितनव गण ॥
तीनु चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, नव तेर कही जे ॥ शांतितणा नव बार सार, नव नव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश नव पासजिणदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥ शेप तीर्थंकर त्रिहु नवे, पाम्या नवजल तीर ॥२॥ ज्याथी समकित फरसीयु, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पडित तणो,ज्ञानविमल गुण गेह॥३॥इति॥

॥ अथ चउदशे बावन गणधरनु चैत्यवदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पचाणु ठेक ॥ दोय अधिक डग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका सात ॥ पचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी भ्रात॥२॥ ठोहोतेर ठासठ सगवन, पच्चास तेतालीस ॥ ठत्तिस पणतिस कुथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवी स अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिख नादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधि केरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५॥ अक्षय

पद वरिया सवे, सादि अनत निवास ॥ करीये शु
भ चित्त वंदना, जव लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्टि चैत्यवदन ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे जावे ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १॥ आचारज गुण छत्रीस, पचवीश उवजाय ॥ सत्ता वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टो त्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर विमल पडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहत सकलनी, जाव धरी करु सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार वखत पण कहेनाय छे)

॥ अथ श्री सीमधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहकर, मुनि मन पकज ह साजी ॥ कुथु अर जिन अतर जनम्या तिहुअण जश परगसा जी ॥ सुव्रत नमि अतर वरदीक्षा, शिक्षा जगत निरासेजी ॥ उदय पेढाल जिनातर मा प्रजु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश च उसठी चउसठी मलिया, इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अम मली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिहाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जबु, धायइ पुक्कर मोकारेजी ॥ पूजो प्रणमो आचारा गे, प्रवचन सार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थ निदेशन वस्तु निवेशन, देता सुणत विनीतजी ॥ द्वा दश अग पूरवयुत रचिया, गणधर लब्धि विकसि यां जी ॥ अप्पज्झवसिय जिनागम वंदो, अक्खरपद ना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणारगी समकितसंगी, विविध जग व्रतधारीजी ॥ चउविह सघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पचागुली सूरि शासन देवी, देती तस जस ऋद्धिजी ॥ श्रीशुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमा सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चद्र तणी ज्या रेख ॥ तिहा चद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हु बीज तणे दिन, प्रणमु, आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनदन चदन, शीत लशीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण ॥ हु बीज तणे दिन, प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत ॥ जेम विमल कमल होय, विउल नयन विकसत ॥ आगम अति अनुपम, जिहानिश्चय व्यवहार ॥ बीजे सवि

कीजे, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सरस सुगध शरीर ॥ कर जोमी बीजे हु प्रणमु तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४

॥ अथ पचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पचमी ए, जन्म्या नेम जिणद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतु ए, मुख शारदको चद तो ॥ सहस वरस प्रज्ञु आयुखु ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पहोता मुक्ति महत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन ए,पहोता मुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चपापुरी ए नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी माहे वलि ए श्रीवीरतणु निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध हुआ ए, शिर वहु तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन्न तो॥जीवदया गुण वेलमी ए, कीजे तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनु तप करतां अम घर, मगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगजन, अष्टापद परे वलीया जी ॥ आठमे आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अग जी ॥ आठमनु तप करता अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आगम जाखी, जवि मन सशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजे जी ॥ आठमनु तप करता लीजे, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोमि कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअमी, गोविद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व महोटु, कहो मुऊशु तेम ॥ जि

नथर कल्याणक अति घणा, एकशोने पचास ॥ ते
णे कारण ए पर्व महोटु, करो मौन उपवास ॥ १ ॥
अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर दे
व ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम
रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत
रु चंग ॥ जेम गग निर्मल नीर जेहवु, करो जिनशुं
रग ॥ २ ॥ अगीआर अग लखावियें, अगीयार पा
ठां सार ॥ अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूजणी
सार ॥ चावखी चगी विविध रगी, शास्त्र तणे अनु
सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामिये नवपार
॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुको
मलकाय ॥ भुजदड चन्द्र अखड जेहने, समरतां सुख
थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पण्डित
शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदीस

॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥
विश्वसेन कुल उपना मृग लंछन पाय ॥ गजपुर
नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस
जस देहडी, वरस लाखनु आय ॥ १ ॥ शांति जिने-
सर सोलमा, चक्री पचम जाणु ॥ कुंथुनाथ चक्री
छठा, अर नाथ वखाणु ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी
आणंदू ॥ संयम लइ मुते गया, नित्य उठीने वंदू
॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, वेठा धर्म प्रकाशे ॥

दान शील तप जावना, नर सोहे अन्यासे ॥ एह वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरिया ॥ सुणता गिरगती निर्मली, हिसे केवल वरिया ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अण सण कीधु ॥ काउ सग्ग मुझाये रह्या, तिणे मुक्तीज लीधु ॥ गरुमयक्ष सेवु सदा, देवी निरवाणी ॥ जविक जीव तुमे साजलो, रूपचंदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी ॥ दुरगति दुःख जारी, शोकसंताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानंतधारी ॥ नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समव सरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा गुंथन्ता गाले रीठा ॥ जविजन होय हिठा, देखी रूकल्या ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेह ऋ... जन संता, टालिये मुजचिंता ॥ जिनवर ... जिनउत्तम शुणता, पद्मने

नवर कल्याणक अति घणा, एकशोने पचास ॥ ते
णे कारण ए पर्व महोटु, करो मौन उपवास ॥ १ ॥
अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर दे
व ॥ एकादशी एम अविरु सेवो, वन गजा जिम
रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत
रु चंग ॥ जेम गग निर्मल नीर जेहवु, करो जिनशुं
रंग ॥ २ ॥ अगीआर अग लखावियें, अगीयार पा
ठां सार ॥ अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूजणी
सार ॥ चावखी चगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनु
सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें जवपार
॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुको
मलकाय ॥ जुजदंड चरु अखड जेहने, समरतां सुख
थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्षे पभिल
शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो,संघ तणा निशदीस

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ शाति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥
विश्वसेन कुल उपना मृग लछन पाय ॥ गजपुर
नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुप चालिस
जस देहमी, वरस लाखनु आय ॥ १ ॥ शाति जिने
सर सोलमा, चक्री पचम जाणु ॥ कुन्थु, मानव
ठगा, अर नाथ वखाणु ॥ एत्रिणे च्यव पुण्ये, आ
आणदू ॥ सयम लइ मुत गया, स पास वली द-
॥ २ ॥ शाति जिनेसर केवली, जेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेजी ॥ वक्र कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनु तप करियें ॥ नागकेतु नी परे केवल लहियें, जो शुभ भावे रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अतर त्रीजें, रुषभ चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसें सूत्रने सामाचारी, सवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाम्नी विधिसु कीजे, सयल जतु खामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वक्राइजी ॥ मान विजय कहे सकलमनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी॥४॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

पुण्यनु पोषण, पापनु शोसण, पर्व पजूसण पा-मीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि र नामीजी ॥ कुवर गयवर स्कंध चढावी, ढोल नि-साण वजडावोजी ॥ सदगुरु सगे चढते रगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार थी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-ठमे स्थिविरावली सजलावी, पिछडा पूरो जगीश-॥ २ ॥ ठठ अठम अठाई कीजे, जिनवर चैत्य

नमीजेजी ॥ वरसी पडिक्कमणु मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रभावना, दान सुपात्रें दीजेजी ॥ भद्रबाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहि जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वच्छल, बहु पकवान वधाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमा जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मन्त्रमाहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चन्द्र वखाणुं, जलधरमाहें जल जाणु ॥ पखीमांहि जेम उत्तम हस, कुलमाहे जिम ऋषभजनो वंश, नाभि तणो जे अस ॥ क्षमावतमाहे जिम अरिहता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुजय गिरि गुणवंता ॥१॥ ऋषभ अजितसंभव अभिनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा,पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि,शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनत जिन धर्म ए शाति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ भ

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननु वचन अमोले ॥ रुपन कहे सुणो जरतराय, ठहरी पालता जे नर जाय, पातक चूको थाय॥ पशुपंखी जे इण गिरि आवे, नव त्रीजे ते सिद्धज थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमे शेत्रुजो व खाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति जरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती गवे॥ नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु त्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुपनदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शखेश्वर पासजी पूजिये ॥ नर जवनो लाहो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिजला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर जाखियो ॥ गणधरे ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुउ शिव सुख सा... ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सहु संघना संकट चूरती ॥ नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति०॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुन्डर गिरि महिमां आगममा प्रसिद्ध ॥
विमलाचल भेटी लहिये अविचल ऋद्धि ॥
पचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥
इण तीर्थ आवी कर्म विपातिक छोड ॥ १ ॥

(आ स्तुति चार वार पण कहेवाय छे)

॥ अथ नवपद थुईलि० ॥

॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव । शिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसाये अरति व्याधि पुलाय । इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहत नमिये सिद्ध सूरी उवझाय । मुनिवर त्रिण करणें दसण नांण सुहाय । दुगविधि चारित्तं बुधविध तप मन भाय । ये नवपद ध्याता निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या प्रवादे जाणो ए अधिकार॥श्रीगुरु उपदेशे सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारे भाख्यो एह विचार, भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्के सरि सुखकार । सेवकनें आपे सुख सपति परिवार । हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नदी मन भाय । जिनचंद सूरी सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुति ॥

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननु वचन अमोले ॥ रूषन कहे सुणो नरतराय, उहरी पालता जे नर जाय, पातक जूको थाय॥ पशुपखी जे इण गिरि आवे, नव त्रीजे ते सिद्ध थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाएयो, तेमे आगम दिलमाहे आएयो, सुणता सुख उर आएयो ॥ ३ ॥ संघपति नरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे॥ नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रूषनदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शखेश्वर पासजी पूजिये ॥ नर नवनो लाहो लीजिये ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिजला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर नाखियो ॥ गणधरे ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेचाखियो॥ते हुर्ज शिव सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

करिये जलजावें जरिये पुण्यजंडार । वलिचैत्यप्रवाडे फिरतां लाजअनंत । इह परवपजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परजावन धूपअगर उखेवो । इम जवियण प्राणी परवपजूसणसेवो ॥३॥ वलिसामी वच्छल करिये वारंवार । केइ जावनाजावे केइ तपसी सीलधार । अडठीहपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहे जिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्जूपणापर्व्व स्तुति• ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन

सद्भक्त्यादेवलोके रविशशिजुवने व्यतराणां निकाये, नक्षत्राणांनिवासे ग्रहगणपटले तार काणांविमाने, पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणेध्वस्तसांद्राधकारे, श्रीम त्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृगे रुचकगिरेवरे कुरुले हस्तिदंते, वक्षारे स्फुटनंदी श्वर कनक गिरे नैपधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीम त्तीर्थकराणा० ॥ २ ॥ श्रीशैले व्यध्यशृगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सह्याद्रौ चोंजायते विपुलगिरिवरे गूर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणां० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुति ॥

डेंडेंकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धरधप धो रव। दोदोकि दोदों दागिडदि दागिरुदिकि ड्रमकिड्रणरण ड्रेणच। झकिझेंकि झेंझें झणणरणरण निजकि निज जन रंजन। सुरशैलशिखरे जवति सुखद पार्श्व जिनपति मज्जन ॥ १ ॥ कटरेगि थोंगिनि किटति गिगरुदा धुधुकि धुटनटपाटवं। गुणगणण गुणगण रणकि णेणे गुणणगुण गण गोरव। झकिझेकि झेंझे झणण रणरण निजकि निज जन सज्जना। कल यति कमला कलितकलमल मुकलमीस महेजिना ॥ २ ॥ ठूकि ठेकि ठ्रेंठ्र ठ्रिवठ्रिक ठठ्रिपट्टा ताड्यते। तललोंकि लोलो त्रेपित्रेपिनि केपिकेंपिनि वाद्यति। थेंथें किथेंथें थुगि थु गिनि धोगि धो गिनि कलरवे। जिन मतमनत महिमतनुतानमतिसुरनर मुच्चवे ॥३॥ पुदांकि पुपुदा पुपुरुदि पुदां पुपुडदि दोंदो अवरे, चाचपट चच पट रणकि णे णे रुणण रुरु रुवरे। तिहां सरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता। जिननाटयरंगे कुशल मनिश दिसतु शासन देवता ॥ ४ ॥ इति ॥

वलि वलिहु ध्यावु गाऊ जिणवरवीर। जिण पर वपजूसण दारयाधरमनी सीर। आसाढचोमासे हु तीदिनपचास। पडिक्कमणोसवछरी करियेत्रिणउप वास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार।

(अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके। पीछे पडिक्क मणो करै। (सोणेंके समय) उरिया वही पडिक्कमके चैत्यवदन करिके।राई सथारा गाथागुणके सोवै।निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रभाति करणी सव करिके सिद्धपदको लालवर्ण है।(इसीसे) गहुंकी रोटीको अंबिल करै ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण (इसपदको) गुणणो दो हजार करे। सिद्धपदके आठगुण। सो (८) गुणा को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः०।
२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि०।
३ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि०।
४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि०।
५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि०।
६ अरूपी निरजनगुण सयुताय श्रीसि०।
७ अगुरुलघु गुणसयुताय श्रीसि०।
८ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि०।

॥ इतिसिद्धोंके अष्टौ गुणा ॥

॥ यह आठे नमस्कार करिके। अन्नत्थूससि० आठलोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स कहिके

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंतायनम।
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
४ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्री० अरि०।
६ भामंडल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
८ छत्त्रत्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि०।
१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि ०।
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि ०।
१२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि०।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणा. ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससियेण। (कहिके) (१२) बारे लोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स प्रगट कहै। पीछेस्वस्थानक जाके। चैत्यवदन करै पचरकाण पारिके।आंबिल करै। पहले जल पीवे (जब) चैत्यवदन करिके पीवे।पीछेफेर चैत्यवदन करिके तिविहार पचरकाण करै गुणणो(२०००)ॐ ह्रीं० णमो अरिहंताण। इस पदको करै। श्रीपालका चरित्र नवपद महिमा सुणे। पूण पहिर दिन रहणेसे (तीसरीवेर) पाच शक्रस्तवे देव वांदै।सामायिक लेके दिन छते पडिकमणो करै। आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करै।

१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ।
१६ ऋजुगुण सयुताय श्रीआ० ।
१७ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१८ सर्व सगमुक्तिगुण सयुताय श्रीआ० ।
१९ द्वादश विधतपगुण सयुताय श्रीआ० ।
२० सप्तदशविध संयमगुण सयुताय श्रीआ० ।
२१ सत्यव्रतगुण सयुताय श्रीआ० ।
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
२३ अकिंचन गुण सयुताय श्रीआ० ,
२४ ब्रह्मचर्यगुण सयुताय श्रीआ० ।
२५ अनित्य नावना नावकाय श्रीआ० ।
२६ असरण नावना नावकाय श्रीआ० ।
२७ ससार स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ० ।
२८ एकत्व स्वरूप नावना नावकाय श्रीआ० ।
२९ अन्यत्व नावना नावकाय श्रीआ० ।
३० अशुचि नावना नावकाय श्रीआ० ।
३१ आश्रव नावना नावकाय श्रीआ० ।
३२ सवर नावना नावकाय श्रीआ० ।
३३ निर्जरा नावना नावकाय श्रीआ० ।
३४ लाकस्वरूप नावना नावकाय श्रीआ० ।
३५ वोधिदुर्लन नावना नावकाय श्रीआ० ।
३६ धर्म्म दुर्लन नावना नावकाय श्रीआ० । इति

पारे पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ इति द्वितीय दिवसविधि ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसे प्रजातकर्त्तव्य करै आचार्यपद पीले वर्ण है (ऽसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै। (ॐ ह्रीं हीं णमो आयरियाण) इस पदको गुणणो दोहजार करै। आचार्य पदके (३६) गुण याद करके ठत्तीस नमस्कार करै।

॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम. ।
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
३ युगप्रधानागम सयुताय श्रीआचार्याय नम ।
४ मधुरवाक्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
५ गाम्भीर्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
६ धैर्यगुण सयुताय श्रीआ० ।
७ उपदेश गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
८ अपरिश्रावी गुणसयुताय श्रीआचा० ।
९ सौम्यप्रकृति गुणसयुताय श्रीआ० ।
१० शीलगुणसयुताय श्री० ।
११ अविग्रह गुणसयुताय श्री० ।
१२ अविकथक गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
१३ अचपल गुणसयुताय श्रीआ० ।
१४ प्रसन्न वदनगुण सयुताय श्रीआ० ।

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
१३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
१६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
१७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
१८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१९ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२२ अविंध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
२५ लोकबिंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पचविंशति उपाध्याय गुणा ॥

इस रीतसें पचवीस नमस्कार करें (खमासणोके) अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्सका का उस्सग्ग करे। पारके एक लोगस्स कहके। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि. ॥

अथ पचमदिवस विधि

॥ (ॐ ह्रीं णमो लो ए सव्वसाहूण) इस पदका (२) हजार गुणनो करें। साधुपद काले वर्णहै इस सें उडदका आंबिल करें। सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नमस्कार करे ॥ ॥ ॥

॥ इति षट्त्रिंशदाचार्य गुणा ॥

यह छत्तीस नमस्कार करिके । अन्नछउसासिएणं (इत्यादि कहिके) छत्तीस (३६) लोगस्सनो का उसग्ग करे । पारिके एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहि यथोक्त करणी । अनुक्रमसे करे । इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रींणमो उवज्झायाण) इस पदको (२) हजार गुणणो करे । इस्या मूंगकी दाल प्रमुखनो आंबिल करे । उपाध्याय पदके (२५) गुण याद करि के । नमस्कार करे ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके २५ गुणलि० ॥

१आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायेभ्योनम
२ सुयगडांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्या०
३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ० ।
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय० ।
५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय० ।
७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन गु० ।
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण यु० ।

२३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।
२५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय० ।
२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणा ॥ ५ ॥

इस रीतसें सतावीस नमस्कार करै । (खडा होके अन्नत्थ स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोग स्सकाकाउस्सग्ग करै । पारके एक लोगस्स कहके (पीछे) पूर्वोक्तकरणी करै । (यह पच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाएं सें (१०८) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१०८) होते हैं । इति पचम दिवस विधि ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो दसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्णहै (इससें) तंडुलका आंबिल करै । सम्यक्तके सरुसठिगुण चितवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सरुसठि भेदलि० ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नम. ।
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सद्दर्शनाय नम. ।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नम ।

॥ अथ साधुपदके (२७) गुणखि० ॥

१प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनम

२ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

६ रात्रिज्ञोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१३ एकेंड्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।

१४ बेइंड्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१५ तेइंड्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१६ चौरिंड्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१७ पचेंड्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१८ लोजनिग्रहकारकाय श्रीसा० ।

१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।

२० शुद्धजावना जावकाय श्रीसा० ।

२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ।

२२ सयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

२८ वादी प्रजावक० स० ।
२९ नैमित्तक प्रजावक० स० ।
३० तपस्वी प्रजावक० सद्द० ।
३१ प्रज्ञत्यादि विद्या जृत्प्रजावक० स० ।
३२ चूर्णा जनादि सिद्धप्रजावक० स० ।
३३ कविप्रजावकरूप सद्दर्शनाय नम ।
३४ जिनशासने कौसल्यता जूषण० स० ।
३५ प्रजावना जूषणरूप स० ।
३६ तीर्थसेवा जूषण० स० ।
३७ स्थैर्यता जूषणरूप सद्दर्शनाय नम ।
३८ जिनशासने जक्ति जूषण० ।
३९ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नम' ।
४० सवेग गुणरूप श्रीस०
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम ।
४२ अनुकपा गुणरूप श्रीस० ।
४३ आस्तिस्यता गुणरूप श्रीस० ।
४४ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
४७ परतीर्थकादि सलाप वर्जन० ।
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
४९ परतीर्थकादि गधपुष्पादि प्रेपण वर्जन० श्रीस०।
५० राजाजियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५ शुश्रूषारूप सद्दर्शनाय नमः ।
६ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नमः ।
७ वैयावृत्तरूप सद्दर्शनाय नम ।
८ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
९ सिद्धविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१० चैत्यविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
११ श्रुतविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१२ धर्मविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१४ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१६ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१७ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१८ ससारे जिनमतसार मिति चितनरूप सद्द० ।
१९ ससारे जिनमतिसार मिति चितन० ।
२० ससारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
२१ शका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नम ।
२२ काङ्क्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नम ।
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
२४ कुदृष्टि प्रससा दूषणरहिताय० ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
२६ प्रवचन प्रभावकरूप सद्द ।
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप स० ।

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (२) ह गुणनो करे । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आंबिल करे । इक्कावन भेद ग्यानपदके चिंतवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
२ रसनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१३ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।

५१ गणाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५२ वलाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५४ कांतारवृत्याकार युक्ताय श्री० ।
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।
५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चितन० श्री० ।
५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचितन० श्रीस० ।
५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चितन० श्रीस० ।
५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चितन श्रीस० ।
६० चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चितन० श्री० ।
६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चि० श्रीस०
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।
६४ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु० ।
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था० ।
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री० ।

॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणा ॥

॥ इस रीतिसें सप्तसठि नमस्कार करै । (खमा-हके) अन्नत्थू ससि एण० (इत्यादि कहिके) (६७) लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्स नो काउस्सग्ग करै । एक लोगस्स कहके । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति षष्ट दिवस विधि ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स) इस पदको (२) हु गुणनो करै । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आंबिल करै । इक्कावन भेद ग्यानपदके चितवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
२ रसनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम. ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१३ घ्राणेद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम. ।

१८ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
१९ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
२० चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२१ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२३ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नम ।
२४ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२५ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नम ।
२६ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ।
२७ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
२८ मनो धारणामति ज्ञानाय नम ।
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नम ।
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नम ।
३१ सज्ञी श्रुतज्ञानाय नम ।
३२ असज्ञी श्रुतज्ञानाय नम ।
३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नम ।
३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नम ।
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नम ।
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नम ।
३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम ।
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम ।
३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नम ।
४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नम ।

४१ अगप्रविष्ट श्रुत० ।
४२ अनग प्रविष्ट श्रुत० ।
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नम ।
४४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नम ।
४५ वर्द्धमान अवधि० ।
४६ ह्नियमान अवधि० ।
४७ प्रतिपाती अवधि० ।
४८ अप्रतिपाती अवधि० ।
४९ रुजुमति मन पर्यवज्ञाय नम ।
५० विपुलमति मन पर्यवज्ञानाय नम ।
५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नम॰ ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानभेदा ॥

इस रीतसें (५१) नमस्कार करे। (खमा होके) अन्नत्थ उससिएण० (इत्यादि कहे) (५१) लोगस्सके काउ सग्ग करिके। प्रगट लोगस्स कहे। पीछे सब पूर्वोक्त करणी करे। इतिसप्तम दिवस विधि ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे। चारित्रपदका उज्वल वर्णहे। (इसीसें) तंडुलका आंबिल करे। सित्तर भेद चारित्रपदके। चितवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नम ।

२ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नम ।
३ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नम ।
४ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
५ परिग्रह विरमणरूप चारित्रा० ।
६ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
७ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
८ मृडुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
९ मुक्ति धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
१० तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
११ संयमधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नम ।
१२ सत्यधर्म रूप चारि० ।
१३ सौच धर्म्मरूप चारि० ।
१४ अकिंचनधर्म्मरूप चारि० ।
१५ ब्रह्मचर्यधर्म्मरूप चारि० ।
१६ प्रथवी रक्षासयम चारित्रेभ्यो नम
१७ उदग रक्षासयम चारि० ।
१८ तेऊ रक्षा सयम चारि० ।
१९ वाऊ रक्षासयम चारि० ।
२० वनस्पति रक्षासयम चारि० ।
२१ वेइ न्डी रक्षासयम चारि० ।
२२ तेइ न्डी रक्षासयम चारि० ।
२३ चौरिं न्डीरक्षा सयम चारि० ।
२४ पंचेन्डी रक्षासयम चारि० ।

२५ अजीव रक्षासयम चारि० ।
२६ प्रेक्षासयम चारि० ।
२७ उत्पेक्षासयम चारि० ।
२८ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरठणत्यागरूपसय चारि०
२ए प्रमार्जन रूप संम चारि० ।
३० मनसयम चारि० ।
३१ वाक्सयम चारि० ।
३२ कायासंयम चारि० ।
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप सयम चारि० ।
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप सयम चारि० ।
३५ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ।
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूपचारि० ।
३७ गिलाणसाधु वैयावृत्यरूप चा० ।
३८ साधु वैयावृत्यरूप चारि० ।
३ए श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप चा० ।
४० संघ वैयावृत्यरूप चारि० ।
४१ कुल वैयावृत्यरूप चारित्र० ।
४२ गण वैयावृत्य रूप चारि० ।
४३ पशुपरुगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि०।
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४६ स्त्रीअंगोपाग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
४७ कुड्यतर सहित स्त्रीहाव नावश्रवण वर्जन ब्रह्म०।

४८ पूर्वस्त्रीसंजोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
४९ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
५१ अग विभूषावर्जन ब्रह्म० ।
५२ अणसण तपोरूप चा० ।
५३ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप चा० ।
५५ रसत्याग तपो रूप चा० ।
५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ।
५७ सलेखणा तपोरूप चा० ।
५८ प्रायछित्ततपो रूपचा० ।
५९ विनय तपोरूप चा० ।
६० वेयावच्चतपो रूप चा० ।
६१ स्वाध्यायतपो रूप चा० ।
६२ ध्यानतपो रूप चा० ।
६३ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
६४ अनत ज्ञान सयुक्त चा० ।
६५ अनत दर्शन सयुक्त चा० ।
६६ अनत चारित्र सयुक्त चा० ।
६७ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
६८ माननिग्रह करण चा० ।
६९ मायानिग्रह करण चा० ।
७० लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नम ।

॥ इति सित्तर चारित्र न्नेदा ॥

॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै। (खडा हो के) अन्नथ्य ससि एणं० (इत्यादि कहे) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहे । (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करै। इति अष्टम दिवस विधि ॥

॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। तपपदके उज्वल वर्ण (इसीसें) तंडुलका आंबिल करै। पचास न्नेद तपपदके चित्त वके नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपदके (५०) न्नेदलि० ॥

१ यावत कथिक तपसे नम ।
२ इत्वर तपन्नेद तपसे नम ।
३ वाह्यऊणोदरी तपन्नेद तपसे नम॰ ।
४ अन्यंतर ऊणोदरी तपन्नेद तपसे नम ।
५ द्रव्यतप वृत्तिसंक्षेप तपन्नेद तपसे नम. ।
६ क्षेत्रतप वृत्तिसंक्षेप तपन्नेद तपसे नम ।
७ कालतप वृत्तिसंक्षेप तपन्नेद तपन्नेद नम ।
८ नावतप वृत्तिसंक्षेप तपन्नेद तपसे नम ।
९ कायक्लेस तपन्नेद तपसे नम ।
१० रसत्याग तपन्नेद तपसे नम. ।
११ इंडी कषाय जोग विषयक सलोणता तपसे नम।

१२ स्त्रीपशुपडकादि वर्जितस्थान अवस्थित संली० ।
१३ आलोयण प्रायछित्त तपसे नम ।
१४ प्रतिक्रमण प्रायछित्त तपसे नम ।
१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे नम ।
१६ विवेक प्राछित तपसे नम ।
१७ उपसर्ग प्रायछित्त तपसे नम ।
१८ तप प्रायछित्त तपसे नम ।
१९ छेद प्रायछित्त तपसे नम ।
२० मूल प्रायछित्त तपसे नम ।
२१ अणवस्थित प्रायछित्त उपसे नम ।
२२ पारंचिय प्रायछित्त तपसे नम ।
२३ ज्ञान विनयरूप तपसे नम ।
२४ दर्शन विनयरूप तपसे नम ।
२५ चारित्र विनयरूप तपसे नम ।
२६ गुर्वादिक मनविनयरूप तपसे नम ।
२७ वचनविनयरूप तपसे नम ।
२८ काय विनयरूप तपसे नम ।
२९ उपचारिक विनयरूप तपसे नम ।
३० आचार्यवेयावच्च तपसे नम ।
३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नम ।
३२ साधु वेयावच्च तपसे नम ।
३३ तपस्वी वियावच्च तपसे नम ।
३४ लघुसिष्यादि वेयावच्च तपसे नम ।

३५ ग्लान साधु वेयावच्च तपसे नम ।
३६ श्रमणोपासक वेमावच्च तपसे नम ।
३७ संघ वेयावच्च तपसे नम ।
३८ कुल वेयावच्च तपसे नम ।
३९ गण वेयावच्च तपसे नम ।
४० वायणा तपसे नम ।
४१ प्रछना तपसे नम ।
४२ परावर्त्तना तपसे नम ।
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नम ।
४४ धर्म्म कथा तपसे नम ।
४५ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नम ।
४६ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नम ।
४७ धर्म्मध्यान चितन तपसे नम ।
४८ शुक्लध्यान चितन तपसे नम ।
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नम ।
५० अभ्यतर उपसर्ग तपसे नम ।

॥ इति पंचासत् तपभेदा ॥

॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करै । (खमा होके) अन्नत्र उससि एणं० (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सके काउस्सग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे। इति नवम दिवस विधि

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास जाणेकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घडी देखके । अच्छा वस्त्र आभूषण पहरे । लिलाडमे तिलक करे । दोव। सरखु । मस्तकमें धारण करे। हाथके मोली बांधके। अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नैवेद्य । यथाशक्ति रोक नाणो लेके । नवकार गुणतो थको। गुरूके पास जावे । द्वादशावर्त्त वादणा करके। ज्ञान पूजा करे पीछे बहुत प्रमोदवंत होके। गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे

॥ अथ सक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करे। सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूनीके आकार बनावें पहिले गढमाहे । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करे। पद पद के वर्ण गुण प्रमाणे। रक्तादिक चढावे । (ओर) पचवर्णके धान्य । नवनालेर प्रमुखके गोटा रगके। जिसपदके जैसे वर्णके होइ (तैसे ही) रगका गोला चढावे। पच वर्णी (९) धजा चढावे । दूसरे वलयमें । सोले श्रीफल (अथवा) पूर्गी फल चढावे। तीसरें वलयमें (४८)बुहारा खारक चढावे। नव निधानके ठिकाणे(९) नव बडा फल चढावे दश दिग्पाल । नवग्रहको । पक्कान्न प्रमुख चढावे। इत्यादिक विधिसयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करे । और जि

नमंदिर मांहे । वाह्य मरूपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमणे मं डल रचना करे । विस्तारसे सब विधि गुरूके वचन से करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढाले । धवल मगल गीतगान गावे । वाजिल वजा वे । (इसी तरे) महामोहछव । उदारचित्तसें करे । मगल दीप आरती प्रमुख करे । दुसरे दिन विस र्जन करे । इति सखेप सिद्धचक्र मंरुल विधि ।

उद्यापनमें ज्ञान जक्तिके कारण । ए पूठा । ए । वींटांगणा । ए पुस्तक ए लेखण । ए ठवणी । नव तोरण । ए रुमाल । ए दोरा । ए कटासणा । ए थापना ए चड्ञा । ए पूंछिआ । ए आर ती ए । कलश ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज चणावे । शक्ति न होय तो यथाके रोकनाणो चढावै । देव पदको देवद्रव्यमें देवे । गुरु पदको गुरु कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्या दिकयथाजोग्य शुज क्षेत्रे खरच करे । इति सिद्धच क्र सक्षेप उद्यापनविधि ॥

॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुज महुर्त्तके दिन । नंदी स्था- पना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । वीश स्थानक तप । विधि पूर्वक उच्चरे । ठेली दो माससें लेके (या वत्) छम्मामें पूरी करे । (कदाचित्) छम्मास मध्ये

पूरी न कर सके (तो) वा उंली गिणती मे । न हीं । और नवी करणी पडे । एक उंलीके वीस पद हे (तिहां) कोई वीस दिनसें । वीसो पद जूदा २ गिणे । कोई वीसों दिन मे एकज पद गिणे । दूसरे वीसों दिनमे दूसरो पद । (ऐसें) वीसों पदकी वीस उंली करे । तिहा पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत । अठम तप करिकै आराधै । वीस अठमें एक उंली होय । ऐसें वीसउंली (४००) अठमें आराधे । और तिसमे हीनशक्ति छठ तप करके आराधें । तिससे हीनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधे । हीन शक्ति आबिल (तथा) त्रिविहार एकासण करके आराधे । तिहा शक्तिवान प्राणी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे । (हीन शक्ति) दिन पोसह करे । वीसों पद पोसह सेती आराधे (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य पदे १ उपाध्याम पदे २ थिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आराधे । तथापि शक्ति नही (तो) तिस दिन देसावगासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी हीनताजावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उ

पवासादि तप गिणे न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणे (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) वहोत श्रेयकारी हे । सो नही होसके (तो) तपके दिन उजय टक पमिक्रमणा करे। तीन टक देव वदन करे । दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । जूमि शयन करे। तपके दिन अतिसावद्य आरंज व्यापार न करे। असत्य न बोले । सव दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमे रहे । (तथा) तपके दिन पोसह करे । (तो) पारणे के दिन जिन जक्ति करके पारणो करे। करावे । जावना जावे । (तथा) तपके दिन पदके गुण जेद प्रमाण संख्याई काउसग्ग करे। (तावन्मात्र) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदनाकरे। उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त खरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥

॥ अब वीस स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते है ॥

॥ (णमो अरिहंताण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमो सिद्धाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरियाण) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ४ ॥

(णमो थेराण) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५॥ (णमोउवज्झायाण) दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्वसाहूण) (२०००) गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग ॥ ९ ॥ (नमो विनयसपन्नाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ (णमो चारित्रस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो वम्भवयधारीण) (२०००) गुणनो । लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरियाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीण) २००० गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो । लोगस्स २८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाण) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग॥१६॥
(णमो चरणस्स) दो हजा[illegible] स
१२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ ([illegible] करके आरा
नो । लोगस्स ५ काउसग्ग [illegible] दिन देसाव-
णस्स) २००० गुणनो लो[illegible] । सो पिण न
(णमो तित्थस्स) २०[illegible] आराधे । अपणी
[illegible]

इत्यादि विधिसंयुक्त वीसों उलीमें सव पदके उन्नव महोछव प्रजावना ऊजमणा पूर्वक करे। जिन साशनके उन्नति के कारण करे। इतनी शक्ति न हो (तो) एक उली (तो) विशेप उन्नवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहा विधि प्रपाक ग्रंथसे वीस स्थानक सेवनविधि सक्षेप मात्र लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हय। तवतो विस्तारसें वीसो पदकी जूदी विधि। गुरुके मुखसें समझके करे जो गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिको देखके वीस स्थानक तप सेवन करे। वीस स्थानक तवन पढे (वा) सुणे। वीस स्थानकजी की पूजा करावे। अपनी शक्ति माफक वीस वीस ज्ञानोपगरण करावे। देव पदको देव खाते लगावे। ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे। गुरु पदको गुरु महाराजकोदेवे। सव तीर्थों की यात्रा करे। साहमी वछल करे ॥ इति वीसस्थानक तप विधि समाप्त ॥

॥ मोक्ष करडक तप ॥ उपवास, आयविल, नीवी, एकाशना, पुरिमड्ढ ए एक उली हुइ एसें पांच वारउली करनेसें पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना इस्मे नमो सिद्धाण पदकी वीस नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमे एक रूव्वेमें नैवेद्य जरके जिनमदिरमे ढोकना पूजा पढानी ॥

स्वर्ग करंडक तप ॥ प्रथम वारे एकाशना, नव नी वी, पाच आयविल, एक उपवास, एसे २७ दिनसे यह तप पुरा होता हे सिद्धाण पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौभाग्य सुदर तप ॥ एक उपवास और एक आयविलकी एक उली एसें सोले उली करनी अर्थात् वत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आंयविलकी एक उली एसी वत्तीस उली करनेसे तप पूरा होय ॥ इस्मे सिद्धाण पद गुणणा ॥

॥ अष्टाहिका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पांच कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके ९६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थंकरका कल्याणक होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली वीस गुणनी । यह कल्याणक तप जेसा तप हे परं अनुक्रम भिन्न हे ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पकान्न चोवीश तिलक, प्रभुजिके सन्मुख रखना ॥ सघ पूजा करनी ॥

॥ ७७जिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मीलके तीन चोवीशी तथा सीमधरादिक वीश विहरमान जिन और चार शास्वते जिन मील ७७ जिन आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जिनके नामकी नवकार वाली गुणनी ७७ दिनसे यह

तप पूरा होता हे उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदिरमे ढोकना गुरु नक्ति करना

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवास अथवा आयविल करके आराधना करनी उद्यापनमे दूधसे नरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढांकके तिसके उपर सक्कर के आठ मोदक रखके ओर ज्ञानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहे इस्मे तपके दिन चन्द्रप्रन जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पूर्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद तीर्थायनम ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा पढावी ओर नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृक्ष तप ॥ आशोजके मासमें एक उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह तप हे सिद्धपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृक्ष चांदिका बनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी

॥ चांद्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासें एक उपवास एक आयविल एसे पनरादिनका यहतपहे. सिद्धपद गुणना उद्यापनमे पनरे लाडु ओर चादीकी चन्द्र मूर्त्ति मंदरमे रखे ओर पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृष्ण पक्षके प्रतिपदासे उपवास आयविल पनरेदिन तक करे सिद्धाणं पद गुणे

उद्यापनमें पनर लाडु ओर सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्त्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थंकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहै प्रथम तीर्थंकरका एक आंयबिल, दुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, बाईसमें के तीन यों पहिले भगवानके चोवीस आयबिल करे जो जो भगवानकी उली होय उस्के नामकी नवकारवाली गुणे ओर पूजा करे उद्यापनमे नैवेद्य चढावे। सघ पूजा करे देवगुरु भक्ति करे

॥ जैन जनक तप ॥ निरंतर बत्तीस आयंबिल करनेसें यह तप पूरा होता है। उद्यायनमे बडे ठाठमाठसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुक्षय तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना तीनउपवास एकासना दो उपवास एकासना॰ एक उववास एकासना सिद्धपद गुणना। उद्यानमे चौदा मोदक वाटने ओर चौदा मोदक मदरजीमे चढाने ओर पूजा करानी॥

॥ कमल उलीतप ॥ एकातर आठ उपवासकी एक उली करनी एसी नव उली एकहि वर्षमे करनी चहीये सिद्धपद गुणणा ओर उद्यापनमे सोना चादीके नव नव कमल ढोकना गुरुभक्ति करनी.

॥ मेरू कल्याणक तप ॥ एक तेला एक विआसणा एक तेला एक विआसणा एसे तीन तेले करने पीछे एकांतर छे उपवास करना पारणेके दिन विआसना करना० जो पहिले तीन तेला न कर शके तो पहिले दो तेले करके वीचमे ठ उपवास करके छेल्ला एक तेला कर देवे परं यहसव एकहि वर्षमे करना इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके दिन छेल्ला तप होना चाहिये इसमे श्रीऋषदेव पारगताय नम ए पद गुणना चहिये यथाशक्ती उद्यापन अवश्य करना चाहिये

॥ ठठ तप ॥ इसमे २२९ वेला करना ओंर पारणामे विआसणा करणा सव मील इस्के ४५८ उपवास गिने जाते हे सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे ४५८ मोदक ढोकना

॥ पद कर्म्म तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा. ॥ प्रथम ठेली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा ॥ डुसरी ठेली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा ॥ तीसरी ठेली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा चार उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा. एक उपवास

पारणा सिरूपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोत्ति ओर प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुजक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंगाजरण तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) पारणा एक उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा एसे नव उपवास करनेसे तप पूरा होता हे सि, रूपद गुणना गुरु ज्ञान जक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक आयबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी, आयबिल, उपवास, एकासन ॥ द्वितीयावली ॥ आयबिल, उपवास, एकाशन, नीवि तृतीयावली ॥ उ, पवास, एकासण, नीवी, आयबिल ॥ चतुर्थावली ॥ एक उपवास विगई, निविता रहित नीवी, आयबि-ल ॥ पचमावली ॥ इसतरे पाच आवलीसे रत्नारोह ण तप होता हे सिरूपद गुणना उद्यापनमें रत्नम-य नवकारवाली पाच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय जिन बिंब पाच, मोदक वीस, इतनी वस्तु पुस्तकके पास ढोकना तप के दिन ब्रह्मचर्य पाल ना ज्ञान दर्शन चारित्रका आराधन करना पार-णाके दिन गुरु जक्ति करनी अष्ट प्रकारी पूजा क-रनी इस तपसे सतान प्राप्ती होती हे गर्जश्राव होना बध होता हे आशोज सुदिपचमीसे ए तप सरु करना

॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंबिल निरतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा उद्यापन मे इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु भक्ति करनी॥

॥ अगविशुद्धी तप ॥ आयबिल तीन, नीवी तीन, एकासणा तीन, एक उपवास अतमे करना सिद्धपद गुणणा उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु भक्ति करनी

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलको पद्मकहतेहे इस्मे नव ओली करनी चढिये एकेक ओली के निरंतर अथवा एकातर आठ आठ उपवास करना एसी नव ओली करनी सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चादीका नया बनाकर बिचमे गोतमस्वामीकी प्रतिमाका आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना श्रीसघ औरगुरुभक्तिकरे ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गण धरके इग्यारह उपवास अथवा आयबिल करना उनके नामकी नवकार वाली गुणना उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश (चारित्रोपकरण) वेहेराना संघभक्ति गुरुभक्ति और पूजा पढानी

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इग्यारसको उपवास बारसकों एकासणा तेरसकी

नीवी चौदशका आयविल पुनमका उपवास करना पाठांतरमे दुसरी रीती यहहे की आशोसुदी बारसका आयविल तेरसकी नीवी चौदशका एकासणा पुनमका उपवास पुनमके उपवासके दिन उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे आभूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक जिनप्रसादमे जाना प्रथम प्रदक्षिना करके उपरोक्त वस्तु ढोकना दुसरी प्रदक्षिणामें विजोरा ढोकनां तीसरी प्रदक्षणामे ताबूलपत्र सहित सुपारी ढोकनी चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठकको (द्रव्य) ढोकना सात जातिके धान ढोकनां लवण कापस कसुव क पास पुरी १०० तावे पीतलका वेढ़ेभा ढोकना एकसो सोले दीपक करने एक दीपकमे चादीकी दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना गुरुभक्तिस घभक्ति करना

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका उपवासकरना और मोनरहना एसी इग्यारह एकादशी करनी श्रुतदेवताकी पूजा करनी उद्यानमे अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्टाकराय के पधरावनी और ठाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान ज्ञानीकी और सघकीभक्ति करनी

॥ अंबिकातप ॥ कृष्ण पचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी नैवेद्यफल ढोकना एसे पांचवार करना उद्यापनमे साधुजीको वस्त्र, अन्न, पान, वेहेराना अंबिकाकी मुर्त्ति दोपुत्रसहित आम्र वृक्षकेनीचे होय एसे देरावकी करानी

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आषाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा करनी कार्त्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी मिगसर वदि सप्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी उद्यापनमे लोक नालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिना वलिको रत्न जडित मुकुट चढाना ठाठसें पुजा पढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना ज्ञान गुरु सघकी भक्ति करना

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी ज्ञान गुरु सघभक्ति करना

॥शत्रुजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी आयंविल, उपवास निरतर पाच दिन तक करना,

शत्रुजय नाम गुणना उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लाडु एसे पांच लाडु चढावना ज्ञानगुरु सघ भक्तिकरना

॥ सात सौख्य तप ॥ निरतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना उद्यापनमे सात मोदक ढोकना आठमा मोदक चतुर्गुण वडाकरना । सोलजातिके पकवान चढाना ज्ञानगुरु भक्तिकरना

॥ क्षीर समुद्र तप ॥ श्रावणमासमे करना । निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे क्षीर खाड और घृतसे भरा हुवा थाल प्रभुकों ढोकना ज्ञानगुरु सघ भक्तिकरनी

॥ छमासी तप ॥ एकाशनातरित यथाशक्ति१८० उपवास करना उद्यापनमे एकसो अस्सी मोदक मदरमे चढाना ज्ञान गुरु भक्ति करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी

॥ सवत्सरी तप ॥ एकाशना तरीत ३६० उपवास करना ॥ ऋषभ देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी उद्यापनमे चांदीका घट सेलडीके रससें भरके मदीरमे चढाना अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसें तप आदरना । ज्ञानगुरु सघकी भक्ति करनी ॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम बावीस तिर्थंकर आश्रयिक एकातरीत २४० उपवास करना । जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव॰

कार वाली गुणना उद्यापनमे २४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु नक्ति करे

॥ चतुर्विध श्री सघ तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) करके एकातरीत साठ उपवास करने। उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी ओर ज्ञान गुरु नक्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अठाइस, आयुकर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशोतीन, गोत्र कर्मकी दो, अतरायकर्मकी पाच, सब मील १५८ प्रकृतिके १५८ उपवास एकाशनांत्तरित करना एसे करनेसे एक ओली हुइ एसी आठओली करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणणा उद्यापनमे १५८ मोदक जिनमंदिरमे चढावणा ज्ञानपूजा गुरुपूजा सघपूजा करनी पूजा पटावणी ॥

॥ हार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाशनांतरित सात उपवास करना. पीछे उपवास तीन (तेला) करके एकाशनातरित सात उपवास करना अंतमे वेला करना एवं तपो दिन एक वीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना उद्यापनमे सुवर्ण, माणक, मोति, विद्रुम, रजत, पदक काहलीका सहित हार वनाके वर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाके कंठारोपित करना । ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति संघभक्ति करना

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी भाद्रवा सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप करके अंबिकादेवी के पास संगीतादिक करके रात्रि जागरण करना मोदक फल पुष्पादिक ढोकना धूप दीपादिक करना अगले दिन स्वामी वत्सलकरके मुनिको दान देके पारणा करना रेशमी चुनरी चढानी एसे दशवर्ष करना दूसरे वर्ष फलादिक दुगुने चढाने तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्ष चोगुने चढाने ज्ञान गुरु संघभक्ति करना

॥ लघु संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन आयंबिल करके एक उपवास करणा सिद्धपद गुणना एसे तीन ओली करते बारे दिनसे तप पुराहोय

॥ वृद्धसंसार तारण तप ॥ निरंतर तीन उपवास (तेला) करके एक आयंबिल करना सिद्धपद गुणना एसी तीन ओली करनी इस्मे नव उपवास तीन आयंबिलसे तप पूरा होय उद्यापनमे चांदीका जाहाज बनाके एक थालीमे दुधभरके दुधमे जहाज तिराना जहाजमे मोतिमुगा रखना स्वामीवछल ज्ञानगुरु भक्ति करना पूजा पढाना ॥

लाखी परूवा तप ॥ कार्त्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन गौतमस्वामीके नामका उपवास करना गौतम स्वामी-

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी बा
रे सुद पडवाको इसीतरे तपकरना । द्वितीयाको
दुध चावलसे पारणा करना समाप्तीके उद्यानमे
पाच पाचसेर सवजातिके धान मंदिरजीमे ढोकना
पूजा पढानी ज्ञान गुरु संघभक्ति यथा शक्ति महो
त्सव करना यह तप करनेसे सौभाग्यकी प्राप्ति होय
अठावीस लब्धीकी प्राप्ती होती हे ॥

॥ परतपाली तप ॥ पचवर्ष यावत् श्रीवीर नि-
र्वाणसे प्रारंभ कर तीन उपवास करना पीछे बत्री
स नीवी करनी समाप्तिमे तीन उपवास करना प्र-
तिवर्षे पांचसेरकी लापसी सुगधीदार बनाके स्थाल
मे भरके महोत्सव पूर्वक ढोकना ज्ञान गुरु संघभ
क्ति प्रभावना करना वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १ २-३ ए प्रथमउली
२ १ ३ ए द्वितीयाउली ३ २ १ ए त्रतीया उ-
ली १ ३ २ ए चतुर्था उली २ ३ १ ए पचमी
उली ३ १ २ ए छठी उली १ २ ३ ए सा-
तमी उली ३ २ १ अष्टमी उली २ ३ १ नवमी
उली सवमील तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व
दिन ८१ उद्यापनमे ज्ञानगुरु साधार्मिक भक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १ २ २ १ २ १ १ २ ए उप
वाससे प्रथमउली. २ १ १ २ १ २ २ १ दूसरी
उली २ १ १.२ १.२ २ १ तीसरी उली १.२

२ १ २ १ १ २ चौथी उली २ १ १ २ १ २ २ १ पचम उली- १ २ २ १ २ १ १ २ छठी उली १ २ २ १ २ १ १ २ सातमी उली २ १ १ २ १ २ २ १ अष्टमी उली सिद्धपद गुण ना तपोदिन ९६ पारणा ६४ पांचमास दश दिनको यह तप पुरा होता हे उद्यापनमे जिन पूजा गुरु नक्ति साधर्मिक वात्सल्य करना

॥ श्रेणितप ॥ १ २ प्रथम पक्ति. १ २ ३ डुसरी पक्ति १ २ ३ ४ तिसरी पक्ति १ २ ३ ४ ५ चतुर्थ पक्ति १ २ ३ ४ ५ ६ पचम पक्ति १ २ ३ ४ ५ ६ ७ छठी पक्ति छश्रेणिमे उपवास ८३ आवे पारणा २७ सवमील ११० दिवसे तप पुरोहोय उद्यापनमें सात कोणेका धवल गृह करना, सुवर्णमय निसरणी करणी जिनमंदिरमे ढोकना उद्यापनमेंज्ञानगुरु साधर्मिक नक्ति करना

॥ घन तप ॥ १ २, १ २, २ १, १ २ एसे वारे उपवास और आठ पारणासे वीस दिनमे यह तप पुरा होय सिद्धपद गुणे उद्यापनमे २० मोदक चढावे ज्ञानगुरु साधर्मिक नक्ति करें

॥ निर्वाणदीपक तप ॥ तीनवर्षतक । दीपमालिकाकी चौदश अमासका उपवासकरे अहोरात्री अखंडदीपक रखे रात्रिजागरणकरे। वीर प्रजुके नामकी नवकारवाली गुणे उद्यापनमे ज्ञान गुरु जगति करे

॥ वत्रीस कल्यानक तप ॥ प्रथम एक अठम करके पीठे वत्तीस एकांतर उपवास करना और अतमे एक अठम करना इस तपमे आडतीस उपवास और चोत्तीस पारणे होते हे दोमास वारे दिनसे तप पूरा होताहे सिद्ध पदगुणना उद्यापनमे जिनगृहमे वत्तीस वत्तीस वस्तु ढोकनी ज्ञान गुरु संघ भक्ति करनी यह तप वसुदेवहिंडीमें लिखाहे

॥ कर्म चक्रवाल तव ॥ प्रथम एक अठम करके एकांतर एक शठ उपवास करने और अतमे एक अठमकरना. ६१ उपवास और ६३ पारणेसें चारमास दशदिनको तप पूरा होताहे सिद्धपदगुणणा उद्यापनमे आठ आठ वस्तुजिन मदिरमे ढोकना ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना

॥ शिव कुमार वेला तप ॥ इसमे वारे वेला (ठठ) निरंतर अथवा सांतर करना सिद्धपदगुणना पारणेमे यथा शक्ति आयविल करना. उद्यापनमें वारवारे वस्तुजिन मंदिरमे ढोकना ज्ञान गुरु संघकीभक्ति करना

॥ कर्म चूरन तप ॥ प्रथम एक अठम करके सात एकांतर उपवास करना और अतमे एक अठम करना. ६६ उपवास और ६२ पारणा चारमास आठ दिनको यह तप पुरा होताहे उद्यापनमे आठशाखा सहित चांदीके वृक्षको सुवर्ण कुलाडी-

से छेदन करना सिद्धपदगुणना ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना

॥ अखण्ड दशमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी दशमीके दिन एकाशनादि तपकरनां सिद्धपदगुणना एसी दश एकादशी करनी तपके दिन अखंड अन्नका भोजन करना उद्यापनमे दश जातिके धान्य फल पकवान जिनमंदिरमे ढोकन करना शुध्ध वस्त्र चढाना ज्ञान गुरु भक्ति करना यह तपके करनेसें विधवा न होय एसा महिमा है

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी अष्टमीके दिन आयंबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना सिद्धपदगुणना देवपूजा करनी उद्यापनमे दूधसे भरा कलस एक, कंचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल घट एक, जिन मंदिरमे चढाना ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आश्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना करना। गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना उद्यापनमे एकसो सितर श्राविकाको जिमाना ज्ञान गुरु भक्ति करना

॥ अदुःख दुःखित तप ॥ सुद पक्षकी प्रतिपदाको पहिला उपवास, सुद दुजका दुसरा, सुद तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम उली एसी

पाच उंली करनी सिद्धपद गुणना तपके दिन ऋषनदेवकी मूर्तिको अखंड पुष्प माला चढानी नवीन नवीन नेवेद्य ढोकना उद्यापनमे एक चांदीका वृक्ष बनाके उस्की शाखामे सोनेका पारणा लटकावे रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उसमे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना ऋषदेवकी पूजा करना ज्ञान गुरु संघजक्ति करना

॥ पचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उप वास करना सुदर्शन मेरुका नाम गुणणा डुसरे वखत पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना तीसरे पांच उपवासमे अचल मेरु गिणना । चोथी वारके पांच उपवासमे मदिर मेरु नाम गिणना पांचमी वार पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना इसमे निरंतर करेतो २५ उपवास और २५ पारणा मिलके पचास दिनमे तप पूरा होय उद्यापनमे सुवर्ण मय मेरु बनाके मंदीरमे रखना २५ २५ वस्तु ढोकना ज्ञान गुरु संघ जक्ति करना

॥ बडा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास करके पारणे एकासणा न बनेतो बियासणा करणा एसी चार उंली करते पजुषणकी पचमीके दिन पारणा आवे तेसें तप करणा एसे चार वर्ष करनेसे ए तप पुरा होताहे उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान गुरु सघजक्ति करे

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंडक अपने हाथमें लेके अपनी मुठीसे नरना जितनी मुठी होय उत्तना एकातर उपवास करना अथवा दूसरी विधि यह है की एकासणा वार, नीवी नव, आयविल पाच, उपवास एक, एवं सत्तावीस दीन तप करना सिद्ध पद गुणना उद्यापनमें ठेल्ले उपवासके दिन एक थालमे चावल नर श्रीफल रोकम ड्व्य रखके वाजित्र सहित गीतगाते गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल नेट करना वस्त्रादिक वेराना ज्ञानकी सघकी नक्ति करनी

॥ दवयती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी वीस आयविल करना एसी चोवीस ठली करना यह वमा तप होनेसे एक पच्चीसमी ठली शासन देवीके नामकी करनी और गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस जिनकी ठली होय तिस्का नाम गुणणा और शासना देवीकी ठलीमे शासना देवीका नाम गुणणा इस्मे पांचसें आयविल और ... होतेहे उद्यापनमें चोवीश जिनकी ... चोवीश तिलकचढाने ... यथाशक्ती ज्ञान गुरु साधु...

॥ ऊणोदरी तप ॥

अठावीस कवलका ... न्यून करना ...

तप कहते हे प्रथमदिन आठ दूसरे दिन बारे तीसरे दिन शोले, चोथे दिन चोवीस, पांचमे दिन एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा का पचखान करना सिद्ध पद गुणणा सब मिलके पुरुषको ८१ स्त्रीको ८७ कवल आहार पांच दिनमें लेणा उद्यापनमे कवलकी सख्या प्रमाण मोदक चढाना ज्ञान गुरु सघभक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ८ उपवास करना वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास दो करने शेष तीर्थ करके निर्वाणके एकांतर उपवास तीस तीस करने जिन जिन तीर्थ करके निर्वाणका तप, चलता होय तब उन उन तीर्थ करके नाम की नोकार वाली गुणनी उद्यापनमे चोवीस तीलक, चोवी पकान, चोवीस फल, चोवीस संख्यामे सर्व वस्तुये ढोकनी ज्ञान गुरु श्री सघकी भक्ति करनी

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मल्लीनाथजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थंकरोके केवलज्ञान कल्याणक के तीन तीन उपवास करने. वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सब उन्नीस तीर्थंकरोके दोदो उपवास करने सबमील ५१ उपवास करने उद्यापनमे ५२ मोदक फल, फूल, नैवेद्य, ढोकना गुरुभक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ वीस तिर्थकरोने दीक्षा समय ठ८ कीये तिस्के वेले करने वासुपूज्यका एक उपवास मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना सुमतिनाथ स्वामीके नामका एकाशना करना सबमिल ४७ उपवास एक एकाशणा होताहे उद्यापनमे ४८ मोदकादिक चढावने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु भक्तिकरना

॥ जिन चवन जन्म कल्याणकतप ॥ एके के जिनके च्वन कल्याणक के उपवास करणा जिनजिन तीर्थंरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नवकारवाली गुणे उद्यापनमे चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु भक्ति करे

॥ गौतमपरूघातप ॥ पदरे पूर्णिमा पर्यंत एकाशनादितप करना गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास क्षीरका पात्र भरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अभावे महावीर स्वामी की पूजाकरनी उद्यापनमे चादीका परूघा (पात्रें) क्षीरभर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकना गुरुजीको झोली पात्रे प्रमुख देनां

॥ लघुपचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससे यह तप पूराकरना यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमे सरु नहि करना

पचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सुदि पांचमीका चोवी हार उपवासकरना नमोनाणस्स पद गुणना यथाशक्ति उद्यापन करना यहतप कार्त्तिक मिगसर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, जेष्ट, आषाढ, ए सात मासमेसे हरेक माससें सिरु कीया जाता हे । अखड करना उद्यापन करना

॥ पुन्डरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास करके पुन्डरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गुणे और पुजा करें एसे सात वर्ष करे उद्यापनमे अगणित श्रावकोको जिमावे अथवा प्रजावना करे अगणित द्रव्यसे ज्ञान जक्ति करे अगणित अन्न पान मुनिको वेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि योंहि पसली जरके वेरावे । और प्रजावनाजि पसली जरके देवेपरंगिनेनही

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन करने वालोंको दिवसमें उकडु आसनमे रहना और रात्रिको वीरासनसें रहना चहिये (वस्त्र रहित रहना) यह तपशोलेमासतक करना तिस्मे प्रथम मासमे एकांतर उपवास करनां दुसरे मासमें दो दो उपवास पारणा करनां तीसरे मासें तीन तीन उपवास पारणा करना• चोथा मासें चार चार उपवास उपर पारणा करना एसें एकेक मासें एकेक

दिन तपका वढाते जानां एसे शोल मास तप करनां शोले मासमे सव मिल ४७७ दिन उपवास आवेगे सव मिलके ७३ पारणा होतेहे· सिद्धपद गुणणां उद्यापन यथाशक्ती॥

आयविलवर्द्ध मान तप ॥ प्रथम एक आयंविल करके एक उपवास, दो आयविल करके एक उपवास, तीन आयविल करके एक उपवास, चार आयंविल करके एक उपवास एसे एकेक आयविल वढाते जानां यावत् एकसो आयविल पर्यंत वढानां· सों आयंविल उपर एक उपवास करें यह तपमे सव मिल एकसो उपवास आवें और पांचहजार पचास आयविल होतेहे ए महा तपका सेवन चौदेवर्ष, तीनमास और वीस दिनसें पूरा होताहे उद्यापन यथा शक्ती करे·

॥ अक्षयनिधि तप ॥ घर देरासरमे अथवा उपाश्रयादि उत्तम स्थानमे विचित्र चित्रित घटस्थापन करें तीस्मे प्रतिदिन मुठीजरके चावल और यथाशक्ति द्रव्य मालतें जाय एकाशनादिक तपकरे पजुसणके पनरे सरुकरे पजुसणमे तप समाप्ति हे पजुसणमे घटपूर्ण जर और होनेसें ऊपर श्रीफल महोत्सव पूर्वक म

पूजा पढावें ज्ञान पूजा गुरू पूजा करे एसें चारवर्षे पर्यंत करे उद्यापनमे त्रिपद्विणी करके देव आगे ढोकना यथाशक्ती महोत्सव करना ॥

चांद्रायण तप ॥ चन्द्रमाजेसें सुक्लपक्षमे एकमके दिनसे वढता हें तेसें परुवाके दिन एक कवल, दुजके दिन दो कवल, तीजके दिन तीन कवल, चोथके दिन चार कवल एसें एकैक कवल पुनमतक वढावे पुनमके दिन पनरे कवल आहार करे कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी रीतिसे एके क कवल घटाते यावत् अमावास्याकों एककवल आहार करे एसें यवमध्य प्रतिमां तपत्नी इस्को कहते हे यह चान्द्रायण, यवमध्य तप एक मासकाहे उद्यापनमें चांदीका चन्द्र और सोनाके वत्तीस यव वनाके मंदिरमे चढावे और ज्ञान पुजा गुरू पूजा संघ पूजाकरे । अष्टप्रकारी पूजा पढावे



तृतीय परिछेद प्रारंभ ।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं

॥ चिदानद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, एसे सिद्ध परमात्माको मेरा नमस्कार हो मन शुद्धिको धरने वाले योगीश्वरो, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिस्का स्वरुपकों देखतेहैं, एसे परमेश्वरकी मैं स्तवना करताहु प्राणिगण सुख समूहको चाहतेहे और सर्व सुख समूह मोक्षमेंहे वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहे और ध्यान मनकी शुद्धीसे होताहे मनोशुद्धी कषायोके जयसें होतीहे कषायोका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहे इंद्रियोका विजय सदाचारसे होताहे गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सदुपदेशसे प्राप्त होताहे सदुपदेशोसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहे समृद्धि प्राप्त होनेसे सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहे सद्गुणोके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोपदेश नामक ग्रथकी रचना करी जातिहे सदाचारके विचारोका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुपोको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंको अत्यानदकारी, यह ग्रथ, पुण्यवत प्राणियोको, विशेप श्रवण करने लायकहै

अनत पुद्गल परावर्तो करके पुन दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चहिये क्योकी सुननेसे, देखनेसें, करनेसें, दूसरोसें करानेसें, अनुमोदनेसें यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे तीन वर्गके साधनमेंभी धर्म वर्गको अधिक साधन करना क्योकी धर्म वर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्केंहे मनुष्यभव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इन्द्रियोकी सुदृढता, परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजे विना पुण्य प्राप्त न होशक्तीहे कदापि पुण्ययोगसे उपरोक्त मील शक्तेहें तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी दुर्लभहे कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य विना मिल शक्ता नहीहे

न्यायसें राजा, सुगधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसें, भोजन ज्यों शोभनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु भी सदाचारसेंहि शोभनीक होतीहे सदाचार तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसें परस्पर अविरोध करके तीनो वर्गका खुसीसें साधन कर शक्ताहे

पण्डित पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसें वा पीछली दो घडी रात्रिसें उठे. निद्राकों त्याग कर पञ्चपरमेष्टी मंत्र पढे दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसें जो नाशिका वहती होय उस तरफका पग शय्यासे उठती वरत प्रथम धरती पर धरे शय्याकों और शयनके वस्त्रोका करके दूसरे शुद्ध वस्

पहिन सुस्थान पर वेठके पंचपरमेष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख वेठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो सुस्थित हो वा दु स्थित हो परं पचपरमेष्टी नवकारमत्रके जपनेसें प्राणि सर्व पापसें रहित होता हे अगुलीके अग्र भागसे, मेरुकों उल्लघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्राय अल्प फल कारक होताहे

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेहे उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहे जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहे विना मौन, विना सख्या, विना चित्त स्थिर रख्खे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहे पीछे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते देवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सावत्सरीक, एसें पाच प्रतिक्रमण कहेहे प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित्त होके मगल स्तुतिका पाठकों याद करे

मंगलाष्टक

मंगल जगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रजु ॥
मंगलं थूलिजद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगल ॥ १ ॥
नाजेयाद्याः जिना सर्वे, जरताद्या श्च चक्रिण ॥
कुर्वंतु मंगलं सवे, विष्णवः प्रति विष्णव ॥ २ ॥
नाजि सिद्धार्थ जूपाद्या, जिनानां पितर स मे ॥
पालिताखम साम्रज्या, जनयतु जयं मम ॥ ३ ॥
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातर ।
त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय जवंतु मे ॥ ४ ॥
श्रीपुमरीकेंद्रजूति, प्रमुखा गण धारिण ।
श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशतु मे ॥ ५ ॥
ब्राह्मी चदन वालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।
श्रखंम शील लीलाद्या, यछतु मम मगलं ॥ ६ ॥
चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।
सम्यग्हृशां विघ्नहरा, रचयतु जयश्रिय ॥ ७ ॥
कपर्दी मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात विक्रमा ।
जैन विघ्नहरा नित्य, दिशतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥
यो मंगलाष्टक मिद पटुधी रधीते,
प्रातर्नर सुकृत जावित चित्त वृत्ति ॥
सौजाग्य जाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
नित्य स मगल मलं लजते जगत्याम् ॥ ए ॥

पीछे मंदिरजीमे आके नि.सही कहके सर्व श्राशातनाका त्याग करके तीन प्रदक्षिणा देवे विज्ञाश,

हास्य, थुक (वलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमदिरमे नहि करना "हे जगन्नाथ तुमकों नमस्कार हो' इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन राजके सन्मुख रखे राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसे नहि जाना क्योंकी फलसें फल मीलताहे भगवंतके दक्षिण भागमे पुरुष, दहिने भागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वदना करे पीछे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासे बेठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डोडाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों सयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे पीछे अपने घर जाके प्रात· क्रिया करे (भोजन, वस्त्र, घरके परिवारकी यथायोग्य व्यवस्था करे) बाधव, नोकरों प्रमुखोंकों अपने अपने कार्योंमे नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पौषध शालामें जावे शुश्रुषा (गुरुकी सेवा) श्रवण (उपदेशका सुनना) ग्रहण (स्वीकार करना) धारणा (याद रखना) उहा (तर्क करना) अपोह (शमाधान करना) अर्थ (अभिप्राय समजना) तत्वज्ञान (तत्वसमजना) यह बुद्धीके आठ गुण हे धर्मका जाणकार होना, दुर्बुद्धिका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

वैराग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेंहे आचार्य और साधुओकों पचांग नमस्कार करके आशातना त्याग करके गुरुके सन्मुख बेठना. दों ढीचण, और दो हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके नमस्कार करनेको पचाग नमस्कार कहतेहे

पलाठी बाधके, लबे पग पसारके, पग उपर पग चढाके, दो कांख दिखाते, अगामी, पीठाडी, बरो बर दोनु तर्फ, गुरुके पास बेठना नहीं अपनेंसे पूर्व आए हुवेकी वातं पूर्ण हुवे विना गुरुको बुलाना नही आशयका समजदार गुरुके मुख सामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासें धर्म शास्त्र सुने. वाख्यान पूर्ण हुवे पीठे अपनी शंकाका समाधान करे (पुठे) और देव गुरुके गुण गाने वाले (भाट भोजक) को यथोचित दान देवे. जिस्ने प्रात प्रतिक्रमण न किया होय सो वांदणा देके गुरुको वादे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत प्रमुख यथाशक्ती पच्चरकाण करे दान देनेवालेजी जोनत पच्चरकाण न करेतो तिर्यंच योनीमें उत्पन्न होतेहे हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न हो केजी बंधनमें पडतेहे. जो दाताहे सो नरकमे न जाय जो व्रत पच्चरकाण करता हे सो तिर्यंच न होय जो दयावत होय सो हीन आयुष्य न होय. सत्यवादी होय सो डुस्वर (डुष्ट अवाजवाला)

न होय तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रुप मृगको वश्यकरनेमे जाल (फांसा) समान हे और कषाय रुप तापको मिटानेके लिऐ द्राक्षासमान हे फिर कर्म रूप अजीर्णकों मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे जो दूरहे, दुराराध्य (दुखसें मिलने लायक) हे, देवताओकोंजी जो दुर्लजहे, सो सब तपसें मिल शक्ताहे क्यो कि तपको कोई उल्लघन करने समर्थ नही पीछे वजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे मित्रोके उपकारके वास्ते, वाधवोके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे क्योंकी केवल अपना पेट कोन नही जर शक्ता हे?

नीच जनोचित व्यापार करना नही और दूसरोंसें जी कराना नही क्योंकि सपदा पुण्यकर्मसे वढतीहे पर पापसे वढती नहि कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी वढे पर उसका परिणाम अच्छा नहीहे. जिस व्यापारमे वहुत आरजहोय, महापापहोय, लोकमे निंद्याहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार (काम) नही करने लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाज होय तोजी व्यवहार नही

एव चरन् प्रथम याम विधिं समग्रं ।
श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय ८.

विज्ञान मान जन रजन सावधानो ।
जन्म द्वय विरचये त्सकल स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्याया प्रथम वर्ग समाप्त ॥

॥ अथद्वितीय वर्ग । प्रारभ्यते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयके विचक्षण जन जहा जीवाकुल भूमी नहोय एसे स्थान पर पूर्वदिशा सन्मुख वेठके स्नान करे स्नान करनेके लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय एसा, एक वाजोट (पट्टा) वनावे जिस्का पाणी दुसरे वासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे रजस्वला अथवा नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आया होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्तकसे सर्वांग स्नान करना उपरोक्त कारण सीवाय देव पूजाके वास्ते वुद्धिवत मस्तक वर्जित उष्ण जलसें स्नान करे योगी पुरुष कहतेहें की चन्द्र, सूर्यके किरणोके स्पर्शसे समग्र जगत शुद्ध होजाताहे तो मस्तकभी उनके किरणोसे स्पर्शित होनेसें सदा पवित्र गिना जाताहे

हर रोज शिर भीजोनेसें जीवघात होताहे इसलिए नही भिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे एसे

दिकसें पूजा करे केशर चदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहित महितं सुरेंद्रै,
श्रीमज्जिन त्रिजगत्त पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले

जाति जपा बकुल चपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदे ।
ससार नाश करण करुणा प्रधानं,
पुष्पे· परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूप जिनेंद्र पुरतो गुरुतोष पोष,
भक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले

ज्ञानच दर्शन मथो चरण विचित्य,
पुज त्रयच पुरत प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतै कणगणै· स्फुरै रपीह,
श्रीमतमादि पुरुष जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल वीजपूर,

सदाचार हें सो सब धर्मके हेतुहे अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसें वेष्टित रहनेसे मस्तक कभी अपवित्र होता नहीं अज्ञ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेहे, एसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माको मलीन करतेंहे स्नान करनेंमे भीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर भीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहाहि खमा रहे जो खमा न रहेतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगे फिर कित नेक जीवोके घातकाभी संभव होवेगा इससे पापका भागीभी होवेगा गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुषका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकी उससें कामरागकी वृद्धि होतीहै उत्तम कलसमे भरा जलसें जगतकों जलका अभिषेक करे और पीछे उत्तम वस्त्रसे अग लुछन करके चदना

दिकसें पूजा करे केशर चदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहित महित सुरेंद्रै,
श्रीमज्जिन त्रिजगत पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा वकुल चपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदै ।
संसार नाश करण करुणा प्रधानं,
पुष्पै परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेत,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूप जिनेंद्र पुरतो गुरुतोप पोष,
भक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले

ज्ञानच दर्शन मथो चरण विचित्य,
पुंज त्रयच पुरत प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतै कणगणै रपरै रपीह,
श्रीमतमादि पुरुष जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

जंवीर पूग सहकार मुखै फलैस्तै ।
स्वर्गाद्यनल्प फलद प्रमदा प्रमोदं,
देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे
सन्मोदकै वैटक मरुक शालि दालि,
मुख्यै रसंरयरस शालिभि रन्नजोज्यै ।
क्षुत्त्रट्व्यथाविरहित स्वहिताय नित्य,
तीर्थाधिराज महमादरतो यजामि ॥
नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे
विध्वस्त पाप पटलस्य सदोदितस्य,
विश्वावलोकन कला कलितस्य जक्त्या ।
उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,
दीपतम प्रशमनाय शमाबुराशे ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे
तीर्थोदकै र्धुतमलै रमलस्वजाव,
शश्वन्नदी हृदसरोवर सागरोत्थै ।
दुर्वार मार मद मोह महाहितार्थं,
ससार ताप शमन जिनमर्चयामि ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे
पूजाष्टक स्तुति मिमा मसमा मधीत्य,
योनेन चारु विधिना वितनोति पूजा ।
भुक्त्वा नरामरसुखान्यविलम्बितानि,
धन्य सुवास मचिराद्व्रजते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमे प्रवेश करते डाये हाथपर जमीनसें देढ हाथ उचे शल्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे पूजा करनेवाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बेठे परं विदिशामें न बेठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे

पूर्व दिशा सामने बेठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाभ होय अग्नि दिशामे बेठेतो सताप उपजावे दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक नैरुतमे बेठेतो उपद्रव करे पश्चिम और वायव्य दिशामे बेठेतो सतानकी हानी करे. दो पांव, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कध (खभा) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसे भगवंतकी प्रथम पूजा करे उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी ललाट, मस्तक कठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना

प्रभाते शुध्ध वाससे,मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें भगवंतकी पूजा करनी एक पुष्पके दो विभाग नहि करना कलिको छेदनानहि पत्र,पांखडि, कलिकों छेदन करनेसे हिसा जेसा पाप लगताहे हस्तसें गिरा,पेरकोलगा, जमीन पर पडा, शीर पर धरा एसे पुष्पोसे कहि पूजा न करनी गध रहित, तीव्र सुगध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, एसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नही भगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना पान अथवा फल हस्तमे रखना उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक वीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमे अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम

स्नात्र, चदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासक्षेप, अक्षत, सुपारी, तांबुल, सुगंध द्रव्य, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, छत्र, चामर, आभूषण

विशेष लाभार्थी श्रावक शुध्ध वस्त्रसे सुशोभित होके अशुचि मार्गको छोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य (पचायतीमंदिर) दर्शनके लिए जाय

पूजाका फल विषे

मदिरमे दर्शनके लिए जाउगा एसा विचार करनेसें एक उपवासका, जानेको उठेतो दो उपवासका, मदिरके मार्गमे चलेतो तीन उपवासका, मदिरको देखनेसे चार उपवासका, मदिरके दरवज्जेपर आनेसे छउपवासका, मदिरके अदर जाके दर्शन करनेसे पदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसें एक मासके उपवासका फल मीले तीन वार "नि सीही" शब्दकों उच्चारके मदिरमें प्रवेश करना मदिरकी प्रथम सारसभाल (देखरेख)करके पीछे पूजा करना

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीठे अदर बाहार सब जिनबिंबकी पूजा करना अवग्रहसें बाहिर नीकलके पीठे जक्ति सहित वंदना करे फिर सामने बेठके चैत्य वंदना करे एक नमुथ्थुणका पाठसें जघन्य, दो नमुथ्थुणसे मध्यम, पांच नमुथ्थुणसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी फिरजी दुसरी प्रकारसेंजी तीन प्रकारकी चैत्य वदना होतीहे स्तुति पाठ बोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी (नमुथ्थुणका पाठ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेइयाइं यहपाठ वखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मुक्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे.) (यह परंपरागत आम्नायहे) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोमाके अकार दोहाथको एकठे संयोजित करके परस्पर अगुलियोको योजित करने को "योग मुद्रा' कहते हे (यह चैत्यवदन करने के वरत होती हे) चार आंगुली आगे, और तीन आंगुली पीछें, पिछुलि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके, नीची दृष्टीसें खमा रहनेको "जिनमुद्रा" कहते हे (यह कायोत्सर्ग समय होतीहे) दो घोटणके विचमे रहे हुवे, मोति पकनेकी दो ठीपके समान दोनु हाथ परस्पर जुडे हुवे होय, एसे आकारवाले दो हाथोको अप

नी ललाट (कपाल) पर लगाना उस्कों "मुक्ता शुक्ती" मुद्रा कहते हे (यह मुद्रा जय वीयराय कहती वख्त करी जाती हे)
जगवंतको नमस्कार करके मंदिजीसे बहार निकलती वरत "आवस्सही" एशा उच्चार करके निकले फिर घर जायके अपने जाइ मित्रोंको साथ लेके जक्ष्य अजक्ष्यका (विचारवाला) जोजन करे (२२
पग धोया सिवाय, क्रोधाध होके, डुर्वचन बोलता दक्षीण दिशाके सन्मुख बेठके जोजन करेसो राक्षस जोजन कहा जाताहे
पवित्र वस्त्र और शरीरसें अछे स्थानपर बेठके स्थिरतासें देव गुरुको याद करके, जोजन किया जाय सो मानुष्य जोजन गिना जाताहे स्नानादिकसें शरीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो (माता पिता) कों प्रसन्न करके, मुनिजनोंकों और सत्पात्रोंको दानादिक देके पीठे जोजन किया जाय सो उत्तम जोजन गिना जाताहे

जोजन, मैथुन, वमन(कय उलटी) दातण, लघु नीति, वडीनीति (झाडा पेसाब) करनेके समय बुद्धिमानोंकों मौन रहना चहिये क्यों की ज्ञान आशातना होतीहे अग्नि कोन, नैरुत कौंन,और दक्षिण दिशि यह तीन दिशा जोजनके वास्ते वर्जित हे सूर्यके उदय और अस्त समय, चन्द्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने विरादरोका शव (मुरदा) पडा होय,, तहा तक, जोजन नही करना

सपदा छते जोजन में लोज रक्खे सो बडा मूर्ख हे मानो वो पुरुष अन्य जनोके लिए धन कमाताहे

अशुद्ध और अज्ञात जाजनमे, जाति वाहिरके घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध अन्न पान फलादिक खाना नही

वाल, स्त्री, गर्जपात, गो, ए चार हत्याके करने वालेकी, आचार ज्रष्टो की, कुलमर्यादाका उलघन करनेवालोकी पक्ति मे वेठ के जाणकार होके जोजन करना नही

मदिरा, मास, सेहेत, म्रक्षण (लुणी मसका) वड पीपल उवर वृक्षादि पाच जाति के फल, अनतकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि जोजन, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा अन्न, दोदिन उपरात का दहि, विगमा हुवा अन्न, जिस्मे जीव पडे होय एसे फल, पत्र, पुष्प, औरजी जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका सजव होय एसे अचारादिक सव अजक्ष्यो कों धर्मवत प्राणी वर्जित करे

जोजन उर वडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि पाणी पीनेमे और स्नान करनेमें उतावल करना नहि

पानी पीना जोजनकी आदिमे विष समान अतमें शिलासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक जोजन नही कर-
ना पूर्ण क्षुधाकालमे अपने को रूचे सो जोजन क
रना जोजन किये पीठे मुख शुद्धि जल सुपारी ता
बूलादिकसे करनी

विवेकी जन रस्तेमे चलते तावूल न खाय सुपा-
री प्रमुख अक्षत फल दातोंसें जागना नही क्यों
की उससें जीव घात होता हे

जोजन कीये पीठे उष्णकाल सिवाय सोना नही
क्यों की सोनेसे शरीरमे व्याधिका संजव होता हे
इति दिनचर्यायां द्वितीय वर्ग समाप्त

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारंज ॥

जोजन किये पीठे अपने घरकी शोजा देखता,
विचक्षणोसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोकों शिखा
वन देता थका सुखसें दो घडी वार विवेकी जन अ
पने घरमे ठहरे

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन हे ध-
नादिकका सुख दैवाधीन हे एसे तत्ववेत्तोओको
कजी गुणकी हानी नहि होती हे

कुल हीन पुरुषजी अपने गुणसें उच्च दशाको
प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचमसें उत्पन्न होने
वाला पंकज (कमल) कों सब अपने शिरपर
धारण करतेहे और पंक (कादा किचम) पेरसें
घिसा जाता हे

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खांण न-
ही हे पर उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात
और उच्चदशा प्राप्त होता हे जेसें सत्वादि गुण
युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेंहे तेसे एक विश
शति गुण युक्त होनेंसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते हे

(१) जिस्का हृदय क्षुद्र (तुछ) नहो, (२) सौम्य
होय, (३) रूपवत हो (४) जन वल्लभ हो (५) क्रुर
न हो, (६) भवभीरु (ससारसें जन्म जरामरणादि-
कसे डरताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला
हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११)
मध्यस्थ हो (१२) सोम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो
(१४) सद्रक्ता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६)
दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराको माननेवाला हो
(१८) विनीत हो (१९) गुणकों भूलनेवाला न हो-
(२०) परहित हितार्थी हो (२१) सब वातोका सम
जदार हो यह इक्किस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके
योग्य हो शक्ताहे

पडित पुरुषोने वहुत करके राज कथा, देशक
था, स्त्री कथा, भक्त कथा नही करनी क्यों की
एसी विकथा करनेसें कुछ लाभ तो होता नही पर
अनर्थका तो वरोवर सभव हे

धर्म कथाभी अपने सुमित्रो और वधवोसें कर-

नी धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाहये

जिससें पाप (अधर्म) बुद्धिकी वृद्धि होय एसे लोगोंमे मित्रता श्रौर सहवासजी नहि रखना को इका कोप, वचन सहन करना पर अपने न्याय को न ठोमना

अवर्णवाद तो कोइकाजी विचक्षणने बोलना नही श्रौर पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अ वर्णवाद जरूर बोलनाहि नही

मूर्ख, डुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्म-निंदक, कुशीलिया, लोन्नि, चोर, इतनेकी सगती कजी नहि करनी

"अज्ञात जनकी प्रसशा करनी,अज्ञातको अपने घरमे स्थान (उतारा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेसे वडे लो-गोंसें कोप वा विरोध करना, गुणिजनसे तकरार क रनी, अपनेसे अधिक दरज्जेवालेंकों नोकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी डु खी अ वस्थामेंजी अपना धन पराये हाथमे होयसों नही याचना, अपने विरादरोंमे विरोध करना, स्वजनों कों ठोडकर अन्यजनोंसें मैत्री करना, शक्ति ठते ध र्ममें उद्यम नही करना, नोकरोका दड करके उस धनसे अपने मजा उमानी, डु खी अवस्थामे अप

ने वाधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसे अपने गुणका वर्णन करना, अपने वोलते वोलते हसना, जिस तिसका खाना," यह सव कार्य लोक विरूद्धहे और मुर्खताके चिन्हहे सो त्याग करना न्यायसे धन उपार्जन करना अपनी रीत रीवाजोमे देश, कालके विरुद्धका त्याग करना राज विरोधियोका संग और महाजनसे विरोध न करना कुल,शील,आचारमे अपने समान जनसे और भिन्न गोत्रवालेसें व्यावसादी करना अपनी जातिवालोंके पडोसमे अपना निवास रखना जहा उपद्रव होवे एसें स्थानका त्याग करना अपनी पेदासीके प्रमाणमे खर्चरखना लोकमे निंदा न होय एसा अपनी सपदानुसार वेष रखना अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न छोडना

जो अपना आश्रय चाहे उनकें हितमें रहना अपना वलावलका विचार रखना अपने हित अहितका विशेष विचार रखके कार्यमे प्रवर्त्तना अपनी इंद्रियोको वश्य रखना देव व गुरुमे वडा भक्तिभाव रखना स्वजन, दीन हीन दु खी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी यह विचार चातुर्यताकों अपनें चित्तमे रखना विचक्षणोसे शास्त्रसुनता, वा सीखता थका विचक्षण कितनाक समय को व्यतीत करे नसीव पर विश्वास रखकर निरु

धम चेंगा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे क्यों की उद्यम विना नसीव कभी फल देता नहीं है कूडा तोल, कूडा माप, कूडालेख प्रमुख अनर्थ कार्योंको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे सदा प्रवर्त्ते अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, भाटककर्म, स्फोटककर्म, दंतवाणिज्य, लाक्षावाणिज्य, रसवाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यन्त्रपीडन, निर्लांछन, (वेलके कर्ण नाक अंड नख रोम छेदना) असतीजन पोष (कुत्ते बिल्ले तोते प्रमुख जानवरोसें आजीविका करनी) दवदान (दव लगाना) सर द्रह तलाव शोषण करना यह पदरे कर्मादानका व्यापार श्रावक न करे

लोखंड, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत (मधु) कंद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका निमित्त श्रावक व्यापार न करे

उष्ण कालमे बहुत जीव विराधना होनेके भय से विचक्षण श्रावक फाल्गुण माससें उपरात तिल, गुड, टोपरा, द्राक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्यापार न करे

चातुर्मासमे श्रावक गाडीमे घोडे वेलोकों जोडे नही बहुत आरंभ प्रवर्त्तक कृषि कर्म श्रावक करे करावे नही

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना बहु

त लाजके लिए अधिक लोन न करना क्यों की अधिक लाजके लोजसें कोइ समय मूल धनकाजी नाश हो जाता हे विशेष लाज होता होय तथापि उद्धार कोइको न देना दगिने रखेके सिवाय धनके लोजसें कोइकों व्याजसें धन न देना

चौरीका माल निश्चय हुवे पीछे थोडे मोलसे मिलता होय तो जी न लेना सरस निरस वस्तुका नेल सेल न करना चोर, चमाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मज्रष्ट, इनोके साथ इह लोक परलोकके सुख वांछकोने व्यवहार न करना

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले और लेनेके समय अपने वचनकी कबुलातको लोपनही करे

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना सोना, चांदी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये विना लेना नही

राज बल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इस्के लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये पर राज्यमे पराधीन न होना (स्वाधीन रहना योग्य हे)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य (माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु) इनपर क्रोध न करना इव्यार्थी पुरु

पको अतिक्लेश, धर्मका उल्लघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना

लेण देणके कार्यमे अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोकी वमी प्रतिष्टा होती हे

विचक्षणोंको अपना धन मालका नुकसान होते ठते नी अपने वचन पालनेकी वमि जरूरत हे स्व ल्प लाजके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय डु खी होते हे

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चोथा प्रहर दिन वितावे और सध्या समय व्यालु करनेको अपनें घरजावे एकाशनादिक तप जिसनें किया होय ठनोने सध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना

दिवसके अष्टम नागमे (चार घमी दिन ठते) व्यालु करना सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकीने नोजन करना नही आहार, मैथुन, निद्रा, स्वाध्याय (पठन पाठन) यह चार कृत्य सध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये

क्यों की सूर्यास्त समय नोजन करनेसें व्याधि होती हे मैथुन करे तो डुष्ट गर्न होता हे निद्रा करे तो नूतादिकोंका उपद्रव होता हे पठन पाठ नसे निर्बुद्धी होता हे

हि नही वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचंपी) करनेंसे अ
क्षय सुख, मंगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहै इसलिए
प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा
करे गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटनां,
गुरुको अपने पगका स्पर्श न होने देना एसे गुरुके
सर्व शारीरीक खेदको मीटावे उपाश्रयसे निकलके
रस्तेमें जो जो जिनमंदिर आवे उनमे दर्शन करता
थका अपने घर जाय तिहा पग धोयके पंचपरमेष्टी
मंत्रका जाप करे

मेरेको अरिहंतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, के
वली भाषित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो

मंगलके करनेवाले, दु:खगणसें दूर रखनेवाले,
शीलसन्नाह (बकतर) को पेहेनके काम कंदर्पको
जितनेवाले थूलीभद्र मुनि कों नमस्कार हो

गृहस्थ छतेंभी जिस्की बडी शील लीलाथी औेर
सम्यक्त के प्रभावसे जिस्की विशेष शोभाथी एसे
सुदर्शन सेठको नमस्कार हो

कामकंदर्पकों जितनेवाले, आजन्मपर्यंत अति
चार रहित ब्रह्मचर्यकों परिपालन करनेवाले एसे
मुनियोंको धन्य,कृत पुण्यसे नमस्कार हो

एसे पंच परमेष्टीका स्मर्ण करके कामोदयके लिए
नीचे प्रमाणे विचार करे जिस्ने अपनी इंद्रियोका
जय कियाहि नहि एसे बहुल कर्मी, नि:सत्व, जीव,

सत्क्रिया सहित ज्ञान मोक्ष साधक होता है एसा जाणके सध्या समय पुन आवश्यक करे

क्रियाहे सोहि फल दायक होतीहे पर एकिला ज्ञान फल दायक नही हो शक्ता है देखिये स्त्रीको जोगे विना और जोजनको खाए विना एकिले उस्के सुखके जाननेसे सुख न होता है

गुरुका योग न होय तो अपने घरमे स्थापनाचार्य अथवा नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करके उस्के पास अवश्य प्रतिक्रमण करना

धर्मसेंहि सर्व कार्य सिद्ध होतेहे एसा हृदयमे जाणके सर्वकाल तद्गत चित्त रहना और धर्म समयकों न उल्लघन करना कारणकी धर्मका साधनके समय गए पीछे अथवा समय न हुवे पहिले जोजप तपादिक धर्म क्रिया किइ जाय सो अनवसरपर उखर क्षेत्रमे बोए बीजके न्याय निष्फल हो जाताहे

पण्डित पुरुष जो धर्म क्रिया करताहे उस्मे सम्यक् विधि करताहे क्यो कि न्यूनाधिक विधि करनेसे मंत्रजापके न्याय न्यूनाधिक करनेसे लाजके बदले अधिक दोप लगताहे अर्थात् न्युनाधिक क्रिया करनी नहि औषधीकी लेनेकी विधिमे चूक कीइ जाय तो अनेक अनर्थको उपजा शक्तीहे तेसें धर्म क्रियाकी अविधिसे सेवनकीइ जायतो अनेक अनर्थ उपजाती हे वास्ते विधिमे विलकुल चूक करना

हि नहीं वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचपी) करनेसे अ क्षय सुख, मंगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहै इसलिए प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा करे गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटना, गुरुको अपने पगका स्पर्श न होने देना एसें गुरुके सर्व शारीरीक खेदको मीटावे उपाश्रयसें निकलके रस्तेमें जो जो जिनमदिर आवे उनमे दर्शन करता थका अपने घर जाय तिहा पग धोयके पचपरमेष्टी मंत्रका जाप करे

मेरेको अरिहंतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, केवली ज्ञापित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो

मगलके करनेवाले, दु खगणसें दूर रखनेवाले, शीलसन्नाह (बकतर) को पेहेनके काम कदर्पको जितनेवाले थूलीभद्र मुनि को नमस्कार हो

गृहस्थ छतेभी जिस्की बडी शील लीलाथी और सम्यक्त के प्रभावसे जिस्की विशेष शोभाथी एसे सुदर्शन सेठको नमस्कार हो

कामकदर्पको जितनेवाले, आजन्मपर्यंत अतिचार रहित ब्रह्मचर्यको परिपालन करनेवाले एसे मुनियोको धन्य, कृत पुण्यसे नमस्कार हो

एसे पच परमेष्टीका स्मर्ण करके कामोदयके लिए नीचे प्रमाणे विचार करे जिस्ने अपनी इद्रियोका जय कियाहि नहि एसे बहुल कर्मी, त्ति सत्व, जीव,

एक दिन मात्रजी शील पालनेको समर्थ नहो शक्के हे हे ससार समुद्र मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड विचमें न होते तो तेरा पार को प्राप्त करना कुछ दूर नथा मुक्ति पदको अतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणको अवश्यमेव एक शिक्षारूपहि गिणनी चहिये असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट)मूर्खता,लोजकी अधिकता,अपवित्रता, दया रहितता,इतने दोष स्त्रीयोंमे स्वज्ञावसेंहि होतें हे

जो स्त्री (मुक्ति) रागी उपरजी वैरागी होती हे एसी स्त्रीको कोन जोगवेगा ? जो पमित होगा सोहि जोगवेगा क्यो कि मुक्ति रुपिणी स्त्री वैरागी उपर बरोबर रागी हे पर रागी उपर रागी नहीहे

एसा स्त्रीयोके विषयमे असारता विचारता थका समाधिमे कितनाक काल निद्रा करे परतु पर्वतिथी प्रमुख उत्तम दिनोमे उत्तम श्रावक स्त्रीयोसे विषय जोग करे नही

विवेकीगण बहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे क्यों की विशेष निद्रा करनेसे धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे

जो प्राणी स्वल्प (थोमी) निद्रा करे, स्वल्प आहार लेवे, स्वल्प आरज करे, स्वल्प परिग्रही, स्वल्प क्रोध करनेवाला होय एसे लक्षणवालोको अवश्यमेव स्वल्प ससार होता हे

निद्रा, आहार, नय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि (लडाइ) क्रोध यह चिजे ज्यों ज्यो अधिक कीये जाय त्यों त्यो अधिक वढती जाती हे

विघ्न रूप वल्लिका समुदायकों छेदनेमे साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ नगवतको याद कर के सयन करे तिनको अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका परा नव न हो शक्ता हे

अश्वसेन राजा ओर वामादेवी राणीके पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मर्ण करके सोवे तो अवश्य मेव अनर्थ कारक दुष्ट स्पप्न न देखे महसेन राजा ओर लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चंद्रप्रन्न स्वामीका स्मरण करनेसें सुखसें निद्रा आती हे सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेमे साक्षात् गरुम समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शातिनाथ स्वामीका जो ध्यान करताहे उनको विलकुल नय न हो शक्ता हे

॥ इति दिनचर्याया चतुर्थ वर्ग ॥

सर्व नवोमे उत्तममे उत्तम यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सफल सफल करना निरतर धर्मके सेवनसे सुखन्नी तदनुसार अचल मिल शक्ता हे वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुनध्यान जप तपादिक सुकृत्योमे अपने दिन अवंध्य (असम) करना

आयुपके तीसरे नागमे अथवा अत्य समयमे

जीव आगतुक जवका शुजाशुज आयुष्य वांधताहै· आयुष्य वधका तीसरा जाग वहुत करके पच पर्वी की तिथीयोके दिन आताहै इसलिए पच पर्वणीमे आरज त्यागादिक सुकृत्यो कीये जाय तो अवश्य शुज आयुष्य वध होय वास्ते पच पर्वणीमे अवश्य विशेष धर्म कृत्य करना उचित है

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसे रागद्वेषकों जय करके आगलुक जनमे साधु श्रावक यह दो प्र कारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहै

पचमीके आराधनसे पच ज्ञानकों प्राप्त करके फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसे शुद्ध चारित्र धर्मकों प्राप्त हो शक्ता है

दुष्ट अष्ट कर्मोके नाश करनेके लिए और अष्ट मदका जय करनेके लिए पुन अष्ट प्रवचन माता का परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना करना ठीक है

एकादशीके आराधनसे ग्यारह अगके ज्ञानकी प्राप्ति होतीहै ओर ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों व हनेकी योग्यता प्राप्त होती है

चतुर्दशीके आराधनसे प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों प्राप्त होता है

यह पच पर्वणीका महिमा याद करके पच पर्व

णीमे जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुभ फलको प्राप्त कर शक्ता हे

अतएव पच पर्वणीमे विशेप धर्माराधन तप जपादिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना पर्वणीमे अवश्य पौपध करना न वन शके तोभी प्रतिक्रमण सामायक जप तपादि अवश्य करना

पर्वणीमे कल्याणकादि तप करना उपवास एकाशणा, आयविल, वियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे विंशति स्थानक तप आराधना

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कृष्ट तीर्थंकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता हे

पचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहे और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती हे वास्ते उद्यापन अवश्य सव तपके करना उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण करताहे सो अवश्य पदरे दिनके पापकी शुद्धी करता हे और उनके उभय पक्ष शुद्ध होशक्ते हें तीन चोमासीमे (आपाढ, फाल्गुण, कार्तिक की चउदसीमे) अवश्य पष्ट (वेला) करना चहियें

आठम चउदश पचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्रमण, आरंभवर्जन, अवश्य करना भादोंकी श्रीपर्यू

पणपर्वणीमे अवश्य कल्पसूत्र सुनना और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना श्रावक धर्म कर्मेमे संतोष न करे पर आरंजादिकमे संतोष करके अवश्यत्याग करे उत्तम श्रावक एकवीस वार जो कल्प सूत्रको सुनेतो अवश्य आठजवमे सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता है निरंतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसें जो लाज होताहै उससे अधिक कल्प सूत्र सुननेंसे होशक्ता है दान देनेसे विचित्र तप करनेसे, सत्तीर्थके सेवन करनेसे, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते है सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा है मुक्तिसे कोई अधिक तप, शत्रुंजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्व, कल्प सूत्रसें अधिक महिमावंत कोइ सूत्र नही है दीवालीकी अमावास्याकी रात्रिको जगवत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रात काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये है इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र है वास्ते उपरोक्त महा पुरुषोंका उसदिन ध्यान स्मर्ण करना दीवालीमे दोउपवास, करके धूप, दीप, करके अखंड चावलसे गौतम स्वामीके नामका वा मंत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमे महोदय सुख पामें अपने घरमे वा ग्राम चैत्यमे विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने जाइ मित्र

पुत्रादिक को साथ लेके भोजन करना भगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोंको और याचकों को दानदेना

॥ इति दिन चर्याया पचम वर्ग ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहे इसलिए अतृप्त मनसे निरतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना

जिस धर्मसें यह संपदाको प्राप्त हुवा हे तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये विना कोन रहेगा एसा कोन मूर्ख होय की जिससें आगामी कालमे लाभ होने वालाहे एसे स्वामी (धर्म) को सेवन करनेमे प्रमाद रखके आप स्वामी द्रोहीका पातकी बने?

दान, शील, तप, भाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुष आराधके (पुण्यानुबंधिपुण्य) और मोक्ष सुखस्यों प्राप्त करलेता हे थोमामेंसेभी थोमा दानदेना परं बहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी,क्योंकी इच्छानुसारी लक्ष्मी क्या मालम कब मिलेगी?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता हे अभयदानसें निर्भय होता हे अन्नदानसें सुखी होता हे औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता हे

पुण्यकर्मसे कीर्त्ति होतीहे दान हे सो मात्र कीर्त्तिके लिए नही हे पर मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाताहे मात्र कीर्त्तिके लिए जो प्राणी दान देतें हें सो दान धर्म नही हे परतु वो व्यसन हे (विनोद मात्र हे एसा जाणना) व्याजमे धन डुगुणा होता हे व्यापारसे चोगुणा लाज होता हे क्षेत्रसे सो गुणा लाज होता हे पर पात्रदानमे अनतगुण लाज हो शक्ता हे

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मंदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाज दायक होता हे जो प्राणि ज्ञक्ति जावसे जिन मदिर नया बनाताहे उस्मे बहुत लाजहे क्यो की नये बनाये मदिरके जितने परमाणु (रजकण) की सख्या होती हे तितने पल्योपम प्रमाण देव सुख जोगता हे

औरजी यह हे कि जितने दिन नया मदिर रहता हे तितने हजार वर्ष मदिर बनानेवाला देवायु जोक्ता होसक्ता हे

सोना, चादी, पाषाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी यथाशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमा जरावे तो जराने वाला प्राणी तीर्थंकर पद पामताहे कममे कम एक अंगुष्टमात्रकीजी जो प्राणी नयी प्रतिमा जरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख जोगके परमानद पद प्राप्त होता हे मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृक्ष का मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे श्रोर नावसे सुनताहे तो उनको श्र त्यत नावकी (सम्यक्तकी) विशुद्धी होती हे

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र श्रद्धरकी सख्या जितने वर्प देवलोक गति प्राप्त होती हैं।

जो ज्ञानकी नक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञा नसे शोननीक होताहे ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला श्रन्नदानहे इसलिए उत्तमजन हर वर्प यथा शक्ती एकेक स्वामीवत्सल करे बांधव कुटुंवको जि माना यह संसार हेतुहे पर उस्मेंनी सार्वमीक वत्स ल किया जायतो श्रवश्यमेव विशेप लान प्रद होता हे श्रर्थात् नवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सक्ता हे

हर वर्प सर्व प्राणीने श्रपने श्रपने तरफसे श्रव श्यमेव एक वार तो स्वामी वत्सल करना हि चहि ये विवेक वान् श्रावक हर वर्प एक वार तो श्रव श्यमेव श्रीसघपूजा (प्रनावना) यथाशक्ति करे योग्य श्राहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुको नलीनक्ति ना वसें देवे यद्यपि श्रपनी विशेप शक्ति न होय तथा पि यथाशक्ती सत्पात्रोंकों श्रसन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र श्रौपध प्रमुख श्रवश्य मेव

कूवा, आराम, वगीचा, वृक्ष, तलाव, गौ प्रमुख जो दान करते हे तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नही आती हे प्रत्युत उनकी वृद्धि होतीहे तेसें सत्पात्रमें दान देनेसें धन जाता नही हे पर प्रत्युत उनकी वृद्धि करता हे एसा समजना चहिये

प्रत्यक्ष देखिये की दान देने मे ओर भुक्तभोगी होनेमे कितना वडा अतर(फरक) देखाजाताहे भुक्त भोग (खायापीया) दुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता हे ओर दान दिया अक्षत होता हे (वृद्धि पामताहे) वास्तव मे विचार किजीयें की देनेमें अधिक लाभ हुवा कीखाय खरचाय वेचनेमें अधिक लाभ होता हे?सो विचारवत आपहि समज सक्ते हे

शतस प्रयाश करके प्राप्त किया ओर प्राणसेंभी अधिक वल्लभ, यह धन हे उनकी गती (कार्य)मात्र एकदानहि हे अन्य गतिजो देखिजाती हे सो मात्र विपत्ती समजीजाती हे न्यायमार्गसे उपार्जित किये धनको जो विवेकी जन सप्त क्षेत्रमे नियोजित करते हे सो श्रावक अपने धन ओर जीवितकों सफल कर सक्तें हे

॥ इति दिनचर्यायां षष्ठ वर्ग समाप्त ॥

इति चारित्रसुदर गणि विरचित आचार ग्रथ समाप्त

अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोंको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चहिये सो बताते हे प्रथम संघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसें लेके सोनामोहोर प्रमुख सब श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गछमे बाटनी अभी वर्तमानकालमे जिस्को (पहिरावनी) कहते हे सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये (इससे महालाभ होता हे)

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य दरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना दु:खी जैनोंका यथायोग्य यथाशक्ती समुद्धरण करना गुप्त दान करना श्रावकोंको आमंत्रण करके अतरग भक्तिभावसे जिमाना और तांबुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सबका सत्कार करना इससें तीर्थंकर गोत्र बंध होता हे

तीसरा कृत्यमे अष्टाह्निक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मंदरजीमे करना नहीं बनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी ॥ चोथा कृत्यमे रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निकालना एकिलेसे नबनेतो कितनेक समुदाय मिलके-भी अवश्य करना ॥ पाचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पंचतीर्थी वा हर कोइभी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी

छठे कृत्यमें देवद्रव्य वृद्धि करना यथाशक्ती य-थायोग्य एकवार तो भडार ढोकना चमावा वोलना

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न वनेतोभी पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंभी अधिक लाभहे

आठमे कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत ज्ञान पूजा करना यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पचमी प्रमुख सब पचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नै वेद्य रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी

॥ नवमे कृत्यमें हरवर्ष एक उद्यापन करना इसमे यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसें करनाहि चहिये जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना यद्यपि सब तपके उद्यापन नहि वन शके तो एक तपका तो जरूर करना

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रभावना करना इस्मे रथ नीकालना गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोठव करना ग्यारमे कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए, गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोयणा लेणी वर्ष दिवसमे अपने जाणता अणजाता जो कुछ पाप हुवे होय सो गुरुकों कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥
इति दिनचर्याया वार्षिक कृत्यानि ॥
॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिकेलिए सर्व प्राणिमात्रने अपने जन्मसे जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हैं

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके एसे स्थान पर निवास करना क्योकी जहा जिनमदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शुद्धी न होय एसे स्थानपर रहनेसें सुख न हो सकेगा

दुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए यथायोग्य विद्याभ्यास करणा क्यो की सपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी त्रिवर्ग ससिद्धि न हो शकेगी

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री विना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसें मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोके सहवाससे कइकइ वातोका लाभ मिल शका हे नहिवणे तोभी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन मंहिर अवश्य करना क्यों की इससे लक्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे

तमें लेजामां ते लहो ॥ मा० ॥ मुऊ मन पूरे ठे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमे ठो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगे शु जणावीये ॥ मा० ॥ आखर अमे अजाण ॥ जइ० ॥ ॥ ७ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ मा० ॥ ससिहर कह्या सदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो मह्यारी ॥ मा० ॥ वस्ति दूर विदेश ॥ जइ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमधर जिन स्तवन ॥

मधुकरनी देशीमा ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पाख नहींरे आवु ऊडी, लब्धि नही कोये रूडीरे ॥ श्रीयुग मधरने केजो ॥ दधिसुत विनतमी सुणजो रे ॥ १ ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुरकोमी, ते इहा आवे एक दोमी, आश फले पातक मोमीरे ॥ श्रीयु० ॥ २ ॥ डुखम समयमां एणे ज्ञरते, अतिशय नाणी नवि वरते ॥ कहीयें कहो कोण साजल तेरे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणे सुखीया तुम नामे, नयणा दरिसणनवि पामे, एतो ऊगमानो ठामेंरे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आगल अतर रहेवु, शोकऊ लीनी परे डुःख सहेवु, प्रजु विना कोण आगल कहेवु रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेहेल करी आपे, वेहुने तोल करी थापे, सज्ञान जस जगमा व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ वेहुनो एक मतो थावे,

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात वनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजये गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥अथ वीजनु स्तवन ॥ फतमल पाणीमाने जाय, ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करू जी ॥ वीज तिथि गुणगेह, आदरो नवियण सुदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहु ते सुणो जी ॥ माहा शुदि वीजें जाण, जन्म अजिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो वीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुनगण, दशमा शीतल जिन गणु जी ॥ चैत्र वदिनी हो वीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणु जी ॥४॥ फाल्गुन पासनी वीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षये तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि वीजें वासुपूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण करो जीनराजनोजी ॥६॥ करणी रूप करो खेत, समकित वीज रोपो तिहा जी ॥ खातर किरियाहो

जाए, खेड शमता करी जिहांजी ॥ ७ ॥ उपशम तसु नीर, समकित ठोरू प्रगट होवे जी ॥ सतोष केरी हो वारू, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहा जी ॥ मांजर अनुजव रूप, उतरे चारित्र फल जि हा जी ॥ ए ॥ शाति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीये जी ॥ तबोल सम व्या स्वाद, जीवने संतो प रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास पालिये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दो य वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊजमणु शुज चित्त, करी धरीयें सयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज, रागने द्वेष दूरे करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु जक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य,जक्ति पामे सुख सपदा जी ॥१५॥ इति श्री बीज तिथिनु स्तवन ॥

॥ अथ श्री पचमीनु लघुस्तवन लिरयते ॥

॥ पचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलु ज्ञानने पछी क्रिया, नहि को इ ज्ञानसमान रे ॥ पचमी० ॥ १ ॥ नदीसूत्रमा ज्ञा

न वखाणयु, ज्ञानना पाच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मन पर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अगवीश श्रुत चउदह विह, अवधि असख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदे मन पर्यव दाख्यु, केवल एक उदार रे ॥ पचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान समु नहि कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्मारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुदर कहे हु पण पामु, ज्ञाननो पाचमो भेद रे ॥ पचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपचमी स्तवन

॥ पुण्य प्रशसीये ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ भूपनोरे ॥ सिद्धारथ भगवान ॥ बारह परषदा आगलें रे ॥ भापे श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ भवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनत आतम तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमा पण ज्ञानज वडुरे ॥ जिणथी दसण होयरे ॥ २ ॥ भ० ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने स्थिविरपणुं लहेरे, आचारज उवझ्झायरे ॥ ३ ॥ भ० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जिम इंधण दहे रे, क्षणमा ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ भ० ॥ प्रथम ज्ञान पठे दया

रे, सवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणग पग थालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ सुअ ठहि मणपज्जवा रे, पचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुगा श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥६॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज णता करे अतराय ॥ अधा वहेरा वोवडा रे, मुंगा पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणता न आ वडे रे, न मले वल्लभ चीज ॥ गुण मजरी वरदत्त परेंरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ९॥ ज० ॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलोरे ए देशी ॥

॥ जबुद्वीपना भरतमा रे, नयर पदम पुरखास॥ अजितसेन राजा तिहा रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति नि दान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आकणी ॥ वरदत्त कुवर ते हनो रें, विनयादिक गुणवत ॥ पितरे भणवा मूकि ठरे, आठ वरस जव हुत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पन्डि त यत्न करे घणो रे छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, मयतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥प्रा०॥

कोढे व्यापी देहरी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमा रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥प्रा०॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुण मजरी तस बेटडी रे, मुगी रोगे व्यंग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरपनी सा थइ रे, पामी योवन वेश॥ दुर्नग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणे अवसरे उद्यानमा रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सानले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे॥ ए॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परनवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले रे, दीसे दुःखीया दीन रे, ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार ससारमा रे, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमा रे, न लहे तत्व सकेत रे ॥ ११ ॥प्रा०॥ श्रेष्ठी पूछे मुणींदने रे, नाखो करुणावत ॥ गुण मजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीना ॥

॥ धातकी खडना नरतमा, खेटक नयर सुठाम व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुन्दरी नाम ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासें शीखवा, ताते मुक्या कुमार ॥ २ ॥ वालखला वे रामत, करता दहाका जाय ॥ पमित मारे त्यांर, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुदरी सुखिणी शीखवे, जणवानु नहीं काम ॥ पढ्यो आवे तेकवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखण, वाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने द्राख ॥ ५ ॥ पामापरे महोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जाखे जामिनी॥ वेटा वाप ना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा वोल म वोल॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी वाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठे मारी सुदरी, काल करी ततखेव॥ ए तुज वेटी उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूर्गंगत गुणमजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो चठित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पचमी सेवो, पंच वरस पच मास ॥ 'नमो नाणस्स' गणणु गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादिकदार ॥ १३ ॥ दीवो पच दीवट तणो, सा

थियो मगल गेह ॥ पोसहमा न करी शके, तेणवि धि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उ ज्वल कार्त्तिकमास ॥ जावज्जीव लगे सेवीयें, उजम णा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमा ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चावखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ म सी कागल रे, कांबी खमीआ लेखणी ॥ कवली डा बली रे, चंद्रआ ऊरमर पुजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा साद प्रतिमा तास जुषण, केसर चंदन ऊावली ॥ वासकूपि वालाकूची, अग लूहणां ठावकी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह पत्ती साहमीवच्छल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या ॥ तप संयुत रे, गुणमजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुवरनें अग रे ॥ रोग उपनो रे, क वण करमना जग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज जा से जबु द्वीपे, जरत सिहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमता दोय वधव, पुण्य योगे गुरु मल्या ॥ वे राग्य पामी जोग वामी, धर्मधासी सवर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु वाधव रे, गुणवत गुरु पदवी लहे ॥ प णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्म

योगे रे, अशुभ उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे पोरिसी भणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सर्वघा निद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥ उघमां श्रतराय थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूतमो ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्यु, भर्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चितवे रे, कां मुज लाग्यु पाप रे॥ श्रुत अभ्यास्यो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुजबाध वरे जोयण सयण सुखे करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ वार वासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुभ ध्यानें आयु पूरी, नृप तुज नदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जरूपणु, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबाधव मान सरवर, हसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिस्मरण उपनु ॥ भव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुभमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवमो ॥ गुण अवगुण रे, भासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रू० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावमें ॥ नृप पभणें पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पचमी तप आराधो, संपदा ल्यो वेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सफ्फरुवयण सुधारसें रे, न्नेदी साते धात ॥ तपशुं रग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोगमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पचमी तप महिमा घणो रे, पसस्यो मईीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ न्नूपे कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि न्नूप ॥ त० ॥ न्नीम कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, न्नोगवे न्नोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें वरसें उजवे रे, पचमी तेज प्रचरू ॥ त० ॥ ४ ॥ न्नुक्तन्नोगी थयो संयमी रे, पाले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचङ्ननेरे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरें रे, गुणवत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्ये कीधो न्नेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या न्नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ तिहां पण ते तप आदस्यु रे, लोक सहित, न्नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चोपश्यु रे श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी वि
जय शुजापुरी रे, जंबु विदेह मझार ॥ त० ॥ अम
रसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥
११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥
त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव
॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोरा
शी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पुरव समता धरे रे, केवल
ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमाविषे
रे, जांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी सु
ख लह्यु रे, तेहने तस उपकार ॥१४॥ त० ॥ इति॥
॥ढाल उठी ॥ करकंमुने करुं वंदना ॥ ए देशी ॥
॥ चोवीश दमक वारवा ॥ हु वारी लाल ॥ चो
वीशमो जिनचंदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राण
त स्वर्गथी ॥ हु० ॥ त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हु०
॥ १ ॥ महावीरने करु वंदना ॥ हु० ॥ए आंकणी॥
पंचमी गतिने साधवा ॥ हु० ॥ पंचम नाण विलास
रे ॥ हु० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हु० ॥ पंच
मी तप प्रकाश रे ॥ हु० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्ध
र्यो ॥ हु० ॥ चंम कोशियो साप रे ॥ हु० ॥ यज्ञ
करता ब्रामणो ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हु०
॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हु० ॥ रिखजदत्त वली
विप्ररे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस सबंधथी ॥ हु० ॥
कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हु० ॥ आदस्यो में आशा धरी ॥ हु० ॥ मुज उपर हित आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरीशनो ॥ हु० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हु० ॥ शिष्यकपूरविजय कवि ॥ हु० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ पास पचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हु० ॥ जिनविजय कहे मुज ह जो ॥ हुं० ॥ पचमी तप परिणाम रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दायक, सस्तव्यो ॥ पचमी तप सस्तवन टोमर, गुथी निज कते ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमाहे, सत्तर त्राणु संवत्सरे ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सकल नवि, मंगल करे ॥८॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्या देश मगध सहुमां शिरे रेलो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमा राजगृही सुविशेष जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंतां तिहा आवी वीर समोसस्या रे लो ॥हां०॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम शियले अलकस्या रे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या रस नर फूल्या अब कदंब जो ॥ जाणु रे गुणशील

वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहा अविलंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं पासें संचियो रे लो ॥३॥ हा० ॥ देव चतुर्विध आवे कोमा कोड जो ॥ त्रिगडुरे मणि हेम रजततु ते रचे रे लो ॥ हा० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होमाहोम जो ॥ आगे रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥ हा० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्या रे लो ॥ हां० ॥ सुणता डुंडुभि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजे घन जेम लुब जो ॥ राजे रे जिन राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुब जो ॥ पोपे रे रस न पडे धोंखे नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हा० ॥ आगम जाणि जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आव्योरे परवरियो हय गय रथ पायगें रें लो ॥ हा० ॥ दइ प्रदक्षिणा वदी वेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे नायगे रे लो ॥७॥हां०॥ त्रिभुवन नायक लायक तव भगवत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हा० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जत जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमा गहगहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वालम वहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंदमा का पमो, उलखो धर्मना गण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, वापमा पच परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥२॥ करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे॥ सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व पट्टना कह्या, फल घणां आगमे जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधता, सर्वथा सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परजव तणु, तिथिदिने बध होय प्रायरे ॥ तेह जणि एह आराधता, प्राणिउं सद्गति जाय रे ॥ वि०॥५॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वामरे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रजु तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अरु कर्मनो मूलथी, अष्टमीनु फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजव तणो एह

निथे, अभिनंदन निर्वाण रे ॥ नि० ॥ए॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउं, दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वली घणा सयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १ ॥ धर्मवासित पशु पखिआ, एह तिथे करे उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म अभ्यास रे वि० ॥ १३ ॥ जाखियो वीरे आठम तणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखे उचरी प्राणिया, पामशे जव तणो पार रे ॥ वि० ॥ ॥ १४ एहथी सपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे काति करजोम रे ॥ 'वि० ॥ १५ कलश ॥ एम त्रिजग जासन, अचल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेमगुरु, सुपसाय पामी, सथूण्यो अल वेसरू ॥ जिन गुण प्रसगे, जण्यो रगे, स्तवन ए, आठमी तणो ॥ जे जविक जावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥१॥

इति अष्टमी स्तवन समाप्त ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसस्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोमशु परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति दीगुण फूल अमूल, नक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वताव, जेमकरे शिववधू कतलो ॥४॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनेपचाश,कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवु जिनना कल्याण, विवरी कहु आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लिजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप माला गणो ॥ नरपति मन वच कायपवित्र, चरित्र सूणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अनिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चन्द्रावती तास, चन्द्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर निरयात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नृपण ची वर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोपे पात्र सुपात्र, सामायिक पोपध वरे ॥ नरपति देववदन आवश्य क, काल वेलाये अनुसरे ॥ १२ ॥ इतिं ॥

॥ ढाल वीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत सा धु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी क रुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुक दिन एक, थोमो पुण्य कीयो री ॥ वावे जिम वरु वीज, शुज अनुवर्धी थ यो री ॥ २ ॥ मुनि जासे महाजाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमा सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशु वगे री ॥ ४ ॥ साजलि सद्गुरु वेण, आनद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकविश सागर आय, पाली पुएय वसें री ॥ साजल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमा शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास, पुएयें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखे अवतार, सू चित शुज स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्जदोहद अनुजाव, सुव्रत नाम

उव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नएयो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री परएयो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चकाए धरे री ॥ अगीयार कचन कोरू. नायक पुएय नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अएगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ साजलि सुव्रत शेठ, जाति स्मरए लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, नक्के तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिनं आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतं पोसह लीधो, सुव्रत शेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लुटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन नक्तें देवि शक्ते, थत्नाणा ते वापडा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगल धरया रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणो जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधो पारणों जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा, लोक कहे इठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुएयें हाट वखारो शेठनी, उगरी सहु प्रशसा करे जी ॥ हरखे शेठजी तपउजमएु, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो नार नलावी, सवेगी शिर सेहरोजी ॥ चउनाएी विजयशेखर सूरि, पासे तपव्रत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय ठठ सो अठम करे जी ॥ वीजां तप पण वहुश्रुत सुनंत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवत्ता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अगे वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्म नडीयो पापें जमीयो, सुर कहे जाउं औषध जणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुंनि मन वचन काय त्रि योगे, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वश ॥ जिहा प्रज्ञु अवतस्या ए ॥ मुज मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवा देवी मावमी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधीउपनो ए, हु नवमो वासुदेव ॥जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ जयो० ॥ तो पण हु न करी शकु ए दुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो व लियातणो ए, कीजे सीजे काज ॥ जयो० ॥ एहवा वचनने साचली ए ॥ वांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आरा

ध ॥ जयो०॥ थाईश जिनवर बारमो ए, जावि चो वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ बाण नदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, सथुण्यो ॥ सवेग रंग, तरग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमा विजय गणि, जिन विजय जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानु स्तवन प्रारंज ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड्वी र ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणदने, चरणे करि पर- णाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूछे गौतम स्वा मि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अ रिहंत ॥ सुधां सरस तव वचन रस, जाखे श्री जग वंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइये, व्रत धरीयें गुरु शा ख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशु वली वोसिरावियें, पाप स्थान अढा र ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आ- चार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु जाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए छे दश

अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो भव पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह भव परभवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी ॥ वीरवदे एम वाणी रे प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आकणी ॥ गुरु उंलवियें नहिं गुरु विनये, कालें धरी बहुमान॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ भव परभव वलिय भवोभवे, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि पर मत अभिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं छंको परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्में करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीयें रे ॥६॥ प्रा० ॥ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद म न लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसता

जवेस्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खञ्यु जेह ॥ आजव० ॥ मिछा० ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पाच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादे, अशुरू वचनमन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमा मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आवे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥ प्रा० ॥ चा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोल्यु जेह ॥ आजव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारे नेदें तप नवि कीधु, छते योगे निज शक्ते ॥ धर्मे मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो जगते रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परे विविध विराध्या जेह ॥ आजव० ॥ मिछा० ॥ १३॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरुपसाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ रे, वाउ वनस्पति ॥ एपांचे थावर कह्या ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे खेरूीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरज्ज अनेक, टांका जोंयरां ॥ मेडी माल चणावीयाए ॥ लिंपण ग्रूपण काज, एणी परे परपरे ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥२॥ धोयण नाहण पाणी, जील
ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठी
गर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ जाम्मुंजा लिहाला
गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजे, वस्त्र निखारण
॥ रगण राधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे
परि केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन
आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुटीया
ए ॥ पोहक पापमी शाक, शेक्या शूकव्यां ॥ छुंया
ठेयां आर्थीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंम, घाणी
घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली
कोलु माहि, पीली सेलमी ॥ कद मूल फल वेचींयां
ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥
हणता जे अनु मोदीया ए ॥ आ जव परजव जेह,
वलिय, जवोजवे ॥ ते मुफ मिछामि डुकम ॥ ७ ॥
कमी सरमीया कीमा, गामर गमोला ॥इयल पूरा अ
लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित रसत
णा ॥ वली अथाणा प्रमुखना ए ॥ ७ ॥ एम बे इ
ड्रिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते मुफ० ॥ जदेही जू
लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए
॥९॥ गदहीया धीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोमाधनेमी
या ए ॥ एम तेइड्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु
फ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर मास, मसा पतगीया ॥
कसारी कोलियावडाए ॥ ढींकणवीछु तीड, जमरा

जमरीयो ॥ कोंता वग सरूमाकरी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते मुज० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पखी जीव, पाडी पासमा ॥ पोपट घाल्या पाजरे ए ॥ एम पचेंद्रिय जीव, जे मे डुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे जवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोज जय हास्यथी जी, वोल्या वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुक्कड आज, तुज साखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूकाज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचूना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विपयरस लंपटपणे जी, घणु विटव्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव जव मेली आथ ॥ जे जिहानी ते तिहा रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी जोजन जे कस्या जी, कीधा जक्ष्य अजक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचे जी, पाप कस्या प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥४॥ मि०॥ व्रत लेई विसारीयां जी, वली जांग्यां पच्चखाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलमीनी देशी ॥

॥ पच महाव्रत आदरो ॥ साहेलमी रे ॥ अथ वा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां स ज्ञारीये ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिव गति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार- तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोरा शी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशु रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्वे मित्र करी चि तवों ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजे जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मी सघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जि नशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमिये ने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराध- नतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृ पावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्नतो॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीये ॥ सा० ॥ कूडा न दीजे आल तो॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥सा०॥ माया मोह जजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो

सिराविये ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिव गति आराधन तणो॥सा०॥ए चोथो अधिकार तो ॥ए॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी ॥ जनम जरा मरण करीए, ए ससार असार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्ध जगवत तो ॥ शरण धर्म श्रीजिननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए ए पाचमा अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे कर्यां ए, पापकर्म केई लाख तो ॥ आतमसाखे ते निंदीये ए, पडिक्कमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविया ए, जे जाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्या उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्या घमाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीयार तो ॥ जव जव मेली मूकीयां ए, करता जीव सहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमातर पहोता पठी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावीये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुष्कृत निंदा एम करी ए पाप कर्या परिहार ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए बठो अधिकार तो ॥ ए॥

॥ ढाल छठी ॥ आदर तु जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म॥ दान शीयल तप आचरी, टाल्या दुष्कर्म ॥ ध०॥१॥ शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोंख्या पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्वि ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि यें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आ णीये, चित्तआणी ठाम ॥ समता नावे नावीयें, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचख्यां, नो गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यना काम ॥ बारउपर ते लीपणुं, झाखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ नाव नली परे नावीये, ए ध र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषण सार ॥ अ णसण आदरीयें, पच्चक्खी चार आहार ॥ ललुता स वि मूकी, छांडी ममता संग ॥ ए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनत नि शक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प रिणाम ॥ एथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥ धनधन्नाशालिभद्र, खधोमेघकुमार ॥ अणसण आ राधी, पाम्या भवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपता जा ये, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मत्र न को ससार॥इह भवने परभवे, सु ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुर्छ भीलने भीलणी रा जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म हाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्या बे सुरभोग ॥ एक भवथी लेशे, सिद्धि वधू सयोग ॥ ६ ॥ श्रीम ती ने ए वली, मत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फी टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मत्रे, काज घणानां सि द्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर भाख्यो॥ आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाली, जव जय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंता, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो जवि जावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो ॥ अवनीतले तुमे अवतस्या ए करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आकणी ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहेतां न लहु पार तो॥ तुम चरणे आव्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥२॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अलुजण आकरा ए, जन्म मरण जजाल तो ॥ हु तु एहथी उजग्यो ए, ठोडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठा डुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ जव जव विनय तुमारमो ए, जाव जक्ति तुम पाय तो॥ देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, डुःखनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणता, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव, सुरींद पटधर, तीरथ जगम, इणि जगे ॥ तपगछपति श्रीविजयप्रन्न सूरि, सूरितेजे, जगमगे ॥२॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सु रगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, थु एयो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, छंग ए त्रीशे, रही रादेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कारण, किर्ड गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरज व आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विलास ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियु, नामे पुएय, प्रका शए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्त ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशु जी ॥ ए सिद्ध चक्र आधार, नवि उतरे जवपार ॥ आ० ॥ ते जणी नवपद ध्यायशु जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस गुण अनत अठेह ॥ आ० ॥ समर्या सकट उपश मेजी ॥ लहिये वंठित जोग, पामी सवि संजोग ॥ ॥ आ० ॥ सुरनर आवी वहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मय णासुदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आ पदा दूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥ ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आ विल तप सार, पडिक्रमण दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वदन त्रण टकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग णणु ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पाणजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगे जाणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणी रत्न, एहना कीजे यत्न ॥ आ० ॥ मत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेसर यक्ष, हो जो मुझ परतक्ष ॥ आ० ॥ हु किंकर हु ताहरो जी ॥ पाम्यो तुहिज देव, निरंतर करु हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करु हु एह, धरजो मुजशु नेह ॥ आ० ॥ तमनें शु कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुझ लली ललीजी ॥७

॥ नवपदजीनु स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥ १॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप दोभजेदे हृदयविचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मत्रजडी और तंत्र घणेरा, उन सबकु हमदूर विसारी ॥ नवपद०॥३॥ बहुत जीव जवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नरनारी ॥ नवपद० ॥४॥ श्रीजीन जक्त मोहन मुनी वदत, दिनदिन चमते हरख अपारी ॥ नव० ॥ ५ ॥इति॥

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क सकल दुखहारी, दायकहे सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १॥ सेवन इन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत हें नित जासकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल भई आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी बाहार

आज महोत्सव रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सजि सिनगार सकल सुर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक मीलिरी ॥ आ० १ ॥ इन्द्र हुकुम करी धनद पठायो सब वसुधा धन धान्य भरिरी ॥ कनक रत्नमणि पच वरणके, कुसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुमरीरी ॥ बाजत गहर शबद कर दुन्दुभी, वीणा वेणु मृदङ्ग भलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार भयो तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचद जनमे प्रभु मेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपद मङ्गल है ॥ देशा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहे नेमी राय ॥ ने० १॥ मंगल धन धन्या मुनिनायक, सव तपसि विच सार ने० २ ॥ मगल गणपति मंगल पाठक मंगल सव अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय २ खेम कुशल गुरू, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म भयो है । अवधी ज्ञान कर ईन्द्र हूकमदीयो, करहु महोत्सव सार ॥ स०॥ १॥ मेरुशिखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥स०३॥ जय जय शव्द करत सूर नर वर, जय जय जगदाधार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ इति ॥

रागिणी ईमन कल्यान

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥ पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा, घस केशर घनसार॥ आ० १ ॥ डुजे मङ्गल धुप जो खेऊ, ओर चढाऊ पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा वजाउ, झाझनकी झङ्कार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती ऊतारू, नाचु थेई थेई तार ॥आ०४॥ रूप चन्द कहे कहा लग वरणु, शिव लहिये भव पार ॥ आ० की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी—ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी मे पाई॥ आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा मे चाहुं, अवर नहीं दील जाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द०॥३॥इति

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी ऋषभ पीयारे, निद्रा वस नयन तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी, पुछे मरुदेव्या माई॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥ पोढो० ॥ २ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंतो मन वंछित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

राखो नाथ वडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर सदा मोहे जानो, दरसन देवोने गुसांई हमारे ॥ रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वछल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ भानु चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे॥३॥इति

रागिणी कालगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीया॥ आवो० ॥ नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥ आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि

सुव्रत जिन राईरी ॥ आवो० २ ॥ तीन लोकके हित कर प्रगट्यो, नाना ऋषि हरपाईरी ॥ आवो० ३॥इति॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

आजतो वधाई राजा नाभिके दरवाररे ॥ आ० ॥ मरु देवाजीने वेटो जायो, नाम ऋषभ कुमाररे॥ आ० १ अयोध्यामे उत्सव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥ घनन २ घण्टा बाजे, देव करे थेथे काररे ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावे, लावे मोती मालरे । चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भण्डाररे आ० ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, रथ देवे तुखारे । हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे॥ आ० ५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गलचाररे। केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ टेर ॥ मोती यन [illegible] भरी जाय वधावत गावत गीत रसाल ॥ म० १ केशर चन्दन [illegible] कर लीय [illegible]ञ्चन थाल ॥ म० २ ॥ [illegible] अरज है रे, [illegible]

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥ आ० ॥ पारस प्रजुजीको जनम जयो है, हरप जई देवा हरप जई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन घर वटत वधाई, घर २ अरी देवा घर २ मङ्गल मानी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सव तोरण थन्न हैं, चोखे मुख सेज सेगानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन थाल मुगताफल जरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे० आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ जैरवीका दूहा ॥

प्रजुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।
नफा वहोत तोटा नही, जर जरके मन तोल ॥
ए जीव जूला फीरत हे, ममताके कल्लोल ।
अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख वोल ॥

रागिणी जैरवी–ताल यत्

वलिहारीमरु देवी नन्दकी, जज नाजिके नन्दन अवध विहारी ॥ वलि ० १ ॥ तिन लोक तिन पावन कीन्हे, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ वलि० २ ॥ कोशलपूर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥ वलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय रूपचन्द जिनन्दकी ॥ वलि० ४ ॥ इति ॥

पुन –ताल तेताल

जगदीश तु मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी मानु अजव वनी हे, सुन्दर श्याम दीदारावे ॥ जग० १ ॥ घडि २ पल २ सुमरण तेरो, कवहु न दीलसे न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुझ ध्याया तिन सुख पावा, दरशन ज्ञान आधारावे ॥ जग०३॥इति॥

पुन –ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मै खोईरे। दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित अव होइरे ॥ आज० १ ॥ तुम विन देव अवर नही डुजो, देखा त्रिभुवन जोइरे ॥ आज० २ ॥ दास तुमारो करत विनती, तुम विन मेरो न कोइरे॥ आज० ३ ॥ इति ॥

पुन ताल कवाली

नेम जिनन्दजीसे आखरूली, मोरी रेन दिवस नीत लग रहीरे ॥ने० ॥१॥ पहले आय ऊन दोस्ती कीन्ही, ले पीछे छिटकाय दईरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पसु यन पर प्रभु दया करीने, शिव रमणीने वर लईरे ॥ ने० ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्न विमल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पन

ऋगन जररी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी माता श्रीधन धन, जायोछे ऋषभ जिनन्द ॥ ऋ० १

याकु पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख कद ॥ ऊ० २ ॥ याते हीतकर अरज करत है, ची रंजी रहो तेरानंद ॥ ऊ० ३ ॥ इति

पुन

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥ सुनरी सखीएक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारे से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चलुङ्गी, प्रीत तजुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासें आनन्द उपजे, कीरत होत उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुन

रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोवे जिया जागरे रा० ॥ दोय घमी तडको अब रहियो, ऊठ धरममे लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी ऊर वीच धारले, और भरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आनन्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन कल न परत हे, छिन मे तो दीन हीन पकड्यो सरण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जिनजी अबतो छुमावो भवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुन

नवरिया मोरा कोन उतारे बेडा पार । इह संसार समुद्र गम्भीरा, किसविध उतरुंगा पार ॥ न० ॥ १ ॥ राग द्वेष दोनु नदियां वहत हे । ज्ञमर पड़त गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ रूपचंद दासको दरसन चहिये । ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी भैरवी–ताल दादरा

भरलावोरे कटोरा केशरका, मे नव अंग पूजुं परमेश्वरका ॥ भ० ॥ मरुदेवी कुखे जन्म लियो हे । कुमर नाभि रत्नेसरका ॥ भ० १ ॥ केशर चन्दन पुष्प चढाउ ॥ मुख निरखु रूपभेसरका ॥ भ० २ ॥ रत्न जड़ितकी आरती उतारुं । नृत्य करु परमेश्वरका ॥ भ० ३॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन गेरु परमेश्वरका ॥ भ० ४ ॥ इति

पुन

म्हारो मुने कच मिलस्ये मन मेलू ॥ मन मेलू विन केलि न कलिए । वाले कवल कोई वेलु ॥ म० १ ॥ आप मिलाथी अंतर राखे ॥ सुमनुष ते नहि लेलू ॥म०॥२॥ आनन्द घन प्रभु मन मिलियाविन ॥ को नवि विलगैंचेलू ॥ म० ३ ॥

भैरवी–ताल दादरा

इन्द्राणी प्रभुके वेगी आउयो कजरा । मे तो नवन करि कर लेही, तु करले इयाकी जाप जीरा

॥ १ ॥ ई ॥ मैं पहिराती भुज भुजबंध, पहरा देतु वाली कपरा॥ ई०॥२॥ मैं तो मुगट धरु सीर उपर तु पहरा दे फूलुके गजरा ॥ ई० ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर इन्द्र जगति लख, भविजन सम्यक दृष्टि खरा॥ ई० ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना बदल॥नयना बदल गये वनकुं निकल गये, व्रतलीना सुधर॥नय१॥व्याह नकुं, आये मेरे डुला कहाए ॥ दे दरस गये तोरणसे फिर ॥नय० ॥१॥ जोभारथ परमारथ कारण, ककणको तोड लीया सजमको धर ॥ न० ॥२॥ पशु पुकारे प्रभुजी नीहारे । दुखिया विचार छोडे बन्धन कतर ॥नय०॥३॥ लेलो प्यारी छीमा हमारि।मुझे वेगी बता दो गिरनार कीभगर ॥ ने० ॥४॥ करुगी नयन सुखकारी तपस्या में तो लोंगी प्रभुके पद पकज पकर ॥ न० ॥

पुन.

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि है राजुलनार सखिरी० ॥ तोरनसे रथ पीछो फेरयो, पशुवारी सुनिछे पुकार सखिरी० ॥ १ ॥ सहसा वलकी कुंज गलिनमे, पच महाव्रतधार सखिरी० ॥२॥ राजुल उभी अर्ज करत है, आवागमन निवार सखिरी० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण सरण आधार सखिरी० ॥ इति ॥

पुन

मेंतो दासी 'तुमारी विना दामकि । निजरमें जो रहरुं किसी कामकि ॥ १ ॥ और देवसे काम नही मेरे। दिलमें वसि हे सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥ घडि घडि पल पल छिन छिन निस दिन । रटन लगी हे तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूगी आखुमें सुरमें से बढके, जो पांउगी रजमे तेरे धामकी ४ मे ॥४॥ तप जप सजममें चित लावो, जेसे मिले राज शिववामकी॥५॥जैन धरम मानव भव पाके । करले भ लाई आतम रामकी ॥६॥ मे०॥ दास गुलावकी एहि अरज हे। सार करो मुफ नामकी ॥ मे० ७ ॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे। गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, भटकत भरमावेरे॥भवन आरिशे श्वानकुकमा निजप्रतिबिंबनिहालेरे ॥ इतर रूपमनमाहि विचारी,महाशुध विस्तारेरे॥व०१॥निर मलफिटक शिलाअंतरगत, करिबर लक्षपर वाहिरे॥ दशनडुराय अधिक डुखपावे, द्वेपधरत दिलमाहिरे व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिंघकु पकडे । कुवोदिठ दि- खाडरे ॥ निरख हरितेजाणडुसरो । पड्यो कप तिहा खाडरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजछायावेताल भरमधर ॥ भर तवाल चित माहिरे ॥ रजु सर्प करि कोउ मानत॥ ज्योलोंसमफत नाहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी भ्रम

मर्कट मुठीजिम ॥ भ्रमवशअतिदुखपावेरे ॥ चिदा नंद चेतनगुरुगमविना, मृग त्रसाधरीधावेरे॥५॥इति

रागिणी भैरवी—ताल मध्यमान

बसोजी मेरे नेननमे महाराज, सामलि सूरत मोह नि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥व०॥ वानी सुधारस दरस ऊपन्यो ॥ करता अगम अपार ॥व०॥ चंन विजय करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥व०॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन की । तें काहेकु कृपा विसारीरे दीन० ॥ मं हु दीन अनाथ जगत मे, तू साहिव उपकारीरे ।दीन०। पण अपनेकी रीत निव हिये । दो सपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव ककी अरजी । सुनियें प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥ इति

पुन

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रेन दिहा मानु ध्यान तुमारा, अतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल असाका तुऊनु मालुम, जो खामि टुक जोलो ॥प्र०॥ आस पुरावो दासको स्वामी, ऊटपट सङ्ग मिला लो ॥ दास चुनी पायो रत्न अमोलक, वेर २ त्थु तोलो ॥

रागिणी भैरवी—ताल तेताल

भविकनरसेवोशातिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनो हरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । १भ० ॥ पञ्चम चक्रध र सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचन्द ॥ २ भ० ॥

भवदुख भंजन जन मनरंजन, लंछन मृग सुखकन्द ॥ ३ ज० ॥ गुनविलासपदपङ्कजभेटत ॥ पायोपरमानंद ॥ ४ ज० ॥ इति

राणिणी भैरवीमे होली–ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलाबरी ॥ आज प्रभु पूजनको हरख भयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपक मरुउ मोघरा ॥ फूलकी पगर भरावरी ॥ आज प्रभु० ॥ १ ॥ मुकट कुंडल शिरछत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जमावरे ॥ आज० २ ॥ संत सवे मिली भावना भावो ॥ मादल ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके गुणगाउ ॥ लालगुलाल उमावरी । आज० ४ ॥ कर जोरी प्रभुआगे अरजी ॥ भवदुखसे छोमावरी ॥ आ० ५ आछोपोहोरहे नाम तुह्मारा ॥ ध्यानधरु शुभभावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरप वधाई उनको ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

राणिणी सिन्धभैरवी

कुण वन वीर समोसख्या मैतोसुणिहे श्रवनधुनि आजरी कुण ॥ जगम तीरथ सुरतरु,जगनायक, श्री जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिपा, साथै एकादश गणधारी ॥ मुनिचऊदसहससाथेचला,गुरु तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रचना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर मिली ॥ मिलचउविहसघ समाजरी ॥ ३ कुण०॥ घ

णारे दीवशनी जावना झारी, सफल फली सव आज
री। चलो सखी विलॅवनकीजीये, वदीजेश्रीजिनराज
री ॥ ४ कुण० । जावजगति दिलमे घणी, सजि सा
थे सामग्रीसाजरी ॥ हरखचद राणी चेलना ॥ साख्या
निज आतमकाजरी ॥ ५ कूण० ॥ इति

राગिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आन
न्दकारा १ ॥ नाजि राय मारुदेविके नदा । तुम ता
रण ससारा ॥हो ते०॥ तुमरे गुणको पार न पावे, ज
जन करे जगसारा ॥हो ते०३॥ वरस ज्विसने पारणे,
स्वामी पीयोरस अपारा हो ते० ॥ ४ इन्द्रचन्द्रनी
आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, होते० ५ ॥ इति

रागिणी जैरवी

समक परी मोहे समक परी जगमाया सव कु
ठी ज० ॥ १ ॥ आजकाल तु कहा करे मूरख, नाहि
जरोसा दिन एक घरी ज० ॥ २ ॥ गाफिल छिन
जर नाहि रहो तुम, सिर पर घुमे तेरे काल अरी
ज० ॥ ३ ॥ चिदानद ये वात हमारी प्यारे, जाणो
हो नित्त दिल माहि खरी ज० ॥ ४ इति

पुन.

चितमे धरो प्यारे चितमे धरो ये सीख हमारी
अव चितमें धरो, थोमासा जीवना काज अरे नर,
काहेकु छलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूम कपट पर

द्रोह करण तुम, अरे मन पर नव थाह नरो॥ए०॥ ॥ २ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानो तो, जनम मरन नव डुसमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

ताल दादरा

दोनु दसतो मे अगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रभुसेलगी ॥दोनु०॥ जालीकी अगीया प्रभुकी रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १॥ चलो सखी वागोमे जईये ॥ चुन ७ कलिया चढावो सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखीजिनवदन जईयें ॥ नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सावरी मूरत खून रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥ नय० ४ ॥ सवत ऊनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति

रागिणी नैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥ सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥ मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकपायो, ससंयदीया है मिटाय ॥ मे० ॥ क्षत्रीकुन्म स्वामि जनम लिया है, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे स्वामी सोफल पावे, चद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विनतमीऊर धारो। तुम तारण तिहुं लोकके स्वामी। मोहे भरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे पतीत न श्रा जगमें कोई। मैं देख्यो जग सारो ॥२॥ तुम प्रभु तारण पतीत ऊधारण । भवसागरथी तारो ॥ ३ ॥ भुल सेवककी चित्त न दींजे, श्रपनी श्रोर नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुन

नाथ भये वैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी सजनी । वीन श्रवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥ परवस तुती जांय पभी है तुहिं तुहिं रटणा लागी॥ ह० ना० लाल विनोदी ईह रुपको नीरखत । वीर ह व्यथा तन भागी॥ ह० ना ॥ इति

पुन

सीतलनाथजु स्तवन

तारिये मोहे शीतल स्वामी ॥ शीतल स्वामी श्रन्तर जामी॥ श्रांकडी ॥ काल श्रनादि पुदगलके सग, भटकत भयो हुं निकामी॥तारि०॥१॥एसो न रहियो कोई थानक, मरण विनाको श्रंतरजामी ॥ २ ॥ श्रोर फीर सुक्ष्म वादर पुदगल ॥ परावरत कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० श्रधम उधारण बिरुद तिहारो, कृपा करी तारो भव्यजानी । भानु

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा, सिवसुख की है यही निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यातम स्तवन

क्योकर भक्ति करु प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस, छोडत गेल न मेरी प्र० ॥ करम नचावत तिमहि नाचत, माया वस नट चेरी प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबंधन बाध्यो, निकसत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसशा सब मिल अपणी ॥ परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन भाव भगत विन, शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुन

संसार नाम जिस्का, जो सारा असार है, इस जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नांम सार है ॥ भवजल अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी भवरा, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा मेरारे, तुमसे नहीं छिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अबतो उधार है ॥ स० ॥ तुम सिवाय देव मै, ध्याउं न दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥ स० ॥ ३ ॥ अब छोड सकल बातकु तेरी शरन गही, जिनदास हाथ जोडके करता पुकार है ॥ स० ॥ ४ ॥

पुन (थियेटर)

मे अरज करुं, सुनो महाराज । पायो मे चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे नेडे, महिमा कहालो देखो, सफल घमीहे आज ॥ सु० २ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग हरप पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष देखो सोहे । पचमी तिथि हे आज ॥ सु० ३ ॥ नविन मंदिर ठाजे । जहां प्रभुजी विराजे । भानु शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मिलि । प्रभु जीकु पुजु आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुन

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य लेके आय ॥ पुजु प्रभुजीके पाय । मनहिमे हरप अति जयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो में तुमारे पास । पुरो मेरी अभिलाप । दीन बन्धु दिनानाथ जगत उजियारो । नामिलेगो एसो दाव काज सुधारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुन (ठुमरि)

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे ॥ ने० १ ॥ में हु दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिब नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ने०२॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है । जव सङ्कटसे निवा रोरे ॥ ने० ३ ॥ इति

पुन

सूरत एसी सावरी । मे जाउ वारि २ । प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी ॥ टेर० ॥ समुद्र विजेजीके नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको भ ये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आ ये । पशुयनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी ॥ सु० २ ॥ नव भव प्रीत छिनमे तो ड़ी । नेम राजुल मिल हुवे जव मुगतिके अधिका री ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मे हर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरनणकी में जांउ वलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुन

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो जी ॥ सु० १ ॥ ऐसो नर भव पायके प्राणि । नित्त नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ ऐसे जिनजीको पूजत प्राणी । भव भव पातिक छिजेजी ॥ सु० ३ ॥ दास तुमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे जी ॥ सु० ४ इति

पुन

हजूर तुमसें कहु मै दिलकी वेजार पनमे जो

बीती वतियां । हृ० टेर । न धीर तनमें खुसी न दिलमें वेहाल पनमे जराई छतियां ॥ हृ० १ ॥ सिद्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिधु हेवी रस्वामी, संसार वनमे कीयो भ्रमन मे, चोरासि दलकी यह च्यार गतियां ॥ हृ० २ ॥ कपाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार च्यारु तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजासही हे मै मेरें दमसे उपाधि अतिया॥ ॥ हृ० ३ ॥ रही न वाकी विपतकी वातें न जानुं तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहु सरणमें निहाल कीजे अजेकी लागी चरनसे मतिया ॥ हृ० ४ ॥

पुन.

साहिव तेरी वदगी मैं भुलता नही, भुलता नही साहव विसरता नही ॥ सा० टेर ॥ अष्टादश दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता नही ॥ मा० सा० १ ॥ मुनि है निग्रथ सो तो गुरु है सहि और गुरु भेसधारी मानता नही ॥ सा०२॥ जीव दया सुद्ध सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र आस्या रुपी मानता नही ॥ सा० ॥ ३ दान शियल तप जप धर्म हे सहि और धर्म विपय मानता नही । सा० ४ ॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वाछता सहि ससार दुखजाल रूपी मेटीए सहि ॥ सा० ५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवागमन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ इति

पुन

दीले नादानकु समकाया चायगें । हालमें इमकु जगनि जली हुवे । सुन शीयल संजमकु सजवाय लायेंगे ॥ दी० ॥ अष्टकर्मोकी प्रकृतिका सथय होए जाहिल । बध वा उदय उदीरण सत्तामें तू गाफि ल । महाराजा मोहकी गति जाति से उलका सा मिल । सागर कोका कोकी सतरे काठीया जव सा मिल । चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाई ल । ऐसे कर्म मोह मदनकु जीतावी जायेंगे ॥ दिल० २ ॥ इति

पुन

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सता वोरे । आ० (टेर ॥ व्याहन आए सजके सजान, पशुवनकी सुन देख रुदन । गिरनारी चले निज छाड वतन् तकसीर बतावोरे ॥ ये० १ ॥ पूनम जैसे चद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी निकी लागी नव जवकी लगन, मत छेह दिखावोरे ॥ २ ॥ ये रिहमु० ॥ सजम दूती लागि श्रवन्, प्रभुको सिखाए नीके फिरन् । प्रभु तारण ना म तुह्मारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरिर० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरन् राजुल मन वेराग धरण लेउ दोरू नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखा वोरे ॥ येरिशि० ४ ॥ इति

पुन (पहाकी)

कधी प्रजु पदमे मन लाया तो होता, अरे निरगुनका गुण गाया तो होता। पडा है वेखवर मायाके फदमे, जगतजजालसु लजाया तो होता॥ जक० १॥ अव अवसर आमिला, टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रजु ध्याया तो होता ॥क०२॥ लु है मनमोहनके त्रिशलानद प्यारा। जिन सेवामे सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रजुजी, दिल जर दरस दिखलाया तो होता ॥ क० ३॥ इति

पुन

शाति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे॥ जलाम० टेर ॥ श्रीजिनके मकरंद वैन। विरमी जव डुरगन्ध रैंण शिवपुरके सदासुख कद देन। समकितरस जीनोरे ॥ ज० १ कामित पूरण काम धेन। मद मोहके चूरण ठाम फेन, लहे मनको अती आराम चेन, गुंजे अलि कीनोरे ॥ ज० २ ॥ कपूर कहे जिनपदका अैन। उरधारो जवि तारलैंन। होय मुक्ति सेऊ पर सार सैंन। आगम कह दीनोरे ॥ जला ॥ इति

पुन

दिवाना तेरे दरसका यार मे हुं। जो रखता हु तुऊसे सरोकार मे हु ॥ दि० ॥ तेरा ध्यान रहता हे हरदम् मुऊको। टुक एक महर कीजो लाचार

श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति
नृपतनयेवर हे मन माके ए राह
श्री जिनराज सदा सुखकारी,दास नमे शिर न मनकर्र
तुम शरणागत आव्या बालक, तारो हे प्रभु मेहर करी
आदि जिनवरा, अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी, शांति करो त्वरा,
पार्श्वनाथने, वीर जीनवरा,
बालमित्रनें, साह्य करो त्वरा,
जिनवरजी, करु अरजी–श्री जीनराज १
तुमे दया करी, अम पाप परहरी,
शिववधु प्रभु, आपजो खरी,
तुम विना विजो, देवछे वृथा,
जाणी एम अमे, छोडीये मिथ्या
शिवरमणी, मनहरणी–श्री जिनराज० २
नगरमा रही, अर्ज करे सही,
तारक तुमविना, वीजो कोई नही,
सकल संघना, कष्ट कापजो,
मनसुखलालने, मग्न राखजो,
सुख करजी दु ख हरजी–श्री जिनराज ३

श्री आदिनाथनु स्तवन
आदिजिनेश्वर–अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकने प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥१॥ प्रथम नरेश्वर,– प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवार्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ २ ॥ आजनी आंगी–अजव बनी छे ॥ सुदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी–कोटी गुणो प्रभु वदन आनंदी दिसेछे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥ मृगपतिथी पण अधिक गुणोछे, लक कटीनो प्रभुजी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंजन– भव दु खभंजन, भवो भव होजो शरण तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् भाव स्तवना वली करवा, बालमित्रनी बुद्धिवधारी ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंभवनाथजिनु स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ–प्रभु पासनु मुखरु ॥

सभवजिनजीनु मुखरु शोहे, नयणा देखी जग सहु मोहे रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अर्द्धाकारे दीसे भाल, कांति कनकसरीखी सारी, इन्द्र चन्द्ररूप जायहारी;

सावथ्यीमा हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो सुगाल, धान्यना तिहा सभव थाय, द्रव्य सभवथी नयरी साहाय फल फूल संभवथया सार, तेथी वर त्यां त्यां जयजयकार; राय जितारी वीचारी आम, सभवथी पाड्यु सभव नाम, एवा संभव करजो अमने, बालमित्र अरज करे तुमने, अहमदनगरमां रहेतां उल्हास मनसुखनी पूरोआस ।

श्री अजिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अजिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शने थइ सु मती, एक डुष्ट कुलटा ठे सही, पूर्व जवनु वेर काल्यु अही, अहोनिश मारे पाठलपडी, मतीच्रष्ट कीधी मारी अति ॥१॥ एवी डुष्ट ठे जे कुमती,जस सोवते होय डुर्गति । ते डुष्टा डुर निवारिनें, आपो अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमा मन मगन थइ, वालमित्र अति आनन्दथी, मागे मुखें घी एम कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलवेलो–ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिने श्वर तारो । नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो सुमति जिन प्यारो । जवा० १ कुल दीपक मेघरथ राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्ग ल उदरी,प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥शशी सम सोहे वदन प्रजुनु, क्रौंच लंठन हितकारो । ज ॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा रो ॥ज ५॥ आप हजूरे लेजो अमने, छुटे आ जनमा रो । ज ६॥ वालमित्रना प्यारा प्रजुजी, मनसुखदास तुमारो । ज ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो—ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा माता उदरे आव्या, चउद सूपन गुणसारा, लंछन शोहे रक्त कमलनु, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रभु जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥१॥ द्वादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सारा, कुल इक्ष्वाकु दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शण गारा, प्रभु सब जन हितकारा॥ प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण तुम सारा, बालमित्र करजोडी विनवे, पावे भवोद धि पारा, भव भव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनु स्तवन ॥

वनझारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगा रा, ए टेक॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथवीम न उल्हाशीजि, रायप्रतिष्ठित कुल अगारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लद्वादशी सार, जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलरासींना धरनारा, मु ज स्वामी मोहनगारा ॥ २ ॥ मध्यम ग्रैवेयकथी आव्या, वान कचनसम सोहाव्याजी ॥ उचा द्विश तधनुष छे सारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ३ ॥ वि

शलाख पुरवनु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी, ठो स्वस्तिकलंठन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ४ ॥ प्रजु तुम दरशन मनन्नावे, मुनिमनसुख तुम गुणगावेजी ॥ ठोवालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रजुजीनु स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चद प्रजु चित चोरी लीधु,देखाडी दीदार ॥मन मोहाव्यु माहरु मने देखाभी दीदार॥ चन्द्रपूरी नयरी विषे, महासेन राजान ॥ लक्ष्मणा माता उदरे, प्रजु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लठन शोन्ने चन्द्रनु कांइ गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करता आपजो, कांइ शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा कमल कचोलडा काइ, नाशा शुक समसार ॥ सम्यक्त दृष्टि जीवने प्रजु, ताहरो ठे आधाररे॥म०॥३॥ चितमा लागी चटपटी प्रजु, लटपट मन लोजाय ॥ खटपट शिव वधुने माटे, आवे ठे मुजदायरे॥म०॥ ४॥ एकला आप वरीने बेग, करीये सेवक सार ॥ वालमित्र शुज वन्दन करता, विनवे वारवाररे म० ॥५॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

ठे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये॥

ए राह ॥

नवरगी आगी आज दीलमा धरीये, रस अमृ

त जक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ जिन मदिरमां आगी नव नव रचिये,पल पल वारे जिन नाम हृदयमा धरीये, तो मोक्षालयनु द्वार सत्वरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम झुम तुम दू म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्यालयमां गीत ज्ञान आदरीये, तो जव सागरनो पार शीघ्रथी त रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे वालमित्र गुण गाइयें, प्रज्जु जक्ती करता अनन्त सुखने पाइये, तो सुविधि जिनेश्वर जजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता जारी, दरशन करता जाय कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज जारी । शीतलना नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश री लकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल नाथनी ॥२॥ कातिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती प्रज्जुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रज्जु जयकारी॥ शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ जवी जीवने शीतलकारी, अ रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ वालमित्रने लेजो तारी॥ शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयासजिनस्तवन ।

मातु लगाडो तो मारा सम ठे सलुनीरे—ए राग। श्रेयास प्रज्जुजी तुमे सहाय करोमारीरे, आपणों किं कर जाणी उतारो —गारीरे, श्रे० ॥१॥ विष्णु

ता कुलें आव्या विष्णु माता तारीरे ॥ जगतवच्छल प्रभु तु छे आनन्दकारीरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ खड्गीलंछन प्रभु सोहे सुखकारीरे, करु एक अरजी स्वीकारो प्रभु मारीरे, ॥ श्रे०॥३॥ दुष्ट एक रामा मारी, पाछल पडी जारीरे ॥ लीधुं लुंटी द्रव्य मने बहु मार मारीरे, ॥श्रे० ४॥ लोकोमा लज्जावी मने कर्यो छे खुवारीरे, नामे छे कुमती तेने काढो प्रभु न्यारीरे, श्रे०॥ ५ ॥ अहमद नगरे रही करे अर्ज सारीरे, बालमित्र गाय छे आनन्द हितकारीरे । श्रे० ॥ ६ ॥

श्रीवासुपुज्य स्वामीनु स्तवन ।

गमका तराना ए राह ।

वासुपुज्य विलाशी, चपाना वाशी, पुरो अमारि आश ॥ करु पुजाहु खाशी ॥ केशरघासी, पुष्प सुवासी, पुरो । ए टेक ॥

चैत्यवदंन करु चित्तथी प्रभुजी, गावु गीतारसाल ॥ एम पुजा करी विनती करु छुं, आपो मोक्ष दयाल । दियो कर्मने फासी, काढो कुवाशी, जेम जाय नाशी । पु ॥१॥ ससार घोर महो दधिथी, काढो अमने बहार ॥ स्वारथना सहु कोइ सगा छे, मात पिता परिवार, बालमित्र उल्लाशी, विनय विलाशी अर्जि खाशी पुरो० ॥ २ ॥

विमल नाथ स्तवन ।

पूजो देव करो तुम सेव कुकर्मो तन न न न न त्रुटे।

जगतमां सार रुप एक जैन धरम, श्रेसा जाण मि थ्यात्वकु छोडेगें हम, तनका क्या नरोसा निकस जावेगा दम । पूजो० ॥ १ ॥ नजो नजो प्रनुकु क्या सगता हे दाम॥सबसें श्रागे प्रनुका हम लेवेगें नाम सेवे जो विमल नाथ होवेगा काम । पूजो देव०२ बालमित्र पूजे चन्दन केशरचग, चालो२पूजो प्रनुजी के नव श्रग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग । पूजो देव० ॥ ३ ॥

वैरागीपद

छवि छवि वदन निहार निहार ॥ छ० ॥ श्रोखि तपति श्रगमा गम कीनो विसरी विगल विहार ॥ छ० ॥ १ ॥ गये श्रनादि कालमें ऐसे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप रिझ वार ॥ छ० ॥ २ ॥ श्रतर एक महूरत श्रंतर प्यार करी श्रणगार, लीने ज्ञान सारपद नीतर, चे तनता नरतार ॥ छ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीश्रनन्तनाथजिनु स्तवन ।

नेखरें उतारो राजा नरथरी॥ ए राह । श्रनंन्त प्र नु मुज तारजो० ए टेक। श्रवगुण मुजमा श्रनन्त छे, तुम गुण श्रनत श्रनंतजी, मोहराय वश हुं पड्यो तुमे तो कीधो तस श्रतजी॥१॥श्रनत॥ हुं रागी घणो लालची, तुमें तो थया वीत रागजी । राग द्वेष मु ज टालीये, चार कषायनो त्यागजी। श्रनत॥२॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुन कपटनो हुं गेहजी ॥ आ पापी नें उद्धारशो ॥ छो तारक निसदेहजी । अनंत ॥३॥ तुम सम तारक कोई नही, मुज सम पापी न अन्यजी ॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाउ धन्य धन्यजी॥अ ॥ ४ ॥ जवजव जटक्यो तुम विना, म लीया हवे जगवंतजी, वालमित्रने दीजिये, अक्षय ज्ञान अनंतजी । अ. ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथनु स्तवन ।

प्रजु धर्म नाथ (२) तुमें धर्मतणा छो दाता, तुम विना अनंत जव रखम्यो पण मली नहीं काई शाता प्र० ॥ १ ॥ हवे तुम छेडो (२) पकड्योछे करो एक काम, मम घरमां जे तस्कर छे ते काढो तमे तमाम प्र ॥ २ ॥ महा मेहेनतथी (२) हुं मेलवु द्रव्य अपार॥चार चोर लुटी करी मारे छे मने वहु मार, प्र ॥ ३ ॥ तेनि पाच जगी (२) छे दुष्ट कृत्य करनारी, ते तस त्रातनी साथे मली वहु पाप करावे जारी प्र ॥ ४ ॥ मम मित्र आवे (२) मुज घर मांहे कोई वार, त्रात जगी जेगा थई काढे छे तेने वाहार प्र ॥ ५ ॥मुज घर केरो (२) मे अश्व महामद मातो ते पण तेणें कवजकर्यो छे कहुं केटली वातो प्र ॥ ६ ॥ दरशन करतां (२) में ओलखीया जगवान, वालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय ज्ञान प्र ॥ ६ ॥

शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी बेनी शोक तमे समावजो–ए राह ॥ प्रभु शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनु ध्यान सदा तुमे मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो, ल्यो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज जो ॥ प्र ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु भजजो अरिदम जो॥कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र २ गुण गावे, भगति भावे बहु ध्यावे, अहमदनगरना बालमित्रने प्रेमे पालजो प्र ॥ ३ ॥

श्रीकुंथुनाथजिन स्तवन ।

सुखथीरे मागु प्रभु तुम पासे, आपो मोक्ष रतन, शिवरमणी नहीं छोडु प्रभुजी नीश्चे एह वचन, मोक्ष वधु नहि मुकु प्रभुजी निश्चे एह वचन शिव वधु वरवा, भोजन करवा, मनमा राखु मान, भव स्थिति पाके, समकित साखे, आवीस करतो गमन । शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो मायाने मारजो मार, लोभ न छारो भव भव टालो, मुज पर राखी मन । शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो दुखने हरजो लेजो आप हजूर, कुन्थु जिनवरजी बालमित्र अरजी, स्वीकारो थाउ मगन । शिव० ३

श्रीअरनाथजीनु स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो छे चितामणी, मारो कर्म करो छार वरो शिवरमणी, ए टेक । दुर देशातर थी तुमे

छवि देखी जाउ वारी । मो ॥ १ ॥ श्यामी चमीज मावनी ॥ हीरामणि झलकंत, मुख छवि कोटि चन्द्र मां॥ नयणा अति विकसत, जगत शोजानी हरनारी, देखी वदे छे नरनारी । मो २ समकीत दे दातार तु, देतु अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी वदना, श्रीपति श्रीजगवान, वालमित्र जक्ति तारी, सकल सुखनीछे देनारी । मो ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नही पाछा आवो, दीन दयाल कृपा करी आवो, लियो २ ससारनो, लाव्हो, नहीं पाछा आवो । टेक ॥ (राजुल)–तुम विन आ ससारमा ॥ अवर न को आधार, आमी आवी जजी रहु, क्या जाशो आवार । (नेमनाथ)–सारथी चाल नहीं ऊजु रहेवायछे, (राजुल)–परएया विना जोऊ केम जवाय छे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने जले पछी जाजो, मानो मानो जादवपति जासो।नहीं० (नेमनाथ)–अष्ट जवातर हु रह्यो, तुज साथे सुण नार, नवमे जव तुमे हवे, आवो अमारी लार, (राजुल)–मुजथी साथे पण हवे अवाय छे, वाल मित्र मन राजी वहु थाय छे । प्यारा ॥२॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रजु पुरो मारी आस ॥ एटेक ॥ वसौं नयरी वनारसी वास॥त्रेवीसमा जिनश्री पास॥अहि लंछन धरी

उल्लासरे. प्रभु० ॥१॥ वाह. वदन तुमारुं पास ॥ करे दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्रभु० १ कर्यां चोरासी प्रवास ॥ जमी आव्यो हवे तुम पास॥ हु आप चरणनो दासरे प्रभु० ॥३॥ क्रोध मान मोहनो त्रास ॥ वली लोभे कीधो लास॥ कर जोमी करु अरदासरे प्रभु० ॥४॥ सह्या नर्क निगोदना त्रास, करोक्रूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष आवासरे प्रभु० ॥ ५ ॥ वालमित्रनी अरजी खास, कहे मनमुख मन उल्लास हु पास प्रभुनो दासरे प्रभु०६

श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करता जिनवरना गुणग्राम पूजा करू वहुसारी । पूजा करतां वहु प्यारी ॥भक्ती भाव थकी मेधारी॥वरसूं प्रेमथी शिवसुन्दरी नारी । करता ॥ टेक ॥ चार अने चोराशीना, चक्रे चढयो वहूवार । कूप अरट सम भ्रमणनो॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उपगारी,तसआणा शिरधारी॥वरसू ॥१॥ मनमहारू लागी रह्यु॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणे निरखवा ॥ मनमा वहू उल्लास । भवोभव सेवना सारी भेटवाभक्ति छे भारी । वरसु ॥२॥ नार कुमती यें भोलव्यो॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ काड्ये नदीगोसार । कुमती न ठारी नारी॥ तेथी गयोहुं हारी । वरसु ॥३॥ तुज-मम प्रियआजगलमा ॥ श्रव

निंदा, छल प्रपचथी हृदय जराणु ॥ धन ॥ ३ ॥ जव जव एवा पाप करता, पापनां जारथी पिरू जराणु ॥ धन ॥ ४ ॥ तु तारक पण हु बहु पापी, मारो उध्धार करोतो हु जाणु ॥५॥धन॥ श्रीशखेश्वर ताहरी कृपा थी, अक्षय ज्ञाननु पेहेरु घराणु ॥ धन ॥६॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरुपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी जग वान लोका लोक प्रकाशक जास्कर, केवल ज्ञान निधान ॥ जग हितवछल करुणासागर, गुण रत्नाकर स्वामी शिव सुख पामी बहु दुःख वामी, त्रिजुवन जन विश्रामी ॥ १ ॥ अशरण शरणा जव जय हरणा तु प्रजुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख करणा, प्रजु वडु तुज चरणा तुजगत्राता तु पितु माता, दे सुख शाता दाता तुजगत्राता विश्व विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

थियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जइये आ ज ॥ एटेक ॥ जाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य धन्य॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी वांधे पुण्य, साची जक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन॥

रागणी गुजराती गरबी

प्रजुतार हवे मारु अहि शु थसेरे ॥ कर्यां पाप ते अनत मारा क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हुवे अर्हा एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अनंत पाप क्षय जसेरे ॥ २ ॥ प्र ॥ जैन गायन मंडली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अक्षय ज्ञान मने आप सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

रागणी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्ववरा, शिवसौख्यकरा, जयजीरु हरा, सुरासुरेश्वर वद्य तरा ॥ शि ॥ एटेक ॥ नव तारक तु जगनो त्राता, जय वारक त्रिभुविश्व विख्याता, तु सुखशाला, देपितुमाता, अनंतगुणो तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट खजानो ठे प्रभु ताहरो, हुबुं सेवक प्रभुजी ताहरो, जवसागरथी पार उतारो, काइरु भुजपर करण करा जय शोक हरा, ॥२॥ शि ॥ ताहरु ध्यान धरु नित्य रगे, हुं पण थाऊस प्रभु तुज सगे, अक्षय ज्ञान दे दान उमगे. नाजिनदन नाम धरा, जयविजय करा ॥३॥

गजल

उंमा निसा सा नाखती रे दीकरी डुखी ॥ ए राह ॥ निहार यार तार तु विचार दारहे ॥ गुनेगारकु उतार पार तुहि दिलदार हे ॥१॥ नि ॥ अज्ञ क्तमे अजाणते यह कर्ममें करे, कृपाकरें प्रभु अहो कृपावतारहे ॥ २ ॥ नि ॥ शरणहे प्रभुजी तुं शरण दीजीये मुजे, अक्षय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार हे ॥ ३ ॥ इति ॥

राजुलगीत

देखा नही कछु सार जगतमे देखा नही कछु सार, आससार असार ॥ज॥ तु तारे तो तार ॥ ज ॥ माहारे तु अधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मेणा दइ दइ हवेहु थाकी॥सदेस.नो नही पार ॥ हाय हाय हायरे हवे॥ ठेक वनी लाचार॥ ठे ॥ ज ॥ दे ॥१॥ रुधिरडिहु आसुडे जीनी॥गमे नही शृगार ॥ हाय हाय हायरे हवे॥अंगवले अगार॥ अं । ज । दे ॥२॥ झुरी झुरी पिंजर थयु अग॥ वियोगडु खअपार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ दीक्षालउं आवार । दी॥ज॥दे ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे॥राजुलगीत उचार ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मदिरमा पधार ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

रागणी खमाच ठुमरी ॥

दरीमन विन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥ नव पदसें मेरे विघन कटे । ज्यौ श्री पालके अघ विघटे ॥ एटेक॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके॥ स्पष्ट अस्पष्ट सब कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट विट लपट सवहि सुधारे, मोह सुभटका जोर हटे ॥२॥ न ॥ दान शियल तप भाव प्रमुख गुण॥ विनय नयादिक गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह जगकी ॥नव पद ध्यानसें सब सुलटे ॥४॥ न ॥ पुना जैन गायक मडलीकु॥ अक्षय ज्ञान दशा प्रगटे॥ ५ ॥

धनासिरी

जवलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तवलग तप जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दिखावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥ ज ॥ ध्यान धरी योगी होय बेठत ॥ बक वृत्ति कपटी ॥ बेठ तखत ज्ञानी होय बेठत ॥ करे उपदेश अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आम्बर ॥ मुख सें कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नग्न रहत पचाग्नी सेवत, साधत योगहठी॥ शठ हठ कष्ट करे पण मनतो, नाचत नृत्यनटी ॥४॥ जवगल विषय घटा न घटी तवलग तु क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥ जैन गायन मंगल ताकु वंदत ॥ जाकी अद्वयज्ञान दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जवलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप सपदा ॥ काप आपदा ते शुभ ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरग अरिहंता वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला, उवझायाजगवंत ॥१॥ज॥ सुदरश्याम सलूणा साधु॥ धवलाठे पद चार ॥ दशणनाण चरण तपवंदो, सिद्धचक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण ठे एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल थाये, जाणोनि॰ सदेह ॥ ३ ॥ज॥ शातिसारे विघन

निवारे, उतारे नवपार ॥ अक्षय ज्ञान प्रचारक मं डल ॥ वंदेवारवार ॥ ४ ॥

रागणी वरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह ॥ प्रनुदीजे दरस वकी देर नई ॥ टेक ॥ लखचो रासी फेराफिरता ॥ छु खसहन करे मेनें केइ केई ॥ १ ॥ प्र ॥ नवनव नटकत सरणेहु आयो ॥ अव तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जैन गायक मंमली तो ॥ अक्षय ज्ञान पद चाहाय रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

तुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रनु मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥ टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला ठे, निजगुणता मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनत गुणीना गुणनी गणना ॥ करवी ते खोटी ॥ २ ॥प्र॥ ए प्रनुने तो रूप न रे खा, वर्णादिक नोती ॥ २ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों नजते गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥प्र॥ अक्षयज्ञान दशा प्रगटावे ॥ कर्ममलीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोमी

गोडी गाइयें मनरग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक ताने ॥ कर केदारो सग ॥१॥ गोमी ॥ यात्रा कीजे अमृत पीजे ॥ नीर वहे जिम गग ॥ रोग शोक नय

क्लेस नासे ॥ आलस नावे अग ॥ २ ॥ गोमी ॥ पोढता प्रभुनाम लीजे ॥ आणी मन उछरग ॥ अ चय तेहने नींद माहे ॥ कदिय न होवे चित्त भग ॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

ठुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके मुगत पुर गए गए रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमातम शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरुपी ॥ मेरेमन रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्धहे ॥ रहे अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम ॥ अमृ त पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

वैरागी पद

कहा कीनो नर भव पाके ॥ रहा मोहमद छाके ॥ टेक ॥ वृद्ध अवस्था आयलगी तव ॥ बेठो बुद्धि गुमाके ॥ क ॥ जुठ बोल धन जोरु लीयो हे ॥ भो ले जीवनको समजाके ॥ कुमतीनार सग राच रह्यो हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ २ ॥ क ॥ मात तात सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सब अ पने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥ सतगुरु कहे पर भव सुख करले॥चरनन चित्त लगा के ॥ अब सुनले फिर कोन सुनावे ॥ श्रवनन सुद्ध कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग माढ ताल पंजाबी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थाको देश ॥ साची तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तबहो ज्ञानी, जुरा होता केस ॥ स्याइकी सपेदी आई ॥ अज हु क्यु नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥
कोठेका सगाती तुम ॥ इठे आया एक ॥ कठिने जावोला हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥२॥ कोठे॥ सुखमे संगाती घणा ॥ दुखमे न एक ॥ व्रथाहिपचो ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो सगातीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचद साहेब ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायाना दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिन द गुण गाया ॥ तने वदेठे सुरनररायारे ॥ज॥ तुने व व्याथी गुणीमां गणायारे ॥ ज ॥ एटेक ॥ अश्वसेन नृपनंदन राया ॥ वामाराणीना ठो जाया ॥ चिताम णीजी प्रजु चिता चूरोने ॥ जवजवनी जावठहरा यारे ॥ ज ॥ १ ॥ स्वप्नाना सुखने अभ्रनी ठाया ॥ एवी ससारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले ॥ जिणद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठाडी देजो ने तुमे ॥ माखण लेजो ताणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घमिपल ॥ आजनी सुकृत कमा
णी ॥ वीर्य उल्लास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी
मां जेम लीटी तांणीरे ॥ ४ ॥ चले ॥ साचीतो वा
णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय
ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ वीजु वधु धुल धाणी
रे ॥ ५ ॥ चले ॥ इति ॥

॥ श्रीशाति नाथजी स्तवन ॥

तुज्य नमस्ते स्वामी ॥ शाति जिनंदाजी ॥ हग
देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचदाजी ॥ शां ॥ एटे
क ॥ जन्मे प्रजु शाति सुधारी ॥ जग मरी निवारी
जी ॥ प्रजु शाति नाम हितकारी ॥ मेंने सेवा धारी
जी ॥ १ ॥ तुज्य ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तु
साहव हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हरो
जव फेराजी ॥२॥ तुज्य ॥ तुम दीन दयालाजी ॥
शासनके लालाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥
घर खेम खयालाजी॥३॥तुज्य ॥ तुम कल्पवृक्ष हित
कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रजु आतम शरण तु
मारी॥ द्यो हमे सुधारीजी ॥ अव खुसी तुमारीजी ॥
॥ ४ ॥ तुज्य ॥ इति ॥

ठुमरी

वीर प्रजुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे
रवान जइरे ॥ एटेक ॥ आप न आए वोध पढाए॥
तेरी सुरत[illegible] जइरे ॥ १ ॥ वीर ॥

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस बमी वेर चड रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजे ॥ चरण शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो चले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज शिखरपर चले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे॥ यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर ॥ वाह पकमलेजावे ॥१॥ तु ॥ उचा नीचा पर्वतसो हे ॥ तले चीलका वासा ॥ पेमपेम पर सिंह धकुके ॥ जिहा लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुक टुक पर धजाविराजे ॥ कालरका कणकारा ॥ कालरका कण कारासेती ॥ गुजे परवत सारा ॥ तुम ॥३॥ दूरदेस के जात्री आवे ॥ पुजा आन रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजामे लावे॥मन वछित फलपावे ॥तु॥४॥ सुरनरमुनि जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥५॥ इति॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जबुको मेरु कपायो ॥ ना ॥ सिद्धा रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥ छप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जबतिहा प्रग टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इन्द्र सिंहासन पर ले वेठो ॥ ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुठे मेरु चपायो ॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढरायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें वने तेसें तारो ॥ मेरी करणी कछु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनु ॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनको राजदियो सुर पुरको ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सा ॥ अश्व सेनके नदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥ वाल आवस्यामे जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसखरा श्रावक ॥ अष्ट करमको पठारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों ॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सा ॥ धन्यधमी धन्य भाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका नमत वुध गगा ॥ चरण कमल वलि हारो ॥

रागणी माढ

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धाचल मंडन साहेच, तु प्रभु आनंद कंद ॥ भव्य कमल प्रति वोधन दिनमणि, मुखडु पुनम चदरे ॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत झरेरे, सागर जेम

गंत्तीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक त्नव जल तीररे ॥२॥ तु ॥ त्नवत्नव त्नटकत शरणेहुं आव्यो, त्नागो त्नवनी त्नीर ॥ मारां तारां सु करो प्रत्नु, तारक ठो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारिया प्रत्नु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे प्रत्नु, हु पणतुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तु ॥ दीना नाथ दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैनगायक मन्मलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

पद

जगतनी घटना ठे अतिन्यारी ॥ एराह ॥ आंगीनी रचना ठे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्यथाय त्नारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेलां, मुख ठवी तेज देखी जाय चन्डहारी ॥ १ ॥ आं ॥ मस्तक मुकुट कानेठे कुन्मल, जलक जलक तेज पुज बलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बांहे बाजुबध हार गलामा, मुक्ताफलना बदेठे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे प्रत्नुतेज अनतु, चन्डसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥ आ ॥ पुना जैनगायन मडलीने दीजे ॥ अक्षय ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी ठवी वरनी नजाई ॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नदनकी, कीर्ति त्रिज्नुवन गाई ॥ समेत शिखर गिरि मन्मन प्र-

जुको, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति उल साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज आनद वधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥ सा ॥प्रभुके सरस दरस विनुपाए,जव जव जटक्योंमे जाई ॥ अवतो प्रभुके चरण चित्तलाग्यो, वाल कहे गुणगाई, प्रभु सग लगन लगाई ॥३॥ सा ॥ इति ॥

होरी

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मोरी ॥ एटेक ॥ राजुल चद्धानकों वोले, आइ वसंत रीतु होरी, वागुमें फाग केसीमे खेलु ॥ सव सखियनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको ठोरी ॥ १ ॥ सा॥ सज सिनगार सग लइ सिखरे, अवीर गुलालकी फोरी, अपने पिया सग खेलखेलत हे, केशरको रस घोरी, वाजे रुफ ताल टकोरी ॥ २ ॥ ॥ सा ॥ एते कारन वालम घर आवो, खेलुमें रंगजर होरी॥ ए वीनती सुन प्रभुने राजुलकी ॥ दीने सव डुख तोरी ॥ रत्नकहे जइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीत ॥

अखियां मेरी प्रभुजीसे आज लगी ॥ टेर ॥ पावा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत डुरगति डुरटली॥ अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ विचविच हीरा मोतिलालजकि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजकि-

त दोयकुमलसोहे ॥ ॥ गले विच मोतियन माल-
पंमी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचद के तुम प्रभुसाहेब ॥
चरण न छोडु पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुरे हमारा घटमे
॥ टेक ॥ जाके प्रभाव मेरा॥अज्ञानका अंधेरा ॥ भा
गा भया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ दे-
ख्या विभाव त्यागे ॥ अध्यात्म रूप जागे ॥२॥ रा ॥
मुद्रा प्रमोद कारी ॥ रूपभेस ज्यु तिहारी ॥ लाग
त मोहे प्यारी ॥३॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ ह-
महें अनाथ गुनही ॥ करिये सनाथ अवहि ॥४॥
रा ॥ प्रभुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी भा-
पे ॥ दिल माहिं येहि राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीलु वरवा

अवतो उधार्यो मोहे चहिये ॥ जिनंदराय, राखुं
भरोसो मे प्रभुके चरणको ॥ एटेक ॥सुनो श्रीश्रेयां
सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥विरुद तुमारो प्रभु
तारन तरनको ॥ १ ॥ अ॥ सिंह पुरी जन्म गाम ॥
पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुखे जायो ॥
कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥
आयुष्य परम भाख ॥ लछन चरन
रनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुतोवु अनाथ
नाथ प्रभु ॥ तुमविना और मेरे

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रभुके चरणारविंद पुजत हरषचंद ॥ काटिये करम दुःखमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ श्र ॥ इति

पद

गुण अनंत अपार प्रभुतेरे ॥ गु ॥ टेक॥ सहस रसना करत सुरगुरु ॥ तोउ न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥ कोन अंबर गिने तारा ॥ मेरु गिरको भार ॥ चरम सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥ भक्ति गुण लवलेस भाखें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥ समय सुंदर कहत हमको॥स्वामी तुम आधार ॥प्र०॥

राग कल्याण

माइ मेरो मन तेरो नंद हरें ॥ एटेक ॥ कंचन वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन ठरे ॥१॥ पचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥रतन जडित कंचन घुघरियां ॥रुण झणकार करे ॥२॥ मा ॥ हलत लसत मुगता फल माला ॥ पीत वसन उपरे ॥ मानु चढिहे मान शिखरते ॥ गगप्रवाह खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे भाग्य तिहारो ॥ लुतिहुं भवन शिरे ॥ तीन भवनको नायक तेरे ॥ आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी मूरत ॥ विनु देखे न सरे ॥ हरखचद प्रभु वदन विलोकत ॥ सवहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी

इद्रानी सव ठमक ठमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घनननननन घनननननन, घटा सुघोखा वाजे ॥एटेक॥ ॥गान तान नाच रग॥इन्द्रासन थाय ॥ धन्य धन्य आजको दिवस, प्रभुजीको दरिसन पाय॥ इ ॥१॥ वीर काया लघु देखी ॥ इन्द्र मन अकलाय ॥ अवधि देखी वीर मेरु अगुठे दवाय ॥२॥ ड ॥ जन्म महोत्सव जिनको करी, इन्द्र देव लोक जाय ॥ दास नर प्रभु तणा, हरसेन गुन गाय ॥३॥ इंद्र॥ इति

॥ राग सोरठ ॥

॥ कहु कहालोवारु नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या गणकि पूजीपाइ, वनगए जनम फकीर ॥ क० ॥१॥ गईय गई सो जलीय रहीसो, धर धर मनको धीर॥ कहांलो धीर धरु धीरज धर,विरह जनमवहीर॥क० ॥२॥ जालताल विदी नही जावे,आनुपण नही वीर ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर,तोन रहै कोई पीर॥

॥ राग पुन ॥

॥ होजी आली जानै मानै थारी
वहिला वेग पधारो ॥ ह
किस्थिति, कोमम ए
१ ॥ के ते दिन चि
ठे ॥ २ ॥
तो घरको धणी छै,
प्रीत अतरको जण

॥ राग भैरु ॥

॥ रुषभ जिणंद आणद कद कदा, याहीते चरण सेवे कोट सुर इंदा ॥ रु० ॥१॥ मरुदेवा नाभि नद, अनुभवचकोर चद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्यु दिणदा ॥ रु० ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहु चाहु न गोविदा ॥ ग्यानसार भक्तिचाहु, मे हुं तेरा वदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको ऐ राह

प्रभु नेम कुमरजी आप बीराजो गीरनारमे एटेक। गीरनारी गीरवररे उपर उची टुकां शात ॥ शातो टुके चरण पाडुका मे वंदु दिनरातरे प्रभु नेमकुमरजी ॥ १ ॥ शंख लंछन दश धनुपरीकाया आयु वरस हजार॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, वदो वार हजाररे॥प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश चवी आयो सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पचमि दिन जनम्या वरत्यो जयजय कार रे॥प्रभु नेमकु ॥ ३ ॥ शहशावन जइ शयम लीनो छांडी राजुल नार ॥ श्रावणवद षष्टी दीन दीक्षा प्रभुजी बाल कुमाररे प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन छदमस्थ रहीने आशो वद्य अमाश ॥ वेरुश वृक्ष तले प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ॥ ५ ॥ सुदी आषाढ अष्टमी रुडी, शलेखन एकमास ॥ पदमासन प्रभु मोक्ष पधारें अविनाशी आवासरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कल्याणक पांचो इम

थुणतां पामो अक्षय ज्ञान ॥ बालमित्रकी अरजी इणवीध प्रभुको शरण प्रधानरे॥प्रभु नेमकुमरजी ७

पद

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उतम क्षमापे अचंभो मने आवे ॥कि॥ एक तो प्रभु तुम परम दयालु रोसन तिलतुष मात्र हजूर॥ दुजे जीव दयाके सागर॥ तीजे सतोषी भरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रभुतुमही तउपदेशी ॥तारन तरन जगत मसहुर॥ कोमल वचन सरन सत वक्ता॥ निर्लोभी सजम तपसूर॥२॥ केसे मोह मल्लतुमजीत्यो ॥ अतराय केसेकियो निरमूल ॥ केसेज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेचा रोघातिया दूर ॥३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेब ॥ अकिंचनव्रत धारकभूर ॥सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे तोभीनहि प्रभुजीकेगरुर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास नेनसुख ॥ दीजेअब मोहेदान जरुर ॥ जन्मजन्म पद पकज सेवु ॥ ओरन कछु चित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिछेद समाप्त ॥



॥ अथ पंचम परिछेद प्रारभ्यते ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हु नाम धराउं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे छे खामी ॥ अरुशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ म्हारो नाहलीउं दुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ माह्रारु मन माहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पथ्थर पकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांगलो अवर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं सांभल रेरावण, निश्चय शील न खंडु ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो पण सत्य न छंडु ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सती सघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो सग करीने, आखर कोण उगरियो ॥ ऊठु तो तु जोवे आलोची, सही तुज दाहाडो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हु जग सहु जाणे, भामंडल छे भाई ॥ दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लखमण करशे लडाई ॥ अ० ॥ ६॥ हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ छे म्हारे ठाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलु, का कुलें वाये छे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अब

ला, सीता जेहनु नाम ॥ सतीयो मांहे शिरोमणि कहीये, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणजारानी सद्याय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणु ॥ वणजारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन सवर तणी ॥ व० ॥ पोठी जरजे उदार ॥ १ ॥ ॥ अ० ॥ शुज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा जणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥१॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलघजे हलवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंश जाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणनु नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ०॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे शिरठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ इम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठी जरया गुण राश ॥ अ० ॥६॥ खायिकजावें ते थशे ॥ व० ॥ लाज होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारवार ॥अ०॥७॥ इति ॥ वणजारानी सद्याय॥

॥ अथ सोदागरनी सद्याय ॥

॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर वे, दिलकी वात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतनपुरीमां गया ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ तिनु दलालकु हर समजाया, जिनसें वहोत न फाया ॥ पांचु दीवानु पाऊ जमाया. एककु चोकी विठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरना ॥ दोनु दगावाजी दुर करनां, दीपकी ज्योंतसे फिरना ॥ सु० ॥ ३ ॥ औरदिन वली मेहेलमें रहना, वदरकु न हलानां ॥ दश सेरसें दोस्तिहि करना, उनसें चित्त मिलाना ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर जजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखना, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाई ॥ श्रीगुजवीर विजय घर जाइ, होत सतावी सगाइ ॥सु०॥इति॥

॥ अथ श्री आपस्वजावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वजावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत्त जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे,

अवर सवे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तु अविनाशी, अव हे इनकुं विलासी ॥ वपु सग जव दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ ॥ जव तुम उनकु दूर करीसा, तव तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकु करो अभ्यासा, ल हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कवहींक काजी कवहींक पाजी, कवहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कवहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सव पुद्गलकी वाजी ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान मनोहारी ॥ कर्म कलंकंकु दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति आपस्वजाव सद्याय ॥

॥ अथ श्री सहजानदीनी सज्झाय ॥

वीजी अशरण जावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥ मोह तणा रणीया जमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे जगतना जत रे, नाखी वाक अत्यत रे, नरका वास ठवत रे, कोइ विरला उगरत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति जजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परें जीवको, फोगट जनम गमाय रे, माथे जय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा
ल्या विण धाग रे ॥ दश माथा रण रुवड्यां, चांच
दीए शिर काग रे, देव गया सवि नागरे, न रह्यो
माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो जाइउं
ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे,
केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्ये,
जोतां लक्ष हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर
इणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार
कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, व
लती मेल्ही निराश रे ॥ रोता रणमा ते एकला, ना
ठा देव आकाश रे, किहा तरु ठाया आवास रे, ज
ल जल करी गयो सास रे, वल जड सरोवर पास
रे, सुणी पांरुव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी
गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या
अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त
नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवु
पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥
वालेसर विना एक घरी, नवि सहातु लगार रे ॥
ते विना जनमारो वही गयो, नही कागल समाचार
रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार
रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोता मोक्ष मोझार रे
॥ स०॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग
विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती भरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ हसी हसी देती रे ताली यो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी थया, लोक चणे घर वाररें, घमता पात्र कुंजार रे, एहवु जाणी असार रे, छोडे विषय विकार रे, धन्य तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वस्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जजा लरे, घर रमे केवल वाल रे, धन्य करकंडु जूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुन्नविजय सुगुरु लही, धर्म रयण धरी ठेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे धारता धर्म नी टेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति सहजानंदी सद्याय ॥

॥ अथ लाजल सयणानी सद्याय ॥

॥ लाजल सयणा साची सुणावु, पूरवपूण्ये तु पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमा जमता नरजव, तें नि फल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सा० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमा, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमा बांध्यो रे जाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, का

ग उन्माडए डारें रें नाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी जावा नवि दीजे, नर नारी नरनवनें रे नाइ ॥ उं लखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे नाइ ॥ सा० ॥ ४ ॥ जे विनाव परनावमा नजीयें, रमण स्वनावमां करीये रे नाइ ॥ उत्तम पदपद्मने अवलवी, नवियण नवजल तरीये रे नाइ ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीआतम हित सद्याय ॥

॥ अथ रात्रिनोजननी सद्याय प्रारन ॥

॥ पुण्य संजोगे नरनव लाधो, साधो आलम काज ॥ विपया रस जाणो विप सरिखो, इम नांखे जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिनोजन वारो ॥ १ ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अनदय वावीशमां रयणीनोजन, दोप कह्या परधान ॥ तेणे कारण रातें मत जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधनें नोजन, एटला रातें न कीजे ॥ ए करवा सूरजनी साखें, नितिवच न समजीजें रे ॥प्रा०॥३॥ उत्तम पशु पखी पण रातें, टाले नोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरावो, केम संतोप न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीमी कोली आवमो, नोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ठन्नुं नव जीवहत्या करता, पातक जेह उपा

थु ॥ एक तलाव फोमंता तेटलु, दूषण सुगुरु बतायु रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर नव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर नव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ ॥ एक शो ने चुम्मालीश नव लगे, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडु एक कलक दियता, तेह्वो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन नव लगे दीधां, कूमा कलक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एकशो नवाणु नव लगे खड्यां, शीयल विषय सबध ॥ एके रात्रि नोजनें तेह्वो, कर्म निकाचित बध रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १० ॥ रात्रिनोजनमा दोष घणा ठे, श्यो कहियें विस्तार ॥ केवली केंह्ता पार न पावे, पूरव कोडी मकार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुन परिणाम धरीजे ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाभ इणे विध लीजे रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिनोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रनाति ॥

जोवनीयानी मोजा फोजा, जाय नगारां देती रे ॥ घमि घमि घमियाला वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधे उशके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले वेठा मोज करे छे, खातें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाउं, जोराखो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ दत पछाने कोसो थयो, काज सखुं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥ दूर बलती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती जुवो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोया लूगडा रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप सभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थो डे घणे अवगुणें सहु भस्या रे, केहना नलिया चुए केहेना नेव रे ॥ नि०॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क रजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ नि० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरे सुख पामशो रे, समयसु दर सुखकार रे नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी ॥ प्रीत न कीजे रे, परनारी तणी ॥ त्र्यलो ॥ परनारी साथे प्रीत पिउमा, कहो किण परे कीजीयें ॥ उघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीये ॥ काठडीतुटो कहे लंपट, लोकमाहे लाजीये ॥ कुल विपय खपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करता रे, पहेलां वीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे मनशु धुजीयें ॥ उ० ॥ ध्रुजीयें मनशु कुरीयें पण, जोग मलवो छे नहीं ॥ रात दिन विल पत जाये, अवटाइ मरवु सही, ॥ निज नारीथी सतोप न वल्यो, परनारीथी कहो शु हशे ॥ जो न यें जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शु हशे॥ २ ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश माखणनो वली ॥ वुमता वाचक ज्यां पाणी ते, तरया वात नसांजली ॥ तेम नार रमतां पर तणी सतोप न वल्यो एक घमी ॥ चित्त चट पटी उचाट लागे, नयणें नावे निड्डी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे रग पतगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसग नो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ

ना, रखे तु जाणे खरो ॥ दिन चार रग सुरंग रू डो, पठी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथे नेह मांडे गारु तेहशुं प्रीतनी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथे प्रीतनी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशु प्रेमेंरे राचे सापिणी ॥ ज० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी, रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अग लटके, देव दानवने ठले ॥ ए मांहे काली अति रसाली, वाणी मीठी शेलनी ॥ साजली रे जोला रखे झूले जाणजे विष वेलनी ॥ ५ ॥ चाल ॥ सग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजे रे, मन मिलवा तणो ॥ ज० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखतु पण दोहि लु ॥ क्षण मेळियें क्षण सेरीयें, जमता न लागे सो हिलुं ॥ उश्वासने नि श्वास आवे, अग नाजे मन जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाझे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कवाले रे, मनशु कल मले ॥ उन्मत्त थइने रे, अलल पलल लवे ॥ ॥ ज० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश आवस्था काम केरी, कत कायानेदहे ॥ एम चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीनां रे, परीजव सांजलो ॥ कंता की जे रे, जाव ते निर्मलो ॥ ज० ॥ निर्मलें जावे नाह

समजों, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउं कीचक जी मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक रुरु वड्यां ग्रथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःखपुंज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ७ ॥ ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीये ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीये ॥ उ० ॥ मोहीये सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घरे पाणी जरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम विनवुं ॥ पाए लागीने रे, मधुर वयणे स्तवुं ॥ उ० ॥वयण महारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइये दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे दृढ, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमाहिं, कुमुद चंद सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स मजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उ० ॥ सुंदरी सहे जें हृदय हेजें, पर सेजें नवि वेसीये ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, परमंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पञ्चु जोजन, जमवु ते, जुग तु नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥ परशु प्रेमे रे, हसीय न बोलीयें ॥ दात देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उ० ॥ गुह्य घरनु, परनी आगे, कहोने केम प्रकाशीये ॥ वली वात जे, विपरीत जाखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा, अने अगोचर, एकला नवि, जाइयें ॥ सहसात्कारें, काम करतां, सहेजे शील गमावीये ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशु रे नयण न जोडीये ॥ मारग जाता रे, आघुं उंढीये ॥ उ० ॥ आघु ते उंढी, वात करता, घणुज रूडा, शोजीयें ॥ सासू अने, माना जएया विण, पलक पास न, थोजीये ॥ सुख दु ख सरज्यु, पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीयें ॥ परवश वसता, प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीये ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथे रे, वात न कीजीये ॥ परनर हाथेरे, ताली न लीजीये ॥ उ ॥ ताली न लीजे, नजर न दीजें चचल चाल न चालिये ॥ एक विषयबुद्धें, वस्तु केहनी हाथे पण नवि झालियें ॥ कोटी कदर्प, रूप सुदर, पुरुष पेखीन मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न व खाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीये ॥ उ० ॥ जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर, समो वडे ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोता, नावे कोइ तडोवडे ॥ कुरूप कुष्टी कूबडोने दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ जरतार पामी,

जामिनी ते इंद्रथी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर कुमारे रे,तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजये रे, अजनापरिहरी ॥ज०॥ परिहरी रामेवनमां सीता,नले दमयंति वली ॥ मह्य सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलथी ते,नवि चली ॥ कसोटीनी परे,कसीअ जोतां कंतशु विहडे नही ॥ तन मन्न वचने, शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुप न पाडीये ॥ व्याकुल थइने रे मन न वगाडीये ॥ ॥ ज० ॥ मन न वगाडीये, पर पुरुषनु, जोग जोता, नवि मले ॥ कलक माथे, चढे कूडा सगा सहु, दूरे टले ॥ अणसरज्यो, उचाट, थाये, प्राण तिहा, लागी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा वहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधु रे, अने इजत खोइ ॥ ज० ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सुदर्शन, नवि चल्यो ॥ नरतार आगल, पडी जोठी, अपवाद सघले, उछल्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धें, वकचूल, वाह्यो घणु ॥ पणशीयलथी, चुकी नहीं, दृष्टांत एम, केतां जणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जेह थई व्रती ॥ ज०॥ सती थईने, शीयल राख्यु, कल्पना, कीधी नहीं ॥ नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमा जगी रही ॥ विविध रत्ने, जडित भूषण, रूपसुंदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोभे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥७॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वा ड़ेरें जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्ज्वल, तास कीर्त्ति भलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे, अष्ट भय, दुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा, जे शीयल चोखु, आदरे, ॥ आनंदना ते, उंघ पामे उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोबीडानी सझाय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननु धोतीयु रे, रखे राख तो मेल लगार रे ॥ एणेमेले जग मेलो कर्यो रे, विण धोयु न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरोवर सोहामणु रे, सम कित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, माहि नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहा झीले मुनीवर हसला रे, पी ये छे तप जप नीर रे॥शम दम आदि जे शील रे, तिहा खाले आपणु चीर रे॥धो०॥३॥तपवजे तप तडके करी रे,जालवजे नव तत्त्व वाड रे॥ छांटा उडाडे रखे पाप अढारना रे,एम उजलु होशे ततकाल रे॥ धो० ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे,रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणु राखजे रे, पछे आपणु नीमी सभाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलु रे॥चल मेलीनें सकेल रे॥ समयसुदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी जरतजी, मनहीमे वैरागी ॥ सहस्स बत्रीश मुकुट वध राजा, सेवा करे वडवागी ॥ चोशठ सहस्स अतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ ज० ॥ १ लाख चोराशी तुरगम जाके, ठन्नु कोम हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो हिये, सुरता धर्मेशु लागी ॥ ज० ॥ २ ॥ चार करो ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तीन कोम गोकुल डुजे,एक कोम हल सागी ॥ज०॥ ॥ ३ ॥ सहस्स बत्रीश देश वमजागी, जये सरवके त्यागी ॥ ठन्नु कोम गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा वा जे, मन चिंता सव जागी ॥ कनक कीरत मुनिवर वदत हे, देजो मुक्ति मे मागी ॥ ज० ॥

चेत चतुरनर निज मनमाहि॥क्षण क्षण आयुप जायजी कांइ निचिंत थइने सुतो,नरजव ए ले जाय जी॥१॥चे॥काम क्रोध तृष्णारसें रातो,तेणें न जाण्यु, काय जी॥लागे घरे किम कूप ख णासेसाठे न बांधि पालजी॥२॥चे॥आयु अ स्थिर जिम जल पपोटो मर ण ते आवे निदानजी ॥ राय रंक केहने नवि बोडे, पडित जाण अजाणजी ॥३॥चे॥पुण्य पाप दोय साथे आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म करो जिम,आवागमण न होयजी ॥४॥ चे ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वाहुवलजीनी सद्याय ॥

॥ वहेनी वोले हो वाहुवल साचलो जी ॥ रूडा रूमा रगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाएयु जाएयु पुरुप प्रधान ॥ व० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरंजन देव ॥ जाइ जरतेसर वाहालो विनवे जी, तुऊ करे सुर नर सेव ॥ व० ॥ २ ॥ जर वरसालो हो वनमा वेठीउं जी, जिहां घणा पाणीना पूर ॥ ऊर मर वरसे हो, मेहुलो घणु जी, प्रगट्या पुण्य अकूर ॥ व० ॥ ३ ॥ चिहु दिशि वींट्यो हो वेलमीये घणुं जी, जेम वादल ठायो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो, अमने मोकल्या जी ॥ तुम प्रतिवोधन नूर ॥ व० ॥ ॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि जस्या जी ॥ पाम्यु पाम्यु केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो, हरख्यो घणु जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ व० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री ढढण ऋपिजीनी सद्याय ॥

॥ ढढण ऋपिजीने वदणा ॥ हु वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हु वारी लाल ॥ अजिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हु वारी लाल ढ० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हु० ॥ न मले शुरू आहार रे हुं० ॥ न लीये मूल असूकतो ॥ ... ंजर हुवो गात रे ॥ हुं० ॥

ढ० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्स अढार रे ॥ हु० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ३ ॥ ढढण अधिको दाखीयो ॥ हु० ॥ श्रीमुख नेम जिणद रे ॥ हु० ॥ कृष्ण उमाह्यो वादवा ॥ हु० ॥ धन्य जादवकुल चद रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ४ ॥ गलीआ रे मुनिवर मल्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हु०॥ किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हु० ॥ आव्यो भाव विशेष रे ॥ हु ॥ ढ० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधु जी ॥ हु० ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हु० ॥ रिषीजी लइ आवीया ॥ हु० ॥ प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिल्या ॥ ॥ हु० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि नहिं वत्स ताहरी ॥ हु० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हु० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हु० ॥ इट निंभाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ८॥ आवी सूधी भावना ॥ हु० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हु० ॥ ढढण रुषि मुगते गया हु० ॥ कहे जिन हर्ष सुजाण रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ९ ॥ इति ढढण रुषिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमता मुनिवरजूके, करणीकी बलि हा

री वे ॥ खट वर्षनके सजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नद न, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अग अग्यार पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ तपगुण रयण सवत्सर आदिक, करकें काय उझारीवे ॥ प्रजु आदेशें विपुलाचल परि, करी अ णसण अति नारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलक निवारी वे ॥ अढा र अमताले तिहि गिरि उपर, कीनी थापना सारी वे ॥श्री०॥४॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये, सुवि चारी वे ॥ शिष्य क्षमाकल्याण हरख धर, गावे आति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चपा नगरी अति जली ॥ हु वारी लाल ॥ दधिवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखे उपनो ॥ हु० ॥ कर्म कीधो चमाल रे ॥ हु०॥ ॥१॥ करकडुने करु वंदणा ॥ हु० ॥ पहिलो प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावता ॥ हुं० ॥ स मकित थाये शुरू रे ॥ हु० ॥ २ ॥ लाधी वाशनी लाकनी ॥ हुं० ॥ थयो कचनपुर राय रे ॥ हु० ॥ चापसु सग्राम मांमीउं ॥ हु० ॥ साधवी लीउं सम जाय रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वृषज रूप देखी करी ॥ हु० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हु० ॥ उत्तम संजम

आदर्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४॥ कर्म खपाय मुगते गया ॥ हुं० ॥ करकंडू रुषि राय रे ॥ हु० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हु० ॥ प्रण म्या पातक जाय रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मनोरमा सतीनी सद्याय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नारीरे ॥ शील प्रजावे शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मो०॥१॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया अजया दीए कलंक रे कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्स ग्ग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निरमलु, तो वधो शासन मामरे ॥मो०॥३॥ शूली सिंहासन थयुं शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही थया केवली, दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४॥ ज्ञानविमल गुण शीलथी, शासन शोज चढावे रें सुर नर सवि तस किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥५॥ इति॥

॥ अथ क्रोधनी सद्याय ॥

॥ कडवा फल छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोले ॥ क० ॥ ॥ १ ॥ क्रोधे क्रोड पूरव तणु, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥क्र०॥२॥ साधु घणो तपीयो हतो, धर तो मन वैराग॥ शिष्य ते क्रोधथकी थयो, चंडकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३॥

आग उठे जे घरथकी, ते पहेलु घर बाले ॥ जल नो जोग जो नवि मले, ते पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही ॥ क० ॥ ६ इति क्रोधनी सद्याय ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, माने विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिना सुख छे शाश्वता, ते केम लहिये जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो ससारमा, गुणमा अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी, जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणे, तेतो रामे मार्यो रे ॥ डुर्योधन गरवे करी, ते अते सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४॥ शूकां लाकडा सारिखो, दु खदायी ए खोटो रे॥उदयरत्न कहे मानने, देजो तमे देशवटो रे॥रे०॥५॥इति

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनु मुल जाणीये जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामा समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥

ए आकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूम कपट नो रे कोट ॥ जीन्ने तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशु राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशु बाघे प्रीतमी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंडे मन तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप की धु माया करी जी, मित्रशुं राखो रे ज्ञेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मा रग ठे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रनी ढाय ॥

॥ कोइलो पर्वत धूधलो रेलो ॥ ओ देशी ॥

आचारांग पहेलु कह्युं रेलो अग इग्यार मजार रे ॥ चतुरनर ॥ अढार हजार पदे जिहा रेलो, दा रयो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ जावधरीने सा जलोरेलो जिम जाजे जव जीति रे ॥ च० ॥ पू जा जक्ति प्रजावना रेलो, साचविये सवि रीति रे ॥ च० ॥ जाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअवध सुहा मणा रेलो, अजायणा पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च०॥ जा० ॥ २ ॥ मीठडेवयणें गुरु कह्यु रेलो, मीठडु अ

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांजले रेलो, सु
ख लहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुर
तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे
॥ च० ॥ सांजलवु सिद्धांतनु रेलो, तेहथी अति अ
जिराम रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविबु
धतणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम
ने पहिला अगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे
॥ च० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सद्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमां
हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए
कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूडो कलियुग
आयो ॥ एआंकणी ॥ बावो कहे मारी नानडी
बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ यारो कूडो कलियु
ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम
जलायो ॥ बोल वध नहि मत्रीने, गोचर खेत्र खे
डायो ॥ वे यारो ॥२॥ गुरुने गाल दिये नित चेलो,
वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने वहु खाटलडे,
फुके शरीर जलायो ॥ वे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस
नो हींडे होंशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पच तणी साखे
परणीने, अवला अर्थ गमायो ॥ वे यारो ॥४॥जोगी
जंगम ने सन्यासी जांग जखे मदवाहो ॥चोर चाड
परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ वे यारो ॥५॥

निर्धनने वहु वेटा वेटी धनवंत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति वणी लक्ष्मी उत्तम जन सीदा यो ॥ वे यारो ॥ ६ ॥ न मले वाप सगाते वेटो, घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथउपाडे मायने मारे, पर णी शु उमाह्यो ॥ वे यारो ॥ ७ ॥ घरकाने घेलो कहे वेटो, श्राद तणो मद वाह्यो ॥ वहु सूतीने वर हींमोले, सासरे सूवाने धायो ॥ वे यारो ॥ ८ ॥ हलखेडे ब्राह्मण गौं जोत्ति, निर्दय नाक फराायो ॥ मा वापे वेटी वेचीने, वेटाने परणायो ॥ वे यारो ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परा यो ॥ कागानी पेरे कलहो मान्री, कुल गुरु नाम धरायो ॥ वे यारो ॥ १० ॥ वेयर वार वरसनीने वेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ माग्यां मेह न वरसे महीयल, लाजे धर्ग्यो सनायो ॥ वे यारो ॥ ११ ॥ कूम्रा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पन्नणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचने सुख पायो ॥ वे यारो कूम्रो ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शिय ल समुव्रत को नहि, श्री जीनवर न्नाखे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वता, डुर्गति पमता राखेरे ॥शि०॥१॥ व्रत पचख्काण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक ज शियल तणें वले, गया मुकतें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ २ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायीरे शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम न्हाइरे ॥ ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवु, कहे वीर न्नगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलु, प हेलु शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पठी, व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निद्रानी सवाय ॥

निद्रा वेरण हुइ रही, कीम कीजे हो सा पुरु श निदानके, चोर फरे चिहु पासथी, किम सूता हो काइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कव ण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनतो अनत काल तिहारहे, इम वगडे हो, कांइ धरमनो मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम राजा हो कांइ सबल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ चिहु दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥ नि० ॥ ४ ॥ जागतडा गजे नहि, ठेतराये हो नर सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पान्न जण्या, किम कीजे हो शा पुरुषनी न्नेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरे इम न्नाखीयु, पखी न्नारड हो न करे परमाद के, तेह

तणी परें विचारजो, परिहरजो, हो गोयम परमाद के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांजली, परिहरी यो हो गोयमे परमाद के, लीला सुख लाधां घणां, थीर रहियो हो जगमा जसवादके, ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद निद्रमी मत आणजो, सूइ रहेजो हो साव धान के, ध्यान धरम हियें धारजो, इम नाखे हो मुनि कनक निदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥

॥ अथ आत्मबोध सद्याय ॥

जीव क्रोध म करजो, लोन म धरजे, मान मला इश नाइ ॥ कूडां कर्म म बाधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ नाइरे जीवडा ॥ दोहिलो मान वजव लाधो, तुमे कांइ करी तत्वने साधो रे नोला ॥ दोहिला० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे दे रासर जतां, वीश विमासण थाय ॥ चूख्यो तरश्यो रावल राते, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवधा दोहि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोशाले चाल्या, सूणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जाये, नयणे निंद नराणीरे ॥ जीव० ॥३॥ नामे बेठो लोन्ने पेठो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ वे घमीनु पमि क्कमणु करता,चोखो चित्त न राख्योरे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आ ठम चउदश पुनम पाखी, पर्व पर्युसण सारो ॥ वे घमीनु पचरकाण करता, एक बीजाने वारो रे ॥ रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ कीर्ति कारण पगरण माडी, अ

रथ गरथ सवि लूटे ॥ पुण्यने काजे पारकु पोतानु, गाळडीए नवि वूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घमाव्या, पहेरण आठा वाघा ॥ दश आंगली दश वेढज पहेर्या, निर्वाणे जावु ठे नागां रे ॥ जीव मा० ॥ ७ ॥ वाको अक्षर माथे मीडु, नीलवट आ धो चदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोधे, ए त्रण कालें वंदो ॥ जीवमा० ॥ ८ ॥

॥अथ श्री जीनहर्षजीकृत पांचमा आरानो सद्याय॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पाचमा आरना नाव रे ॥ डुखीया प्राणी अतिघणा, सांजल गौतम सु नावरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेर होशे ते गाममा, गाममां, होशे समशान रे ॥ विण गोवालें रे धण चरे, ज्ञानी नहि निरवाण रे ॥ वी० ॥ २ ॥ मु ज केडे कुमती घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनम तिनी रुचि नवि गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कुमति काका कदाग्रही, थायशे आप णा बोलरे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जि न मत मोल रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पाखमी घणा जाग शे, नागशे धरमना पथ रे ॥ आगम मत मरमी करी, करशे नवा वली ग्रथ रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चाल णीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेशरे आगम शा खाने टालशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोल रे ॥ सा

धुजन सीदा यशे, डुर्जन बहुला मोल रे ॥वी०॥७॥ राजा प्रजाने पीरुशे, हिंडशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसशे मेहुला, मिथ्यात्व होशे बहु थोक रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणीश चौदोत्तरें, हो शे कलंकी राय रे ॥ माता ब्राह्मणी जाणीये, वाप चमाल कहेवाय रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ व्यासी वरषनु आउखु, पामलीपुरमां होशे रे, तसु सुत दत्त नामें जलो, श्रावककुल शुज होशे रे ॥ वी १० ॥ कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे जिक्षा तणी, महा आकरा कर होय रे ॥ वी० ॥ ॥ ११ ॥इन्द्र अवधिये जोयता, देखशे एह स्वरुप रे ॥ द्विजरुपे आवी करी, हणशे कलंकी जूप रे ॥ ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इन्द्र सुर लोकें ज य रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, जेटशे शेत्रुंज गिरि राय रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी जीन मंडित करी पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोके सुख जोगवे, नामे जयजयकार रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पाचमा आराने ठेडु ले, चतुर्विध श्रीसघ होशे रे ॥ बहो आरो बेसतां, जीनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥ बीजे अगनी जायशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे पोहरे खोपना, ठठे आरे ते होय रे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ठठे आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ॥ वीश वरसनु आउख, पटवर्षेगर्ज्जज होय ॥ १७ ॥ सहस चोराशी

वर्पपणे, नोगवशे नवि कर्म ॥ तीर्थंकर होशे नलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ १८ तसु गणधर अति सुदरु, कुमार पाल नूपाल ॥ आगम वाणी जोडने, रचीय रयण रसाल ॥ १९ ॥ पाचमा आराना नाव ए, आगमे नाख्या वीर ॥ अथ बोल विचार कह्या, सांनलजो नवि धीर ॥ २० ॥ नणतां समकित सं पजे, सुणतां मंगल माल ॥ जीनहर्षे कही जोड ए, नाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति ॥

॥अथ अमल वर्जन स्वाध्याय कथ तमाकू परिहरो॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजीनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश मेरे लाल ॥ बावीश अनक्ष्यमांहे कह्युं, अमल अ नक्ष्य विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाउं साजना॥१॥ अमल विगोवे तन ॥ मे०उघ बगासा घेरणी, आवे आलो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने सारिसो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां अ रति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥३॥ आलस ने उजागरो, वेगो ढबका खाय ॥ मे० ॥ अकल नकांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनु, नामें जे अहि फीण ॥ मे० ॥ सग करे कोण एहनो, पंमित लोक प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलु मुख कम्बु हु वे; वली घाटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नित्य

आकरो, इणथी अवगुण थाये ॥ मे० ॥ अ० ॥६॥ नाक वधाये बोलता, आधु वचन बोलाय ॥ मे० ॥ अमी सुकाये जीजनुं, एहने खाय वलाय ॥ मे० ॥ ७ ॥ दाढीने मूछादिशि, ऊगे नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मिश हुए, गावकी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ ८ ॥ पलक अवेरु जो लीए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए नयणां करे, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ए ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समान ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराइ आछो कह्यो, मालवी मांहे नेल ॥ मे० ॥ आपदशुं सखरुं नही, मिशरीशु मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटाक जे नर जीरवे, तसु अहि विप न जणाय ॥ मे० ॥ अमल घणु खाधायकी, कदर्प वल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाढु नावे दाय ॥ मे० ॥ खोनी रोटी खारू घी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामनी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥ काति विखी रुण करी, अमलीने दीए आण ॥ ॥ मे० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लगार ॥ मे० ॥ कथन न लोपे कयनु, ते विरखी ससार ॥ मे० ॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्भागणी नारी जीका, बोले कर्कश वाण ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफी

णिया, आलसवंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥
परणी जाइ पारकी, शुं कीधु तें धीठ ॥ मे० ॥ पो
तानुं पण पेट ए, निठुर जराय न नीठ ॥ मे० ॥
॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट भूषण सहु, वेची खाधु
तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुज घरवासमां, कहे सुख
पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल समो अ
सुगो नहीं, मानो एमुक शीख ॥ मे० ॥ वाले सुंद
र देहनी, अते मगावे भीख ॥ मे० ॥ अ० ॥ १९॥
दालिडीने दोहिलु, सुर उग्यानु शाल ॥ मे० ॥ श्री
मंतने पण नहीं भलु, जोता ए जजाल ॥ मे० ॥
॥ अ० ॥ २० ॥ सासु वहु वढतां ठता, रीसे अमल
भखंत ॥ मे० वालक खाये अजाणतां, जो घर अम
ल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी वध जिणथु
हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमु
कह्यु, विष व्यापार पकुर ॥ मे० ॥ अ० ॥ २२ ॥ च
तुर विचार ए चित्त धरी, कीजे अमल परिहार ॥
॥ मे० ॥ खिमाविजय पडित तणो, कहे माणिक म
नोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥

॥ अथ काया उपर सद्याय ॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सीचतारे सूके ॥ उठ
कोड रोमा- वली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ का
या माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मो
क्षनो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत

आंबो मोरीयो, सामायिक थाणे मत्र नवकार संज्ञा रजो समकित सुधठाणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वाकी करो विरता तणी, सवि लोज निवारो ॥ शील सयम दोनु एकठा, जली पेरे पारो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, चेठा एणी डाली ॥ फल चुटीने चोरीआ, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वाकी एक सूरूलो, सुख पिंजर बेठो ॥ वहुत जतन करी राखजो, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥६॥ का जोलपणे जव हारियो, मती मोकी सन्नाली ॥ रत्न चिंता मणि सारीखी, काइ गाठ न वाली ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक जणे, सुणेजो वनमाली ॥ वाक जली परें पालजो, करजो ढग वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ तेर काठीयानी सद्याय ॥

॥ आलस पहेलो जी काठियो, धर्मे ढील कराय रे, निवारोजी काठिया तेर दूरें करो ॥ बीजो ते मो ह पुत्र कलत्रशु, रगे रहे लपटाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ १ ॥ त्रीजो ते अवरण धर्ममा, बोले अव रण वादरे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ चोथो ते दम्नज काठियो, न लहे विनयें सवाद रे ॥ निवारोजी ॥ ॥ का० ॥ २ ॥ क्रोध ते काठियो पाचमो, रीसे रहे अमलाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ठ्ठा प्रमाद ते कठियो, व्यसनें विगूतो थाय रे ॥ निवारोजी ॥

॥ का० ॥ ३ ॥ कृपण काठियो सातमो, न गमे दाननी वातरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ आठमो भयथी नवी सुणे, नरकादिक अवदात रे ॥ निवारोजी ॥ ४ ॥ नवमो ते शोक नामे कह्यो, शोकें ठाडे धर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ दशमो अज्ञाने ते नवि लहे, धर्म अधर्मनो मर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ॥ ५ ॥ विकथा नामे अग्यारमो, लोक नाते धरे प्रीत रे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ कुतुहल काठियो बारमो, कौतुक जोवा धरे चित्त रे ॥ निवारोजी ॥ ॥ का० ॥ ६ ॥ विषय ते काठियो, तेरमो, नारि साथें धरे नेहरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ इति श्री तेर काठियानी सद्याय ॥

॥ अथ महोटी होस न करवा आश्रयी सद्याय ॥

होंशीमा भाइ (प्राणि) होंश न कीजे महोटी वावी ठे बटी बाजरी, तो शाली केम लहियें मोटी रे ॥हो०॥ प्राणी जेणे दीधु तेणे लीधु जे देशे तेलेशेरे॥ जेणे नवि दीधु तेणे नविलीधु, दीधा विना केम लेशे रे ॥ हो० ॥ १ ॥ वाव्या विना कर्षण केम लहियें, सेव्या विना केम तरीये ॥ पुण्य विना मनोरथ मोटा, दीधा विण केम करिये रे ॥ हो० ॥ ॥२॥ सीसानी अकोटी आपी, आपी तरुवानी त्रोटी ॥ ते सोनार कने केम मागीश, सोनानी करी मोटी रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ शालिभद्र धन्नो कयवन्नो, मूलदे

व धनसार ॥ पुण्य विशेषे प्रत्यक्ष पाम्या, अलवेस र अवतार रे ॥ हों० ॥ ४ ॥ एवु जाणी रुडु पामी, करजो धर्म सखाइ ॥ साधु हर्ष कर जोडी विनवे, दीधुं लेशे लाइरे ॥हों० ॥५॥ इति हांसीना सद्याय॥

॥ अथ मधुबिंदुश्रा दृष्टांत सद्याय प्रारज ॥

॥ ढाल ॥ सरसती मुज रे, माता द्यो वरदान रे ॥ पूछे गौतम रे, जाखे श्रीवर्द्धमान रे ॥ छंडो गिरु श्रा रे, विरुश्रा विषयनु ध्यान रे ॥ विषयारस रे, छे मधुबिंडु समान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुबिंदु सरिखो विषय निरखो, जाइ परखो, चित्त शु॥नर जनम हारयो मोह गारयो, पिरु जारयो पापशु ॥ कतार पडियो नाग नडियो, कोइ देवाणुप्पियो ॥ वडवृक्ष जडियो वेगे चडीयो करडियो छप्पियो ॥ १ ॥ ढाल ॥ वड हेठल रे, कूप अछे असराल रे ॥ दोय अजगर रे,मगर जिश्या विकराल रे ॥ चिहु पासे रे, चार जुयगम काल रे ॥ वली उपर रे, मोटो छे महुयाल रे ॥ त्रुटक ॥ महुयाल माखी रगत चाखी, चचु राखीनें रही ॥ घधोलतो गजराज धायो, पडत वडवाइ ग्रही ॥ वडवाइ कापे उदर आपे, ताप सतापे ग्रह्यो ॥ मधु थकी गलीयो बिंडु ढलीयो, तेणे सुखलीणो रह्यो ॥ २ ॥ ढाल॥एह सकट रे, छोडण देव दयाल रे ॥ डुःख हरवा रे, विद्याधर ततकाल रे ॥ उद्धरवा रे, धरियु तास विमान रे ॥ श्रो श्रावे रे, मधुबिंडु करे

सान रे ॥ त्रूटक ॥ मधुबिंदु चाखे, वचन नाखें, करे लालच लखवली ॥ वार वार राखे सान पाखे, रह्यो क्षणएक पर रली ॥ तस खेचर मलीयो वेगे वलियो, रंक रुलीयो ते नरु ॥ मधुबिंदु चाटे विषय साटे कह्यो उपनय जगगुरु ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोराशी लख रे, गतिवासी कातार रे ॥ मिथ्यामति रे, भूलो भमे संसार रे जरा मरणारे, अवतरणा ये कूप रे,॥ आठ खाणी रे, पाणी पगइ सरूप रे ॥ त्रुटक ॥ आठ कर्म खाणी दोय जाणी, तिरिय निरय अजगरा ॥ चारे कपाया मोह माया, लंबकाया विषहरा ॥ दोय पक्ष उदर मरण गयवर, आयुवरूवाइ वटा ॥ चटका वियोगा रोगशोगा, भोग योगा सामटा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ विधाधर रे, सद्गुरु करे सभाल रे ॥ तेणें धरीयु रे, धर्म विमान विशाल रे ॥ विषया रस रे, मीठो जेम महुयाल रे ॥ परूखावे रे, वाल यौवन वयकाल रे ॥ त्रुटक ॥ रह्यो वाल यौवन काल तरुणी, चित्तहरणी निरखतो ॥ घरभार युत्तो पक खुत्तो, मठवगुत्तो पोषतो ॥ आनंद आणी जैनवाणी, चित्त जाणी जागीये ॥ चरण प्रमोद सुशिष्य जपे, अचल सुख एम मागीये ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय प्रारभ ॥

॥ श्रीसीमधर साहेब साजलो ॥ ए देशी ॥

॥ का नवि चिंतें हो चित्तमें जीवमा, आयु गले

दिन रात ॥ वात विचारी रे पूरवभव तणी, कुण कुण ताहरी रे जात ॥ कां० ॥ १ ॥ तु मत जाणे रे ए सहु महारा, कुण माता कुण भ्रात ॥ आप स्वारथ ए सहु को मल्या, म कर पराइ रे वात ॥ ॥ का० ॥ २ ॥ दोहिलो दीसे रे भव माणस तणो श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे गुरु गिरुआ तणी, नहीं तुज वारो रे वार ॥ कां० ॥ ३ ॥ पुण्य विहूणो रे दुःख पामे घणु, दोष दीये किरतार ॥ आप कमाइ रे पूरव भवतणी, नवि संभारे गमार ॥ ॥का०॥४॥ कठिन कर्मने रे अहनिश तु करे, जेहना सबल विपाक ॥ हुनवि जाणु रे कुण गति ताहरी, ते जाणे वीतराग ॥ का० ॥ ५ ॥ तुज देखतां रे जोने ते जीवडा, केइ केइ गया नर नार ॥ एम जाणीनेरे निश्चे जांयवु, चेतन चेतो गमार ॥ का० ॥६॥ सुख पाम्या रे बहु रमणीतणा, अनत अनती रे वार ॥ल ब्ध कहेरे जो जिनशु रमे, तो सुख पामे अपार॥७॥

॥ अथ स्त्रीवर्जन शिखामण सझाय ॥

॥ धर्म भणी जाता थका, वचमांहे पाडे वाट ॥ लब्धि लीए सर्व लूटीने, व्रतनी जे वहे उवाट ॥ ब ला हो, बहु बहु बोली ए बाल, जे अठता उपाये आल, जे वाघणथी विकराल, जे आपे मरण अ काल ॥ ब० ॥ १ ॥ ससारे सहु सरिखु नहीं, जोने वसता जोय ॥ एक वाको एक पाधरो, घोरडीये

कांटा जिम होय ॥ व० ॥ २ ॥ वला वला सहुको कहे, वीजी नला चलवत ॥ ए जेवी एके नहीं, जे ठले पाणी ठलत ॥ व० ॥ ३ ॥ आखाढो गाढो ठ ल्यो केइ ठल्या नर कोम ॥ गुणवतनु पण नहीं ग णु, जे कुणमा लगाडे खोड ॥ व० ॥ ४ ॥ उलाले आकासमा, एक आंखे उलाले अनेक ॥ महींयें पग मंडे नहीं वली, नासे विनय विवेक ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ जशोधर जिस्या खानमी, वली मुंज जिस्या महाराज ॥ पुण्यवत परदेशी सारिखा, ते कांता हण्या निजकाज ॥ व० ॥ ६ ॥ जोरावर जबू जिस्या, वक चूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थूलिनद्र सारिखा, जेह ना नारिये न उतास्या नीर ॥ व० ॥ ७ ॥ शोल स ती आदे थइ महासतीओ जग हितकार ॥ अने क नर तेणें उद्धस्या, रहनेमि आदे निरधार ॥व०॥ ॥ ८ ॥ सुदर्शन ठलला नवि ठल्यो, थयो केवल क मलाकत ॥ परमोदय पामे सही, जे पास एहने न पर्कत ॥ व० ॥ ए ॥ इति स्त्री वर्जन सज्झाय ॥

॥ अथ परस्त्री वर्जन सघाय ॥

॥ धणरा ढोला ए देशी ॥

॥ शीख सुणो पीउ माहरी रे, तुजने कहुं कर जोम ॥ धणरा ढोला ॥ प्रीत म कर परनारी शु रे, आवे पग पग खोम ॥ ध० ॥ कह्युं मानोरे सुजाण कह्युं मानो ॥ वरज्या वर्जो, मारा लाल, वरज्यां

वर्जो, परनारीनो नेहलमो निवार ॥ धणरा ढला ॥ ॥ १ ॥ जीव तपे जिम वीजली रे, मनडु न रहे ठाम ॥ ध० ॥ काया दाह मिटे नही रे, गांठे न रहे दाम ॥ ध० ॥ २ ॥ नयणें नावे निद्रमी रे, आठे पोहोर उद्वेग ॥ ध० ॥ गलीआरे भमतो रहे रे, लागू लोक अनेक ॥ ध० ॥ ३ ॥ धान न खाये झापतो रे, दीठु न रुचे नीर ॥ ध० ॥ नीसासा ना खे घणा रे, साभल नणदीना वीर ॥ ध० ॥ ४ ॥ भूतलमें निसि नीसरे रे, कुरी कुरी पिंजर होय ॥ ध० ॥ प्रेमतणे वश जे पडे रे, नेह गमे तव दोय ॥ ध० ॥ ५ ॥ रात दिवस मनमा रहे रे, जिणशुं अविहरु नेह ॥ ध० ॥ वीसांर्या नवि वीसरें रे, दाझे क्षण क्षण देह ॥ ध० ॥ ६ ॥ माये वदनामी चढे रे, लागे कोरु कलक ॥ ध० ॥ जीवितनो स शययमैरे, जूवोरावण पतिलक ॥ध० ॥७॥ परनारीना सगथीरे, भलो न थाये नेठ ॥ घ० ॥ जूवो कीचक भीमडे रे, दीधो कुभी हेठ ॥ ध० ॥ ८ ॥ थाये लं पट लालची रे, घटती जाये ज्योत ॥ ध० ॥ जीत न थायेतेहनी रे, जिम रायचद प्रयोत ॥ ध० ॥९॥ परनारी विपवेलमी रे, विषफल भोग सयोग ॥ ॥ ध० ॥ आदर करी जे आदरे रे, तेहने भवभय शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ वाहाला महरी विनति रे, सा ची करीने जाण ॥ ध० ॥ कहे जिन हरष तुमे सा

नलो रे, हियडे आणि मुज वाण ॥ ध० ॥ ११॥
इति परस्त्री वर्जन स्वाध्याय ॥

॥ अथ जीवने समता विषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति जरो मरम विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ हारे तुमे कुमतिके घेर जावो गे, तुमें कुलमां खोट लगावोगे, धिक्क ऐह जगतनी खावो गे ॥हो०॥१॥अमृतत्यागी विष पीउंगे, कुमतिनो मारग लियोगे, ए तो काज अयुक्त कीयोगे ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोह रायकी चेटी ठे, शीव सपत्ति एथी ठेटी ठे, एतो साकर गलती पेटी ठे ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी ठे, किण विध ए चित्त जावी ठे, एतो दाहण जगमा चावी ठे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सह ऋद्धि तमारी खाए ठे, करी कामण चित्त जरमाए ठे, तुम पुण्ययोगे ए पाए ठे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आवल काज वाउल वोवो, अनुपम जव विरथा नवि खोवो, अव खोल नयण प्रगटी जोवो ॥ हो० ॥६॥ इण विध समता बहु समजाए, गुण अवगुण कइ सहु दरशाए, सुणी चिदानद निज घर आये ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दान, शील, तप, जाव स्वाध्याय ॥

॥ श्री महावीरे जांखीया, दानना चार प्रकार रे ॥ दान शियल तप जावना, सखी पचम गति दा

तार रे ॥ श्री महा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें सखी दाने कोड कल्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रभाव थी, सखी कयवन्नो शालिभद्र जाणरे ॥ श्री महा० ॥ २ ॥ शियले संकट सवि टले, सखी शिलें वदित सिद्धरे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखी सोल सति परसिद्धरे ॥ श्री महा० ॥ ३ ॥ तप तपो भवि भाव शु, तपे निर्मल तन्नरे ॥ वर्षोपवासी ऋषभजी, सखी धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री महा० ॥ ४ ॥ भरता दिक शुभ भावथी, सखी पाम्यो पचम ठाम रे ॥ उदयरत्न मुनि तेहने, सखी नित्य किरे प्रणामरे ॥ श्री महावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लाभ सघाय ॥

॥ कर पडिक्कमणु भावशु, दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लालरे ॥ परभव जाता जीवने, सबल साचू जा ण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उ चरे, श्रेणिक राय प्रत्ये जाण ॥ लालरे॥ लाख खांडी सोना तणी, दिये दिन प्रत्ये दान ॥ लालरे ॥क०॥ ॥ २ ॥ लाख वरस लगे ते वली, एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोले, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविस त्थो, देव वदन दोयवार ॥ ला० ॥ व्रत संभारो रे आपणा, ते भव कर्म निवार ॥ ला० ॥ कर० ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पचख्खाण सूधुं वि

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्याये ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक प्रतापथी, लहिये अमर विमान ॥ लालरे ॥ धर्म सिंह मुनि एम जणे, ए ठे मुकित निदान ॥ ला लरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ ठींक विचार सद्याय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ ठींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सूएयो में सार ॥ आगलमा जो ठींकज होय, अशुन्न तणी जाणे जे, कोय ॥१॥ पहेला शुकन हुवा शुन्न घणा ॥ ठींकज हुआ निष्फल तेतणां पठी कज हुआ पठी जे जाण, शुकन हुआ ते करो प्रमाण ॥ २ ॥ मावी ठींक होय अर्ध फली कहे, जमणी ठींक बुरी सल कहे ॥ पूठे ठींक सुखदायक सही, घणी ठींक ते नि.फल कही ॥ ३ ॥ हासे जय जपा धीयें करी, इठ घणो मनमाहे धरी ॥ एक ठींक ते नि फल जाण, कुतर ठींक तो नि खर आण ॥ ४ ॥ मजार ठींक ते मरणज करे, इसी ठींक कष्टकारी सरे, ॥ वस्तु वेचतां ठींकज होय, आएयु करीयाणु मोघु होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेता ठींकज होय, बमणो लान्न सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, ठींक होय तो लान्न न थाय ॥ ६ ॥ नवा वस्त्र वली पेहेरता, ठींक होये आगल अण ठता ॥ नोजन होम पूजानु [illegible] क जेधर्म सुगम ॥ ७ ॥

काम एटलां कीधानी अत, वली क्रिया करावे खत ॥ रति स्नान करीने रहे, ठींक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ ऋतुवतीने दीवे दान, पठी होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जाशु जोये, ठींके वैरी सब लो होय ॥ ए ॥ रोगी काज वैद्य तेमवा, जाता ठींके जो नव नवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीये, काम विन वैद्ये नाणीये ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरे आवता, ठींक होये औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे, आहार लेते जमवु गमे ॥ ११ ॥ व्यापारे लीधे व्यापार, ठींक होय तो वृद्धि अपार ॥ लेखु शुरू दीधु रायने, ठींक फोक थाये तेहने ॥१२॥ पाणीपीतां अथ संवाद, ठींक दृष्टि दोष अनिवाद नवे घरे वसवा आवीये, ठींक होये तो उचालीयें ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहने आपता, वली पृथवीमा धन दाटता ॥ कर्पण जोवा जाता वली, वृष्टि होय पुहवी मन रुली ॥ १४ ॥ ठींक शुकन नर जाणे जेह, पग पग सपद पामे तेह ॥ ठींक विचार जाणे जो कोइ, ऋद्धि वृद्धि कल्याणक होइ ॥१५॥ इति ठींक विचार॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सद्याय ॥

॥ इक मरना इक जाना यारो, मत को करो गुमाना॥इ०॥ ए आकणी ॥ उढण माटी, पेरण माटी, माटीका सराना ॥ वसतीमेंसे बहार निकाला, जगल किया ठिकाना ॥ इ० ॥१॥ हाथी चडते घोडे त्र

फते, डेर आगे निशाना ॥ नीली पीली वेरख चल ती, उत्तर किया पयाना ॥ हु० ॥ २ ॥ नरपति हो के तखतपर वेठे, जरिया जारी खजाना ॥ सांज स वारे मुजरा लेते, उपर हाथ वेकाना ॥ हु०॥ ३ ॥ पोथी पढ पढ हिंडु जूले, मुसलमान कुराना ॥ रुपचंद कहे अरे जाइ सतो, हरदम प्रजु गुण गाना ॥ हु० ॥ ४ ॥

॥ अथ जाव स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन महारो ॥ ए देशी ॥

॥ रे जवि जाव हृदय धरो, जे ठे धर्मनो धोरी एकल मल्ल अखरु जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे जवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप त्रण ए, पातक मल धोवे ॥ जाव जो चोथो नवि मले, तो ते निष्फल होवे ॥ रे जवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षट् दर्शन जाखे ॥ जाव विना जव सतति, परुता को ण राखे ॥ रे जवि० ॥ ३ ॥ तारक रुप ए विश्वमां, ऊपे जग जाण ॥ जरतादिक शुज जावथी, पाम्या पद निर्वाण ॥ रे जवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र यत्रने मूली, जावे सिद्ध होवे सदा, जाव विण सहु धूली ॥ रे ॥ जवि० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क हे जावथी, कोण केण नर तरिया ॥ शोधी जोजो सूत्रमा सज्ञान गुण दरिया ॥ रे जवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेब आगे ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणीये, बीजे पद सिद्धाण ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थे राण रे ॥ नविया ॥ वीश थानक तप कीजे ॥ ओली वीश करीजे रे ॥ ज० ॥ गणणु एह गणीजे रे ॥ ज० ॥ जिम जिनपद पामीजे रे ॥ ज० ॥ नर नव लाहो लीजे रे ॥ज०॥वी०॥१॥ ए आकणी ॥ उवद्याए बहे सव्वसाहूण, सातमे आठमे नाण नवमे दसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ ज० ॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ बारमे बंनवय धारीण, तेरस मे किरियाण ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमे नमो जीणाण रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीगें, अढारसमे नाणस्स ॥ उंगणीशमे नमो सुयस्स सन्नारो, वीशमे नमो तित्यस्स रे ॥ ज० ॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वदन, गणणु दोय हजार ॥ सघ विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जपे एह विचारो रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विषे शीखामणनो सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, बारी ठे दुर्गति तणी॥ ठाम सगत रे मूरख तु परस्त्री तणी ॥ जीव नोला रे, नोला तेहशु मम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तु परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथे, लोक सहु हेरे अछे ॥ राय रांक थ इने रह्या रानें, सुखे नहीं वेसे पछे ॥ ए मदनमाती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलु तो वली सुख देखाडे पछे, पछाडे जामिनी ॥२॥ ढाल करपगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ बोलावी रे, नर लेइ धाइ सुदरी ॥ जोलावी रे,हाव जाव देखाडशे ॥ पगे लागी रे, मरकलडे पछे पाडशे ॥३॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खडे ले लठी ॥ बोलंती रुडी चित्त कूडी, कूरू कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक वस्थ पडिर्ज, पछे नपोसाये पायको दीवा नरूडे मानखमे मारसहे पछे रायको॥ ४ ॥ ढाल ॥ ठाकी लेशे रे, वेश्याना लपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरें करा जा नाशी रे, रुप देखी जीव एह तणु ॥ उजो रही रे, एह साहामु, मम जो घणु ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणु म जोइश एह साहामु, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूठे श्वान हींडे, तिम परनारि पूठे का जमे ॥ जिम विलाको दूध देखे, कोलें डाग न देख ए, परनारि वेधो पुरुष पापी किसो जय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फूल वेणी रे, शिर सिंदूर सेथोजस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीला रे, ढीलां इन्द्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर रासकी रे, आंखे देइ तु का रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ का रह्यो मूरख आ

खें देइ, शणगार जार एणें धस्या ॥ ए उली जीहा आखे पीहा, कान कूपा मल जस्या ॥ नारी अग्नि पुरुष माखण, चोलतां वीगरे ॥ स्त्री देहमां शु सार दीठो, मूढ महिआका करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउं ॥ माने नरगइ रे, सरग करी विष व्यापीउं ॥ का जूलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए ठे डुःखनी अग ना ॥ए॥त्रुटक॥ अगना तु ठोरी जो करे,तो जश कीर्ति सघले लहे ॥ कुशीलनु जो नाम लियेको, पर लोक डुरगति डुखसहे, विजय जड बोले जे न मोले, शीयल थकीजे नरवरा॥तस पायें लागु सेवा मागु, जे जगमाहे जयकरा॥१०॥इति॥शील सद्याय॥

॥ अथ प्रजाते वाहाणला गावानो सद्याय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणला जले वायारे ॥ जीहा उघे रे प्राणी बहुकाल के ॥ वहाणां० ॥ नवि जाणे रे जीहा यमनी फाल के ॥ ॥ वा० ॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ वा० ॥ १ ॥ जीहा जरूपे रे क्रोध दवनी जाल के ॥वा०॥ मानरुपी रे अजगर विकराल के ॥ वा० ॥ डसे माया रे सापणी रोपाल के ॥ वा० ॥ जीहा चावो रे लोज रुप चराल के ॥ वा० ॥२॥ रागादिक रे राक्षस महाधूद के ॥ वा० आठकर्मना रे जीहां माड्या फद के ॥वा०॥ जीहा देखे रे डुर्गति डुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी दीसे रे जीहां ज्ञान दिणंद के ॥
॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसता रे जीहां विषयनी जाल
के ॥ वा० ॥ लीधे लूटी रे नगरणे पलिवाल के ॥
॥ वा० ॥ अटवी अनती रे जीहा विकट उजाम के
॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहा वलनी वाड के ॥
॥ वा० ॥ ४ ॥ निरसंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥
॥ वा० ॥ हवे उग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वा०॥
डुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥वा०॥ वली प्रगट्या
रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे
देसविरतिना कत के ॥ वा० ॥ वली जागो रे सर्व
विरति गुणवत के ॥वा०॥ तमे ज्ञेटो रे नावे जगवत
के ॥वा०॥ पक्किमणा रे करो पुण्यवत के ॥वा०॥६॥
तमे लेजो रें देवगुरुनु नाम के ॥वा०॥ वली करजो
रे तमे धर्मना काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो
गुण ग्रामको ॥वा०॥ प्रेम धरीने रे करो पूज्य प्रणा
म के ॥वा०॥७॥ तमे करजो रे दशविध पचखाण के
॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा०॥
आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम
पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ८ ॥ साजलीने
रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही
सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयर
त्न सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणता रे लहीये कोड
कल्याण के ॥ वा० ॥ ए ॥ इति ॥ वाहला ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

कोउ काज न आवे रे दुनियाके लोको, कोउ काज न आवे ॥ जूठी वातका आनि जरोसा, पीठे से पस्तावे रे ॥ छु० ॥ १ ॥ मतलबकी सब म लि लोकाइ, वहोतहिं रंग बानावे रे ॥ छु० ॥ २ ॥ अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे रे ॥ छु० ॥ ३ ॥ बाजीगरकी बाजी जेसा, अजब दिमाक देखावे रे ॥छु०॥ ४ ॥ देखो दुनिया सकल खीली हे, युंही मन ललचावे रे ॥ छु० ॥ ५ ॥ जि ने जान्या तिने आप पिछान्या, वे खबरी दुःख पा वे रे ॥ छु० ॥ ६ ॥ इस सयाने एक साइंइ वरं, काहेकु चित्त न लावे रे ॥ छु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाज्ञास प्रारच ॥

॥ आप विचारजो आतमा, ज्राते शुं जूले, अ थिर पदारथ उपरे, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥ घटमाहे छे घरधणी, मेलो मननो जामो ॥ बोले ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पा मीश तु पारसंग्रकी, बाहेर शु खोले ॥ वेसे का तु बूरूवा, मायानी उले ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीज्ञा विण केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पश लीयें, फाकवाना पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप सरुप न उलखे, मायामाहे फूले ॥ गरथ पोतानी गाठनो, व्याजमा जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोता नाम न

जाणिये, नाहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे, अरुपी अलेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अध तणी पेरे आ फले, सघला, ससारी ॥ अतरपट आडो रहे, कोण जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पातुं करी, पठी जोने निहाली ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशु ले ताली ॥आ०॥८॥ वधण हारो को नथी, नथी ठोडा वण हारो ॥ प्रवृत्ते वांधिये पोतें, निवृत्ते निस्तारो ॥ आ०॥९॥ भेदाभेद बुद्ध करी, भासे ठे अनेक॥ भेद तजीने जो भजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥१०॥ काले धोलु भेलीये,तो ते थाये वेरंगू वेरंगे बुडे सहि,मन न रहे चगु ॥ आ०॥११॥ मन मरे नहि जिहां लगे, घूमे मद घेयो ॥ तव लगे जग भूल्युभमे, न मटे भव फेरो ॥ आ० १२ ॥ उघ तणे जोरे करी, शु मो ह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उघने, खोली जोने खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्यारे जगमा तुज विना, वी जो नवी दीसे ॥ भिन्न भाव मटशे तदा, सेहेजे सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारु तारु नवि करे, स हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे ओलीरयो, प्रभु तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने, मलीये एकांति ॥ उदयरल कहे आतमा, तो भागे भ्रांति ॥आ०॥१६॥ इति चैतन्यशिक्षाभास सपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥ राग आशावरी ॥

॥ किसीकु सव दिन सरखे न होय ॥ प्रहउग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमे अवस्था दोय ॥ कि० ॥ १ ॥ हरि वलिचक्र पांकव नल राजा, रहे खट खट रिद्धि खोय ॥ चमाल के घर पाणी आएयु, राजा हरिचद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तु मूढ गमारा, चमत पमत सव कोय ॥ समय सुंदर कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सद्याय ॥

॥ अथ निद्रानी सद्याय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामे विख्यात वे ॥ धर्म द्वेपणि पापणी, न गमे धर्मनी वात वे ॥ निंद न लहे जे सज्ञाना, सज्ञानां वे डु खभजना वे ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां जमनो पास वे ॥ जा घमि निंद न पाइयें, ता घमि प्रज्ञुको वास वे ॥ निं० ॥ २ ॥ आलस उमराव एहनो, जालिम जोरू जुवान वे ॥ दूत वगासू जाणजो, चाले आगेतान वे ॥ निं० ॥ ३ ॥ जाति पांच वे जेहनी पसरी विश्व प्रमाण वे ॥ केवली विना एक जेहनी,कोइ न लोपेआणवे ॥ करमे न आवे ढूकडी धर्मे पाने जगाणवे वाजां वाजे जिहां उंघना, तिहां होय सुखनी हाण वे॥निं०॥५॥उदय रत कहे उघने, जीत्यानो एह उपाय वे॥ पहेला आहार जो जीतिये, तो निद्रावश थाय वे ॥ ६ ॥ निं० ॥इति॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

॥ प्राणी काया माया कारमी, कूडो छे कुटुंब परिवाररें ॥ जीवरुला ॥ समरण कीजे सिद्धनु ॥ मा हरुं माहरु म कर रे मानवी, पथ वहेतु परले पार रे जीवरुला ॥ सम० ॥ १ ॥ प्राणी सहुने वलावे सांक ल्या मलिया छे मोहने संवध रे जीवरुला ॥ प्राणी आयु क्षयें अलगा थयां, धीगे एवो संसारी धध रे जी० ॥ सम० ॥ २ ॥ प्राणी काष्ठ परे रे काया वले, वली केश वले जेम घास रे ॥ जी० ॥ प्राणी मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास रे जी० ॥ ३ ॥ प्राणी पतंग उडे जीव उपरें, दोरी पवन वले लेइ जाय रे जी० ॥ प्राणी त्रुटी दोरी सधाय छे, आउखु त्रुटुं न सधाय रे जी० ॥ सम०॥ ॥ ४ ॥ प्राणी काचे कुंभे पाणी केम रहे, हंस उडी जाय काय रे जी० ॥ प्राणी आशा अतिघणी आठ रे, थावा वालो तेहिज थायरे जी० ॥ सम० ॥ ५ ॥ प्राणी जेने घरे नोवत गडगडे, गावे वली खट रा ग रे जी० ॥ प्राणी गोखे तेहने धूमता, शून्यथये० वली उडे काग रे जी० ॥ सम० ॥ ६ ॥ प्राणी एम ससार असार छे, सारमां श्रीजिनधर्म सार रे जी प्राणी शांति समर समता धरी, चार तजी वली आदरो चाररे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी पांचे त जो रे पांचे भजो, त्रण जीपो त्रण गुणधार जीरे ॥

प्राणी रयणी भोजन परिहरो, सात व्यसन तजो सुविचार रे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी समता करो ठ कायानी, सांभलो सद्गुरुनी वाण रे ॥ जी० ॥ प्राणी साची शीखामण एह ठे, एम कहे ठे मुनि कल्याण रे जी० ॥ सम० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ सार बोलनी सद्याय लिख्यते ॥

॥ सरसती सामिनी पय प्रणमेव, सद्गुरुनाम सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परे आचार, जोइ लेजो जाण विचार ॥ १ ॥ पंकित तें जे नाणे गर्व, ज्ञानी ते जे जाणे सर्व ॥ तपस्वी ते जे नाणे क्रोध, कर्म आठ जीते ते जोध ॥२॥ उत्तम ते जे बोले न्याय, धर्मी ते जे मन निरमाय ॥ ठाकुर ते जे पाले वाच, सद्गुरु ते जे भांखे साच ॥ ३ ॥ गिरुआ ते जे गुण आगलो,स्त्री परिहार करे तेभलो ॥ मेलोतेजे निंदा करे, पापी ते हिंसा आचरे ॥ ४ ॥ मूर्ति ते जे जिनवरतणी, कीर्ति ते जे वीजे सुणी लब्धि ते गौतम गणधार, बुद्धिअतिको अजय कुमार ॥ ५ ॥ श्रावक ते जे लहे नवतत्त्व, कायर ते जे मूके सत्व ॥ मत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो जे मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थंकर तणी, मति ते जे उपजे आपणी समकित ते जे साधु गमें, मिथ्यामति ते भूलो भमे ॥ ७ ॥ मोटो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे भागे भीड ॥ मनवश आणे ते बलवंत, आ

लसथी अलगो पुण्यवंत ॥ ८ ॥ कामी नर ते कही ये अध, मोहजाल ते मोटो वध ॥ दारीद्री जे धर्म हीन, दुर्गतिमाहे रुले ते दीन ए ॥ आगम ते ज्यां बोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सुखिया थया, दुःखीया ते जे लोन्ने ग्रह्या ॥ १० ॥ नारी ते जे होये सती, दर्शन ते उंघो मुहुपत्ति ॥ राग द्वेश टाले ते यति, सूधू जाणे ते जिनमती ॥ ११ ॥ काया ते जे शीलें पवित्र, मायारहित होए ते मित्र ॥ वृद्धपणु पाले ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ १२ ॥ वैरागी ते विरमे राग, तारु ते जवतरे अथाग ॥ रौरव नरकतणो ए जाग, ठाग हणीने मागे त्याग ॥ १३ ॥ देहमांहे ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेखे दीह ॥ रसमांही उपशम रस लीह, थूलीनड मुनिवरमां सिंह ॥ १४ ॥ साचु ते जे जिनलु नाम, जिनलु देरु ज्या ते गाम ॥ न्यायवंत कहियें ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥ १५ ॥ एह बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहे पमित लक्ष्मी कल्लोल, धर्म रग मन धरजो चोल ॥ ॥ १६ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ शुद्ध गुरु चरणें नामी शीश सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, दुशमन देखी धारतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग वधे यश घणो, न करे विनय वडेरातणो ॥ २ ॥ भय आणे चिते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार ॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ ले कुंची जा घर उघाम्, मुख लवरी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरा दूषण बार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे सवात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग लवे बेसे अवनीत, उठिगन ल्ये थांभो भीत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥ अति उघाडु मेले अग, ढांके तेम वली अग उपग ॥ ७ ॥ निड्राये रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु ए भमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ अइमताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमता मुनिवरजूकी, करणी की बलिहारी वे ॥ खट वर्षनके सजम लीनो, वीरवचन चित धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपत्ति श्री देवी नदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥
॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण सवत्सर आदिक,
करकें काय उधारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल
पर, करी अणसण अति भारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलंक
निवारी वे ॥ अढारसें अमृतालें तिहि गि
रि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक
अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य
क्षमा कल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥
॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अइमंता मुनिनो सद्याय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमु जिनवर चोवीश, सविगणधरने नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन राखे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतराग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी पालु आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥ पच महाव्रत मनमा धरे, राग द्वेष पेहेलु परिहरे ॥ चारित्र पालेटाले दोष,लीये आहार थोडे संतोष॥३॥ दोपमाहे जे आधाकर्म, टाले ते त्रोडे आठ कर्म ॥ आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुले ससार ॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह बारे मास ॥ तपे करिने जेणे जस लाध, वंदनिक ते त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक सयमने वीजी क्षमा,

शत्रु मित्र जेहने बेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उतरी ते जाशे नव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणु करी मन गाम, जणेगुणे सिद्धांत तमाम॥सद्गुरुनो उपदेश आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एक पहेरे मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नयण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जड लागा आतमा ॥ मारु मारु एम कहे घणुं, तेह मूरख वदनता पणुं ॥ ए ॥ एक त्यागी दीसे छे इस्या, लोचे शिष्य करे अण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे,उचरे, उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यत्र तत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीये इसी, सोनु गुरु वे लीजे कसी ॥ १२ ॥ सोनाथी होय एकज वहाण कुगुरुकरे जव जवनीहाण, सोने घाठा पण ते मले, कुगुरु पसाये नव जव रुले ॥ १३ ॥ सर्प मसे हुए जवनो अंत, कुरुगु करे संसार अनंत ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि बोलियें आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण, वेर वहे तिहां एक अजाण ॥ एह आपणा नहीं गुरु एम, बोली लीये वदतु तेम ॥ १५ ॥ एक जणे

मारा गुरु देव, मं करवी एहि जनी सेव ॥ पक्ष तणा स्वामीने मान, अवर पक्षने दे अपमान ॥१६॥ एक सगा जाणी माहातमा, गुणपाखें तारे आतमा॥ पात्र जणी पूजे तेहने, समकित केम ठे तेहने ॥ ॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं यमवंत ॥ एह आपणा नहीं इम जणे, दान मान सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गठनो अनुराग, पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन लेइने पाधरु, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने आगमनु बहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥ ए साधारण गुरुनी वात, जडने जोस्ये मुक्ति मात ॥ ॥ २० ॥ हृयय नयन तम जुर्ज सुजाण, ठंमो कुगुरु ए जिन आण ॥ सद्गुरु तणा चरण आचरो, जेम जवसायर लीलाये तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्त्व निरता सद्दहे, सूधू समकित ठैते कहे॥२२॥ एहवुसम कित सूधुं जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥ जिनवर पूजासद्गुरु जक्ति, जावें करवी आतम सक्ति ॥ २३ ॥ पक्किमणुने फासु नीर, कीजें धर्म कह्यु जे वीर ॥ धर्मे ऋद्धि सिद्धि घर हूत, धर्मे संकट सवि जाजत ॥२४॥ धर्में सूर्य निरतो तपे, धर्मे पाप करम सवि खपे ॥ धर्मे होये रुपनो योग, धर्मपसायें सपत्ति जोग ॥२५॥ जणे गुणे ने बहु तप

करे, पण समकित सूधुनादरे ॥ समकित विण ते सहुए फोक, समकित आदर करवु रोक ॥ २५ ॥ समकित माय वाप ससार, समकित सुख सपत्तिनो सार ॥ समकित एह धर्मनु मूल, समकितथी सहु ए अनुकूल ॥ २७ ॥ समकित ऋद्धि सिद्धि घर घणी समकित लगे होये सुर धणी ॥ समकित सीजे सघ ला काज, समकित लगे त्रिजुवननु राज ॥ २८ ॥ समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनु जुर्ज मप्राण ॥ तपविण श्रेणिक राजह धणी, लेशे पदवी अरिहत तणी ॥ २९ ॥ समकित पालेजे नर नार, वली नआवे ते ससार ॥ एम जाणी समकित आ दरो, सिद्धि रमणी जेम लीला वरो ॥ ३० ॥ इति॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सद्याय ॥ राग रामग्रीमा सहेजानंदी देशी ॥

॥ आतमरामेरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ ताहारु दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मल्यु तोय रे, जन्म मरण करे लोयरे, पूठें सवि मली मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि का रिमु, कूणो कुटुंब परि वार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पा मे जव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनत कलेवर मूकी या, ते कीया सगपण अनत रे ॥ जव जटेगे रे तु

जम्यो तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदय मां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोग व्या, देव मणुए गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवमो, हजी तुज वांछा छे त्यांहिरे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चे इम धारी रे इणविध निज चित्त ठारी रे, मणिचन्द्र आतम तारी रे॥आ०५

॥ अथ समय सुंदरजीकृत मायानी स्वाध्याय ॥

॥ माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ मायाये वाह्या जगत विलुद्धा, दुखीया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी ॥ वली विशेषे अतिघणी व्यापे, घरडाने काजेरी ॥ मा० ॥२॥ योगी जंगम यती सन्यासी नग्नथइ परवर्या ॥ उंधे मस्तक अग्नि धखती, मायाथी नवि डरिया ॥मा०॥ ॥ ३ ॥ माया मेली करी बहु भेली लोभें लक्षण जाय ॥ चोर डरें धरतीमा घाले, उपर विसहर थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण दुरदेशांतर, अटवी वनमा जाय,प्रवहण वेसीद्वी पदि पोतर सायरमां जपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी, सत्यगोप कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनु चलीउ, मरीने दुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्त मा

याये नरकीयो, पकीयो समुद्र मकार ॥ मुख माछ णीउ थइने मरीयो, पकीयो नरक डु वार ॥ मा० ॥ ७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनथापी, सत्रुये माया राखी ॥ नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमा थया साखी ॥ मा०॥०॥ मन वचन कायाये माया, मद्देली वनमा जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन जवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवु जाणीने जविप्रा णी, माया मूको अलगी॥ सम यसुदर कहे सार बे जगमा, धर्म रगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविषे सद्याय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमा, प्राणी मुजाउ ॥ अ थिर ए बाला उपरे, थिरशाने थाउ ॥ १ ॥ एतो अनरथनु आश्रम बे, कलेशनो बे कदो ॥ वैरोदधी पूर वधारवा, आवो पूनमचदो ॥ र० ॥ २ ॥ कुलटा नारीने कारणें, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आ चरे, वहालाशु वेढता ॥ र० ॥ ३ ॥ डुखनी ०री ए सुदरी, डुरगतीनी दाता ॥ आगमथी ल्यो उंल खी, गुण एहना ज्ञाता ॥ र० ॥ ४ ॥ रांक मीठी करी लेखवे' मलता मूढप्राणी ॥ उदेवदे कहीये पठे, जिनमतीये जाणी ॥ र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्झाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

सुख डु ख सरज्या पामीयें रे, आपद सप्रद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोप म धरजो कोय रे, ॥ प्राणी मन नाणों विप वाद ॥ एतो कर्मतणा पर साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ रे, वार वसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे कर्म तणां ए काम रे ॥प्रा०॥२॥ नीर पाखे वन एकलो रे मरणपाम्यो मुकुंद॥नीच तणे घर जल वह्यो रे,शीसधरी हरिचंद रे॥प्रा०॥३॥नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि सम य वन वाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निर वाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रुप आधिक जग जा णीये रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातशें जोग, वी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन वासें रुवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीजुवनपति वि ख्यात ॥ ते पण कर्मविटंबीया रे, तो माणस केइ मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोप न दीजे केहने रे, क र्मविटंबण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥प्रा०॥ए॥ इति कर्मनी स्वाध्याय॥

॥ अथ सुमति विलाप सद्याय प्रारंज ॥

॥ पऋजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे राण ॥ वाखो महरो निजघरें नावीयो, एणे परघर कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुंरें डुती तणा, पाम्रोसणना लउ प्राण ॥ जेणे मह्यारो जीवन जोंलव्यो ॥ लड ना ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ मायमें मद पाइ रे, वास्यो पोताने वास ॥ माह्यारोने वासो एणें टा लीयो, डणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण वंतना गुण गोपवी, निगुणाशु माडे गोठ ॥ आप स्वरुप न ओलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा०॥ ॥ ४ ॥ अपूज्य साथे धरे आसकी, एतो पूज्यना पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें, मेतो कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ घरें आण्यो निज घरधणी, मेतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रजुना पाय ॥ ते परमपदें पधारशे, वली सपद लेशे सवाय ॥वा०॥७॥

॥ अथ श्री शांतिनाथनो दशमो जव मेघरथ राजानी सद्याय प्रारंज ॥

॥ दशमें जवेश्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडा राय रूमाराजा ॥ पोसह शालामां एकला, पोसह लीयो मन जाय ॥ रूमा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इशानाधिप इंद्रजी, वखाण्यो मेघरथ राय ॥ रुमा राजा ॥ धर्मे चलाव्यो नवि च ले, महासुर देवता आय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य०॥२॥

पारेवुसींचाणा मुखे अवतरी, पमीयु पारेवुं खोला मांय ॥ रुमा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज ने सींचाणो खाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए छे महारो आहार ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पखीया, हिंसाथी नरक अवतार ॥ रुमा पखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपु निरधार ॥ रुमा पखी ॥ माटी मगावी तुजने देउ, तेहनुं तुं कर आहार ॥ रुडा पखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिम्म कापीनें, ले मांस तु सींचाण ॥ रुमा पखी ॥ त्राजुऐ तोलावी मुजने दीउ, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥७॥ त्राजुउ मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुके छे मस रुमा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ त्राइ सुत राणी वलवले, हाथ झाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक पारेवाने कारणे, शुं कापोछो देह ॥ घेला राजा ॥ धन्य० ॥ ए ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो एवडी वात ॥ रुमा राजा मेघरथ कहे धर्म फल जलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १० ॥ त्राजुयें चेम्रा राजवी, जे नावे ते खाय ॥

रुमा पखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको गएयो, धन्य पिता तुज माय ॥ रुमा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चड ते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय ॥ रुमा राजा ॥ खमावे बहुविधे करी, लली लली लागे ते पाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ इन्द्र प्रशसा ताहारी करी, तेहवो तु ठो राय ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ काया साजी करी, सुर पोहोतो निज ठाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ सयम लीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवनु आय ॥ रुमा राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेविया, तीर्थंकर गोत्र बधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे नवें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुमा राजा ॥ तेत्रीस सागर आउखु, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाथकी, वे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पाचमा चक्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ बारमे नवे श्रीशातिजी, अचिरा कूखेंअवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षालेइने केवल व रया, पहोता सुगति मोझार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥ त्रीजेनवे शिवसुख लह्यो, पाम्या अनतु ज्ञान ॥ रुमा राजा ॥ तीर्थंकरपदवी लही, लाखवर्षे आयु जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १७ ॥ दयाथकी नव निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

नव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुम्। राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजनवे शशलो राखियो, मेघकुमार गुण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे करुणा आण ॥ रुमा राजा समयसुदर एम वीनवे, दयाथी सुख निरवाण ॥ रुम राजा ॥ धन्य० ॥२१॥

॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर ॥सद्याय प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवगति जेह ॥ अलिय विघन दूरे हरे, टाले डुरित अठेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कस्यो, गिरुउं गुणें गरिष्ट ॥ २ ॥ नावियपद पकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास ॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥३॥ नावे प्रणमू नारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पंमित करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ (पांठांतरें) मूरखने पंमित करे, जेवी तुज आरयत ॥ वचन सुधारस पोपवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति नहि सिद्धातनी, बुद्धि नही लवलेश ॥ वचन विलास करी कहुं, ते पण नहि सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मुज एक आधार ठे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनुनावें ऊपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पदर तिथि सात वारना, पत्नणु तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग नाद लीनो थको, निसुणे थइ एक रग ॥ तिम सुणजो नवियण तुमें, आणी चित्त अनग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सवाय प्रारज्ञ ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ पहेली तिथि एणीपरे वदे रे, सानलो प्राणी सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर संसार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशु राग, जिम पामो नवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो रे, मानवनव अवतार ॥ पामी धर्मने सद्दहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वको ससारमां रे, नांखे श्रीकीरतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म वे रे, अनवियां आधारो रे ॥ प्र० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी सपद मले रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टले रे, धर्मथकी ऋद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुर्ज धर्म प्रनावथी रे, चक्री नरत नरेंड ॥ अजरामर पद शाश्वता रे, पाम्यो परमाणदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद लगार ॥ तो पडवे कहे जीवको रे, पकशे नरक मऊारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी नवि ना

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा लहो रे, ठमी मिथ्या जरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजफाय प्रारंज ॥

॥ कोइलो वर्वत धुधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

वीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी रीफ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे लो, वावो समकित वीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशु प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥ इह जवे परजवे जवोजवे रे लो, होवे जयु जग जयकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ किरिया ते खातर नाखिये रे लो, समता दिजें खेम रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सींचीये रे लो, उगे जयुं समकित ठोम रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ २ ॥ वाम करो संतोपनी रे लो, तस पांखमी चिहु ओर रे ॥ सु० ॥ व्रत पच्चरकाण चोकी ठवो रे लो, वारे यु कर्मना चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूलडे रे लो, महोरे समकित वृक्ष रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिक्षरे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीये रे लो, स्वाद ल्यो साम्य तांबूल रे ॥ सु० ॥ इण रसे सतोप पामशो रे लो, लेहशो जवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥५॥ इण विध वीज तमे सद्दहो रे लो, ठांडी राग ने द्वेप रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीये रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित वीज ते सद्दहे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे ॥सु०॥ विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविघ विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंन ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

त्रीज कहे मुजउंलखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥ जनम जरा मृत्यु तुटस्यो रे, टालो नवनय कर्म ॥ नविकजन, धरजो धर्मशु राग ॥ जिम पामो नवनिधि ताग ॥ न० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन नि शल्य ॥ गारव त्रणे मत करो रे, ठंको त्रएये शल्य ॥ न० ॥ ध० ॥ २ ॥ मानव नवमां मोटका रें, कहिया तीने रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अठे रे, तेहनु करियें यत्न ॥ न० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रएये रत्नयोगथी रे, पामियें त्रीजुवन राज ॥ श्रीजगवत शकारशे रे, सरशे वछित काज ॥ न० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख मेलवो रे, आणी त्रएये योग ॥ मन वचन काया योगथी रे, टालो कर्मना रोग ॥ न० ॥ ध० ॥ ५ ॥ त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ विजयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी ..

॥ कपूर हवे अति ७

चोथ कहे नवि सांजलो रे, माहरा गुण अ निराम ॥ माहरी शीखें 'चालशो रे, तो लेशो मु क्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए तो आणी मन शुन रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो चार कपाय ॥ क्षमा रुपी धन सचिये रे नवोनव पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे वेसी जिनवरें रे, नांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल तप नावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीलें जस सौनाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशिये रे, नावे नाव ठ नाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ नवनिधि पार उ तारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांनली सद्गुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां दुःख टालीये रे, हो वे कोमी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विज य लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सद्याय प्रारज्यते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥

पुनरपि पांचम एम वदे रे, सानलो प्राणी सु जाण ॥ श्रीजिन अनुमतें चालीयें रे, जिम ल

हिये सुखनी खाण ॥ १ ॥ जविक जन, धरजो धर्म शु प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुज रीत ॥ ज० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पच दूरें करी रे, कीजे सवर पंच, सुमिति सखी शुज पालीने रे, तुमें मेलो शिव वधूसच ॥ ज० ॥ ध० ॥ २ ॥ पच महाव्रत अनुस री रे, पालों पच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धिये ध्याव जो, रे पचपरमेष्टी नवकार ॥ ज० ॥ ध० ॥३॥ सम कित पच आजुवालजो रे, धरजों चारित्र पच ॥ प च जूषणनें पडिवजी रे, टालो डुपण पंच ॥ ज० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पच प्रमादनें रे, मत करो पंच अतराय ॥ पचमी तप शुज आदरो रे, जि म दिन दिन दोलत थाय ॥ ज० ॥ ध० ॥ ५ ॥ प चमी तप महिमा घणो रे, कहेता नावे पार ॥ वर दत्तनें गुणमजरी रे, जुर्ज पाम्या जवनो पार ॥ज०॥ ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीये रे, लहिये पच म नाण ॥ चजद रज्जवात्मक लोकना रे, एतो मनप ज्ञाव शुज जाण ॥ ज० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनघाति क र्म खपावता रे, वाजे हो मगल शब्द ॥ पचमी ग ति अविचल लहे रे, तिहा सुख अनत सुलब्द ॥ ज० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्टीनी सद्याय प्रारज ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पाचे तिथि जलि बोली शुज परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

ठे अभिराम ॥ १ ॥ ठठी तणा गुण वर्णवु, मूकी मन अभिमान ॥ हवे भवियण भावे करी, निसुणो थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ फुवखमानी दे शी ॥ ठठी कहे मुज ठंलखी रे, ठटको पापथी दूर सनेहा सांभलो ठकाय रक्षा कीजीये रे, होवे ज युं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कषाय राग द्वेषने रे, नाखजो दूर विमारि ॥ स० ॥ ठए डव्यने ठंल खी रे, पालो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित शुरू जगावियें रे, भांगियें डुखनी वेलि ॥ स० ॥ मग्न रहो जिनधर्ममें रे, नाखो कुगति उखेलि ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ ठठ आराधो भावशु रे भवियण थइ उजमाल ॥ स० ॥ नकित मुकित सदा लहो रे, होवे यु मगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा जन तुमे रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन दिन संपदा अभिनवी रेहोवे श्री श्रीकार॥स०॥५॥

॥ अथ सप्तमीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ लुहारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी हे ॥ प्राणी राखीयें सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥ सुख आवे गर्व न कीजीये ॥ सु० ॥ डुःख आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात भय निवा रियें ॥ सु० ॥ ठमिये मिथ्या गस ॥ स० ॥ सात अमीरस कुम्मां ॥ सु० ॥ फलीये थइने हंस ॥

॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमें ॥ सु० ॥ वा
वीर्ये ड्व्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्षेण ऊगीनें ॥
॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वाम्
करो तुमे शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखमी चिहुं ठोर
॥ स० ॥ चोकी ठवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ श्रध
को न करे जोर ॥ स० ॥४॥ मनरुपी माल वनाविये
॥सु०॥ वेसी यें तिहा सावधान ॥स०॥ विरतिरुपी गोफ
णे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोला ज्ञान ॥ स० ॥ ५॥
डुष्कृत पखी ऊमाडीये ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यव
हारे ॥स०॥ पोंक आरोगिये पुण्यना ॥ सु० ॥ जवियण
थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें
॥ सु० ॥ तद्रूपी खलां वनाव ॥ स० ॥ करुणारस
जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥
॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे भरी ॥ सु० ॥ सुकृत
कर्षण सार ॥ स० ॥ सवर वलदने जोतरी ॥ सु०॥
आणिये खला मझार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरुपी थत्र
रोपीने ॥ सु० ॥ लणिये क्षपक सयोग ॥ स० ॥ जि
नआण सही चावीये ॥ सु० ॥ हालरुआं अशोक
॥ स० ॥ ९ ॥ डु खरुपी वूरा झाटकी ॥ सु० ॥ ना
खियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमवल जंमारमें ॥
॥ सु० ॥ जरजो स्वकृत ध्यान ॥१०॥ स० ॥ इह जव
परजव जवो जवे ॥सु०॥ पामिये सुख विचित्र ॥स०॥
सतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥कीजे पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे जविइण विधें ॥ सु० ॥ आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्ज्वातम जेदीनें ॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥१२॥इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे जवियण हित धरी ॥ आठ प्रकारें आतमा, उलखो तुमें अजिराम रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिक्कमणां पोषा करी, तोमो डुःखना वर्ग रे ॥ ज० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ ज० ॥ अष्ट महासिद्ध सपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी मन कोड रे ॥ ज० ॥ मनरुपी घोडो वनावियें, गुरु ज्ञान लगाम जोरू रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर नाखीयें, तपरुपी खम्ग लेइ हाथ रे ॥ ज० ॥ क्षमा बक्तर पेहेरीनें, ध्यान कबाण सलोथ रे ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविने, अष्ट करम मद मोडि रे ॥ ज० ॥ विषय कषाय जे आकरा, तेहना ते मस्तक तोमि रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आवीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ ज० ॥ श्रीजिन केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जाउ दोमी रे ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ आठम दिन शुज जाणिनें, धर्मनां करियें

वखाण रे ॥ ज० ॥ कपटनो कोट उन्मासियें, वाजे यु जीत निशान रे ॥ ज० ॥८॥ इणि परें अष्टमी ना वञ्जु, आदरे प्राणी जेह रे ॥ ज० ॥ लब्धि कहे न वि तस घरे, प्रगटी पुण्यनी रेह रे ॥ ज० ॥९॥इति

॥ अथ नवमीनी सद्याय प्रारज ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपजो ॥ ए देशी ॥ जीरे नवमी कहे नमीये सदा, एतो श्रीजनकेरां विव हो विशेष ॥ नव अंगे पूजा वनावीये, ए तो मूकी मननो दंज हो ॥ विशे० ॥१॥ ए आकणी ॥ जवियण शुजजावें करी ॥ ठन्मो विपयकपाय अतीव हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजे दान सदीव हो ॥ वि० ॥ ज० ॥२॥ जीरे पूजा ज क्ति प्रजावना, करि रोपे जे कीर्ति थंज हो ॥ वि० ॥ सुख अनता ते वरे, तस जस जणेसुर रग हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगे स्तवना जा वञ्जु, एतो जे करे नाटारज हो ॥ वि० ॥ लाज अ नतो जिन जणे, जुर्ज महिमा जाव अचज हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव ता, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लकापति रा वण परे, एतो वाधि तीर्थंकर गोत हो ॥ वि० ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहत जक्ति प्रजावथी, ए तो जाये जवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा न सुख सपजे, वली होवे यु अधिक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ च० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा ध री, ए तो पालीये नव विध शील हो ॥ वि० नव नोकपायने परहरी, एतो लहीये सुखनी लील हो ॥ वि० ॥ च० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी, ए तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स रिखा गणो, एतो सकल जतु निर्धार हो ॥वि०॥च०॥ ॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीये, ए तो टालीये प रनी पीरू हो ॥ वि० ॥ नवमीये नवपुण्य अनुसरी, ए तो नांगीये नवनी नीरू हो ॥ वि० ॥ च० ॥ए॥ जिरे इणविध नवमी प्रमोदशु, एतो आदरे प्राणी जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंग करी, एतो शि वसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ च० ॥ १० ॥ इति॥

॥ अथ दशमीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें उपमन वारियें काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी, कापीये दुःख तणी दोर रे, लाल सुरगारे अत्तमा वहिये धर्मनी होररे प्रग टे पुण्यनो तोर रे, लहियें मुकितनु ठोर रे, वाधे जस चिहुं उर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय अभ्यासथी, तोमीयें मोहजजाल रे ॥ दशविध मिथ्या त्व परहरी, ठमीयें आल पपाल रे ॥ ला० ॥ मेली ये सुकृतमाल रे, प्रगटे जाग्य विशाल रे, होवे मंग लमाल रे, लहिये सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, सञ्ज्ञा कही तस रंग रे ॥ सञ्ज्ञा प्रत्ये उलखी, कीजे गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥ सञ्ज्ञा धर्म न चग रे, राखीये चित्त अजग रे, सुख तटिनी वहे अग रे, उलटे ज्यु गगरग रे ॥ ला० ॥ ॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवने, जांखे जिनवर वीर रे ॥ ते दश प्राण तु पामीनें, धरिये, मन दया धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे हरियें द श विध पीर रे, तोडीयें डु खजजीर रे, पामीये ज वोदधि तीर रे ॥ ला० ॥४॥ दश पच्चरकाण सिद्धांत मे, पाल्यां ठे सहि वोल रे ॥ तेहमा नित्य एक जा वशुं, करे पच्चरकाण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाण ला ज अतोल रे, मुकितशु करि वध कोल रे, लब्धि जणे दिल खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे॥ला०॥५॥

॥ अथ एकादशीनी सद्याय ॥

॥ दोहा एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित् कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणो यइ मृगरज ॥२॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥ ए देशी ॥ हवे एकादशी इम वदे, जवि, जन ठडी यें विषयासक्त हो ॥ वसन उंढो निर्विकारनां ॥ ॥ ज० ॥ जेहनी ठे सवल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना न सुख जवी, [illegible] सही होइ ए ॥ ज० ॥

पामी अनुजव संतहो ॥ ए आकणी ॥ ध्यान तणी अ गीठिका ॥ज०॥ जोजन तिम सतोप हो ॥ आस व समता पीवतां ॥ ज० ॥ करजो काया पोप हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरें कीजीयें ॥ ज० ॥ शुरू स्वजावें हीण हो ॥ तैलान्यंग तिम उदासीनता ॥ ज० ॥ श्रुत तबोल प्रवीण हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उचा महेल विवेकना ॥ ज०॥ वास करो तेह माहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें ॥ ज० ॥ रसपोषण ठे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अग्यार अंगरस सांजली ॥ ज० ॥ प्रतिमा वहो अ ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ ज० ॥ लहिये यु मुक्ति डुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद शी तप कीजियें ॥ ज० ॥ एम एकादश वर्ष हो ॥ अग्यार अंग वाचक होवे ॥ ज० ॥ पामिये सुजस हर्षे हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध जवियण आदरो ॥ ज०॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे जवि सांजलो ॥ज०॥ होवे ज्यु जवनिस्तार हो ॥ गु० ॥७॥

॥ अथ द्वादशीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे जविजावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा मे रस लीजीये, जिम साकरनी जरी पोठ ॥ लाल रे ॥ १ ॥ जावे जवियण साजलो ॥ ए आंकणी ॥ वा रसें वार उपांगना निसुणो जे कह्या बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजऊतानिटोल लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ बारे व्रत जवि उच्चरी, मेली यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक कुल अजुवाल लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ बारे जेदे तप जे अछे, आदरो छडी क्रोध लाल रे ॥ बारे जावना जावियें ममता वारिये विरोध लाल रे ॥ ज्ञा० ॥४॥ कुरस वचन कहेता थका, दिवस तणु तप जाय लाल रे ॥ अधिक खीजता मासनुं, तप तप्यु निष्फ ल थाय लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ ५ शाप दियता वर्षनुं, तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणता श्रमणपणु हणे, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवरें हो वर्णवी, जिक्खुप्रतिमा बार लाल रे ॥ ते तुमे जवियण पडिवजी, पालीयें शुद्ध आचार लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी, आदरे शुज परिणाम लाल रे ॥ ते नर वठित पास शे, शाश्वतां सुख अजिराम लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशु राग लाल रे ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे जवनो त्याग लाल रे ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ रगरो रे रसीया रे फुला गुलावरो ॥ ए देशी ॥ ते रस श्रोता आगले, जाखे मन आल्हाद हे ॥ श्रीजिनवाणी सांजली, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥ श्रीजिन विंब जराविये, कीजें जिन प्रासाद हे ॥ ज्ञानजक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ २ ॥ कालीया तेरे परहरी, कीजे नव पद याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति चालियें, तजीये मिथ्यावाद हे ॥ अनुजवरुपी शेलडी, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ४ ॥ तेरमे गुण ठाणे संचरी, शुक्लिध्यान प्रसाद हे ॥ केवलकमला पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ५ ॥ ते रसना गुण जाणीने, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ र० ॥ ६ ॥ शुजजावे सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥ लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहिये सुख समाधि हे ॥ र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंज. ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ हवे चउदशतिथि इम वदे रे हां, एतो सांजलो चतुर सुजाण ॥ जवियां जावशुं ॥ श्रुत सिद्धांतना बोलजे रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ वनना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु अवतार ॥ ज० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां, एतो दोहिलु श्रावक कुल सार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रद्धा

ते पण दोहिलु रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हा, एतो दोहिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविदुर्लज पामवां रे हा, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते तुम पुण्यप्रजावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुजव सत ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो खप करो मनने प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम सजारजो रे हां, एतो सक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥५॥ चोद पूरवना जावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुणगाण ॥ ज० ॥ श्रतगरू केवली होवे रे हा, एतो अक्षर पच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद जुवन ए लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे जाव ॥ ज० ॥ चौद रज्ज्वात्मक जेदीने रे हा, एतो शिव सुख ते नित्य पाव ॥ज०॥७॥ चौद लाख मनु योनिना रे हा, ए तो दृटीये दुःखथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चउदश आदरो रे हा, एतो दिल करि जाव अतीव ॥ज०॥ ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांजली रे हा, धरिये सुविहित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रगे करी रे हां, एतो लहिये ऋद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ पूर्णिमानी सज्झाय प्रारज ॥

॥ सुग्ला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए देशी ॥ पूनम कहे जव्य जीवनें रे, साजलो सद्गुरु वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखु रे, जलबुद

परे जाए रे ॥ नावे हे नवियण सांजलो ॥ ए आं कणी ॥ १ ॥ असार ससारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध रो प्रतिवध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ नूत सवध रे ॥ ना० ॥ २ ॥ सकल कुटुंवनें पोपवा रे, जे नर करेय ठे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो हिलां रे, सहेशे ते एकलो आप रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ जिम मृग तृष्णानें कारणे रे, नमतो रणमां धाय रे ॥ नमे पठे ए जीवमो रें, नव नव दु खीयो थायरे ॥ ना० ॥ ४ ॥ ए धन धरणी ए धामने रे, कांइ न ले गयो साथ रे ॥ जिहां जइने जीव उपनो रे, ति हां सहि होये तेहने हाथ रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ इम जाणीने धर्म कीजीयेरे, टाली ते विपय विकार रे ॥ दिन दिन दोलत अजिनवी रे, पामिये हर्प अ पार रे ना० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शात स्वनावथी रे, पूर ण ठेदो ए कर्म रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा थकी रे, पूरण बूटीयें दु ख रे ॥ पूरण लीला पा मीयें रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ पूरण पन्नर सिद्धना रे जाणिये पूरण नेद रे ॥ पूरण पद र योगना रें ते पण नावनिर्वेद रे ॥ ना० ॥ ए ॥ पंदर जातिना नांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥ ॥ ते पण दुःखथकी बूटीयें रे, टाली ते कर्म अघो र रे ॥ ना० ॥ १० ॥ पदर कर्म नूमि उलखी रे,

ठमो कषाय ते शोल रे ॥ नवियण दिन दिन पा मीयें रे, सपदा पुण्यरग रोल रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ जिम शशी शोलकली सही रे, नांखे जिनवर वाच रे॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीये जगतमा साच रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ आठम चउदश पूर्णिमा रे, अग उपांगे अधिकार रे ॥ जिनवरे कहियो माहानिशीथमा रे, वीजप्रमु खनो विचार रे ॥ ना ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमार्गें अ प्रमादी जे होवे रे, ते पाले पदर तिथि विशेष रे ॥ ॥ ना० ॥ १५ ॥ एम जाणीने नवि नाविये रे, द्रव्य ने नावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे ना० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

मे हु मुसाफर आया हो प्यारा, नही कोइ मे रा ॥ नही० ॥ जनम हुवा तव अपना कहावे, न ही रेहेणेका डेरा हो प्यारा ॥ नही० ॥ १ ॥ सजन कुटुंव सव अपना कहावे, ज्यु तीरथका मेला हो प्यारा ॥ २ ॥ धन कचन कछु स्थिर नही रेहेणां, ज्यु वादलका घेरा हो प्यारा ॥नही०॥ ३ ॥ रुपचद कहे प्रेमकी वाता, ज्यु घानीका फेरा हो प्यारा॥४

॥ अथ उपदेशी प्रजाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ पंचकु प्रपच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृपनामे मीन मरे, जोगमे मतंगा ॥ श्रवणमे कुरंग मरे, नयनमें पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें भ्रमर मरे नासा रस लेतां ॥ एक एक इंडीसग, मरे जीव केता ॥जा०॥३॥ पचके पड्यो तु फद, कयु कर वश आवे ॥ मार तु मन इछा जूत, ज्यु निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजाती रागमा पद ॥

मे परदेशी दूरका, प्रजु दरसनकु आया ॥ लाख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥मे०॥ ॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमे, वनस्पति वसाया ॥ अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यंचमे, केता जन्म गमाया ॥ मनुष्य अनारजमे जन्म्या, तिहां नही दरिसन पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अब जयो, पुरन पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे जाग्य खुले, निरजन गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिक्षानु पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन लोजी तेरो कोण पति यारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ छिनमे उरे पल

कर्मे दूजो, धर्मी धर्मी त्रिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥ ॥ २ ॥ चचल मन वरज्यो नही माने, प्रभुजवपार उतारो ॥ रे मन खोजी ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग बेलावल ॥ रे मन कयु जिन नाम विसारयो ॥ कयु० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद धारयो, जनम जुआ ज्यु हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीने तोकु नरदेही दीनी, गर्भकी आंच उद्धारयो ॥ प्रभुजीकु ते शठ मूरख, एक घमी न संजार्यो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नही कछु दान शियल तप पूजा, न ही जीन नाम उच्चार्यो ॥ जेन धर्म चितामणी सरीखो, काच जाणकर मार्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले सुकृत दया उरूरखे, जो भव चाहत सुधार्यो ॥ हरखचद वर्धमान जीनेसर अवसर माहेन सजार्यो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग जगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ, नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आकणी ॥ सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी विन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तु फीरत महा मदमाता, विषयन सग मूरख राता ॥ निज सगकी सुध बुरू खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानकला नवि जाकु, पर निज मानत सून ताकु ॥ आख

र पछतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरुप निहारो ॥ अंतर मम ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु चिदानंदकी वा णी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत भव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी भेद तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आकणी ॥ तन धन जोवन सुख जेता, सऊ जाणहु अस्थिर सुख तेता ॥ नर जिम वादलकी गया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य भाव चित्त आया ॥ लख गलित वृषभकी काया ॥ बूके कर करुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानद न मनमाही, कछु करीए ममता नाहीं ॥ सदगुरुए भेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए आकणी ॥ नाभिनदके चरण सरोज मे, कीजे अचल वसेरा रे ॥ परिमल तास लहत मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥ उदित निरतर ज्ञान भान जिहा, तिहा न मिथ्यात अधेरा रे ॥ संपुट होत नही ताते कहा, सांज क हा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पछतावोगे

आखर वीतगया यो वेरा रे ॥ चिदानद प्रनु पदपक ज सेवत, वहुरि न होय नव फेरारे ॥ मन्न० ॥३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ नूल्यो नमत कहा वे अजान ॥ नूल्यो० ॥ ए आकणी ॥ आल पपाल सकल तज मूरख, कर अनुजव रस पान ॥ क० १॥ आप कृतात गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनथी तु न्यारो, जेम पाको तरु पान ॥ कल्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गरज न सरत निदान ॥ चिदानद ए वचन हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥ कल्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग नैरव ॥ जागरे वटाउ [illegible]त अब, जड चोर वेरा ॥ जाग० ए आकणी ॥ नया रवि[illegible] [illegible]का प्रकाश, कुमुदद्दु थये निकास ॥ गया नाश प्यारे [illegible] घाट, रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केम आवे [illegible]मे चालवी जरुर वाट ॥ कोइ नाहि मित्त परदे[illegible] ज्यु तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पि[illegible] पिठतावो थाय ॥ चिदानद निहचे, ए मान कहा मेरा ॥ जागरे वटाउ अब जड जोर वेरा ॥३॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उ घट विणसत वार न लागे ॥ उघट ॥ ए आकणी ॥ याके सग कहा अ

व मूरस, ठिन ठिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥ काया गरुा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥ उं घट० ॥ २ ॥ आधि व्याधि व्यथा डुःख इण ज व, नरकादिक फुनि आगे ॥ रुगलु न चलत सग विण पोप्या, मारगहुमे त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मदठक ठाक गहेल तज चीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥ तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग विलास ॥ जूठी जग माया नर केरी काया, जिम बादरकी ठाया माइरी ॥ ए आकणी ॥ ज्ञानजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणे विग प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विषवेल प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिभुवनमें ठाइरी ॥ तास पत्र चुण खात मिरगवा, मुखचीन अचरिज देख हुंआइरी ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुसक घरमें समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति एवालाते जगमां हे अधिक डुःख दाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण विन कारजकी सिद्धि, केम जइ मुख कही नवि जाइरी ॥ चिदानद एम अकल कलाकी, गति मति कोइ विरले जन पाइरी ॥ जठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारग ॥ मेरे घट ग्यात जानु जयो

जोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, जागो विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फैली चिहु दीश चतु रा जाव सचि, मिट्यो जरम तम जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकस जये जूतल, मद विप य शशी कोर ॥ आनद घन एक वल्लज लागत, और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा, है सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आकणी ॥ चमत कार विजुली दे जैसा, पाणी वीच पतासा ॥ या देहीका गर्व न करना, जगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोबन, जूठे है घरवा सा ॥ आनद घन कहे सवही जूठे, साचा शिव पुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पचम परिछेद समाप्त ॥

॥ शष्टमपरिछेद प्रारंभ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजे गौतमनु ध्यान, तोघर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरि वर चडे मनोवांछित हेला सपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामें सर्व सजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे ढुकडा ॥ भूत प्रेत नविमडे प्राण, ते गौतमना करु वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनोवांछित कापड तंबोल ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ महोटा मंदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पहोंचे वांछित कोड ॥ महीयल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना

गुण ठे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोम, गीत तूठे संपत्ति कोम ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंज ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अठ महापाकिहेरजुत्ता ए ॥ समयक्खित्त ठिआण, सरेमि चक्क जिणदाण ॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिण वर समूहो ॥ नासेउ सयल ङुरिअ, नविआण जत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणया लाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रक्क साइणि, घोरु वसग्ग पणासतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महानय हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे सरीरं देवासुर पणामिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहु ह सरसुस, हरहुह तहचेव सरसुस ॥ आलिहिय नाम गप्र, चक्क किर सवर्जनद ॥ ६ ॥ उ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिखला तहय वज्जअकुसिआ ॥ चक्के सरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गधारी महाजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ, वियादेवीर्ज रक्कतु ॥ ७ ॥ पचदस कम्म नूमिसु, उप्पन्न सत्तरिं जिणाणसय ॥ विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअ हरउ डुरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइ सय जुआ, अठ महापाडि

हेर कयसोहा ॥ तिन्नयरा गयमोहा, ऊाएअवा पय त्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संख विडुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोह ॥ सत्तरिसय जिणाण, सवामर पूइअ वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि डुठ देवा, ते सवे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेण, फलए लिहिऊण खालिअ पीअ ॥ एगंतराइ गहनूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंत, सम्म मंत, डुवारि पमिलि हिअ ॥ डुरिआरि विजयवंत, निप्नतं निच्चमच्चेह ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥ ए१ ॥

॥ अथ श्री नमिऊणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामाणि किरण रंजिअ मणिणो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासण सयवं वुत्र ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवु ड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ महा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सवगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलजलि सेय वुढ्ढिय छाया (उच्छहा) वण दव दड्ढा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो लच्छीं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय जलनिहि, उप्भम कल्लोल भीसणारावे ॥ सन्नं त भय विसंठुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअ कूलं ॥ पासजिण चलण जुअल, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डझंत मुद्ध मय वहु, भीसणरव भीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहु अणाभोअ ॥ जे समरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भय तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जी हाल ॥ उग्गभुअग नवजलय सच्छ भीसणायार ॥८॥ मन्नंति कीड सरिसं दूर परिछुढ विसम विसवेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसिद्ध मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभी मासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सच्छासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त वावारा ॥ ववगय विग्घासिग्घ, पत्ता हिय इच्छिय ठाण ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयणं, दूरवियारियमु ह महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअ ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नह मणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयणपहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वुड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीम महागइंद, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंग समल्लीणा ॥ १५ ॥

समरम्मि तिरक खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्भूय कवं धे ॥ कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउर मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि ण तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइ ॥ पासजिण नाम सकी, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एव महा भयहरं, पासजिणिंदस्स सथवमुआर ॥ भविय जणा णदयर, कल्लाण परंपर निहाण ॥ १९ ॥ राय भय जक्खरक्खस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्खपीडासु ॥ संझासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणकइणो य माणतुग स्स ॥ पासो पावं पसमेउ,सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गते कमठा,सुरम्मि झाणाउ जोन स चलिउ ॥ सुरनर किन्नर जुवईहिं, सथुउ जयउ पा सजिणो ॥२२॥ एअस्स मप्रयारे, अठारस अक्खेरहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थ फुडं पासं ॥२३॥ पासह समरण जो कुणइ, सलुठे हिययेण ॥ अठुत्तर सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण॥२४॥

॥ अथ श्री भक्तामर स्मरण प्रारभ ॥

॥ भक्तामर प्रणत मौलिमणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलित पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुग युगादा, वालंबन भवजले पनता जनानाम्

॥ १ ॥ य संस्तुत सकलवाङ् मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धि पटुभि सुरलोकनाथे ॥ स्तोत्रैर्जग त्रितय चित्त हरैरुदारे स्तोष्येकिलाहमपि त प्रथमं जिनेंद्र म् ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलस स्थितमिंदु बिंब, मन्य. क इच्छति जन सहसा ग्रही तु ॥ ३ ॥ वक्त गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, क स्ते क्षम सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांत कालप वनोद्ध तनक्रचक्र, कोवा तरीतुमल मवुनिधि भुजा भ्याम् ॥ ४ ॥ सो ऽ हं तथापि तव भक्ति वशान्मु नीश, कर्तु स्तव विगत शक्तिरपि प्रवृत्त ॥ प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्र, नाभ्येति किंनिजशिशो परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुत श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्को किल. किल मधौ मधुर विरौति, तच्चारु च्यूतकलि कानिकरै कहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसततिस न्निबद्ध, पाप क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर भाजाम् ॥ आक्रांत लोकमलिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर मधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवन मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यतिसता नलिनीदलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूदबिंदु ॥ ८ ॥ आस्ता तव स्तवन मस्तसमस्त दोष, त्वत्सकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्त्रकिरणः कुरुते प्रनैव, पद्मा करेपु जलजानि विका शनाजि ॥ ए ॥ नात्यद्भुत जुवन नूपणनूतनाथ, नूतै र्गुणैर्जुविनवंतमनिष्टुवंत. ॥ तुल्या नवंति नवतो ननु तेन किवा, नूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥१० ॥ दृष्ट्वा नवंतमनिमेपविलोकनीय, नान्यत्र तो पमुपया तिजनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पय. शशिकर द्युतिदुग्धसिधो , क्षार जल जलनिधेर शितुं कइन्नेत् ॥ ११ ॥ ये. शातराग रुचिनि. परमणुनिस्त्वं, निर्मा पितस्त्रिजुवनै कललामनूत ॥ तावंतएव खलु तेप्य एव पृथिव्यां, यत्ते समानमपर नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्र क ते सुरनरोरग नेत्रहारि, नि शेपनिर्जित जगत्त्रित योपमानम् ॥ विव कलकमलिनं क निशा करस्य, यद्वासरे नवति पाकुप लाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्ण मंरुल शशांक कलाकलाप, शुन्नागुणा स्त्रिजु वन तव लघयति ॥ ये सश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना थमेक, कस्तान्निवारयति संचरतोय थेष्टम ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशागनानि, नींत मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलि ताचलेन, किं मदराद्रिशिखरं चलित कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूर कृत्स्न जगत्र यमिदं प्रकटीकरोपि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाश ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुगम्य , स्पष्टीकरोपि

सहसा युगपज्जगति ॥ नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभा व , सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदय दलितमोहम हाधकार, गम्य न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते नन मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाकबिंबम् ॥ १८ ॥ किशर्वरीपु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलिते पुतमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रे ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश, नैव तथा हरिहरादिपु नायकेपु ॥ तेज स्फुरन्मणिपु याति यथा महत्व, नैव तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये वर हरिहरा दयएव दृष्टा, दृष्टेपु येपु हृदय त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य, कश्चिन्म नोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥सर्वादिशो दधति भानिसहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनति मुनय परम पुमास, मादित्य वर्णममल तमस परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयति मृत्यु नान्य शिव शिवपदस्य मुनिन्द्र पथा ॥२३
व्यय विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्य, ब्रह्माणमीश्व
केतुम् ॥ योगीश्वर विदित योगम
मनल प्रवदति

विबुधा परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभू
तिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहग
णस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलक
पोलकमूल, मत्तभ्रमद भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरा
वताभमिभमुद्धतमापतत, दृष्ट्वा भय भवति नो भव
दाश्रिता नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणि
ताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग ॥ बद्धकम क्र
मगत हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं
श्रित ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्प,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वजिघत्सुमि
व समुखमापतत, त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम्
॥ ३६ ॥ रक्तेक्षण समदकोकिलकठनील, क्रोधोद्धत
फणिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन
निरस्तशक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस
॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं
बलवतामपि भूपतीना ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखा
पविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तमइवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥
कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातु
रयोधभीमे ॥ युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्व
[illegible]दपकजवनाश्रयिणो लभते ॥ ३९ ॥ अभोनिधौ
[illegible], पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवा
[illegible] ॥ रगत्तरगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रास विहाय

नवत.स्मरणाद्व्रजति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो
दरभारभुग्ना., शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा.॥
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर
ध्वजतुल्यरूपा ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टि
तांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा. ॥ त्वन्नाम
मंत्रमनिशं मनुजा स्मरंत, सद्य. स्वयंविगतबंधभ
या भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,
संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुप
याति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान
धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य
इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति ल
क्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम
निंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पो
ता यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुर
गुरुर्गरिमांबुराशे , स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा
तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य
तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशा कथमधीश
भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

विबुधा परिकल्पयति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहताधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलकमूल, मत्तभ्रमद् भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताजमिजमुद्धतमापततं, दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग ॥ बद्धक्रम' क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रित ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्प, दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वजिघत्सुमिव समुखमापतत, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षण समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंस' ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरगगजगर्जित भीमनाद, माजौ वलं वलवतामपि भूपतीना ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपकजवनाश्रयिणो लभते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ॥ रगत्तरगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रास विहाय

नवल.स्मरणाद्भवजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो दरनारभुग्ना., शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा॥ त्वत्पादपकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या नवंति मकर ध्वजतुल्यरूपा ॥ ४१ ॥ आपादकठमुरुशृखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजघा. ॥ त्वन्नाम मत्रमनिश मनुजा स्मरत, सद्य स्वयविगतबधन या नवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुप याति नय नियेव, यस्तावक स्तवमिमं मतिमान धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रज तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां, नक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कठगतामजस्रं, तं मानतुगमवशा समुपैति ल क्ष्मी ॥ ४४ ॥ इति श्री नक्तामरस्तोत्र सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमदिरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम निदितमङ्घ्रिपद्मम् ॥ ससारसागरनिमज्जदशेषजतु, पोता यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वय सुर गुरुर्गरिमाम्बुराशे, स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेप किल संस्तवन करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशा. कथमधीश नवन्त्यधीशा. ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूप प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मे ॥ ३ ॥ मोह
क्षयादनुनवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं
न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवातपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्य
तोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वित
त्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥५॥ ये योगि
नामपि न याति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं नवति तेषु
ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं, ज
ल्पति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ
स्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति न
वतो नवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्नि
दाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्तिनि त्वयि विनो शिथिलीनवंति, जंतोः क्षणेन
निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो नुजंगम मया इव
मध्यनागमन्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रव शतै
स्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ [illegible] स्फुरिततेजसि
दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु [illegible] ॥ ए ॥

तिपति• क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुत भुज पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि डुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न नल्पगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतव कथमहो हृदये दधाना• ॥ जन्मोदधि लघु तरत्यति लाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रन्नाव• ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा वत कथं किल कर्मचौरा ॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नीलडूमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य सन्नवि प दं ननु कर्णिकाय ॥ १४ ॥ ध्याना ज्जिनेश नवतो न्नविन क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजति ॥ तीव्रानला डुपल न्नावमपास्य लोके, चामीकरत्वम चिरादिव धातुन्नेदा ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य विन्नाव्यसेत्वं, न्नव्यै कथ तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमय ति महानुन्नावा ॥१६॥ आत्मा मनीषिन्निरयं त्वदन्ने दबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! नवतीह नवत्प्रन्नाव ॥ पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमान,किंनाम नो विषवि कारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादि नोपि, नुन विन्नो हरिहरा दिधियाप्रपन्ना ॥ किं काचकामलिन्नि रीश सितोऽपि शखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्य येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमयें सविधानु
नावा, दास्तां जनो नवति ते तरुरप्यशोक ॥ अ
न्युन्नते दिनपतौ स मह्हीरुहोपि, किवा विबोधमु
पयाति न जीवलोक ॥ १९ ॥ चित्र विनो कथमवा
ङ्मुखवृतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टि ॥
त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश गछति नूनम
धएव हि वधनानि ॥२०॥ स्थाने गन्नीर हृदयोदधि
सन्नवाया , पीयूपता तवगिर समुदीरयति ॥ पीत्वा
यत परम समदसग नाजो, नव्या व्रजति तरसाप्य
जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूर मवनम्यसमुत्प
ततो, मन्ये वदति शुचय सुरचामरौघा ॥ येऽस्मै
नति विदधते मुनिपुगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय.
खलु शुरूनावा ॥ २२ ॥ श्यामं गन्नीरगिरमुज्वलहे
मरत्न, सिंहासनस्थमिह नव्य शिखन्मिन स्त्वाम् ॥
आलोकयतिरनसेन नदत मुच्चै, श्चामी कराद्रि
शिरसीव नवाबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गछता तव
शितिद्युति मण्डलेन, लुप्त छदछवि रशोक तरुर्बनूव ॥
सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां व्र
जतिको न सचेत नोपि ॥ २४ ॥ नोनो प्रमाद म
वधूय ननध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवा
हम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगन्नयाय, मन्ये नदन्नभि
नन सुरडुडुभिस्ते ॥२५॥ उद्द्योतितेपुनवता नुवने
पु नाथ, तारान्वितो विधुरय विहताधिकार ॥

लाप कलितोल्लसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेत. ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्रयपिंडितेन, कांतिप्रताप यशसामिव सचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नजितोविनासि ॥ ॥ २७ ॥ दिव्यस्त्रजोजिन नमत्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबधान् ॥ पादौ श्रयति जवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङमुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्र विन्नो यदसि कर्मविपाकशून्य ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक डुर्गतस्त्वं, किंवा क्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथचिदेव, ज्ञान त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु' ॥३०॥ प्राग्भारसभृत नभांसि रजासि रोपाडुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापितैस्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्वमी भिरयमेव पर डुरात्मा ॥ ॥ ३१ ॥ यदगर्जडुर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ डुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन डुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद् भयदवक्त्र विनिर्यदग्नि ॥ प्रेतव्रज प्रतिभवंतम पीरितोय, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवंभ वडु खहेतु' ॥३३॥

यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसध्य, माराधयति

निधिरविधुतान्यकृत्या ॥ नत्वोल्लसत्पुलकपक्ष्मल देहदेशा, पादद्वय तव विभो भुवि जन्मभाज ॥ ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविध समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादयुग न देव, मन्ये मया महित मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवा ना, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नुन न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलो कितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयति हि मामनर्थाः, प्रोद्य त्प्रबंधगतय कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नुन न चेतसि मयाविधृ तोऽसिभक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःख पात्र, यस्मात्क्रिया प्रतिफलंति न भावशून्या ॥३८॥ त्व नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यव सते वशिना वरेण्य, ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरण शरण शरण्य, मासाद्य सादितरि पुप्रथितावदानम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवं ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवन[illegible] [illegible]ऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिल[illegible] विभो भुवनाधिनाथ ॥ [illegible]
मीदमाय [illegible]

नाथ जवदंघ्रिसरोरुहाणा, जक्ते फलं किमपि संतति सचिताया. ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य जूया', स्वा मीत्वमेव जुवनेऽत्र जवातरेऽपि ॥ ४२ ॥ इछ समा हितधियो विधिवज्जिनेंड, साड्रोल्लसत्पुलककंचुकि तांग जागा. ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तवविजो रचयति जव्या. ॥ ४३ ॥आर्या॥ जननयनकुमुदचंड,प्रजास्वरा स्वर्गसंपदो जुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्ष प्रपद्यंते ॥ युग्म म् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरंसंपूर्ण ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि० ॥ वीर जिणे सर चरण कमल,कमला कय वासो ॥ पणमवि पजणी सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण तण वयणे एकात करवि, निसुणउ जो जविया ॥ जिम निवसे तुम देह गेह, गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदिव सिर जरह खित्त, खोणी तल मंमण ॥ मग ह देश सेणिय नरेस, रिउ दल बल खमण ॥ धण वर गुबर गाम नाम, जिहा गुणगण सज्जा ॥ विप्प वसे वसुजूइ तत्थ, तसु पुहवीजज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरी इद जुय,जूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विज्जा विविह रूव,नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंजा वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण विपंकज जलपाम्यि, तेजेहि तारा,

चद सूर, आकास नमाफिय ॥ रूवहिमयण अनं ग करवि मेल्यो निरधाफिय धीरमें मेरु गनीर सिंधु, चगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इछ, गुण मेल्या सचिअ अहवा निश्चें पुव जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंना पउमा गौरी गगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहि बुद्ध नहि गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥ पचसया गुणपात्र ठात्र, हींडे पर वरिउं ॥ करे निरतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण ठल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु, ठद ॥ जबूदीवह जबूदीवह, नरह वासंमि, खो णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुनूइ सुदर, तसु पुहवी नज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥ ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ नापा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ विहसंघपइठाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ विह देव निकायें जुत्तो ॥८॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जिणे दीठें मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिनुवन गुरु सिंहासण वइठा, ततखिण मोह दिगतें पइठा ॥ ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देवडुडुनि आकाशें वाजी, ध

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहि जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥ उवसम रसभर भरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कतिसमूहें झलझल कता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरूक जिम ते वहता, समव सरण पुहता गहगहता॥ तो अभिमानें गोयम जंपे,इणि अवसरे कोपें तणु कंपे ॥ १४॥ मूढा लोक अजाणिउ बोले, सुर जाणता इम काइ डोले ॥ मू आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, सपन्न पावा पुरि सुर महिय पत्तनाह ससार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुक्खकारण ॥ ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजे करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥ भाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजे, इंदभूइ भूय देव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंभ तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंडधजा, कोसीसे नव

घाट तो ॥ वैरविवर्जित जतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नरअसुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चित्ते चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रभुपाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरणस्वामी वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, भगतें नामें सीस तो ॥ पंचसयाशु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवे इ तो ॥ नाम लेइ आभाप करे, ते पण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणे अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें भुवन गुरु, संजमशु व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासें पारणु ए, आपणपे विहरत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जयजयकार करत तो ॥ २१ ॥ वस्तुछंद ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढिय बहु मान ॥ हुंकारो करि संचरिउ, समवसरण पुहतो, तुरततो ॥ इह ससय सामि सवे चरमनाह फेडे फुरतो ॥ बोधबीज सझाय मने, गोयम भवह विरत्त ॥ दिक्खा लेइ सिक्खा सहिय, गणहर गुण संपत्त ॥ २२ ॥ भाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, अज पचेलिमा पुण्य भरो ॥ दीठा गोयमसामि, जो निय नयणें अमिय भरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पंचसया

मुनि परिवरिय ॥ भूमिय करय विहार, भवियांजन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे ससा उप जे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥२३॥ जिहां जिहां दीजेदिक्ख, तिहा तिहा केव ल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोमय दीजे दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भत्ति, सामिय गोयम उप निय ॥ इण छल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउविस जिण आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसणानिसुणेइ, गोयम गणहर सचरिउ ॥ तापस पन्नरस एण,तो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंड कलस धज वडस हिय ॥ पेखवि परमाणद, जिनहर भरहेसर महि अ ॥ नियनिय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअजिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहा वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहा ॥ प्रतिबोधे पुंडरीक, कुन्डरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति

॥ २८ ॥ खीरखम घृत आणि, अमिश्र वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुसवे ॥ पच सया शुभ भाव, उज्जल भरिउं खीरमीसें ॥ साचो गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउं ॥ २९ ॥ पच सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूप, गाजती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुछद ॥ इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे नाणसपन्न ॥पन्नरह सय परवरिय, हरिय दुरिय जिणनाह वदिय ॥ जाणवी जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निदइ ॥ चरम जिणेसर इम भणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ भाषा ॥ सामिउं ए वीर जिणंद, पूनिम चद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउं ए भरहवासम्मि वरिस बहुत्तर सवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल सघे सहिअ ॥ आविउं ए नयणाणद, नयर पावापूरिसुरमहिय ॥ ॥ ३२ ॥ पेखीउं ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि आप कन्हे हु टालिउं, ए ॥ जाणतो ए तिहुअण

नाह, लोक वेवहार न पालिउं ए ॥ अति नलु ए कीधलु सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चिंतवि ऊं ए बालक जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हु किम ए वीरजिणंद, नगतें जोलो जोलविउं ए ॥ आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वेरागे वालिउं ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउं ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेंजे उमा हिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, नवियण नव इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुछद ॥ पढम गणहर पढम गहणर वरस पचास गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस संजम विनूसिय॥ सिरिकेवल नाण पुण, वार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ, बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर गाउ ॥ ३७ ॥ नाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महेके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौनाग्य निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअंबर

तारा गण विकसें, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पचानन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी जाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जूयवल चमके, जिम जिनमंदिर घटा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सवि वश हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवक्कर पहेलो पत्नणीजे, मायावीज श्रवण निसुणजें, श्री मती शोजा सजवे ए ॥ देवहधुरि अरिहत नमीजे, विनयपहु उवन्नाय थुणीजे, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ पुर पुर वसता कांइ करीजें, देश देशातर काइ जमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजे काजसमग्रह ततखण सिके, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसे, किउ कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमगल एहपन्नणीजे, परव महोत्सव पहिलो लीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे उयरें धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सद्गुरु जिणे दिखियाए ॥ विनयवत विद्या भन्डार, जसुगुण कोइ न लब्भे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए॥ गौतमसामीनो रास भणीजे, चउविह सघ रलि यायत कीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुकुम चंदन छडो देव रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिंहा सण॥ बेसणए॥ तिहां बेसी प्रभु देसना देसे ॥ भविक जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मगल उदयकरो ॥ इति श्री गौतम स्वामीनो रास सपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमा नित्य धारो, अरिक्रोधने मनथी दूर वारो ॥ संतोप वृत्ति धरो चित्तमांहि, राग द्वेपथी दूर थाओ उछाहि ॥१॥ पड्यामोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा का गमोछो, जैनमार्ग छंडी भुला को भमो छो ॥२॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अ न्यथी शु रमो छो, नदी गगा मूकी गलीमा पमोछो ॥३॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुढ मा ला॥ केइ देवउत्सगे राखे छे वामा, केइ देवसाथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मासभक्षी महाविकराला ॥ केइ योगिणी भोगिणि भोग रागे, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख ने केम चाखे ॥ जदा लोकना थोकलो पार नाव्यो, तदा मधनो विछु ऊमन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवला आपणी आश राखे, तेह पिंमने मन्नशु लेश्र चाखे॥ दीन हीननी भीडते केम भाजे, फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्ष दाता, अलोभी प्रभूने भजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलकी काच ना पिंमशु मत राचो ॥ ८ ॥ मद बुद्धिसु जेह प्राणी कहे ठे, सवि धर्म एकत्व भूलो भमे ठे ॥ कीहां सर्पवाने कीहां मेरु धीरं, कीहा कायरा ने कीहा शूर वीर ॥ ए ॥ कीहा स्वर्णथाल कीहा कुभखड ॥ किहा कोड्रवा ने कीहा खीर मरू ॥ कीहा खीरसिंधु कीहां क्षारनीर, कीहा कामधेनु कीहां ठाग क्षीर ॥१०॥ कीहा सत्यवाचा कीहा कूडवाणी, कीहा रकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहा नारकीने कीहा देवजोगी, कीहा ७ड देही कीहा कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहा कर्मधारी, नमो वीर स्वामी भजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमा स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख ससारमा मन्न माचे, ते जना मूढमा श्रेष्ठशुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभरोपी, सजो पुण्य पोषीभजो ते अरोपी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहि तुहि प्रभु परम रागी, भव फेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकु सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउं गुरु आज मेरो वीवेकं लह्योमे प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परे, श्री जिन सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज यकार ॥ १ ॥ अमृशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरुया सपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातना, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशु, नित्य जपीये नवकार॥छदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशरा॥ पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपता नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भविया भत्ते चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वमृशाखा शिके वेसि, हेठल कुड हुताश ॥ तस्कर ने मत्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

रीत जप्यो विषधर विष टाले, टाले अमृतधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपता थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परजव ते राजसिंह पृथवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ सन्यासी काशी तप साधतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयमुख, इंद्रजुवन अवतार ॥ सो०॥ए॥मनशुद्धे जपता मयणा सुंदरी, पामी प्रिय संयोग॥ इण ध्याने कुष्ट टल्यो उंबरनो, रक्त पित्तनो रोग ॥ निश्चें शु जपता नवनिधि थाये, धर्म तणे आधार॥सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण जुजगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रजावे हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणागण जाति राखी गृहिणी, पामीबाणप्रहार ॥ पद पंच सुणता पांडुपति घर, ते थई कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर जवडुःख जंजणहार ॥ सो० ॥१२॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां, शकट पांचसें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी

संपत्ति वसुधातलें विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥
॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनत्ती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम भांखे अरिहत ॥ पूरवदिशि चारे आदि प्रपचे, समस्यो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टि सुरप द ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरिगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सह गुरु सन्मुख विधि समरता, सफल जनम ससार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोह खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवास्यो, सुरे करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पच परमेष्टि ज्ञानज पचह, पचह दानचारित्र ॥ पच सधाय महा व्रत पचह, पच समिति समकित ॥ पच प्रमाद विषय तजो पचह, पालो पचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीये नवकार, सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जपे जगनायक ॥ श्री अरिहत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजें ॥ श्रीउवज्झाय सुसाधु, पचपरमेष्टि थुणी जे ॥ नवकार सार ससार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आराधता, विविधऋद्धि वांछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर वंदी, सफल मनो रथ कीजिये ए ॥ प्रभाते उठी मांगलिक कामें, शोल सतीना नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रिषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहि, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बाल पणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां बाकुला वीर प्रतिलभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लभा ए ॥ जोवन वेशे कामने जीत्यो, संयम लेइ देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदतनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूरा णा, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें सतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती, सुरभुवने जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख डुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयु ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित, शिवा शिव पदगामिनी ए ॥ जेहने नामे निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांडुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांडव माता दसे दसारनी, बहेन पविव्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेतेहने वंदीये ए ॥ नाम जपतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीये ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी, दमयंती तस गेहनी ए, ॥ सकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनग अजीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥ वीरेंभांखी शास्त्रे साखी, उद यरतन भांखे मुदा ए ॥ वहाणु वातां जे नर भणशे, ते लेशे सुख सपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु छंद ॥

॥ सुखकारण भवियण, समरो नित्य नवकार ॥ जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो

महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ त्नुविमन्कल विचरे, तारे त्नवियण कोम ॥ सुर ठदे विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहे ले पद नमियें, अरिगजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे त्नेदे, सिद्ध थया जगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरुपी, पंचान तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छन्नार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करे सारण वारण, गुण उत्तीसें थोम ॥ सुत्र जाण शिरोमणि, सागर जेम गंत्नीर ॥ त्रीजे पद नमीयें, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र नणावे सार ॥ तपविधि संयोगे, नांखे अर्थ विचार ॥ मुनिवर गुण जुता, कहिये ते उवस्झाय ॥ चो थे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचा श्रवटाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहे जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमु, परमारथ जिणें लाध ॥ ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी मायणी नूत वैता ल ॥ सवि पाप पणासे, वाधेमंगल माल ॥ एणे समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंपे जिन प्रन्न, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ इति श्री पंचपरमेष्ठी ठंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनम ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कार सर्व पाप क्षय करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेन म ॥ कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं य पठेदिदम् ॥ मनोऽभि लषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्यात्र ह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जित ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्ध चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्या य तु नासिके ॥ ६ ॥साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्ध ये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जि नः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवंकर. ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेन्द्रिय ॥ दक्षि णाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चि माशा जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वर ॥ उत्तरां तीर्थ कृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जन ॥ १० ॥ पाताल भगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तम', ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकल कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे दजितोऽपि विलोचनम् ॥ संभव कर्णयुगलेऽभिनन्द नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ट श्रीसुमती रक्षेद्दन्तान्प ह्मप्रभो विभु ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽय, तालु चन्द्र प्रभाभिध ॥ १३ ॥ कठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदय श्रीसुशीतल ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं,वासुपूज्य· करद्व यम् ॥१४॥ अगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि मंरूलम् ॥१५ श्रीकुन्थुर्गुह्यक रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मल्लिरू रुपृष्ठवंश,जघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादागुलीर्नमीरक्षे च्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथ· सर्वांग वर्धमा नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा काशमय जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि रञ्जन ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, सग्रामे शत्रु संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूत प्रेतभयाश्रिते ॥ ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादु खे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, य स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि द्भयं नास्ति, लभते सुखसपद ॥२२॥ जिन पिञ्जरनामेदं,य स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रभ राजेन्द्र· श्रिय सलभते

लसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्य च पठे न्नित्यं, नित्य प्राप्नो ति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नम स्त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मल शाश्वतो शुद्ध. ॥ निर्विकल्पो निरामय ॥ नि.शरीरो निरातंक. ॥ सिद्ध' शुद्धो निरंजन ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो ॥ निर्मोहो निर्मलो त्तम ॥ निर्भयो निरहकारो ॥ निर्विकारोथनिष्क्रिय ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुज शांतः ॥ निमद्यो निर्मल. शिव. ॥ निस्तरंगो निराकारो ॥ निष्कर्म्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञान. ॥ निरागो निरयोजिनः नि शब्द प्रतिमश्श्रेष्ट ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचर. ॥ ५ ॥ नि शंगात् प्राप्तकेवल्यो नैष्टक शब्दवर्जित' ॥ अनिं द्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेपर ॥ ६ ॥ नि. शब्दो गुण सपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशन ॥ सोपियोगात् शुभप्राप्त. कर्मद्योतिवला वहः ॥७॥ अजरो अमर सिद्ध ॥ अर्चित अक्षयो विभु. ॥ अमूर्त्त अच्यु तोब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापत ॥ ८ ॥ अनिद्यो वि श्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोभव ॥ अप्रमेयोजगन्ना थ ॥ बोधरूपो जिनात्मक ॥ ९ ॥ अव्ययसकलारा ध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचन ॥ अच्छेद्यो निर्मलो नि त्य. ॥ सर्वसल्यविवर्जित'॥१०॥अजेय सर्वतोभद्र. ॥

निष्कषायो भवांतक. ॥ विश्वनाथ स्वयंबुद्ध' ॥ वीत रागोजिनेश्वर ॥ ११ ॥ अतको सहजा नद ॥ अवा ज्ञानसगोचर ॥ असाध्यशुद्धचैतन्य ॥ कर्मनोकर्म वर्जित ॥ १२ ॥ अनतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि ष्प्रकाशक ॥ कर्माजितो महात्मान. ॥ लोकत्रयशि रोमणि ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वर शम्भु ॥ विश्व वे दी पितामह ॥ सर्वभूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य क ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ भगवांस्त्रिजगद्गु रु ॥ अनंतानतधीशक्ति ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मक ॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्त ॥ सप्तधातुविवर्जित गौरवादित्रयावार ॥ सर्वज्ञानादिसंयुत ॥ १६ ॥ अ जय प्राप्तकैवल्य ॥ निर्माणे निरपेक्षक ॥ निष्कलं केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायक ॥ १७ ॥ अना मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावक ॥ सर्वेश सत् सुखावास ॥ जिनेंद्रोमुनिसंस्तुत ॥ १८ ॥ अन्यून परमज्ञानी ॥ विश्वतत्त्वप्रकाशक ॥ प्रबुद्धो भगवान्ना थ ॥ प्रस्तुत पुण्यकारक ॥ १९ ॥ शकर सुगतो रौद्र' सर्वज्ञो मदनांतक ॥ ईश्वरो भुवनाधीश ॥ सच्चित्त पुरुषोत्तम २० ॥ सद्योजातमहात्मान ॥ वि मुक्तोमुक्तिवल्लभ योगींद्रो नादिससिद्ध ॥ निरीहो ज्ञानगोचर ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्त्र ॥ सत्सौ ख्य स्त्रिपुरातक ॥ त्रिनेत्र त्रिजगत्पूज्य ॥ कल्या णकोष्ट मूर्त्तिक ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्य ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेव ॥ सर्वभूतहितंकर ॥२३॥ स्वयविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्ध पापनाशन तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यवैभव ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमह ॥ मुक्तिकार्यसतुष्टो ॥ निराग परमेश्वर ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो ॥ महामोहविनाशक ॥ महाभावो महादर्श ॥ महामुक्तिप्रदायक ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी ॥ महातपो महात्मक ॥ महर्द्धिको महावीर्यो महांतिकपदस्थित ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावद्यो ॥ महाविघ्नविनाशक ॥ महासौख्यो महापुसो ॥ महामहिम अच्युत ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोध ॥ एकानेकविनिश्चल' सर्वबंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्रधानक ॥२९॥महासूरो महाधीरो ॥ महादुःख विनाशक ॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाहृव्यो महागुरु ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो विषयाच्युत ॥ भगवंता महाभ्रांतो ॥ शातिकल्याणकारक ॥ ३१ परमात्मापर ज्योति ॥ परमेष्टी परमेश्वर ॥ परमात्मापरानद परपरम आत्मक. ॥३२॥ प्रस्तुतोनत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसयुत ॥ नाकृति-नाक्षरोवर्णी ॥ व्योमरूपो जितात्मक ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोध ॥ ससारछेदकारण ॥ निरवद्योमहाराध्य ॥ कर्मजिद्धर्म्मनायक ॥ ३४ ॥ बोधसत्त्वजगद्व्यो ॥ विश्वात्मानरकांतक ॥ स्वयंभूपाप

हत्पूज्य पुनीतोविन्नव स्तुत ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीत ॥ रूपातीतो निरजन ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो ॥ देवदेवेशनायक. ॥ ३६ ॥ वरेण्योन्नवविध्वंसी ॥ योगिनांज्ञानगोचर ॥ जन्ममृत्यु जरातीत ॥ सर्वविघ्नहरोहर ॥ ३७ ॥ विश्वद्दक्नव्यसंबंध ॥पवित्रोगुणसागर ॥ प्रसन्न परमाराध्य. लोकालोकप्रकाशक ॥ ३८ ॥ रत्नगर्नोजगत्स्वामी इद्भवंद्य सुरार्चित ॥ निष्प्रपचो निरातको ॥ नि शेषक्लेश नाशक ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकससेव्यो ॥ लोकालोकविलोकन ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थित ॥४०॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुन पुन ते निर्वाणपद यांति ॥ मुच्यते नात्र संशय ॥ ४१ ॥ इति लघुसहस्रनाम सपूर्ण ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं ॥ सहृदय हृदयं गम देशन ॥ अजिनतोत्तमन्नक्तसुरेश्वर ॥ नमतशीतल नायजिनेश्वर ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसद्गुणमन्दिर ॥ विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युत॥ प्रवरवधुरलक्षणसयुत ॥ २ ॥ (युग्म) यदीयन्नक्तिर्नविना न्नवे न्नवे न्नवेवन्नीष्टार्थनिदानमद्भुत ॥ स एन नन्दात्मसमुद्भवो जिन ॥ समर्चनीय खलुशीतल प्रन्नु ॥ ३ ॥ कर्माजितत्तान् न्नविन सुशीतलान् ॥ कुर्वं न्नदावाक् सुधया दयापर ॥ सदेव देवो न्नवतात्सदेव मे ॥ सदिष्टसिद्ध्यै जिनराजशीतल

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दढ रथ तनुजन्मा सर्वत साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्ति स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ जंयतु गतजवार्ति शीतल सौम्यमूर्ति ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिन स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ र्दर्शन श्रेयसे ध्रुवं ॥ सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निषेव्य सततं सता ॥ १ ॥ वामासूनोर्यश पुंजे रगाधस्यानघागुणा ॥ स्मर्यन्तेयेन स स्मार्यो ॥ नवेत्प्राचीन वर्हिपां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान् ॥ ससारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामक्त यो धीरा.पार्श्व देवोपर प्रभु ॥ ३ ॥ जिना सर्वार्थ दानेन ॥ येन कल्पद्रुमाश्रपि ॥ नवेदभ्यर्च्चितो लो के ॥ सश्रियेचाम्रतायच ॥४॥ सस्तुतो मधुर श्लोकै॥ जैनलाजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको · नूयात् ॥ श्री मान् शंखेश्वर.प्रभु ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुति

॥ शालिनीछन्द ॥ ॥ गोरीग्रामे स्तजने चारु तीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्यांचा पिविख्यातकीर्त्ती श्रीपार्श्वेशनौमि शखेश्वरस्थं॥१॥इष्टा र्थाना स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववं द्य ॥ स्वर्गेभूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥ जित्वाजेय कर्मजाल विशाल ॥ प्राप्यानन्त ज्ञानर त्नंचिरत्न ॥ लब्धामंदानदनिर्व्वाणसौख्य ॥ श्री पा० ॥ ३ ॥ विश्वधीश विश्वालोकेपवित्र॥ पापागम्य मो क्षलक्ष्मीकलत्रं, श्रत्नो जाप्यं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये ख गदो ह्यागचंद्र ॥ संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्त पुण्यै दर्शन यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ इति शखेश्वर जिनस्तव ॥

॥ विशदसद्गुणराजि विराजित ॥ घनघनाघनना दविजाजितं ॥ जजतजक्तिजरेण रमेश्वरं ॥ जगति पार्श्वजिनेशमनश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्णविज्रूषितविग्रहा ॥ विहितदुर्द्दम दर्प्पक निग्रहा ॥ वसुयुगार्कमिता. सुकृताकरा जिनवरा प्रजवंतु शिवंकरा ॥२॥ रुचिरवर्ण निबद्धमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरजिवदितं ॥ निखिलसाधुजना खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतांचितशर्मदं॥३॥ सकलजव्यसरोज विकाशिका ॥ कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा ॥ जवतु वाग्जिन लाजशुजार्थदा ॥ ४ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रजा ॥ जास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांजोधौ व्यवस्थायिन ॥ ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधव ॥ स्तुत्यायोगिजनैश्च पचगुरव कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनवोधवृत्तममल रत्नत्रय पावन ॥ मुक्तिश्रीनगरायन जिनपते स्वर्ग्गापवर्गप्रद धर्म्म सूक्तिसुधाश्च चैत्यमखिल जैनालय श्यालयं प्रोक्ततत्त्रिविध चतुर्विध ममीकुर्वंतु मे मङ्गल ॥ २ ॥ नाजेयादि जिनाधिपास्त्रिजुवनेग्ख्याताश्चतुर्विंशति ॥ श्रीमन्तो

नरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु प्रतिविष्णुलाङ्गलधरा. सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलो क्ये नयदास्त्रिषष्टिपुरुषा ॥ कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषनस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥ चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते ॥ सम्मेतशैलेर्हता ॥ शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ निर्वाणावनिय प्रसिद्धविनवा कुर्व्वंतु मे मङ्गल ॥ ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर नावनामर गृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता ॥ जंबूशाल्मलि चैत्यशाखिपु तथावक्षार रूप्यादिपु ॥ इक्ष्वाकारगिरौच कुरुलनगेद्वीपेच नंदीश्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्जावतरोपिजय त्यर्हता जन्माजिपेको त्सवे ॥ यो जात' परिनिक्रमेवचनवोय केवलज्ञान नाक् ॥ य' कैमख्यपुरप्रवेशमहिमासंनावित स्वार्गि नि ॥ कल्याणानि च तानि पचसततं कुर्व तु मे मंगलं ॥ ६ ॥ ये पचौपधिक्रूयः श्रुततयोरुद्धिग ता पचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये ष्टौवि धाचारणा ॥ पचज्ञानधराश्च येपि वलिनो ये वुद्धि ऋद्धीश्वरा ॥ सते ते सकलाश्च ते गणनृता. कुर्वं तु मे मङ्गल ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता वियादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन कायक्षाश्च यक्षीश्वरा ॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशाग्रहानिधि सुरादिकन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

णा' कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्ग
ाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्व्वाह्नेपि महोत्स
ापि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये शृण्वंति पठंति
ैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेवि
ायरहिता कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्री ॥

शिवं शुद्ध बुद्ध पर विश्वनाथं ॥ नदेवंनबधुर्नकर्म
नकर्ता नअग नसंग नइच्छा नकामं ॥ चिदानन्दरुप
नमोवीतराग ॥ १ ॥ नबधो नमोक्षो नरागा दिलोकं ॥
नयोगनजोगं नव्याधिर्नशोक ॥ नक्रोध नमानं नमाया
नलोज चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राण नजिह्वा
नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्र ननिद्रा ॥ नस्वाद नखेदं नवर्णं
नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्म नमृत्यु नमोदं नचिं
ता ॥ न क्षुद्रत्रट् ॥ नजीत नकुष्य नतुदा, नस्वामीन
भृत्य नदेवोनमर्त्य ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदडे त्रिखडेह
रेविश्वव्याप ॥ ऋषीकेश विध्वस्त कर्म्मारिजालं ॥ न
पुण्यं नपाप नअक्ष्यानप्राण ॥ चि० ॥ ५ ॥ नवालं
नवृद्ध नविद्यान्नमूढा ॥ नछेद्यं नजेद्य नमूर्त्तिर्नमीदृश
नकृष्ण नशुक्ल नमोह नतंद्रा ॥ चि० ॥ ...
द्य नमध्य नमत्यं नमन्या ॥ नद्रव्य नक्षेत्र
...व्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो न ... ...ीनं
इदज्ञानरुप स्वयतत्ववेदी ॥ ...
रूप ॥ न ...
आत्मारामगुणाकर ...

तूतगतागते सुखदुखज्ञातात्वयासर्वग ॥त्रैलोक्याधि
ग़तिस्वयंस्व मनसा ध्यायति योगीश्वरा ॥ वंदे तं हरि
वंश हर्षहृदय श्री मान भू दच्युत ॥ ए ॥ इति
श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं
स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शन मोक्षसाधन ॥ १ ॥ दर्शनेन
जिनेंद्राणां ॥ साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्टतिचिरं पा
पं ॥ छिद्रहस्तेयथोदक ॥ २ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ सं
सारध्वातनाशनं ॥ वोधनचित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रका
शक ॥३॥ दर्शनच जिनेंद्रस्य ॥ सद्धर्म्मामृतवर्षण जन्म
दाघविनाशाय ॥ वृद्दणसुखवारिधे ॥४॥ जिनेभक्ति
जिनेभक्ति ॥ जिनेभक्ति दिनेदिने ॥ सदामेस्तु, स
दामेस्तु, सदामेस्तु भवेभवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहि
त्राता ॥ नहित्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमोदेवो ॥
न भूतोन भविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरण नास्ति ॥
त्वमेवशरण मम ॥ तस्मात् सर्व्वं प्रयत्नेन॥रक्षरक्षजि
नेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखंद्दष्टा ॥ पद्मरागसमप्रभ ॥
नै कजन्मकृतंपाप ॥ दर्शनेनविनश्यति ॥८॥ अर्हंतो
मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमगलं ॥मगलसाधवोमु
ख्य ॥ धर्म्म सर्व्वत्र मंगल ॥९॥ लोकोत्तमा ह्यर्ह
त ॥ सिद्धालोगोत्तमा॰ सदा ॥ लोकोत्तमोयतीशा
ना ॥ धर्मोलोकोत्तमोर्हता ॥१०॥ शरण सर्व्वदार्हत॥

सिद्धाशरणमगल ॥ साधव' शरण लोके ॥ ,धर्म्म शरणमर्हंता ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्र ॥

॥ अथ ऋषिमंगल स्तोत्र ॥

॥ आयताक्षरसलक्ष्य ॥ मक्षरव्याप्ययत्स्थितं ॥ अग्निज्वालासमनाद ॥ बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रातं ॥ मनोमलविशोधक ॥ देदीप्यमान हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मल ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्म ॥ वाचक परमेष्टिन ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीज ॥ सर्वत प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनम ॥ ॐ नम. सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४॥ ॐ नम सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य ॥ चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नम ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकशुभ ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्त ॥ पृथग्बीजसमन्वित ॥ ६ ॥ आद्यंपदशिखारक्षे ॥ त्पररक्षेतु मस्तक ॥ तृतीय रक्षेन्नेत्रेद्वे ॥ तुर्ये रक्षेच्चनासिका ॥ ७ ॥ पचमतुमुखरक्षेत् ॥ षष्ठरक्षेच्चघटिकां ॥ नाभ्यतससमरक्षे ॥ रक्षेत्पादातमष्टम ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवत सात ॥ सरेफोद्व्यब्धिपचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्याकान् ॥ श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या ॥ पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सातहृसमलंकृत ॥१०॥ ॐ॥ ह्रॉं ॥ ह्रीं॥ ह्रुं ॥ ह्रूं ॥ ह्रें ॥ ह्रौं ॥ ह्रॉं ॥ ह्रः असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनम ॥ जम्बूवृक्षधरोद्वीप ॥क्षारो दधिसमावृत ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्टाधिष्टैरलंकृत. ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरु ॥ कूटलक्षैरलंकृत ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंडलमण्डित. ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं वीजमध्यास्यसर्वग ॥ नमामिविवमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरंजन ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मलशांत ॥ वहुल जाड्यतो ज्झित ॥ निरीहं निरहंकारं ॥ सार सारतर घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ स्फीतं ॥ सात्विक राजसमत ॥ तामस चिर संवुद्ध ॥ तैजस शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारच निराकार ॥ सरस विरसपरं ॥ परापर परातीतं ॥ पर पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्ण द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य वर्णक ॥ पचवर्णं महावर्णं ॥ सपरच परापर ॥ १७ ॥ सकल निष्कलतुष्ट ॥ निवृतं भ्रातिवर्जित ॥ निरंजन निराकार ॥ निर्लेप वीतसश्रय ॥ १८ ॥ ईश्वर ब्रह्मसंवुद्ध ॥ वुद्ध सिद्ध मतगुरु ॥ ज्योतीरूप महादेव ॥ लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु, वर्णांत ॥ सरेफोविंदुमण्डित तुर्यस्वरसमायुक्तो, वहुधानादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् वीजे स्थिता' सर्व्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमा ॥ वर्णै र्निजैर्निजैर्युक्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसगता ॥ २१ ॥ नादश्चं द्रसमाकारो ॥ विंदुर्नीलसमप्रभ ॥ कलारुणसमासांत' ॥ स्वर्णाभ' सर्वतोमुख' ॥२२॥ शिर. संलीन ईकारो ॥

सिद्धाशरणमगल ॥ साधव शरण लोके ॥ धर्म्म शरणमर्हता ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्र ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥

॥ आद्यताक्षरसलक्ष्य ॥ मक्षरव्याप्ययत् स्थितं ॥ अग्निज्वालासमनाद ॥ बिंदुरेखा समन्वित ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रात ॥ मनोमलविशोधक ॥ देदीप्यमान हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मल ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्म ॥ वाचक परमेष्ठिन. ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीज ॥ सर्वत प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनम ॥ ॐ नम सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४॥ ॐ नम सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य ॥ चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नम ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकशुभ ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्त ॥ पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यंपदशिखारक्षे ॥ त्परक्षेतु मस्तक ॥ तृतीय रक्षेन्नेत्रेद्वे ॥ तुर्ये रक्षेचनासिका ॥ ७ ॥ पचमतुमुखरक्षेत् ॥ पष्ठरक्षेचघटिका ॥ नाभ्यंतसप्तमरक्षे ॥ रक्षेत्पादातमष्टम ॥ ८ ॥ पूर्वंपणवत. सात ॥ सरेफोद्यद्विधपचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्याकान् ॥ श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या ॥ पचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सातहसमलंकृत ॥१०॥ ॐ॥ ह्रां ॥ ह्रीं॥ ह्रुं ॥ ह्रूं ॥ ह्रे ॥ ह्रौं ॥ ह्रॉं ॥ ह्रः. असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनम. ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीप ॥क्षारो
दधिसमावृत ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्टाधिष्टैरलंकृ
त ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरु ॥ कूटलक्षैरलंकृत ॥
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामरुलमण्डितः ॥ १२ ॥
तस्योपरिसकारात बीजमध्यास्यसर्वग ॥ नमामिबिं
वमार्हत्य ॥ ललाटस्थं निरंजन ॥ १३ ॥ अक्षय
निर्मलशांत ॥ बहुलं जाड्यतो ज्झितं ॥ निरीहं
निरहंकार ॥ सार सारतर घन ॥ १४ ॥ अनुद्धत
शुभ्र स्फीतं ॥ सात्विक राजसमतं ॥ तामस चिर
सबुद्ध ॥ तैजस शर्वरीसम ॥ १५ ॥ साकारच निरा
कारं ॥ सरस विरसंपर ॥ परापरं परातीत ॥ परं
पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य
वर्णक ॥ पचवर्णं महावर्णं ॥ सपरच परापर ॥ १७ ॥
सकल निष्कलतुष्ट ॥ निवृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंज
न निराकार ॥ निर्लेप वीतसश्रय ॥ १८ ॥ ईश्वरं
ब्रह्मसबुद्धं ॥ बुद्ध सिद्ध मतगुरु ॥ ज्योतीरूप महा
देव ॥ लोकालोक प्रकाशक ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु,
वर्णांत ॥ सरेफोबिंदुमण्डित' तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहु
धानादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिता'
सर्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमा. ॥ वर्णै र्निजैर्निजैर्यु
क्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगता ॥ २१ ॥ नादश्चं द्रसमा
कारो ॥ बिंदुर्नीलसमप्रभ ॥ कलारुणसमासात' ॥
स्वर्णाभ सर्वतोमुख ॥२२॥ शिर. सलीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णंत स्मृत॥वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंरूल स्तुम ॥२३॥ चन्द्रप्रजपुष्पदंतौ॥नादस्थिति समाश्रितौ ॥ विन्दुमध्यगतौनेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्म प्रजवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्टितौ शिरईस्थि तिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेपा स्तीर्थकृत सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिता ॥ माया वीजाक्षरप्राप्ता ॥ श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ गतरागद्वे षमोहा ॥ सर्वपापविवर्जिता ॥ सर्वदा सर्वकालेपु ॥ ते जवतु जिनोत्तमा ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययच्चक्र तस्य चक्रस्ययाविजा ॥ तयाछादित सर्वाङ्ग मामाहिनस्तु रूाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ॥ मामाहिनस्तु, राकि नी ॥ २९ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु, लाकिनी ॥ ॥ ३० ॥ देव० ॥ मामाहिनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० ॥ मामाहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० ॥ मामाहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० ॥ मामाहि नस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० ॥ मामाहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु हस्तिन ॥ ३६ ॥ देवदे० ॥ मामाहिसतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देव० ॥ मामाहिसतुवह्नय ॥ ३८ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु सिंहका ॥ ३९ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु दुर्ज्जना ॥ ४० ॥ देवदे० ॥ मामाहिसतु जूमिपा ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा ॥ तस्यायाजुविलब्धय, ॥ ताजिरज्यु धतज्योति ॥ रहसर्वनिधीश्वर ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाभूपीठवासिन ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवा ॥ सर्वे रक्षतु मामित ॥ ४३ ॥ येऽवधिल ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धय ॥ ते सर्वे मुनयोदे वा ॥ मां सरक्षतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवेता ला ॥ पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ तेसर्वेप्यु पशाम्यतु दे वदेव प्रभावत ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ री चंडी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ क्लि न्नाजितामद द्रवा ॥ ४६ ॥ कामागाकामवाणाच ॥ सानंदानदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वामहादेव्यो ॥ वर्त्तंतेयाजगत्त्रये ॥ मह्यसर्वा प्रयछतु ॥ कांतिंकीर्ति धृति मति ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुदु प्राप्यः श्री ऋपिमंडलस्तवः ॥ भापितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृ तेनय ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेदुर्गे गजे ह रौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निज राज्य ॥ पदभ्रष्टा निजं प द ॥ लक्ष्मीभ्रष्टानिजां लक्ष्मीं ॥ प्राप्नुवंति न संश य ॥ ५१ ॥ भार्यार्थीलभते भार्यां ॥ पुत्रार्थी लभते सुत ॥ वित्तार्थी लभते वित्त ॥ नर स्मरण मात्रत. ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकास्ये ॥ लिखित्वा यस्तुपूज येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि ॥ गृहेवसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्जपत्रेलिखित्वेद ॥ गलके मूर्ध्नि वाभुज ॥ धारित सर्वदा दिव्य ॥ सर्वभीति विनाशक ॥ ५४ ॥

ज़ूते प्रेतैर्ग्रहै र्यद्नै ॥ पिशाचैर्मुझलैर्मलै ॥ वातपित्त कफोद्रेकै, मुच्यते नात्रसशय ॥५५॥ ज़ूर्जु व. स्वस्व र्यपीठ ॥ वर्तिन शाश्वता जिना ॥ तैस्तुतैर्वंदिते र्द ष्टे, र्यत्फलं तत्फलश्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतन्नोप्यमहा स्तोत्र ॥ नदेय यस्यकस्यचित् ॥ मिथ्यात्व वासिने द त्ते ॥ बालहत्या पदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितप कृत्वा ॥ पूजयित्वाजिनावली ॥ अष्टसाहस्रिको जा प ॥ कार्य स्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्ठोत्तरंप्रा त ॥ र्येपठति दिने दिने ॥ तेषा नव्याधयो देहे ॥ प्रजवति नचापद ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधियावत् ॥ प्रात प्रातस्तुय पठेत् ॥ स्तोत्रमेत न्महातेजो ॥ जिन विंव स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोबिंबेजवेसप्त मके ध्रुव ॥ पदप्राप्नोतिशुद्धात्मा ॥ परमानदनंदित ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो नवेत् ध्याता ॥ कल्याणानिचसो श्नुते ॥ गत्वास्थानपर सोपि ॥ ज़ूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इद स्तोत्र महास्तोत्र ॥ स्तुतीनामुत्तमंपरं॥ पठनात्स्मरणाज्जापा ल्लभ्यते पदमुत्तम ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंमलस्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकान्निराकृत्यमूलयं त्रकल्पानुसारेण लिखितं गणिजि श्रीक्षमाकल्या णो पाध्यायै' तस्योपरि मयापि लिखित इद स्तोत्रं ॥

॥ अथ श्रीगौमीपार्श्वजिन वृद्धस्तवनलि० ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी ॥ जागे जगवि ख्यात ॥पासतणा गुणगावता ॥ मुऊ मुख वसज्यो

मात ॥ १ ॥ नारंगेअणहिलपुरे ॥ अहमदा वादे पास ॥ गौडीजी धणी जागतो ॥ सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुत्त चेला सुत्तदिन घनी॥महुरत एकममाण॥ प्रतिमा ते इह पासनी ॥ थई प्रतिष्टा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विसाला मगलीक माला ॥ वामा नो सुत साचोजी ॥ धण कणकचण मणिमाणकदे ॥ गौडीजी धणी जाचोजी ॥४॥ (गु०) अणहिलपुर पाटणमांहे प्रतिमा ॥ तुरक तणें घर हुतीजी ॥ अग्वनी जूमि अशवनी पीडा ॥ अखनी वालि विगू ती जी ॥ ५ ॥ (गु०) जागतो जक्ष जेहनें कहि यें ॥ सुहणो तुरकनै आपेजी ॥ पासजिने सर केरी प्रतिमा ॥ सेवक तुक सतापे जी ॥ ६ ॥ (गु०) प्रह उठीने परगट कर जे ॥ मेघा गोठीनें देजे जी ॥ अधिको मलेजे उंगो मलेजे ॥ टका पाचसै लेजेजी ॥ ७ ॥ (गु०) नाहि आपिस तोमारीस सुर मीस ॥ मोर वध वधास्येजी ॥ पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुक ॥ लछि घणी घरजास्यै जी ॥ ए ॥ (गु०) मारग पहिलो तुकने मिलस्यें ॥ सारथवाहजेगोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोड्या ॥ वस्तु वहे तसुपोठी जी ॥ ए ॥ (गु०) (दूहा) मनसुवीहनो तुरकडो ॥ मानें वचन प्रमाण ॥ वीवीनेंसुहणा तणो ॥ सजलावे सहिनाण ॥ १० ॥ वीवी बोलै तुरकनें ॥ वमा-देव हैं कोय॥अवसताव

नहीतो मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोढीये ॥ पहली वंधे पाज ॥सुहणा माहेंसेठने ॥ संभलावे जक्ष राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही यक्ष आयो राते ॥ सारथ वाहुनेसुहणें जी ॥ पासतणी प्रतिमा तुलेजे ॥ लेतो सिरमत धुणे जी ॥१३॥ (एम०) पाचसेटक्का तेहने आपे ॥ अधिको मा आपिस वारूजी ॥ जतन करी पुहचाडे थानकि ॥ प्रतिमा गुण सचारे जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुझनें होसी वहु फलदायक ॥ चार्ड गोठीनें सुणजे जी ॥ पुजी स प्रणमीस तेहनापाया ॥ प्रहऊठीनें थुणजे जी ॥ १५ ॥ (ए०) सुहणो देईनें सुरचाल्यो ॥ अपनें थानक पहुतोजो ॥ पाटण माहें सारथवाहु ॥ ढींडे तुरकने जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) तुरकै जाता दीठो गोठी ॥ चोखा तिलक लिलाडे जी ॥ सकेत पहुतो साचोजाणी ॥ बोलावै वहुलाकैजी ॥ १७ ॥ (ऐ०) मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपु ॥ पास जिणेसर केरीजी ॥ पाचसै टक्का जो मुझ आपे ॥ मोलन मागु फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नाणो देई प्रतिमा लेई ॥ थानक पहुतों रंगेजी ॥ केसरचदन मृगमद घोली ॥ विधसु पूजे रगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूनी रूनी कीधी ॥ ते माहि प्रतिमा राखैजी ॥ अनुक्रम आव्यापारकरमांहे ॥ श्रीसघनें सुर सा खे जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिनर अधिका

थाये ॥ सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठामर ना दर सण करवा ॥ आवे लोक प्रभातो जी ॥ २१ ॥ (ए०) (दुहा) इकदिन देखै अवधिसु ॥ पारकर पुरनो भंग ॥ जतनकरु प्रतिमा तणो ॥ तीरथ अछे अभ ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें ॥ थल अटवी उज्जा रु ॥ महिमा थास्ये अति घणी ॥ प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुसल खेम तिहा अछै ॥ मुफने तुफने जाणि ॥ सका ठोमी काम करि ॥ करतो मकरिस काणि ॥ २४ ॥ (ढाल) पास मनोरथ पूराकेरे ॥ वाहण एक वृषभ जो तेरे ॥ पारकरथी परियाणो करे ॥ इक थलचढ वीजो ऊतरे ॥ २५ ॥ वारे कोस आव्या जेतले ॥ प्रतिमा नविचाले ते तले ॥ गोठी मनह विमासण थई ॥ पास भुवन मंमा वू सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किमकरु प्रयाण ॥ कु टको कोइनदीसे पाहण ॥ देवल पास जिनेसर तणो ॥ मंमावु किम गरथे विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसघरहस्ये किहां ॥ सिलावटो किम आवै इहा ॥ चितातुर थयो निद्रालहे ॥ यक्षराज आवीने कहै ॥ २८ ॥ गुहली ऊपर नांणो जिहां ॥ गरथघणो जाणीजे तिहा ॥ स्वस्तिक सोपारीने ठाणि ॥ पाह ण तणी उघ्घटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ ॥ अमृत जलनीसरसी कूओ ॥ खाराकूआ तणो इह सैनाण ॥ भ्रम पढ्यो छै नीलो

ठाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे ॥ कोढपरा
नवियो किसमिसे ॥ तिहा थकी तू इहा आणजे ॥
सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथि
र थापियो ॥ सिलावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमी
ने पूरु आस ॥ पास तणो मरू आवास ॥ ३२ ॥
सुपन माहे मान्यो तेवैण ॥ हेम वरण देखाड्यो
नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिलावटैने
गया तेरूवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवे समरो ॥
जीमे खीरखांरू घृत चूरमो ॥ घरू घाट करे कोर
णी॥ लगन नले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थत्नश कीधी
पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रली ॥ रग मरूप
रलियामणो रसे ॥ जोता मानवनो मन हसे ॥ ३५ ॥
नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मडे सवाद ॥
दिवस विचारी ईंडोघड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर
चड्यो ॥ ३६ ॥ शुन्न लगन शुन्न वेलावास ॥ पवासण
वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल
मल्लवगडे रहे वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मे सान्न
ली ॥ तवन माहि सूधी साकली ॥ गोठी तणा
गोतरीया अठे ॥ यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥ (दूहा)
विघन विडारण यक्ष जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥
प्रीतकरी श्रीसघने ॥ देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरु
श्रो गोडी पासजिन ॥ आपे अरथनंडार ॥ सानि
ध करे श्रीसघनें ॥ आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाणे नीलहय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग चूकामानवी ॥ वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहे जोग ॥ विघन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थई समरे जे जाप ॥ टाले सगला पाप सताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥ आपे अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरे ॥ पार उतारे लच्छी वरे ॥ ४३ ॥ दो जागीने दे सोजा ग ॥ पगविहूणानें आपे पग ॥ गामनहीं तेहने चेगा म ॥ वंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधार्या ने दे आधार ॥ जवसायर उतारे पार ॥ आरतीआनी आर त जग ॥ धरे ध्यान ते लहे सुरग ॥ ४५ ॥ समस्यां सहाय दीये यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूगाने दे वचन विला स ॥ ४६ ॥ दुखियांने सुखनो दातार ॥ जय जजण रजण अवतार ॥ बंधन तूटे वेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ दूरेटले ॥ क्रूरसींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा जयचक्रवे ॥ विष अमृत उडकार ॥ विषधरनो विष उतरे ॥ सग्रामें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दालिद्र दु ख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्री पासनो ॥ महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (करखानीचाल) १ उजितुं उजितु उज उपसम धरी ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपते ॥ जूतनें प्रेत ऊोटिंग व्यतर सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणते ॥ ५१ ॥ (उ०) डुरूरा रोग सोगा जरा जतने ॥ ताव एकांतरा डुत्तपते ॥ गर्जवधन ब्रण सर्पविन्नू विष ॥ चालिका वालमेंवा ऊखते ॥ ५२ ॥ (उं) साइणी काइणी रोहणी रकणी ॥ फोटका मोटका दोपहुंतें ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ स्वान सीयाल विक रालदते ॥ ५३ ॥ (उ) धरणेंड्र पदमावती समर सोजावती ॥ वाट आघाट अटवी अटतें ॥ लखमी लीलामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै मन हसंतें ॥ ५४ ॥ (उ० ॥ अष्टमहाजय हरे कान पीका टलै ॥ ऊतरे सूल सीसगजणते ॥ वदत वर प्रीतसु प्रीति विमला प्रजू ॥ श्रीपास जिण नाम अजिराम मते ॥ ५५ ॥ (उ जितु) इति श्रीगोडी पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीजीरूजजन पार्श्वनाथ उद ॥

॥ जुजगी उदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमा देश काशी विराजे, जिहा जान्ह वी नीर गन्नीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहा प्रसिद्धि, शोजा स्वर्गनी जिणे उलाली लीधी ॥ १ ॥ घणु शु वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे जोजा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरा ने पाले, प्रेमशु अश्वसेनाजिधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंजा, शीले सर्व नारी जीती ए अचं
जा ॥ सदा सुदरी ते सोहे चंद्र वयणी, सुती सेज
मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी
जे सनूरे, प्रजुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने
चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्नवासे विशाखा सुरक्षे
॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणां तदा दिव्य देखे, महामो
द पामी माने तेह लेखे ॥ जायो पोश मासे दशमी
अधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥
मलि दिगकुमारी सुरेंद्रे मलायो, गायो हूलरायो
पूजीने वधायो ॥ वधते प्रजु यौवने जाम जायो,
प्रजावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग
विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधु
उल्लासे ॥ त्याशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तप
स्या करी शुक्ल ध्यानाभ्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर
दोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृक्षनां मूल वाली ॥
थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने
ज्ञान ज्योते ॥८॥ मली देवताये महा मोदधारी, कस्यो
त्रिगडो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने
वेगसोहे ॥ वारे परखदानां बहु मन्नमोहे ॥ ए ॥
नवे नेहशु एहने जे निहाले ॥त्रिधा ताप संताप ते दूर
टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने मान
खो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन
बधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥

लही दुर्लंभ मानवं ए शरीर, मुधा कां गमोछो बुध बोध हीर ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या मोह पासे, धने जेह धाता विषयने विलासे ॥ मुंझाया मुग्ध माया तणा फंद माही, मिथ्या ते ग्रस्या शुद्धने ते न चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी, तजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ जजी शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्यातनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे, नावे आमलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धांत माहे रमेछे, किम तेह ऊला कहोने जमेछे ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेछे, दोषी जीवना ते जिहां तिहां दमे छे ॥ फरी लाख चोराशीना फेर माहे, विना नाथ तेहने धरे कोण वाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांत नी युक्ति जाणी, कहोनेकोइ तेहने गमे अन्यवाणी ॥ हीरे जे हल्यो ओलखी हेत आणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रभु तीर्थ थापे, जग जंतु बधुपणे बोध आपे ॥ मही मंडले विचरे जेम वायु, पुरु जोगवी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समेत शृंगे, वश्या श्वेत षष्टी दिने मुक्तिसंगे ॥ प्रभु नीरु जजन नामे जजता, जाजे जीडने सुख आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध दाता, जजो जाव जक्ते प्रभु ऋत त्राता ॥ सेव्यो हेजशु एह सहजे सधारे,

पूज्यो प्रेमशु पापना वध वारे ॥ १९ ॥ वधे वंदता संपदा जे वधारे, धरुं ध्यानमा सेवकां चाहे धारे ॥ अर्च्यों उल्लटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशु जेह नवेनिधि आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तमा सिद्धि भर्त्ता, नमो पारगामी नमो सौख्य कर्त्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तु विधाता, नमो विश्वनेता नमो तु विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवे दी नमस्ते नमो शंकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवत्योपकंठे दिदारु, खेडु हरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मा वतीने पसाय, सदा सघना विघ्न दूरे पलाय ॥ उद यरत्न जांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेतो नवे निधिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारंभ ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाच बुधवर, निरूप रमनी, निर खियें ॥ वर देय न वाला, पद प्रवाला, मत्रमा ला हर खियें ॥ स्थिर थानंजा, अति अचजा, रूप.

रंझा झलकती ॥ जजिये जवानी, जगत जानी, राज रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख देवत, पद्म पेखत, आसन ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति, डुख डुरति निवारन ॥ त्रिहु लोक नारक, विघ्न वारक, धरा धारक, धरपती ॥ जजियें० ॥ २ ॥ केविया कोपित, लोज लोपित, अवनि उंपित, ईश्व री ॥ शतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल दल्लां खम्न, ठिइ ठडन, डुष्ट दम्न, नरपती ॥ जजियें० ॥३॥ शिव शक्ति साची, रग राची, अज अजाची, योगिनी ॥ मद ऊरन मत्ता तरन तत्ता, धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपति, मन रमति, धवल दति, वरमती ॥ जजियें० ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पव न पानी, मति बखानी, वीजली ॥ गिरवरा गहन, वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हदहाक धारी, हत हजारी, धनुष धारी, जगवती ॥ जजियें० ॥ ५ ॥ ऊणणाट ऊल्लरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिरधर, खज्ञि ये॥धिधिधोंकिधों, गम्दि धिधिक धिरत, धिधिक धोंग म्दी गज्ञियें ॥ ऊाकिडोडों रुरुरु मतिडां त्तत्तकि त्रात्रा दमकती ॥ जजियें० ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि रिमि, ऊिऊिम ऊिमि ऊिमि ठमकि ठम पग रच्चि यें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमञ्ज ति अमग नृत्ति मच्चियें ॥ तत थेइय तांनन, मात मानन, अचल आनन दरसती ॥ जजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, फटिक फालन, गर्व गालन, गजनी ॥ विरदा विदारन, महिष मारन, दलिद्र दारन, नजनी ॥ चरचिये चडी, खलांखरी, मदन मंडी मलकती ॥ नजियें ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक विसन पृष्टक कज्ञिये ॥ मणिमौलि मडित, पढेपंडित, ए अखंडित पेखिये ॥ दयासुर देवी, सुरासेवी, नित नमेवी, जगपती ॥ नजियें० ॥ ए ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ क्रोध मान माया लोजनो ठद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पहेलां सरस्वतीनु लीजे नाम, चोवीश जिननें करु प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोज, तानुं अर्थ करी थिर थोज ॥ क्रोधे तप कीधो [illegible] क्रोधे कर्म घणेरां फले ॥ क्रोधे करणी [illegible] क्रोधे समतारस सूकाय ॥ १ ॥ क्रोध [illegible] नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ [illegible] य मूंफाय, क्रोधे फेर घणेरो थाय ॥ ३ ॥ क्रोधे विकथा वाधे घणी, क्रोधे कर्म [illegible] ॥ क्रोधे वे वधव आंफले, क्रोधे [illegible] ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधे अचकारी नटा, [illegible] टा ॥ क्रोधे अरजुन मालि [illegible] किधो सुठाम ॥ ५ ॥ क्रोधे [illegible] जुकि गति मेलवे ॥ क्रोधे [illegible] क्रोधे [illegible] मेलवे [illegible]

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु थई नणद, सुजद्रासती शिर कीधो फद ॥ ७ ॥ क्रोधे काया कर्मनो वध, क्रोधे घरमा पेसे धध ॥ क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजा य ॥ ८ ॥ क्रोधे कोणिक कटकी करे, जांगी विशा ला पठो फरे ॥ क्रोधे लखमणने वलि राम, क्रोधे रावण टाल्यो ठाम ॥ ए ॥ क्रोधतणी ठे खोटी वात, कोईन करशो एहनी तात ॥ क्रोधे कर्म घणा बधा य, क्रोधे डुर्गति परूवा जाय ॥ १० ॥ तेह जणीसहु ठडो क्रोध, सुख निरवाध लहो वलि वोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मानतजे ते सवख सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरगे चडे, माने मोह जालमा पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने जवुक जव माहे फिरे ॥ शांव प्रद्युम्न कह्यो विचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने वलराजा निरधार, ब्राह्मण रूप धस्यो मोरार ॥ मान गयद तणोठे जोर, वाहुवले ठाड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान तणीठे वधती वेल, माने नमिया डुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चदने कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लछी हाथें चडी,सूरज कुडे कीधो नर फरी॥ माने डुर्योधन डु ख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म वधाये

सदा ॥ माने मान वधतो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने बुरू गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायानो कह विचार, माया नरक तणो छे बार ॥ १९ ॥ मायामोह तणोछे टोप, माया कर्म तणोछे पोप ॥ माया कपटे मल्लिनाथ, माया मोह तणोछे साथ ॥ २० ॥ माया ये कूरू कपट केलवे, माहाये कुमी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठोलवे, माया नरनारी शोपवे ॥ २१ ॥ माया आखारू नृति मुणींद, मायाये लाकु वोहोस्या फद ॥ माया मोहो टो छे मकरद, माया पडिया सूरज चद ॥ २२ ॥ माया फद तणीजे जाल, माया सिद्ध तणीछे फाल ॥ माया अधिक करे उफड, माया कर्म तणोछे कुरू ॥ २३ ॥ माया माहे धर्म न थाय, माया पुण्य करे अनराय ॥ २४ ॥ छोहोटो महोटो माया धरे, माया सबल संसारें फिरे ॥ माया जालें वाध्यो जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो मायानो सार, लोभ तणो हवे कहु विस्तार ॥ लोभे लक्षण जाये सहु, लोभे पमिया दाणव बहु ॥२६॥ लोभे लाभ घणेरो थाय, लोभे नरनारी उजाय ॥ लोभे गांको घेलो होय, लोभे धर्म न जाणे कोय ॥ २७ ॥ लोभे सागर दत्त जलमां पड्यो, लोभ सुभुम चक्रीने

नव्यो ॥ लोभे संचय धननो करे, माखी जिम मद्द आलें फिरे ॥ २८ ॥ लोभे धन नवि खरचे धणी, वागुल जव पामशे कां फणी ॥ लोभे देश विदेशे जाय, लोभे नरनारी अफलाय ॥ २९ ॥ पुण्य होय तो पामे वली, वेगा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लोभनो ठंभोपास, श्रावक धर्म करी उल्लास ॥ ३० ॥ लोभे नाना मोटो जीव, लोभे अकार्य करे सदीव ॥ लोभ तणी गति ठभो सार, तीर्थयात्र करो उदार ॥ ३१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मझार, वागमदेश वडो सुसार॥देवदर्शनकरोसुखकार, पामो जिम भव सायर पार ॥ ३२ ॥ क्रोध मान माया नो संग, वली गाडो लोभ प्रसंग ॥ कहे कवि सुणो पंमित राय, कांतिविजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीमणिभद्रजीनो छंद प्रारंभ ॥

॥ श्री मणिभद्र सदा समरो, उर बीचमें ध्यान अखम धरो ॥ जपिया जय जयकार करो, भजिया सहु नित्य भंमार भरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज लिया, आनंद करे देव आश किया ॥ सौभाग्य वधे जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रभु जश सुगुणो ॥ २ ॥ अरियण सहु अलगा भागे, विरुआवैरी जन पाय लागे ॥ संकट शोक वियोग हरे, उण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ भूत भयंकर सहु भागे, जद्द रोगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायअ

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा पक्षियां गुरुवार दिने, लापसिया लाडु शुद्ध मने ॥ धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य क रो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमे प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोइ मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमे जस कर्यो, गुण सार जिस्यो तमें गुण कस्यो ॥ श्री दी ना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सख रो ॥ ७ ॥ नवियण जे नावे नजशें, कारज सिद्धि आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे डुगणा, किणी वा तें कदि रहें नहि ऊणा ॥ ८ ॥ श्री मणिजद्र मनमें ध्यावो, सुख सपत्ति नहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्त्तिवर आप लहे, शिवकीर्त्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ए ॥

॥ अथश्रीमणिनद्रजीनी आरति प्रारज ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥ हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव जयदेव ॥ १ ॥ तु वीराधिप वीरा, तु वंछित दाता ॥ तुवं० ॥ माता पिता तु सहोदर, छो प्रजु जगत्राता ॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी वधन उदधी, फणिधर अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते नय सघला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ नाक त्रिसुल फूल माला, पासांकुस छाजे ॥ पासा० ॥ एक कर दाणव मस्तक, एम षट् नुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तु

भैरव तु किन्नर, तु जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम कल्पतरु धेनु, तु प्रभु चिरजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥ तपगच्छपति सुरि,ध्यावे तुझ ध्यान ॥ ध्यावे० ॥ मणि जड जडकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥ सवत् अढारहसें पासठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा० ॥ दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥ ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिजडजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) छद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तु कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरूप शक्ति हुई, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरावे जूजुवा पसर्यो तु इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकातरो वेयातेरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरगा, जपता पूरे कोडि उमगा ॥ ते नाम्या जे जालिम जूगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे नृपति सव रका, त्रिभूवनमा वाजे तुज डका ॥ माने नहि तु केहनी शका, तूठो आपे सोवन टका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुष्ट धीठना कधर तोडे, नमीचाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥

आवतो थरहर कपावे, भाद्याने जिम तिम वहकावे पहिलो तु केडमां श्री आवे, सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हु हुकार करावे, पाशलिया हाभा कमनावे ॥ ऊनाटे पण अमल जगावे, तापे पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्त्तिकमा तुज जोरो, हव्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पमावे शोरो, करे सर्व तु तातो तोरो ॥ ९ ॥ तु हाथीनां हाडां नजे, पापीने ताडे करपजे ॥ नक्ति वत्सल नावे जो रजे, तो सेवकने कोय न गजे ॥ १० ॥ फोमक तोमक ममरु माक, सुरपति सरिखा माने हाक ॥ धमके धुसड धासम धाक, चढतो चाले चच ल चाक ॥ ११ ॥ पिशुन पठामण नहींको तोथी, तुज जस नील्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ नक्त थकी एवमीकां खेमो, अवल अमिनां ठांटा रेडो ॥ लाखा नक्तनो ए निवेमो, महाराज मूको मुज केमो ॥ १३ ॥ लाजवसोमा अजया राणी, गुरु आण मानो गुण खाणी ॥ घरे सिधावो करुणा आणी, कहुंछु नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंदजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति वल देही नीरोग, लेहेशे लखमी लीला जोगं॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजे ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आसीजे ॥ अजया

जात श्रढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपतां एहिज जाप, जक्तसु न करे खेटा ॥ उतरें श्रंग चढियो पल कमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरठंद समाप्त ॥ ए ठंद सात वार, श्रथवा एकवीश वार सांजले गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सहु गुरु तणा वचन निशुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा श्रति घणो, जावे वोलु जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोले कोठे लखिये वीश, सघला जय टाले जगदीश ॥ श्रगावीसमां रोग जय हरे, ठत्रीसें स्तुति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वलि सायणि नासति, वत्रीसे सुख प्रसवते हुति ॥ देवध्वजा जो लखिये इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥ ॥ ३ ॥ घर वारणे जो लखिये एह, कामण नव परा जवे तेह ॥ शाकणि सहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥ चालिसे शीस रोग टले, पागे वयरी हेला दले ॥ श्रने वली ठाकरवे बहु मान वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ वासठे वध्या गर्जज धरे, एसा वयण सद्गुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा ठे घणो, मागे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि जय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ वावत्तरीजूल जूरि जेह फूके नर जय पामे ते ह ॥ ७ ॥ पच्चाशी पथे नय हरे, अट्योतरशो शिव सुख करे ॥ वीसोत्तरशो नयणे निरखत, प्रवस वेद न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ वावनशोनो उली नीर, मुख धोवे हुवे वाह्लो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अ नत, तुच्छ बुद्धि किम जाणे जत ॥ ए ॥ एकसो वहु त्तरो यंत्र प्रजाव, वालकने टाले दुष्ट जाव ॥ विहुंसो नो यंत्र लखिये वार, वाणिज्य घणा होय हाट मजा र ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विणठो वाधे नही संदेह ॥ चारशे घर जय नवि होय, कण उत्प त्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्जज धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ उसे यंत्र होये सुख कार, सातसे जगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें पथे न लागे चोर, दशसें दुखन पराजवे घोर ॥ इग्यारसें ठे जे जीव दुष्ट, तेहना जय टाले उत्कृष्ट ॥ १३ ॥ वदि मोक्ष वारसे होय, दश सहसे पुन ते हिजहोय ॥ वली सयलनीरक्षा करे, एमयंत्र तणी महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पच्चाससे राजादिक मान, शाकणि दोष निवारण ग्यान ॥ कठे तथा मस्तक जे धरे, अशुज कर्मते शुद्धज करे ॥ १५ ॥ वावनना नो मस्तके तथा, कठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण यालीस शिर कठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥ ॥ १६ ॥ कुंकुम गोरोचदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अक्षिय विघन सव दूर पलाय ॥ पभित अमर सुंद र इम कहे, पूजे परमारथ सव लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंरू, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामि नी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामि नी मध्ये शोजतांरे, सुपनदेखे वाल ॥ मयगल रूप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इडु दिनकर ध्वजा सुदर, कलश मगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्नो अवार उज्ज्व ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि त, सकल सुख दातार ॥ मगल पहेलु वोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहा, वसुजूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुट क ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंडजूति आदेश्र ठे, त्रण पुत्र तेहने सार॥ यज्ञकर्म तेणे आदस्यु, वहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति हा समोसस्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह नो साजली, लीधो सजमजार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रजूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो जंमार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकडाल नामे मन्त्री सरू ए ॥ लाठलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवतमां शिरोमणि, थूलीजद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजबार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुरू संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल, डग्यो नहीं लवलेश ॥ शुरू शीयल पाले विषय टाले, जगमा जे नर नार॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिजद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंझगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिं हासने ए, वाजित्र कोडाकोड ॥ चार निकायना दे वता, ते सेवे वेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशु रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणे विश्वनायक, शो जे श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वेठीते पर्ष दा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रका र॥दान शीयल तप जावना रे, टाले सघला कर्म ॥ मंगल चोथु बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ४

रवि वार ॥ पवित्र पर्णे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमना जो लखिये यन्त्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुदर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नूपति शोहे क्षत्रियकुंमे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोजतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रुप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंडु दिनकर ध्वजा सुदर, कलश मगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अवार उज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुजूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रजूति आदेश्य ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदस्यु, वहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे तिहां समोसस्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह नो साजली, लीधो सजमजार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥ईन्द्रभूति गुरुभगतें थयो माहा लब्धिनो भमार ॥ मंगल वीजु वोलीये, श्री गोतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नद नरिंदनो पाटली पुरवरें, सकमाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू सतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमा शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ जोग भली पेरें भोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, मुग्यो नही लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमा जे नर नार॥ मगल त्रीजुं वोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप सय घमित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंजगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन ऊगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोमाकोम ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे वेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठ [illegible] चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वना[illegible] भे श्री भगवत ॥ सुरनर किन्नर मानवी[illegible] दा थार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, [illegible] र॥दान शीयल तप भावना रे, टाले [illegible] मगल चोथु वोलीयें, जगमांहे श्री

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यंत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पण्डित अमर सुंदर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप नने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेश्य ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदस्यु, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणे समे तिहां समोसस्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह नो सांभली, लीधो संजमभार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रजूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो जंकार ॥ मंगल वीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरे, सकडाल नामे मंत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू सतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीजद्र जग विख्यात ॥ मोह वशे वेश्या मदिर, वस्या वर्षेजवार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु ससार ॥ शुद्ध सजम पामी विपय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, डग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विपय टाले, जगमां जे नर नार॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिजद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेजगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडाकोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे वेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठ..., चोत्रीश अतिशयवत ॥ समवसरण विश्वनायक ...जे श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, ... पर्षदा वार ॥ उपदेश दे अरिहतजी, धर्म... प्रकार॥दान शीयल तप जावना रे, टाळे ...ना कर्म ॥ मंगल चोथु बोलीये, जगमां ... जिनधर्म

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुण्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पण्डित अमर सुद र इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामि नी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामि नी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप भने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इन्दु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्व ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि त, सकल सुख दातार ॥ मगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहा, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुट क ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेश्य ठे, त्रण पुत्र तेहने सार॥ यज्ञकर्म तेणे आदर्यु, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति हा समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश ते नो सांभली, लीधो संजमभार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रजूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो जमार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गोतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नद नरिंदनो पाम्ली पुरवरें, सकमाल नामें मत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू सतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीजद्र जग विख्यात ॥ मोह् वशे वेश्या मंदिर, वस्या बर्पेजबार ॥ जोग जली पेरे जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध सजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल, कग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार॥ मंगल त्रीजु बोलीए, श्रीथूलिजद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घम्ति अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंजगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोहित, मध्य सिंहासन ऊगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिं हासने ए, वाजित्र कोमाकोम ॥ चार निकायनो देवता, ते सेवे बेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठगुहे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक शोजे श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, बेठी पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना च्यार प्रकार॥दान शीयल तप जावना रे, टाले सघलां कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीय, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ४ ॥

चार मंगल गावशेजे, प्रनातें धरी प्रेम ॥ ते कोमि मगल पामशे, उदयरत्न नांखेएम ॥ ४ ॥

॥ अथ नीडनजन पार्श्वनाथनो छद ॥

॥ फूलणा छद प्रनाती ॥ नीमननजन प्रनु नीम नजन सदा, नहिकदा निष्फल थायसेवा ॥ नविजन नावशुं नजन मांही नजे, परमपद सपदा तखत लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो, वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे खेटकपुरतपे, कल्पनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥ नीम नव जित्तिनय नावठ नजणो, नक्ति जनरज णोनावे नेट्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिद्धां सवे, मोह राजाननो मान मेट्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन कामना सुजस घह गमना, शिव सुख वामना आज साध्या ॥ मगल मालिका आज दीपालिका, मुज मन मंदिरें मोजे वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें गठमें कान्ति वद आलमे, सतर अठ्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज दासनो एह अरदास सुणि,हितधरी नाथजी हाथ सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रनात छद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणो न डार ॥ समरे वठित सुख दातार [illegible] जयो गौतम गणधार ॥ १ ॥ वीरवजी[illegible] मुनि शिर दार ॥ ज[illegible]

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोमि विस्तार ॥ जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोमा पायक नहींपार, सुखासन पालखी उदार ॥ वेरी विकट थाये विसराल ॥ जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उठी जपिये गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चंद गुरु केरो शिष्य, गौतम गुरू प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चंद ए शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाण, जसु जस वास जगत परिमाण ॥ सकल देव शिरमुगट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंग ॥ १ ॥ पाऊधी छंद ॥ जो जन मन रंग, अकल अजंग, तेज तुरंग नीलंग ॥ सवि शोजा संग, दग्ध अनंग, शिश भुजंग चतुरंग ॥ बहु पुण्य प्रसंग, नित्य उठरंग, नव नव रंग नारंग ॥ कीरति जलगंग, देश कुरंगं, सुरपति संगं सारंग ॥ १ ॥ सारंगा वक्र, पुण्य पवित्र, रुचिर चरित्र जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्र, पंकज पत्र, निर्मल नेत्र सावित्र ॥ जग जीवन मित्र, तरु सत सत्र, मित्रामित्र मावित्र ॥ विश्वत्रय चित्र, चामर छत्र, सीस धरित्र पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा चरण, त्रिभुवन सरण मुगुटा चरण आचरणं ॥ सुर

अर्चित चरण, शिव सुख करण, दारिद्र हरणं, आवरण ॥ सुख संपत्ति भरण भवजल तरणं, अघ संहरण, जरूरण ॥ गोअमृत झरण, जन मन हर ण, वरणावरण आदरण ॥ ३ ॥ आदरणा पाल, झाकझमाल, नित भूपाल अयुपालं ॥ अष्टमी शशि समभाल, देव दयाल, चैतन चाल सुकमालं ॥ त्रिभु वन रखवाल, महाडुकाल, महाविकराल, भय टाल ॥ श्रृंगार रसाल, मदकेमाल, हृदयविशाल भूपाल ॥ ४ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ अकल रूप उदा र, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप, डुरिय डुह डु ख निवारक ॥ चिहु दिश आण अखरू, चरू तप तेज दिणंदह ॥ अमर अपछर कोडि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे जिनवर जयो श्रीपार्श्वनाथ त्रिभुवन तिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिंग गोडी धणी, सेवक जन साधार ॥ पंचम आरे पेखिये, साहिब जग आ धार ॥ १ ॥ भुजंग प्रयात वृत्त ॥ तजोमान माया भजो भाव आणी, वामानंदनें सेविये सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथ ध्याने, पाम्या शक्रनी संप दा बोधि दाने ॥ २ ॥ वश्या पाटणे काल केतो धरामा, पधार्या पछे प्रेमशुं पार करमां ॥ यशीमा

वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कव्वान रंगे, ॥ जिसी गातनी, रातनी नील अंगे ॥ चडी नीलके तेजीयें विघ्न वारे, अराध्या थका पथ जूला सधारे ॥ ४ ॥ जेणे पाशगोनी तणा पाय पूज्या, शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थयां आज ठोटां, प्रजु पार्श्वना एक प्राक्रम मोहो टां ॥ ५ ॥ गोनी आप जोरे नव खंम गाजे, जेह थी शाकिनी डाकिनी दूर जाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व गोडी प्रसिद्धो, हेवां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा छुष्ट छुर्दंत जे जूत जूंडा, प्रजु नाम पामें सर्वत्रास गुंना, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे, आरध्यो सदा सपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न जांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी छुखनी जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो ढद ॥

॥ श्री सुमति दायक, छुरित घायक, ज्ञान अनु जव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमु, जुग म कर जोडी करी ॥ १ ॥ वहु जाव जक्तें, थुणु जिनवर, चोत्रीसें अतिशये करी ॥ जे सुगुरु मुख थी, सुण्यांते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥ तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

कहु सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय डे धरियें, जिम आपद संकट उद्धरिये ॥ १ ॥ पर चात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें गमो ॥ जगवंत सदा चरणां जजियें, कुलरीति कदू कबु ना तजियें ॥ २ ॥ लक्ष्मियें नहि मायनें बापथकी, वढिये नहि कोयथी बाधि जकी ॥ विशवास न कीजे नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान जणो ॥ ॥ ३ ॥ दरबार अखिकन ना जरिये, घरजीतर अक्षर नहि लखियें ॥ रसिये नहि चारुपम्मोस सदा, तरियें नहि नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू विधिसें करियें, ठग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर देशमा गांफिल नां फरियें, नरपति थकी डरता रहि ये ॥ ५ ॥ जुगटा व्यसनी परि ना रमियें, ऋषि साध अनाथकु ना दमियें ॥ करियें नहि आल अगन्नी तणी, वलि दीजियें सीख सुमित्त जणी ॥ ६ ॥ गुरु आसन उपरि ना धसियें, डुर्जनसें सगति ना वसि यें ॥ वलि धीज न कीजिये कुठ किसी, घणीवार न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणा मुख बोलह ते पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलिये ॥ परनारिनी सगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य जजो ॥ ८ ॥ सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम त्रोटकनामक छंद करो ॥ ए ॥ इति शिखामण छंद

॥ अथ श्रीअतरिक पार्श्वनाथ छद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरु नाम मीठु, त्रिहु लोकमां एटलु सार दीठु ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीठु, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठू ॥ १ ॥ मन तुझ पासे वसे रात दीसें, मुखपकज निरखवा हंस हींसे ॥ धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, भली भक्ति भावे करीवीनवीसे ॥२॥ अहो एह ससार छे दु ख दोरी, इद्रजालमां चित्त लागु ठगोरी ॥ प्रभु मानिये विनती एक मोरी, मुझ तार तु तार बलिहारि तोरी ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जजालमा मन्न मोह्यो, घडी याळमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम ससारमा जन्म खोयों, अहो घृत तणे कारणें जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो भमरलो केसुआ भ्रांति धायो, जई शुक तणी चचुमाहे भरायो॥ शुके जबु जाणी गळ्यो दु ख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥ भम्यो भर्म्मे भूलो रम्यो कर्म्मभारी, दयाधर्म्मनी शर्म्म मे न विचारी ॥ तोरी नम्मवाणी परम सुख कारी, त्रिहु लोकना नाथ मे न सभारी ॥ ६ ॥ विषय वेलडी सेलडी करिय जाणी,भजी मोह तृष्णा तजी तुझ वाणी ॥ एहवो भलो भूडो निज दास जाणी, प्रभु राखिये बांहिनी छांहि प्राणी ॥७॥ माहारा विविध अपराधनी कोडि सहीयें, प्रभु शरण आव्या तणी लाज वहीये ॥ बली घणी घणी वीएतिन

न कहीये, मुक मानसरे परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी गाईये ॥ अति नक्ति नावे विपति नावे, परम सपद पाईये ॥ प्रनु महिम सागर गुण विरागर, पास अत रिक जे स्तवे ॥ तस सकल मगल जय जयारव, आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शातिजिन विनतिरूप ढव ॥

॥ शारद माय नमु शिर नामि ॥ हुं गाउ त्रिभुव नको स्वामी ॥ शाति शाति जपे जो कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शाति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अनिराम ॥ शाति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्ने थकी प्रनु मारि निवारी, शातिजी नाम दियो हित कारी ॥ जे नर शाति तणा गुणगावे, रुधि अचि ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकू प्रनु शाति सहाइ, ता नरकू क्या आरति थाइ ॥ जो कछु वछे सोई पूरे, दारिद्र ङुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अतरके प्रनु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्यु नवि जाय, कहेता मोमन अच रिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सवही हथियारा, जीत्या मोह तणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवशु रग राचे, राज तज्यु पण साहेव साचे ॥ ६ ॥ महा वलवत कहिजें देवा, कायर कुथु न एक हणेवा ॥

ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजे, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककू सम भायक, पण सेवकहीकू सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह भये जगनायक, नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे, नामदेव अरिहत भणीजे ॥ सयल जीव हितवंत कहीजे, सेवक आणी महापद दीजें ॥ ए ॥ सायर जेसा होत गंभीरा, दूषण एक न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवभुलय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजे, भिक्षु भये त्रिगको सेवीजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सबेंको मूल खणीजे ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछी घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवत भगवंत कहावे, न काहूकू शीश नमावे ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पण सोवनपद पकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहि पण सेवक तारे, द्वेप नहीं निगुणा सग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ

चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुनको पार न लहीये ॥ तु प्रज्ञु समरथ साहेव मोरा, हु मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तु रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हू रे अनाथ तु ठे दयाल ॥ तु शरणागत राखणधीरा, तु प्रज्ञु तारक ठोवरू वीरा ॥ १८ ॥ तुहि समोवरू जागज्यु पायो,तोमेरो काज चड्यो रे सवायो कर जोडी प्रज्ञु विनवू तोसु, करो कृपा जिनवरजी मोसु ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोप निवारो जव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हम्मिणाउरमरून सोहे, तिहा प्रज्ञु शाति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया,श्री गुणसागरके मन जाया ॥जेनरनारी एक चित्ते गावे, ते मनोवंछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥इति॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो ठद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगन ॥ जिनशासन मडन स्वामि जयो, तुम दरिसन देखी अनद जयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलां वर जानुनिज, नव हस्तशरीर हरितप्रतिज ॥ धर णेंड सुसेवित पादयुग, जर जासुरकांति सदा सुजग ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रजपति, वदनो द्युति शा रद सोमतति ॥ नयनाम्बुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निज नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कद समान सदा ... अनार कली सुखदा ॥ अ धरारुण ... जय शखपुरा जिध पार्श्व

जिन ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल गाजे, नित्य पच शब्द वाजा वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुऊ सेवे चोशठ इन्द्र सदा, तुऊ नामे नावे कष्ट कदा ॥ ॥ ६ ॥ जे सेवे तुऊने नाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अऊयडियां तु आधार कह्यो, समरथ साहिब में आज लह्यो ॥७॥ डुखीयाने सुखकां तुं दाखे, अशरणने शरणे तु राखे ॥ तुऊ नामे सकट विकट टले, वीठमीया वाला आवि मले ॥ ७ नट विट लंपट दूरे नासे, तुऊ नामे चोरचरम त्रासे ॥ रण राउल जय तुऊ नाम थकी, सघले आगल तुऊ सेवथकी ॥ ए ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध वधन नय सघलां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ नूत प्रेत पिशाच ठली न शके, जगदीश तवाजिध जाप थके ॥ महोटा जोटिग रहे दूरे, दैत्यादिकना तु मद चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, नगवंत नयां तुऊ नजनथकी ॥ कपटी तुऊ नाम लीया कपे, डुर्जन मुखथी जीजी जपे ॥ १२ ॥ मानी मठ राला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ डुर्मुख डुष्टादिक तुही दमे, तुऊ जापे महोटा म्लेछ नमे ॥ १३ ॥ तुऊ नामें माने नृप सवाला तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चन्द्रकला ॥ तुझ नामें पामे ऋद्धि घ णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं तामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुझ ना मे ॥ जन पद ठकुराइ तु आपे, दुर्जन जनना दारि द्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तु धनवंत करे, तूठो को ठार जमार जरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा णक मोती रत्न जड्या, सोवन जूषण बहु सुघम्‌ घ ड्या ॥ वली पेहेरण नवरग वेश घणा, तुम नामें नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुद्ध नवि ताकि सके, वली चाम्‌ चुगल मनथी चमके ॥ ठल ठिद्र कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुझ ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखमी पण को नवि फरके ॥ लूटा दिक सहु नासी जाए, मा रग तुझ जपता जय थाए ॥ १९ ॥ जम्‌ मूरख जे मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुझ समरणथी म्हाह्या थाये, पन्डित पद पामी पूजाये ॥ २० ॥ खस खाशि खयन पीडा नासे, डुर्बल मुख दीनपणु त्रासे ॥ गम्‌ गुबम्‌ कुष्ट जिके सबला, तुज जापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिरा य जिके, तुझ ध्याने गतडुख थाय तिके ॥ तनु कां ति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशु नवनिधिसधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सय, जल जल

ण जलोदर भ्रष्ट जय ॥ रायणी पमुहा सवि जाय टली, तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीँअर्हँ श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां दुष्ट दमो ॥ चिंता मणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धें जे आराधे, तस जश कीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंतामणि तुझ लाधे ॥ २५ ॥ मद मछर मनथी दूर तजे, जगवंत जली परें जेहजजे ॥ तसघर कमला कल्लोल करे वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥ जय वारक तारक तु त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तु स्वामी; शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपु ताहारो, ॥ सेवकशु परम कृपा करजो, वालेसर वंछित फल देजो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति अति मोहन गारी ॥ गुज्जर जनपद मांहे राजे, त्रिभुवन ठकुराइ तुझ छाजे ॥ २९ ॥ इम जाव जले जिनवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि संवछर रंगे, जयदेवसूरिमहा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय शखपुराजिध पार्श्व प्रजो, सकलार्थ समीहित देहि विजो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इछ स्तुत सकलकामितसिद्धिदाता, यद्वाधिराजनत

शखपुराधि राज ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि पकजसुप्र सादात्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रसन्न. ॥३१॥ ॥ ॥ सरसति संपति दिय्यो मुजसदा ॥ अविय विघननविआवेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्रमराय ॥ सत्रापूरीनें वेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सन्नामां हिजा ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनिश्चर अ तिक्रूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेंरुड ॥ २ ॥ निजदृष्टि शनिसर पागलो ॥ पितासारथी तुमेसात्रलो ॥ राजा विक्रमवोलेइस्यु ॥ इणेराकयापडे चाले किस्यु ॥ ३ ॥ इणे अवसर सनीसरठे जव ॥ अवधी ज्ञाने जोवे तव ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी राय प्रते नणे ॥४॥ सांजल राजा माहराकाम ॥ हुरुठो टालु तुज गांम ॥ विहृतो विक्रम वोले वाण ॥ समजो जे वोल्यु अज्ञान ॥ पुजी प्रणमी शनीस्वर पाय ॥ सतो ष्यो निज थानक जाय ॥ पिण सका मनमांहि पयठ ॥ केतेक काले शनिस्वर वेठ ६ निसदिन वीहृतो जेहने नाम ॥ ते लाग्यो मुजशनीस्वर स्वांम ॥ तेम्री मत्रीने आपेंराज ॥ मे जावु पर देसे आज ॥ ७ ॥ सुपीराज गयो परदेस ॥ चंपा नयरी करे प्रवेस॥श्रीपतीने हाटे जइ वेठ ॥ तव तस नयणें अमीय पयठ ॥ ८ ॥ सेठ ने हाटठे वस्तु अनेक ॥ थोमीवेला माहि वेची ठेक ॥ नाग्यवत नर जाण्यो जाम ॥ जिमवाने घर लाव्यो ताम ॥९॥ नोजन नक्ती नली साचवे ॥ सुख सज्याइ

सुवापाठवे ॥ पासे जीतठे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥ नाहितव श्रीपति कुमरी ॥ हारघोरुदे मुकेजांम ॥ इणे अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज जवेपी विक्रम राय ॥ चपा नगरी वेगेठाय ॥ सुख शज्या सुतो रगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडु करी ॥ १२ ॥ शनी संक्रम्यो हंस मुझार ॥ चुणी हारने वेगेठार ॥ तेदेषीने बीहनो राय ॥ कलक जणीते नाठेजाय ॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥ नवि देखे एकाव लहार ॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव ऊा व्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी ते ठेद्या हाथ ॥ चउटे पमीउं तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसे ॥ काली हाथने आण्यो तिसे ॥ १५ ॥ काष्टतणा तव कर जोरुवे ॥ वलीवेगे घाणी फेरवे ॥ खायखोलने तेल रोटला ॥ ठत्रीस राग करे तिहां जला ॥ १६ ॥ दुःख वीसरीउं नी जघरतणो ॥ सरलें सादे गावेघणो ॥ नरपति पुत्री मंदिर पास ॥ सुणी साद जोवा थइ आस ॥ १७ ॥ तव तिहांथी दासीनें कहे ॥ घाची घरपुरुप जे रहे ॥ वेगे तेनी तेह ने लाव्य ॥ आवे घाची घर तव धाव ॥ १८ ॥ तेह पुरुष लावे सापास ॥ तव उतरीउं शनिशरतास ॥ अद्भूत रूप देखी अतिघणु ॥ वचन कहे तव वरवा तणु ॥ १९ ॥ कहे विक्रम कर माहरे नथी ॥ नवी परणांए मे तेहथी ॥ ऋमी मंत्र कुयरीयें साधीउं ॥ सोवर मागीते कर लीउं ॥

॥२०॥ ठानो परण्यो विक्रम राय ॥ केतलेकाले जाणे माय ॥ प्रगट परणावि तव पुत्रीका॥श्रीपती शेटी पञ्या तत्र तिका ॥ २१ ॥ नरपतीनां प्रणमी त्यांपाय ॥ श्रीपती निजघर लेई जाय॥असन पान करी राजा सुख॥सेठ सहित नृप चित्रामण जुवे ॥२२॥ वोल्यावरस जव साढासात ॥ अविलोके शनी नृपनीवात ॥ आवी हंस मध्ये संक्रमी ॥ हार घोफले मुक्यो वमी ॥२३॥ अढी संवछर मस्तक रहे ॥ अढी नाभि जोतीषीया कहे ॥ अढी सवत्सर चरणे वास॥हुर्ड सनी सर त्रीजो तास॥ ॥२४॥ जन्मद्वितिय चोथो आठमो ॥ द्वादसमो शनी सरवडो ॥ एह कथा सांजलस्ये जेह ॥ कुन्न रास फल पामे तेह ॥ २५ ॥ तेहने तुपीडेनहीं कदा ॥ ए वर आपो शनिसर सदा ॥ वर देई शनी थानकें गयो॥ हर्ष्योराय उजेणी गयो ॥ २७ ॥ चाल्यो चतुरगसे नाकरी ॥ आव्यो जिहा उजेणी पुरी ॥ निज भुवने विक्रम आवीउं ॥ अखिल लोक वधावो दिउं ॥२८॥ सिद्धसेन गुरु वचने करी॥ लह्यो धर्म समकित आद री॥महाकाल तिरथ उद्धरी॥पर दुःखटालण दानेश्वरी ॥ २९ ॥ सुखे समाधे पालेराज ॥ लहि समकित नर सारे काज॥ निरयावली उपांगे कह्यो ॥ एका वतारी शनि सर लह्यो ॥ ३० ॥ एह कथा छे शनीस्वर तणी ॥ पीका नकरे चोपई जणी ॥ सुख सपति ते सघर्लः लहे ॥ पन्डित ललित सागर इम कहे ॥३१॥

॥ एकादश गणधरना नाम, प्रह ऊठीनें करुं प्रणाम ॥ इंद्रभूति पहेलो ते जाण, अग्निभूति वीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुभूति त्रिजो जग सार, गण धर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मंडित नामें छठो धार ॥ २ ॥ मोर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमांहे जे पर धान, अचल भ्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥ नामथ की होय कोडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय, सुखसंपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार, गुणमणि रयण तणा भंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ गौतमप्रभातिस्तवनं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशु जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वशवेलें ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुभूपति नदन विश्वजन वंदन, दुरित निकदन नाम जेहनु ॥ अभेद बुद्धें करी भविजन जे भजे, पूर्ण पोहोचे सहि भाग्य तेहनु ॥ मा०॥२॥ सुरमणि जेह चितामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥ तेह गौतमनु ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केनु ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया वीजे करी, स्वमुखें गौतमनाम

ध्याये ॥ कोमि मनकामना सफल वेगे फले, विघ न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान वल तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंरू प्रचरू प्रताप होय अवनिमा, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधिउपाधिने व्याधि नासे ॥ नूत नां प्रेतना जोर नाजे वली, गौतमनाम जपता उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ, पन्नरसें त्रणने दीरकदीधी ॥ अठमनें पारणे तापस कारणे, क्षीरलब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ वरस पचास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ वार वरसां लगे केवल नोगव्यु, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धि ने सेद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ ॐयह अक्षर सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरुप नगवान शिव सिरसा वदू सोय ॥ १ ॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमीये सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखलेय उपाय ॥ २ ॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट माहिं, रमता रामपिठानके, शिव सुख ले क्युं नाहि ॥३॥ शिवमंदिरकी चाह धर, अथिर अध तजि दूर ॥

लपट रह्यो क्या कीचमे, अशुचि जिहां नरपूर ॥ ४ ॥ धधाहीमे पचरह्यो ॥ आरनकीए अपार॥उठ चलेगो एकलो, शिरपर रहेंगो नार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन देतधन, वहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल पिण वहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम परहित आपकु, क्या परकु उपदेश, निज आतम समज्यो नही, किनो वहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही में समझलें, क्या वहुत पढेसो ग्रथ ॥ उपशम विवेक सवर लहें, याको शिव पुर पथ ॥ ८ ॥ इति नितिं याथे गई, प्रगट नई सवरीत॥गीत मार्ग पेदाकीउ गाउ तिनके गीत ॥ए॥ उदय नएरविके जसा,जावे सव अंधार ॥ त्योंसद गुरुकें वचनथें, मिटे मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत वीज सुखेतमे, जसा सुजल संयोग॥त्योंसद गुरुके वचनथें, उपजत वोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह॥ दोपरोग जामें नही, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए विपम गति कर्मकी, लिखी नकाहु जात ॥ रकनथें राजाकरें, राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उस विडु कुशअ ग्रयें, परत नलग्गे वार, आयु अथिर तेंसे जसा, कर कवु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपध न मिलें मीत्त ज्यु जायें मरें न कोय ॥ करउंपध एक धर्मको, जसा अमर तु होय ॥ १५ ॥ अध पगु ज्यो एक हे, जरे न पावक माहि ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जसा

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही॥ मरें अमर सुर राज॥गढ मढ मंदिर ढह परे, अमर सुजस जस राज ॥ १७ ॥ कंचनसें पीतर गहे, मूरख मुढ गिमार॥ तजे धर्म्म मिथ्यामती, भजे अधर्म असार ॥ १८ ॥ खल संगति तजियें जसा, विद्या सोभित तोय॥ पन्नग मणि संयुक्तसो॥ क्यों न भय कर होय ॥ १९ ॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहे बहुत अवाज॥ तनक न वरसे दान र्‍यों, कृपण नदे जसराज ॥ २० ॥ घरटी के दो पुड विचे, कण चूरण ज्यों होय॥त्यों दो नारी विच पोव्यो, नर उगरें न कोय॥२१॥ नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार॥ताको संगन कीजीइ, पर हरीइ निरधार ॥ २२ ॥ चपला कमला जानकें, कतु खरचो कतु खाउ॥इकदिन जोइ सुवो जसा॥ लावा करकें पाउ ॥२३॥ ठलकर वलकर बुधिकर, करकें जसा उपाय॥आतम वसकर आपनो दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सब युगवस कीउ किसीन राखीमांम॥ तासों जो न्याराहे, ताको जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ फाजी वात न कीजीड,थोडा हीमें आनि॥ जसा बरावर लेखवो, आप प्रानपर प्रान ॥ २६ ॥ नग डुहिता पति आभरण॥ ताको अरि जसराज ॥ तसपति नारी विनु पुरुष ॥ नवधे सोभा लाज ॥२७॥ टाणा टुणा ठोरदे, याथें न सरें काज॥ चोखे चित जिन धर्मकर, ज्यू काजसरे जसराज

॥ २८॥ ठगसो जो पर मनठगे, पर उपजावे रीक्त॥ जासकरें वस जगतको॥ साचा ठग सोईज ॥२९॥ झूरे कहा जस राज कहें,जो अपने मन साच॥छिण मे परगट होयगा, ज्यों प्रगटायो काच ॥ ३० ॥ ढहे कोट अग्यांनका,गोलाग्यांन लगाय॥मोहरायको मार लें, जसा लगें सब पाय ॥ ३१ ॥ नदी नखीनारी तणो॥नागन कुल जसराज॥नरस्त्री नरपति निर्गुणिन, आठे करें अकाज ॥ ३२ ॥ तारे ज्यों नरको जसा नर सायरमें पोत ॥ त्यों गुरु तारें नव जलधि॥ करें ग्यान उद्योत ॥ ३३॥ थोन्न लोजनहि जीउको, जो लाख कोटिधन होत॥समता जो आवे जसा,सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस, जसाजमे धन काज॥प्रापति विना नपाईये, कोन्हि करो सुउपाय ॥ ३५ ॥ धन पाया खाया नही, दीयान्नि कबु नाहिं,सो वागुरी होयें धनमे जसा,ढुढतहै धन मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक खारो नीर॥नीच मीत जसराज कहें, पांचो दहे शरीर ॥३७॥ पर उपगारी जगतमे ॥ अलप पुरुष जसराज, सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥ ३८॥ फोज दिसो दिस मिल गई, जसा घुरे निसाण॥क्रुके सन मुख जायने, सूरगणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ बुब परे सब दोर हे, लेले आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर हे जसा, जब जाचे कोय अनाथ ॥ ४० ॥

भगति भली भगवतकी, सगति भली सुसाध ॥ उंर नकी संगति जसा, आगे पोहोर उपाध ॥ ४१॥ मूर ख मरण न देखकें, करत वहुत आरंभ ॥ सात विसन सेवें जसा, करे धर्म विच दंभ ॥४२॥ याग करें प्राणी हणें,जापे धर्म उलंठ॥देखोग्यान विचारकें, क्यों पावे वैकुंठ ॥ ४३ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोगी अवधूत ॥ शिव नगरी पावे जसा, कर एसी कर तूत ॥४४॥ लहेणा देणा कछु नही, मुदकि मिठी वात ॥ हृदय कपट धर हे जसा, ताके शिरपर लात ॥ ४५ ॥ वरसे वारधि अहोनिसें, खारखतीनुपान॥भाग्य विना पावें नही, याचक दाता दान ॥४६॥ शखसरीखा ऊजला, नर फूटरा फरक ॥ जसा न सोभे दान विण, तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥ परोपथ हे सूरको, रणवि च मुड विहंड ॥ पाठा पाउ धरेनही, जो होई शतखड ॥४८॥सायर मोती नीपजे, हीरा हीरा खांण॥ ग्यान ध्यान त्या नीपजे, जसा सुगुरुकी वांण ॥ ४९ ॥ हस्त को मडण दानहें,घर मंमण वर नार॥ कुल मंडण अग ज जसा, धन मडण ससार ॥ ५०॥ लठन निसपति श्यामरुचि, सूरज लठन ताप ॥ दाता लंठन धनवि ना, सवहु देत सराप ॥ ५१ ॥ क्षात दात समतार ती,हणे नही पट काय॥ जसा ग्यांन किरिया गमन, सो साधु कहेवाय ॥ ५२ ॥ सतरसे तीसे समे, नव मी शुकल आपाढ ॥ दोधक वावनी जसमुनी, पुरन करी आगध ॥ इति षष्टम परिछेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिछेद प्रारंन ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रें

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण । नमो आय रियाण । नमो उवझायाण । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पच नमुक्कारो सव्व पाव पणा सणो । मंगलाण च सव्वेसि । पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिन्नते ॥

॥ करेमि नंते सामाइय । सव्व सावज्ज जोगं पच्च स्कामि । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेण । मणेण वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करत्तपि अन्नं न समणुज्जाणामि । तस्स नते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्ग । जो मे देवसिर्ज अइयारो कर्ज । काइर्ज वाइर्ज माणसिर्ज । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । डुफार्ज । डुवि चिंतिर्ज । अणायारो । अणिछियव्वो । असमण पाउ ग्गो । नाणे दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिएहं गुत्तीणं । चउएहं कसायाण । पचएहं मह व्वयाण । ठएह जीव निकायाण । सत्तएहं पिंडेसणाण । अठ एहं पवयण माउण । नवएहं वज्नचेरगुत्तीण । दस विहे समण धम्मे । समणाण जोगाण । ज खमिय जं विराहिय । तस्स मिछामिडुक्कमं ॥

इच्छाकारेण संदिसह जगवन् देवसियआलोउं। जो मे देवसिउ अइ यारो कउ ॥ शेष उपर प्रमाणे ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ। जो मे देवसिउं अइयारो कउं ॥ शेष उपर प्रमाणे

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ गणे कमणे चंकमणे। आउत्ते अणाउत्ते। हरियकाय सघट्टे। वीयकाय संघट्टे। त्रसकाय संघट्टे। थावरकाय सघट्टे। उप्पइसघट्टे। गणाउं गण सकामीया। देहरे गोचरी मार्गे जातां आवतां स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, दिवस माहि चार वार सकाय सात वार चैत्यवंदन कीधां नहिं, प्रतिलेखण आघी पाछी जणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं, गौचरीतणा दोष उपजता जोया नहीं, पाच दोष मरुलितणा टाल्या नहीं, मात्रु अणपुजे लीधु, अणपूजी जूमिकायें परठव्यु, देहरा उपाश्रयमाहिपेसता निसरतां निसिही आव स्सही कहेवी विसारी, जिनजुवने चोराशी आशा तना, गुरु प्रतें तेत्रिश आशातना, अनेरु जे काइ दिवस सबधीउ पापदोष लाग्यु होय ते सवीहु मने वचने कायाए करीने तस्स मिछामि डुक्कड ॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। सथाराउहणकी। परियट्टणकी। आउंटणकी।

पसारणकी । ठप्पिय संघट्टणकी । संथारो ऊत्तरपट्टो टाली अधिकु उपगरण घाल्यु, अणपडि लेह्यु हला व्यु, मात्रु अणपडिलेह्युं लीधुं, अणपुंजी नूमिए पर ठव्यु, परठवतां अणुजाणह जस्सगो कीधो नही, परठव्या पुठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नही, सथार पोरसी नणत्री विसारी, पोरसी नणाव्या विना सुता, कुस्वप्न लाधुं सुपनातरमांहि शिलनी वि राधना हुइ, आहट्ट दोहट्ट चितव्युं, संकल्प विकल्प कीधो, रात्रीसंबधीउं जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि नते सामाइ अ० ॥ चत्तारि मगल० ॥ अरिहंता मगल । सिद्धा मगल । साहु मगल । केवली पन्नतो धम्मं मगल ॥ चत्तारी सरणं पवज्जामि। अरिहंते सरण पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरण पवज्जामि । केवली पन्नत्तोधम्मो सरण पवज्जामि॥चत्तारी लोगुत्तमा अरि हंता लोगुत्तमा।सिद्धा लोगुत्तमा। साहु लोगुत्तमा केव ली पन्नत्तो। धम्मो लोगुत्तमो॥इछामि पडिक्कमिउ जो मे देवसिउं० । इछामि पडिक्कमिउ । इरिआवहिआए० । इछामि पडिक्कमिउ ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसि ज्जाए ॥ सथारा उव्वट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउ टण पसारणाए । छप्पइया सघट्टणाए ॥ कुइए ।

कक्कराइए छीए । जंभाइए ॥ आमोसे ॥ ससरक्खा
मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इत्थी
विप्परिआसिआए । दिट्ठी विप्परिआसिआए । मण
विप्परिआसिआए । पाणभोअणविप्परिआसिआए।
जो मे देवसिउ अइआरो कउ । तस्स मिछामि डुक्कडं॥
पडिक्कमामि गोअचरिआए ॥ भिक्खायरिआए॥उग्घा
डकवाड उग्घाडणाए । साणावछादारा संघट्टणाए॥
मंडिपाहुडिआए ॥ बलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु
डिआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे
सणाए ॥ पाणभोअणाए ॥ वीअभोअणाए ॥ हरि
अभोअणाए ॥ पछेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥
अदिट्ठहडाए ॥ दगससट्ठहडाए रयसंसट्ठहडाए ॥
पारिसाडणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण
भिक्खाए ॥ ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए ॥ अपरि
सुद्ध पडिगाहिअ ॥ परिभुत्त वा ॥ जं न परिठविअ
तस्स मिछामि डुक्कड ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं
सझा यस्स अकरणयाए ॥ उभउकाल भंडोव
गरणस्स अप्पडिलेहणाए ॥ डुप्पडिलेहणाए ॥ अ
प्पमज्जणाए ॥ डुप्पमज्जणाए ॥ अइक्कमे ॥ वइक्क
मे । अइआरे ॥ अणायारे ॥ जो मे देविसिउ अइ
यारो कउ ॥ तस्स [illegible] पडिक्कमामि
एगविहे असजमे ॥ [illegible] बंधणे
हिं । राग बंधणेण ॥

मामि तिहिं दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेण । कायद डेण ॥ पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मनगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पडिक्कमामि तिहिं सल्ले हिं ॥ माया सल्लेणं ॥ निआण सल्लेण ॥ मिछादंस ण सल्लेण ॥ पडि० ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इड्ढी गार वेणं । रसगारवेण ॥ साया गारवेण ॥ पडि० ॥ तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए दंसण विरा हणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पडि०॥चउहिं कसा एहिं ॥ कोह कसाएण ॥ माण कसाएण ॥ माया कसाएणं ॥ लोज कसाएणं ॥ पडि० ॥ चउहिं सन्ना हिं ॥ आहार सन्नाए ॥ जय सन्नाए ॥ मेहुण सन्ना ए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पडि० ॥ चउहिं विकहा हिं ॥ इछिकहाए ॥ जत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ राय कहाए ॥ पडि० ॥ चउहिं झाणेहिं ॥ अट्टेण झाणेण॥ रुद्देणं झाणेण ॥ धम्मेण झाणेण ॥ सुक्केण झाणेण॥४॥ ॥ प० ॥ पचहिं किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिग रणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणा इवाय किरिआए ॥ प० ॥ पचहिं कामगुणेहिं ॥ ॥ सद्देण ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गधेण ॥ फासेण ॥ ॥ प० ॥ पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउ वेरमण ॥ मुसावायाउ वेरमण ॥ अदिन्नादाणाउ वेरमण ॥ मेहु णाउ वेरमण ॥ परिग्गहाउ वेरमण ॥ प० ॥ पचहिं समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ जासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणभंमतनिक्खेवणा समिइए ॥ उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारिठ्ठावणिआ समिइए ॥५॥ प० ॥ छहिं जीवनिकाएहिं॥पुढविकाएण ॥ आउकाएण ॥ तेउकाएण ॥ वाउकाएण ॥ वणस्सइकाएण तसकाएण ॥ प० ॥ छहिं लेसाहिं ॥ किण्हलेसाए ॥नील लेसाए॥काउ लेसाए॥तेउलेसाए पउमलेसाए ॥ सुक्क लेसाए ॥६॥प०॥ सत्तहिं नयठाणेहिं ॥ अठहिं मयठाणेहिं ॥ नवहिं बंभचेर गुत्तीहिं ॥ दसविहे समणधम्मे ॥ इगारसहिं उवासग पडिमाहिं ॥ बारसहिं भिख्खुपडिमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआठाणेहिं ॥ चउद्दसहिं ॥ भूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं ॥ परमाहम्मिहिं ॥ सोलसहिं गाहासोलसएहिं ॥ सत्तरसविहे असंजमे ॥ अठारसविहे अबंभे ॥ एगूणवीसाए नायझयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि ठाणेहिं॥ इक्कवीसाए सबलेहिं ॥ बावीसाए परीसहेहिं ॥ तेवीसाए सुअगडझयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥ पणवीसाए भावणाहिं ॥ छवीसाए दसाकप्पववहाराण उद्देसणकालेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं॥ अठावीसाए आयारपकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पावसुअपसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअठाणेहिं ॥ इगतीसाए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ बत्तीसाए जोग संगहेहिं ॥ तित्तीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताण आसायणाए ॥ सिद्धाण आसायणाए आयरिआण आसा

यणाए ॥ उवझायाणं आसायणाए ॥ साहूण आसा यणाए ॥ साहुणीण आसायणाए ॥ सावयाण आसा यणाए ॥ सावियाण आसायणाए ॥ देवाण आसा यणाए ॥ देवीण आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवलि पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सवपाणभूअ जीवसत्ताण आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥ सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥ वायणारिअस्स आसायणाए ॥ ज वाइद्ध वच्चामेलिअं हीणक्खर । अच्चक्खर । पयहीणं विणयहीण । घोस हीण । जोगहीण । सुठुदिन्न डुठुपडिच्छिअ । अका ले कउसझाउ । काले न कउ सझाउ । असझाए सझाइअं । सझाए न सझाइअ । तस्स मिछामिडु क्कड० ॥ नमो चउवीसाए तिछयराण । उसजाइ महावीर पज्जवसाणाण । इणमेव निग्गं थपावयण । सच्च । अणुत्तरं । केवलिअ । पडिपुन्न । नेआउअ । ससुद्ध । सल्लगत्तण । सिद्धिमग्ग । मुत्ति मग्ग निज्जा ण मग्ग । निवाण मग्गं । अवितहमविसंधि । सव डुक्खप्पहीण मग्ग । इहं ठिआ जीवा । सिझंति । बुझंति । मुच्चंति । परिनिवायंति । सवडुक्खाणमंतं करंति । त [illegible] सद्दहामि । पत्तिआमि । [illegible] फासेमि । [illegible]णुपालेमि । तं धम्मं [illegible]

श्रंतो । रोश्रतो । फासंतो । पालंतो । श्रणुपालंतो । तस्सधम्मस्स श्रपुठ्ठिउमि श्राराहणाए । विरउमि विराहणाए । श्रसजम परिश्राणामि । सजमं उव सपज्जामि । श्रवम्भ परिश्राणामि । वम्भ उवसंपज्जा मि । श्रकप्प परिश्राणामि । कप्प उवसपज्जामि श्रनाण परि श्राणामि । नाण उवसपज्जामि । श्रकि रिश्र परिश्राणामि । किरिश्र उवसंपज्जामि । मिछ त्तपरिश्राणामि । सम्मत्त उवसपज्जामि । श्रवोहिं परिश्राणामि । वोहि उवसंपज्जामि । श्रमग्ग परिश्रा णामि । मग्ग उवसपज्जामि ।। ज सभरामि । जं च न सभरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमा मि तस्स सव्वस्स देवसिश्रस्स श्रईश्रारस्स पडिक मामि।समणोह सजय । विरय पडिहय पच्चरकाय पाव कम्मे । श्रनिश्राणो । दिठ्ठिसपन्नो । मायामोस विव ज्जिउ । श्रढ्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्म भूमीसु । जावत केइ साहू । रयहरण गुछपडिग्गह धारा । पचमहव्वय धारा । श्रठ्ठारससहस्स सीलग धारा । श्ररकश्रायार चरित्ता । ते सव्वे सिरसा मणसा मठ्ठएण वंदामि । खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु । वेर मझ्झ न केणइ ॥ १ ॥ एवमह श्रालोइ श्र । निंदिश्र गरहिश्रदुगछिश्र सम्म ॥ तिविहेण पडिक्कतो । वंदामि जिणे चउव्वी स ॥ २ ॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्र ॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दसणमि अ । चरणमि तवम्मि तहय विरयमि। आयरण आयारो। इय एसो पंचहा भणि ओ । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । तपाचार । वीर्याचार । ए पचविध आचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म बादर जाणतां हुओ होय ते सविहु मन वचन कायाइं करी मिच्छामि डुक्कम । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार। काले विणये बहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अच्छ तडुजए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वेला माहि पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले पढ्यो। विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीनअ नेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांदणे । पडिक्कमणे सद्याय करतां । पढतां गुणतां कूमो अक्षर कानें मात्रे।आगलो ओछो भण्यो गुण्यो । सूत्रार्थ तडुजय कूमां कह्या। काजो अणउधर्या । माडा अण पडिलेह्यां वस्ति अणसोध्या अणपवेयां । असद्याइ । अणोद्या कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधे योगोपधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपमां । सापडी । दस्त्री वही । कागलिआ ओलिआप्रते । पग लाग्यो

थूकलाग्यो । थूंके अक्षर भांज्यो । ज्ञानवंतप्रते द्वे
प मच्छर वह्यो । अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी ।
कुणहिप्रते तोतलो बोबडो देषी हस्यो वितर्क्यो ।
मतिज्ञान । श्रुतज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान ।
केवलज्ञान । ए पांच ज्ञानतणी आशातना कीधी ।
ज्ञानाचार विषइउं । अनेरो जे कोइ अतिचार ०।१।

दर्शनाचारे आठ अतिचार । निस्सकिअ निकं
खिअ । निव्वित्तिगिछाअमूढदिठीअ ॥ उववूयथिरी
करणे । वछल्ल पभावणे अठ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म
तणे विषे निस्सकपणुं न कीधु । तथा एकांत निश्च
य धर्युं नही । धर्म्म सबधिआ फलतणे विषे निस्सं
देह बुद्धि धरी नही । साधु साध्वीतणी निंदा जुगु
प्सा कीधी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी ।
संघमाहि गुणवंततणी अनुपवृंहणाकीधी।अस्थिरीकर
ण अवात्सल्य अभक्ति निपजावी । तथा देवद्रव्यगुरु
द्रव्य । भक्षित उपेक्षित । प्रज्ञापराधे विणास्यो ।
विणसतो उवेख्यो । छतीशक्ति सारसंभाल न कीधी ।
ठवणायरिउं हाथथकी पाड्यो । पडिलेहवो विस
र्यो । जिनभुवनतणी चोरासी आशातना कीधी ।
दर्शनाचार विषइउं । अनेरो जे कोइ अतिचार० । ३ ।

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोग
जुत्तो । पचहिंसमिईहिं तिहि गुत्तिहि ॥ एस चरित्ता
यारो । अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ ईर्यासमिति, भा

पासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्टापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली नही, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्म्मेसामायिक पोसह लीधे, जे कांइ खंमन विरा धना कीधी होय, चारित्राचार विपइर्ड अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयठ क्क कायठक्क, अकप्पो गिहि नायण ॥ पलिअक निसिज्जाए, सिणाण सोनवज्जाए ॥ ५ ॥

॥ व्रत षट्के, पहिले महाव्रते प्राणातिपात, सूक्ष्म बादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूई, बीजे महाव्रते क्रोध लोन्न हास्य नय लगे जूतु बोल्या, तीजे अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्त, तिछयरत्तं तहेवय गुरुहि ॥ एवमदत्तचउहा । पण्णत्तवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान मांहि जेकांइ अदत्त परिन्नोगव्यु ॥ चोथे महाव्रते ॥ वसहीकह निसिज्जि दिय, कुम्तिरपुव्वकीलिए पणिए॥ अइमायाहारविजूसणाइ, नववनचेरगुत्तिउ ॥ १ ॥ ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नातरें दृष्टि विपर्य्यास हूउं ॥ पचमे महाव्रते, धर्मोपगरणने विषे इच्छा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण वावस्वार्या, पर्व तिथि पमिलेहवो विसार्यो ॥ छठे

रात्री भोजन विरमण व्रते, असूरां पाणी कीधां, ठारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रावंधे तक्रादिकनो ठांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो सनिधि रह्यो, अतिमात्राये आहार लीधा, ए छठा व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अ० ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसास्या, माटी मीठु खडी धावडी अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो, अप्पकाय वाघारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, जल खो हाव्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणीतणा ठांटा लाग्या, तेउकाय वीज दीवातणी उंजेही हुइ, वाउ काय, उघाडे मुखे वोल्या, महावाय वाजता कपडा कांवली तणा छेडा साचव्या नहीं, फूक दीधी ॥ वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थड मूल फल फूलवृक्ष शाखा प्रशाखातणा सघट्ट परपर निरतर हूवा ॥ त्रसकाय, वेरिंडी तेरिंडी चउरिंडी पचेंडी काग वग उडाव्या, ढोर त्रासव्या वालक वीहाव्यां षट्काय विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ७ ॥

अकल्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिड परिभोगव्यो, सिज्झातरतणो पिड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहस्या, धात्री दोष, त्रस वीजससक्त पूर्वकर्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चितव्या नहीं, गृहस्थतणो भाजन भाज्यो, फोड्यो, वली पाछो

आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशत स्नान मुखें त्रीनो हाथ लगाड्यो, सर्वत स्नानतणी वांछा कीधी, शरीरतणो मल फेड्यो, केश रोम नख समार्या, अनेरी जे कांइ गाडाविभूषा कीधी, अकल्पनीय पिंडादि विपइउं अनेरो जे को० ॥ ८ ॥

आवस्सयसद्याए, पडिलेहणद्याए जिरक अन्नत्ते ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्टे ॥ १ ॥ आवश्यक उन्नयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पडिक्कमणु कीधु, पडिक्कमणा माहि उघ आवी, वेळां पडिक्कमणु कीधुं, दिवस प्रते चार वार सद्याय, सात वार चैत्यवंदन न कीधा, पडिलेहणा आघी पाछी जणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं, गोचरी गयां वेंतालीश दोष उपजता चितव्या नहि, छती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपासरा देहरामाहि पेसता निसिही निसरतां आवस्सही कहेवी विसारी, इच्छामिच्छादिक दशविध चक्रवाल समाचारी साचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यों नहि, अपराध आव्या मिच्छामि डुक्कड दीधा नहि, स्थानके रहेता हरियकाय वियकाय कीडी नगरा सोध्यां नहीं, उंधो मुहपत्ति चोलपट्टो सघट्या, स्त्री ती । सघट्ट अनतर परंपर हूवा,

वस्त्र प्रतें पसाउं करी, लहुडां प्रतें इच्छाकार इत्या दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि० अ० पक्कि० सु० वा० जाणतां अजाणतां हुउं होय, ते सविहु मन वचन कायाये करी मिच्छामी डुक्कड ॥ ए ॥ इति साधु अतिचार सपूर्ण. ॥

१ ॥ पाक्षिक सूत्र ॥

तिच्छकरे अतिच्छे, अतिच्छ सिद्धेअ तिच्छसिद्धेअ ॥ सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाण च वंदा मि ॥ १ ॥ जे इम गुण रयण सायर, मविराहिऊण तिणससारा ॥ ते मगल करित्ता, अहमवि आ राहणाजिमुहो ॥ २ ॥ मम मगल मरिहंता। सिद्धा साहु सुअ च धम्मोअ ॥ खती गुत्ती मुत्ती । अज्ज वया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगमि सजया ज करिति । परमरिसि देसियमुआर ॥ अहमवि उवछिउंतं। महव्वय उच्चारण काउ ॥ ४ ॥ से कि त महव्वय उ च्चारणा ? महव्वय उच्चारणा पच विहा पणत्ता॥ राइ जोअणवेरमण छठा । तजहा ॥ सवाउं पाणाइवाया उं वेरमण ॥ १ ॥ सव्वाउं मुसावायाउं वेरमण ॥२॥ सवाउं अदिन्नादाणाउं वेरमण ॥ ३ ॥ सवाउं मेहुणा उं वेरमण ॥ ४ ॥ सवाउं परिग्गहाउं वेरमण ॥५॥ सवाउं राइजोअणाउं वेरमण ॥ ६ ॥

तच्छखलु पढमे जते महव्वए पाणाइवायाउं वेर मण सव्व जते पाणाइवाय पच्चक्कामि से सुहुम वा।

वायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसय पाणे अइ वाऽज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अश्वायाविज्जा । पाणेअ इवायते वि। अन्ने न समणुज्जाणामि । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुज्जाणमि । तस्स नते पक्किमामि निंदामि गरिहामि आप्पाण वोसि रामि ॥ से पाणइवाए चउविहे पन्नत्ते । तंजहा । दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ । दव्वउणं पाणाइवाए उसु जीवनिकाएसु । खित्तउण पाणाऽवाए सवलोए। कालउण पाणाइवाए दिआवा राउंवा । नावउण पा णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिसालरकणस्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्पनवस्स नववंनचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स निकाविति्तअस्स कुरकीसवलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निवि त्तिलरकणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसचियस्स अविसवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगम णपज्जवसाणफलस्स पुविअन्नाणयाए असवयाए अ बोहिआए अणनिगमेणं अनिगमेणवा पमाएणं राग दोसपक्विबद्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ड याए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएण पाचिंदिउव सट्टेण पक्पिुन्ननारिआए सायासुक्कमणुपालयतेण

इहवाजवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु पाणाइवाउं कउं वा। करावितंवा कीरतोवा परेहिंसमणुन्नाउं तं निहामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण अइअ निंदामि पकुप्पन्न संवरेमि अणागय पच्चक्कामि सव पाणाइवाय जावज्जीवाए अणिस्सिउंह नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा त जहा अरिहंतसक्किअ सिद्धसक्किअ साहुसक्किअ देवसक्किअ एवंज वइ जिक्कूणीवा सजयविरयपमिहय पच्चकाय पाव कम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं जूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसि सत्ताण असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महच्चे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसिदेसिए पसन्ने तडुक्कक्कयाए कम्मक्कयाए मुक्कयाए वोहिलाजाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उवसपज्जित्ताणविहरामि पढमेचंतेमइव्वए उवहिउंमि सव्वाउंपाणाइवायाउंवेरमण ॥ १ ॥

अहावरे दोचे जते महव्वए मुसावाउं वेरमणं। सव जंतेमुसा वाय पच्चक्कामि से कोहा वा १ लोहा वा २ जया वा ३ हासा वा ४ नेवसय मुसवइज्जा ने

वन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयतेवि श्रन्ने न समणु
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वा
याए काएण न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स नंते प
मिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥
से मुसाए चउव्विहे पन्नत्ते । तं जहा । दव्वउ १ खित्तउ २
कालउ ३ नावउ ४ । दव्वउण मुसावाए सव्वेदव्वेसु ।
खित्तउणं मुसावाए लोएवा श्रलोएवा । काल
उण मुसावाए दिश्रावा राउवा । नावउण मुसा
वाए रागेणवा दोसेणवा । ज मए इमस्स धमस्स
केवलि पणत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठिश्र
स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसो
वणियस्स उवसमप्पन्नवस्स नववनचेरगुत्तस्स श्र
पय माणस्स निरकाविक्तिश्रस्स कुरिक सवलस्स
निरग्गिसरणस्स सपरकालिश्रस्स चत्तदोसस्स गुण
ग्गाहिश्रस्स निव्विश्रारस्स निव्विसिलरकणस्स पच
महव्वयजुत्तस्स असनिहिसचियस्स अविसवाइश्रस्स
ससारपारगामिश्रस्स निव्वाणगमण पज्जवसा णफल
स्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अण
निगमेणवा पमाएण रागदोसपडिवरूयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुश्राए चउक्कसाउवगएण
पचिंदिउवसट्टेणं पमिपुसं नारयाए सायासुरकमणु
पालयतेण इह वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु
मुसावाउ नासिउ वा नासाविउ वा नासिजतोवा परेहिं

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण अईअंनिंदामि पडुपन्नसंवरे मि अणागयपच्चक्खामि सव्वंमुसावाय जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसय मुस वाइज्जा नेवन्नेहिमुसं वायाविज्जा मुसं वायतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा। तं जहा अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खि अ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एवंहवइ भिक्खुवा भि क्खुणीवा सजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जाग रमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे। खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिपाणाण सव्वे सिभूआण सव्वेसिजीवाण सव्वेसि सत्ताण अदुक्ख णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए मह त्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरि सिदेसिए पसत्थे त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्ख याए बोहिलाभाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवस पज्जिताण विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउंमि सव्वाउं मुसावायाउं वेरमण ॥ २ ॥

॥ अहावरेतच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउं वेर मण। सव्वं भंते अदिन्नादाण पच्चक्खामि। से गामे वा नगरेवा रणेवा अप्पंवा बहुवा अणुंवा थुलंवा चित्तमंतवा अचित्तमंतवा। नेवसय अदिन्न गिण्हि

ज्ञा नेवन्नेहि अदिणं गिण्हाविज्ञा अदिणं गिण्हंतेवि अन्नेन समणुज्ञाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्न न समणुज्ञाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ से अदि न्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते । तं जहा । दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ । दव्वउण अदिन्नादाणे गहणधारणि ज्जेसु दव्वेसु, खित्तउण अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा रणेवा, कालउण अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्ख णस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेरगुत्तस्स अपयमा णस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खिसवलस्स निरग्गिसरण स्स सपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निवियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसवाइयस्स ससारपारगामि अस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाण याए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभि गमेणवा पमाएण रागदोसपडिबद्धआए बालआए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउ क्कसाउवगएण पचिंदिअवसट्टेण पडिपुण भारियाए सायासुक्खमणुपालयतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भव ग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअवा गाहाविअंवा घिप्पं तवा परेहिं समणुन्नाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं

तिविहेण मणेण वायाए काएण अईअ निंदामि पडुप्पसवरेमि अणागय पच्चक्कामि सव्वं अदिन्ना दाण जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेवसय अदिन्न गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नगिण्हाविद्या अदिन्न गिण्हतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा। त जहा। अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवस क्खिअ अप्पसक्खिअ एवं हवइ भिक्कुणीवा सजय विरयपडिहय पच्चक्काय पावकम्मे दिआवा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाण सवेसिं जीवाण सव्वेसि भूआणं सव्वेसि सत्ताण अदुक्क णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ पीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे म हागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे सिए पसत्थे तंडुक्खक्कयाए कम्मक्कयाए मुक्कयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसपधि ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए उवठिउमि स व्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाउ वेरमणं। सव्व भंते मेहुण पच्चक्कामि। से दिव्वंवा माणुस्सवा तिरिक्कजोणिअवा। नेवसअ मेहुण सेविद्या नेवन्नेहिं मेहुण सेवाविद्या मेहुण सेवतेवि अन्ने नसमणुजाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नन समणुजा णामि तस्स नते पक्किमामि निंदामि गरिहामि अ प्पाण वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंज हा दव्वर्ज खित्तर्ज कालर्ज नावर्ज। दव्वर्जण मेहुणे रूवे सुवा रूवसहगएसुवा। खित्तर्जणंमेहुणे उड्ढलोएवा अ हो लोएवा तिरियलोएवा कालर्जण कालर्जणं दिआवा रार्जवा । नावर्जण मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जम ए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालस्कण स्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स । खतिप्पहाण स्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पन्नवस्स नववनचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स निस्काविति‍अस्स कुस्किसंब लस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलस्कणस्स पंच महव्वयजुत्तस्स असनिहिसंचयस्स अवि सवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप धवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणजिगमेणं अजिगमेणवा पमाएण रागदोसपक्किवरूयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसार्जवगएणं पचि दिर्जवसट्टेण पक्किपुन्न नारियाए सायासुरकमणुपाल यतेण इहंवानवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु मेहुण सेवि अवा सेवाविअवा सेविज्जतवा परेहिं समणुन्नार्ज

तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वाया ए काएण अइय निंदामि पडिपुन्न संवरेमि अणा गय पच्चक्खामि सव्वंमेहुण जावज्जीवाए अणिस्सि उंहं नेवसय मेहुण सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवा विद्या मेहुण सेवतेवि अन्ने नसमणुज्जाणिद्या। तं जहा अरिहंत सक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एवं हवइ भिक्खूवा भि क्खूणीवा सजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सवेसिंपाणाणं सवेसिं भूआण सवे सिं जीवाण सवेसि सत्ताण अदुक्खणयाए असोयण याए अजूरणआए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अ परियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे म हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसथे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहि लाभाए ससारुत्तारणयाए उवसपज्जित्ताण विहरामि चउत्थेभंतेमहव्वए उवट्ठिउंमिसव्वाउं मेहुणाउंवेरमण ४

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाउंवेरमण। सव भंते परिग्गह पच्चक्खामि। अप्पंवा बहुवा अणुं वा थूलवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयपरिग्ग हं परिगिण्हिद्या नेवन्नेहिं परिग्गिह परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जाव

ज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणवायाए काएण नकरे
मि नकारवेमि करतपि अन्न नसमणुज्जाणामि तस्स
नते पमिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि
रामि ॥ सेपरिग्गहे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ
खित्तउ कालउ नावउ । दव्वउण परिग्गहे सचि
त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तउण परिग्गहे सव्वलोए
कालउणं परिग्गहे दिआ वा राउ वा नावउणं प
रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा
ज मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा
लक्कणस्स सच्चाहि ठिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहा
णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पनवस्स नव
बन्नचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स निक्काविक्तिअस्स कु
क्किसंबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्कालिअस्स चत्त
दोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निवित्ति ल
क्कणस्स पचमहव्वय जुत्तस्स असनिहि सचयस्स
अविसंवाअस्स ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप
घवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ
वोहिआएअणनिगमेण अनिगमेण वा पमाएणं रा
गदोसपमि वद्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए
किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउवगएण पचिं
दिउवसट्टेण पडिपुन्ननारियाए साया सुक्कमणुपालय
तेणं इहं वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु परिग्गहो
गहिउंवा गाहाविउ वा विप्पतो वा परेहि समणु

न्नाउं तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेण वायाएकाएण अईअ निंदामि पडुप्पन्न सवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेवसय परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहु सक्खिअ देव सक्खिअ अप्प सक्खिअ एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राउ वा एगउ वा परिसागउ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसि पाणाण सव्वेसि भूआण सव्वेसि जीवाणं सव्वेसि सत्ताण अदुक्खणयाए असोणयाए अजूरणआए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए वोहिलाभाए ससारुत्तारणायाए तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि पचमे भंते महव्वए उवठिउमि सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमण ॥ ५ ॥

अहावरे छठे भंते महव्वए राईअ भोअणाउ वेरमणे सव भंते राईभोअण पच्चक्खामि ॥ से असण वा पाणं वा खाइम वा साइम वा नेवसय राइ भोअण भुजिज्जा नेवन्नेहिं राइभोअण भुजाविज्जा राइभोअ

णं जुजंते वि अन्ने न समणुज्ञाणामि जावज्जीवाए
तिविहं तिविण मणेण वायाए काएणं नकरेमि नका
रवेमि करतंपि अन्नं न समणुज्ञाणामि तस्सजंते प
म्किक्मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥
से राइन्नोअणे चउविहे पन्नत्ते दवर्ज खित्तर्ज कालर्ज
जावर्ज॥दवर्जण राइन्नोअण असणे वा पाणे वा खाइमे
साइमे वा खित्तर्जणं राईन्नोअणे समयखित्ते कालर्ज
ण राइन्नोअणे, दिआ वा रार्ज वा,जावर्जण राइन्नोय
णे, तित्ते वा कमुए वा कसायले वा अविले वा महु
रे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जमए इमस्स
धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहि
छिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स अहिरणसो
वणिअस्स उवसमप्पन्नवस्स नववंजचेर गुत्तस्स अप
यमाणस्स निरकाविन्तिअस्स कुक्खिसवलस्स निरग्गि
सरणस्स सपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअ
स्स निविआरस्सनिविन्तिलखणस्स पचमहवयजुत्तस्स
असंनिहिसचयस्स अविसवाऽअस्स ससारपारगामि
अस्स निवाणगमणपद्यवसाणफलस्स पुविअन्नाणयाए
असवणयाए अबोहिआए अणन्निगमेण अन्निगमेणं
वा पमाएण रागदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए
मदयाए किड्याए तिगारवगुरुआए चउक्कसार्जवएणं
पचिदिअवसट्टेस पम्किपुणजारिआए सायासुक्कमणुपा
लयतेणं इह वा जवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु वा राइन्नो

यण सुत्त वा सुजाविश्रं वा सुजंत वा परेहिं समणु
न्नाउं त निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणे
णं वायाए काएण अइअ निंदामि पकुप्पण संवरेमि
अणागय पच्चक्कामि सव्व राइन्नोअणं जावज्जीवाए
अणिस्सिउंहं नेवसअ राइंसुजिज्जा नेवन्नेहिं राइ
सुजाविज्ञा राइसुजते वि अन्ने न समणुज्जाणिज्ञा त
जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ
देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एव हवइ जिक्कूवा जिक्कू
णी वा सजय विरय पमिहय पच्चक्काय पावकम्मे
दिआ वा राउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एसखलु
राईजोअणस्स विरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए
आणुगामिए सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं नूआण सव्वेसिं
जीवाण सव्वेसि सत्ताण अडुक्कणयाए असोअणआए
अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीमणयाए अपरिआए
वणयाए अणुद्दवणयाए महत्ते महागुणे महागुणे महा
णुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसि देसियपसत्थे
तं डुक्कक्कयाए कम्म क्कयाए मुक्कयाए बोहि ला
नाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विह
रामि ॥ ढठे नते मह व्वए अजु ठिउंमि सव्वाउं
राईजोयणाउं वेरमण ॥ इच्चेइ आइ पचमहव्वयाइ
राईजोअणवेरमण ढठाइ अत्तहिअठाइ उवसंप
ज्जित्ताण विहरामि ॥

अप्पसठाय जे जोगा । परिणामाय दारुणा ॥

पाणाइवायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥
तिव्व रागाय जा जासा । तिव्वदोसा तहेव य ॥ मुसा
वायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहं
सि अ जाइत्ता ॥ अविदिन्ने अ उग्गहे ॥ अदिन्नादा
णस्स वेरमणे ॥ एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा रुवा
रसा गधा ॥ फासाण पविआरणे ॥ मेहुणस्स वेरम
णे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छा मुच्छा य गेही
अ ॥ कंखा लोभेअ दारुणे ॥ परिग्गहस्स वेरमणे ॥
एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥ अइमत्ते अ आहारे ॥ सूरे
खित्तमि संकिए ॥ राईभोयणस्स वेरमणे ॥ एस वु
त्ते अइक्कमे ॥ ६ दसणनाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता
ठिर्उ समण धम्मे ॥ पढमंवयमणुरक्के ॥ विरयामो
पाणाइवायार्उ ॥ ७ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविरा
हित्ताठिर्उ समण धम्मे ॥ बीयवयमणुरक्के ॥
विरयामो मुसावायार्उ ॥ ८ ॥ दसणनाण चरित्ते ॥
अविराहित्ता ठिर्उ समण धम्मे ॥ तइअ वयमणुर
क्के ॥ विरयामो अदिन्नदाणार्उ ॥ ९ ॥ दंसण नाण
चरित्ते ॥ अवराहित्ता ठिर्उ समण धम्मे ॥ चउत्थ
वयमणुरक्के ॥ विरयामो मेहुणार्उ ॥१०॥ दसण नाण
चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिर्उ समणधम्मे ॥ पचम
वयमणुरक्के ॥ विरयामो परिग्गहार्उ ॥ ११ ॥ दंसण
नाण चरित्ते ॥ अविरहित्ता ठिर्उसमणधम्मे छठ्ठ व
यमणुरक्के ॥ राइभोयणा आलयवि ॥ १२ ॥

विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तोठिउं समण धम्मे ॥ पढ मंवयमणुरक्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥ आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ वीय वय मणुरक्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥१४॥ आलयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे । तीय वयमणुरक्के विरयामोअदिन्ना दाणाउं ॥१५॥ आलय विचारसमिउं। जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। चउछवय मणुरक्के। विरयामो परिग्गहाउं ॥१६॥ आलय वियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ पचम वयमणुरक्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ ठठव यमणुरक्के ॥ विरयामो राईजोयणाउं ॥ १८ ॥ आलय विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ तिविहेण अप्पमत्तो । रक्कामि महव्वए पच ॥ १९॥ सावज्जजोगमेग ॥ मिछत एगमेव अन्नाण ॥ परिव यतो गुतो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ २० ॥ अणवद्य जोगमेग ॥ सम्मत्त एगमेवनाणं तु ॥ उवसपन्नो जु त्तो ॥ रक्कामि महव्वएपच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो से ॥ डुन्निअ जाणाइअट्टरुद्दाइ ॥ परिवयतो गुत्तो । रक्कामि महव्वएपच ॥ २२ ॥ डुविह चरित्त धम्मं । डुन्निअ जाणाइ धम्मसुक्काइ ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ २३ किएहा नीला काउ ॥ तिन्निअ लेसाउं अप्पसच्छाउं ॥ परिवयंतो गुतो र

रकामि महव्वए पच ॥ २४ ॥ तेउ पह्मा सुक्का ॥ ति न्निश्र देसाउं सुप्पसन्नाउं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ र रकामि महव्वए पच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥ वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ ॥ रकामि महव्वए पंच ॥ २६ ॥ चत्तारि श्र उुह सिज्जा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रकामि महव्वए पच ॥ २७ ॥ चत्तारि श्र सुह सिज्जा ॥ चउविहं सवर समाहिठाण ॥ उवस पन्नो जुत्तो ॥ रकामि महव्वए पच ॥ २८ ॥ पंचेवय काम गुणे ॥ पंचेवय श्रण्हवे महादोसे ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रकामि महव्वए पंच ॥ २९ ॥ पचिंदिश्र स वरण ॥ तहेव पंच विहमेव सद्याय ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥ रकामि महव्वए पंच ॥३०॥ ठज्जीवनिकाय वहं ॥ ठप्पिश्र जासाउं श्रप्पसत्थाउं ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रकामि महव्वए पच ॥ ३१ ॥ ठविहमप्रित रय ॥ वप्पपिश्र ठविह तवो कम्म ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥ रकामि महव्वए पच ॥ ३२ ॥ सत्त य जय ठाणाइ ॥ सत्तविह चेव नाणविजंग ॥ परिवज्ञतो गुत्तो ॥रकामि महव्वए पच ॥३३॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गह सत्ति कया महप्पयणा ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥ रकामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ श्रठय मयठाणाइ श्र ठय कम्मइ तेसि वंधच ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रकामि महव्वए पंच॥ ३५ श्रठय पवयण माया ॥ दिठा श्रठ

विह् निठिअठेहिं॥उवसपन्नो जुत्तो । रस्कामि महव्व ए पंच ॥३६॥ नव पाव निआणाइं ॥ संसारठाय न वविहा जीवा ॥ परिवद्यतो गुत्तो । रस्कामि महव्वए पच ॥ ३७ ॥ नव बंत्रचेर गुत्तो ॥ डुनवविहं वत्रचे र परिसुरू ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रस्कामि महव्वए पच ॥ ३८ ॥ उवघायं च दसविह॥ असंवर तहय संकिलेसं च ॥ परिवद्यतागुत्तो रस्कामि महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिठाणे ॥ दसचेव दसउ समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रस्कामि म हव्वए पच ॥ ४० ॥ आसायण च सव्व ॥ तिगुण इक्कारस विवर्यतो ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रस्कामि महव्वए पच ॥ ४१ ॥ एवंतिदरू विरउ ॥ तिगरण सुद्धो तिसल्ल निसल्लो ॥ तिविहेण पक्किंतो ॥ रस्कामि महव्वए पच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअ महव्वय उच्चारण थिरत्त सल्लुरूरण । धिइ बलं ववसाउ । साहणठो पाव निवारण । निकाय णा जाव विसोही पडागाहरण । निज्जूहणाराहणा गुणाण । संवरजोगो पसत्रयाणो । वउत्तया जुत्तयाय नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखलु तित्रकरेहिं । रइ राग दोस महणेहि । देसिउ पवयणस्ससारो । वज्जीवनीकाय सजम । उवएसिअ । तेलुक सक्कअ गाण । अपुवगया नमोह्रु ते । सिरू वुरू मुत्त निरय। निसग माणमूरण । गुण रयण । सायर । मणत

मप्पमेश्र । नमोत्नुते मह्इ महावीर वद्धमाण सामि स्स । नमोत्थते श्ररहंर्ठ । नमोत्नुते नगवर्ठ । तिकट्टु । एसाखलु । महव्वय उच्चारणाकया ॥

इच्छामो सुत्त कित्तण काउ । नमोतेसि खमासम णाणं । जेहिं इमं वाइश्र । ठविह मावस्सय । नग वंतं तंजहा । सामाइश्र ॥ १ ॥ चउवीसहर्ठ ॥ २ ॥ वंदणय ॥ ३ ॥ पमिक्कमण ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥५॥ पच्चखाण ॥ ६ ॥ सवेहिंपि एश्रमि । ठविहे श्राव स्सए । नगवंते ससुत्ते । सश्रत्ते सगये सनिज्जुत्ती ए । ससंगहणिए जेगुणावाजावावा । श्ररिहतेहिंनग वंतेहिं । पणत्तावा । परूविश्रावा । तेजावेसद्दहामो । पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पालेमो । श्रणुपाले मो । तेजावेसद्दहंतेहिं पत्तिश्रंतेहि । रोश्रतेहिं । फासं तेहिं । पालतेहिं । श्रणुपालतेहि । श्रतोपरकस्स जंवा इश्र । पढिश्र परिश्रट्टिश्र । पुच्छिश्र श्रणुपालिश्र । तडुक्खक्कयाए कम्मक्खयाए । मुक्खयाए । वोहिला नाए । ससारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसपज्जित्ताण विहरामि । श्रंतोपरकस्स । जनवाइश्र नपढिश्र नप ढिश्र नपरिश्रट्टिश्र । नपुच्छिश्र । नाणुपेहिश्र । नाणु पालिश्र सतेबले संतेवीरिए । सतेपुरिसकारपरिक्कमे। तस्सश्रालोएमो । पमिक्कमामो । निंदामो गरिहामो। विउट्टेमो । श्रकरणयाएश्रपुठेमो । श्रहा रिहंतवो कम्म । पायछित्तपडिवज्जामो। तस्समिछा मिछुकड।

नमोतेसिंयमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअं । अंग बाहिर उकालिअनगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअं । कप्पिआकप्पिअं । चुल्लकप्पसुअं । महाकप्पसुअं । उघाइअं रायप्पसेणिअं । जीवाजिगमो । पन्नवणा । महापन्नवणा। नंदी अणुउंगदाराइ देविंदथ्थउं । तंडुव विआलिअ चदाविज्जिय।पमायप्पमाय। पोरिसिमंडलं। मडलप्पवेसो गणिविद्या । विद्याचारणविणीछउं । झाण विजत्ती । मरणविजत्ती । आयविसोही । सलेहणा सुअं । वीयरायसुअं । विहारकप्पो । चरणविहि । आउरपच्चरकाणं । महापच्चरकाण ॥ २० ॥ सवेहिंपि एअमि । अगबाहिरे उकालिए । जगवते ससुत्ते । सअत्थे । सगथे । सनिज्जुत्तिए । ससगहणिए जेगु णावा जावाना । अरिहतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परुविआवा । तेजावे सद्दहामो पत्तिआमो । रोएमो फासेमो । पालेमो अणुपालेमो । तेजावे सद्द हंतेहि । पत्तिअतेहिं । रोअतेहिं । फासतेहिं पालते हि । अणुपालतेहिं । अतोपरकस्स । जवाइअं पढि अ । परीअट्टिअं । पुछिअं । अणुपेहिअं । अणुपालि अ । तडुरकरकयाए । कम्मरकयाए । मुरकयाए । बोहिलाजाए संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसप यित्ताणविहरामि । अतोपरखस्स । जनवाइअं नप ढिअं नपरिअट्टिअं । नपुछिअं । नाणुपेहिअं । नाणु पालिअं । सतेवले सतेविरिए । संतेपुरिसकारपरिक

मे। तस्सआलोएमो। पडिकमामो। नींदामो। गरिहामो। विउट्टेमो। विसोहेमो। अकरणयाएअप्पुठेमो। अहारिह तवोकम्म। पायछित्त पडिवद्यामो। तस्स मिछा मिदुक्कडं।

नमोतेसिखमासमणाण। जेहिइमंवाइअं अंगबा हिरंकालिअजगवंत। तंजहा। उत्तरज्झयणाडं। द साकप्पो। ववहारो। इसिनासिआइ। निसीहं। महानिसीहं। जंबुद्दीवपणत्ती। सूरपणत्ती। चदपन्न त्ती। दीवसागरपन्नत्ती। खुड्डयाविमाणपविजत्ती। महल्लिआविमाण पविजत्ती। अगचूलिआए। वंग चूलिआए। विवाहचूलिआए अरुणोववाए। वरुणो ववाए गरुलोववाए। धरणोववाए। वेलंधरोववाए। वेसमणोववाए। देविंदोववाए। उठाणसुए। समुठा णसुए। नागपरिआवलिआणं। निरयावलिआण। कप्पिआण। कप्पवडिंसिआणं। पुप्फिआणं। पुप्फ चूलिआणं। वण्हीयाण। वण्हीदसाण आसीविस जावणाए। दिठि विसजावणाणं। चारणसुमिण जा वणाण। महासुमिणजावणाणं। तेअग्गिनिसग्गाणं ॥३६॥ सबेहिं पिएअंमि। अगवाहिरे कालिए जग वते।ससुत्ते। सअछे सगंथे। सणिज्जुत्तिए। ससं गहणिए जेगुणावां जावावा। अरिहतेहिं। जगवंते हिं। पणत्तावा परूवीआवा तेजावेसद्दहामो। पत्ति आमो रोएमो। फासेमो पालेमो। अणुपालेमो। ते जावेसद्दहतेहिं। पत्तिअतेहिं। रोयतेहिं फासंतेहिं।

पालंतेहिं । अणु पालंतेहिं । अतोपरक्खस्स जंवाइअं पढिअ परिअट्टिअ पुछिअं अणुपेहिअं अणुपालिअ तंडुरक्खरकयाए । कम्मरक्खयाए॥ मुरक्खयाए।बोहि लाजाए। ससारुत्तारणयाए । त्तिकट्ट।उवसपधित्ताण विहरामि । अतोपरखस्स । जनवाइअ नपढीअ नप रियट्टिअ नपुछिअ । नाणुप्पेहिअ नाणुपालिअ । म तेबले । सतेवीरिए । सतेपुरिसक्कारपरिक्कमे। नस्सथा लोएमो।पक्किक्कमामो। निंदामो गरिहामो । निउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अपुठेमो।अहारिहंतरो कम्म । पायछित्तपक्विधामो । तस्समिछामिडुक्कं ॥

नमोतेसिंखमासमणाण । जेहिंइमंवाइअ । डुवा लसंगगणिपिक्कग । जगवत । तजहा । आयारो सुअ गक्को गण । समवाउ । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मक हाउ । उवासगदसाउ अंतगकदसाउ । अणुत्तरोववा इअदसाउ । पएहावागरण ।विवागसुअ दिठिवाउ॥ सबेहिंपि एअमि । डुवालसंगे गणिपिक्कगे । जगवते। सअठे । ससुत्ते । सगथे । सणिज्जुत्तिए । ससग ह णिए । जे गुणा वा । जावा वा । अरिहंतेहिं । जग वतेहि । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते जावे सद्द हामो । पत्तिआमो । रोएमो । फासेमो । पालेमो । अणुपालेमो । ते जावे सद्दहतेहि । पत्तिअतेहिं । रोयतेहि । फासतेहिं । पालतेहि । अणुपालतेहि । अतोपरकस्स । जवाइअ । पटिअ । परिअट्टिअ । पु

च्छिअ । अणुपेहिअं । अणुपालिअं । तंडुक्खक्खयाए । कम्मक्खयाए । मुक्खयाए । बोहिलाभाए । संसारुत्ता रणाए । तिकट्ट । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अतो पक्खस्स ज न वाइअ । न पढिअं । न परिअट्टिअ । न पुछिअ । नाणुपेहिअ । नाणुपालिअं । सते बले । सते वीरिए । सते पुरिसक्कारपरिक्कमे । तस्स आलो एमो पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अप्भुठेमो । अहारिहं तवोकम्मं । पायच्छित्तं पडिवज्जामो । तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ७ ॥ नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइअ दुवा लसग गणिपिडग । भगवतं । तं जहा सम्मं काएण । फासंति । पालंति । पूरंति । तीरंति । किट्टंति । सम्म आणाए । आराहंति । अह च नाराहेमि । तस्स मिच्छामिडुक्कड ॥ ८ ॥

सुअदेवआ भगवई । नाणावरणीअकम्मसंघाय । तेसिं खवेउ सयय । जेसिं सुअ सायरे भत्ति ॥ १ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्त ॥

पाक्षिकखामणा. ॥

इच्छामि खमासमणो पिअं च मे भजे । हट्ठाणं तु ठाण अप्पायंकाणं । अभग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सुव्वयाण । सायरिअउवज्झायाणं । नाणेणं । दंसणेण । चरित्तेण । तवसा । अप्पाण । भावेमाणाणं । बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो । पक्खो वइक्कंतो । अन्नो भे

कल्लाणेणं । पज्जुवठिए । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ तुम्हेहिं सम ॥

इच्छामि खमासमणो । पुव्विं चेइआइं वंदित्ता । न मंसित्ता । तुम्हण्ह पायमूले । विहरमाणेणं । जे केइ बहुदेवसिआ । साहुणो । दिठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं । डुइज्जमाणा वा । राइणिआ संपु च्छंति । उमराइणिआ वंदंति । अज्जया वंदंति अ ज्जियाउ वंदंति । सावया वंदंति । सावियाउ वंदंति अहंपि निस्सल्लो । निक्कसाउ । त्तिकट्टु । सिरसा मण सा । मत्थएण वंदामि ॥२॥ अहमवि वदामि चेइआइ॥

इच्छामि खमासमणो । अप्पुठिउंहं । तुम्हण्हं । स तिअ । अहाकप्प वा । वत्थ वा । पडिग्गह वा । क बल वा । पायपुछण वा । रयहरण वा । अक्खर वा। पय वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगद्ध वा । अठ वा । हेउ वा । पसिण वा । वागरण वा । तुम्हे हि । चिअत्तेण दिन्न । मए । अविणएण । पडिच्छिअं। तस्समिच्छामिदुक्कड ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअ ॥

इच्छामि खमासमणो । अहमपुव्वाइ । कयाइं च मे। किइकम्माइ । आयारमतरे । विणयमंतरे । सेहि उ । सेहाविउ । संगहिउ । उवग्गहिउ । सारिउ । वारिउ चोइउ । पडिचोइउ । चिअत्ता मे । पडिचो यणा । अप्पुठिउंह । तुम्हण्ह तववेयसिरीए । इमाउ चाउरत संसारकंताराउ । साहट्टु । नित्थारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥
नित्थारगपारगाहोह ॥ इति पाक्षिक क्षामणा ॥

साधुर्उको दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमे
अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर
गुणनेकी एक गाथा

सयणासन्न पाणे, चेठ जइ सिज्ज काय उच्चारे ।
समिठ भावणा गुत्ती,वितहायरणे य अइयारो॥१॥

यह गाथा गुण तेत्तिस्मे कहिहुठ बातें संबंधी जो कुछ अतिचार लगां होसो सांधुने याद करना सामान्य साधुसें गुरुको अल्प व्यापार होनेसें गुरुने ठोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी

(प्रात· पडिलेहणकी विधि),

इरिआवही पडिक्कमी, खमासमण देके, इछाका रेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करु? 'इछ' कही मुहपत्ति ५० बोलसें, उंघो १० बोलसें, कटासण २५ बोलसें, कंदोरा १० और चोलपट्टा २५ बोलसें पडि लेहना पिठे इरियावही पडिक्कमके, खमासमण देके, इछकारी भगवन् पसाय करी पडिले हणा प डिलेहवोजी, एसा कहके स्थापनाचार्यकी पडिलेह णा करनीसो नीचे प्रमाण

प्रथम कामली पडिलेही संकेलके तिस उपर स्थापनाचार्य रखणी पिठे थापनाजी ठोरीके प्रथम उपरकी एक मुहपत्ति पडिलेहे पिठे "शुद्धस्वरूपके

धारक गुरु ज्ञानमयी दर्शनमयी चारित्रमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररुपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसे गुप्ता" यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पमिलेहणा करे पिछे स्थापनाजी सवधी दुसरी मुह पत्तिये पमिलेहे (सांजकी पमिलेहण वखत पहेली स्थापनाजीकी सव मुहपत्तिये पमिलेहना पिछे स्थापनाजी बांधके ठवणी उपर रखके खमा समण देके इच्छा० उपवि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छ कही मुहपत्ति पमिलेही, खमा० इच्छा० उपधि सदिसाहु? इच्छ, खमा० इच्छा० उपधि पमिलेहु? इच्छ कही दूसरे सववस्त्रें पडिलेहने अंतमें कटक पडिलेहना पिछे डमासण लेके पमिलेही, इरिआवही पमिक्कमी, काजा लेना पिछे इरिआवही पमिक्कमी काजा परठवना पिछें इरिआवही पमिक्कमी, खमासण देके इच्छा० सजाय करु? इच्छ कही एक नवकार गणी 'धम्मो मगल मुक्किठ, ए सजाय कहेना इतिप्रात पमिलेहणविधि

(सध्या पमिलेहणविधि)

खमासमण देके इच्छा० वहु पमिपुन्ना पोरिसि? खमासमण देके इरियावही पमिक्कमी खमासमण देके इच्छा० पमिलेहण करु? इच्छ खमा० इच्छा० वस्ती प्रमार्जु? इच्छ कहके उपवास कीया होय तो मुहप

त्ति, उंघो, कटासण पडिलेहना नहीं तो पूर्ववत् पाच चीजें पडिलेहना. पिछे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पडिलेण करनी पिछे खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहु ? इच्छ कही मुहपति पडि लेहि खमा० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छ कही एक नवकार गुणके " धम्मो मंगल मुक्किठ " एसज्झाय कहे पिछें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चरकाण करना उपवास किया होयतो खमसमण देके इच्छकारी जगवन् पसाय करी पच्चरकाण आदे शदिजीये योकहके पच्चरकाण करे पिछे खमा०इच्छा० उपधि सदिसाहु ? इच्छं खमा० इच्छा० उपधि पडिले हु ? इच्छ कही सर्व वस्त्र पडिलेहे पिछे पूर्वोक्त रीत इरियावही पडिक्कमी, काजा लेके, इरियावही पडि क्कमी, काजा परठवना ॥ इति ॥

(पोरसिविधि)

छ घडी दिवस चडे पिछे खमासमण देके इच्छा० वह पडिपुन्ना पोरिसि ? इच्छ कही खमासमण देके इरियावही पडिक्कमना पिछे खमासमण देके इच्छा० पडिलेहण करु ? इच्छ कही मुहपति पडिलेहनी इति

पच्चरकाण पानेकी विधि

खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी, खमासम

ए देके इच्छा० चैत्यवंदन करु? इच्छ कही जगचिं मणीका चैत्यवंदन जयवियराय संपुर्ण पर्यंत कर (स्तवन स्थान उव सग्गहर कहेना) पिछे खमा मण देके इच्छा० सझाय करु? इच्छ कही एक न कार गणी धम्मो मंगलमुक्टि सझाय कहेना ख समण देके इच्छा० मुहपति पडिलेहुं? इच्छ क मुहपत्ति पडिलेहणी पिछे खमा० इच्छा० पच्चखा पारु 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंघा उपर स्थाप करके एक नवकार गुणके आंबिल पर्यंतके पच्चखा नीचे प्रमाणे कह करपारणा

"उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअ पोरिसि साढ रसि सूरेउग्गए पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चखा कीया चउविहार ॥ आंबील, नीवी, एकासण प खाण किया तिविहार ॥ पच्चखाण फासिअ, पा अं सोहिअ, तीरिअं किट्टिअ, आराहिअं जं च आराहिअ तस्स मिच्छामि डुक्कड ॥

इसमें जो पच्चखाण कीया होय उहांतक बोलन आगेकेपाठ न बोलवा तिविहार उपवासवालो नीचे प्रमाणे कहेना

"सूरे उग्गए पच्चखाण किया तिविहार, पा हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमड्ढ मुठि सहि पच्चखाण किया पाणहार, पच्चखाण फासिअं० पूर्वव ए प्रमाणे पच्चखाण पार्या पिछे नीचे प्रमाणे ॥ १७

गाथा कहेनी

धम्मो मंगल मुक्किठ । अहींसा सञ्जमो तवो देवावि तं नमंसति । जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा डुमस्स पुप्फेसु । नमरो आवियइ रस । नय पुप्फ किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहगमाव पुप्फेसु । दाण नत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वय च विर्त्ति ल प्रामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयते । पुप्फेसु नमरी जहा ॥ ४॥ महुकार समा बुद्धा । जे नवति अणिस्सिया । नाणापिंडरया दंता ॥ तेणवुच्च ति साहुणो त्तिवेमि ॥५॥डुम्म पुप्फिआ अजयणम् ॥१॥ कहन्नु कुद्या सामण्ण । जो कामे न निवारए । पए पए विसीयतो । सकप्पस्स वसगउ । ६ । वत्र गधमलंकारं । इत्थिउ सयणाणि य। अछदा जे न नुज ति । न से चाइत्तिवुच्चई । ७ । जे अ कंते पिए नोए। लद्धेवि पिठि कुवई । साहीणे चवइ नोए । सेहु चाइत्ति वुच्चई ॥ ८ ॥ समाइपेहाइ परिवयतो । सिआ मणो निस्सरई वहिद्धा ॥ न सामहं नो वि अहपि तीसे । इचेव ताउ विणइय रागं ॥ ९ ॥ आयावया हीचयसोगमल्ल । कामेकमाहीकमि य खु डुक्क । ठि दाहिदोसं विणइज्ञा राग । एवंसुही होहिसि संपरा ए ॥१० ॥ पक्खंदे जलिय जोइ । धूमकेउ डुरासय । निछति वंतय नोत्त । कुले जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगत्थु ते जसो कामी। जोतं जोवियकारणा। वंतं इ
च्छसिआवेउं। से अते मरण जवे ॥ १२ ॥ अहं च
जोग रायस्स। न चसि अधगवन्हिणो। माकुले गध
णाहो मो। सजमं निहुअंचर ॥ १३ ॥ जइ त काहि
सि जावं। जा जा दिछसि नारीउ। वायाविद्धुवह
ढो। अछि अप्पा जविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व
यण सुचा। संजयाइसु जासियं। अंकुसेण जहा ना
गो। धम्मे संपडिवाइउ ॥ १५ ॥ एव करंति संबुद्धा।
पंडिआ पवियरकणा। विणिअट्टंति जोगेसु। जहा
से पुरिसुत्तमो। त्तिबेमि ॥ १६ ॥ सजमे सुठियप्पा
ण। विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेय मणाइन्नं। निग्ग
थाण महेसिण ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुव्वियज्ययणम् ॥

गोचरी आलोयण विधि

निसिही कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु स
न्मुख आके नमो खमासमणाण मन्नएण वंदामी'
कहके पिछें पग जूमि प्रमार्जी शुरू करके गुरु स
न्मुख खडे रहके माथे पग उपर कांका रखके
दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण
देय पिछे आदेश मागके इरिआवही पडिक्कमे एक
लोगस्सका काउसग्ग करे काउसग्गमें जो क्रमसें
गोचरीकी जो जो वस्तुये लीनी होय सो यादकरे
तिस्मे जहां जहा जो जो दोष लागे होय सो याद
करे पिछे नमो अरि हताण कह पारके क्रम प्रमाण

गुरुको कह बतावे. पिछे गुरुको आहार दिखावे पिछे गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे–

पडिक्कमामि गोअरचरिआएसे मिछामिदुक्कड प र्यंत (श्रमण सूत्र पगाम सज्झाय) मे आवे सो आलावा कहे पिछे तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहके काउसग्ग करे सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे

अहो जिणेही असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया।
मुक्खसाहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिछे काउस्सग्ग पारके लोग्गस्स कहे ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि

सायकाले देवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआ वही पडिक्कमी पच्चखाण करे पिछे खमा० इछ० स्थ ण्डिल पडिलेहुं? इछ कही मडला करे सो ए प्रमाणे–

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे

दूसरे ६ मांडलेमे अणहियासेके बदल अहिया से' कहेना तत्पश्चात् दूसरी वारमे आघाडेके बदल अणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना एकदर २४ मंडले करना

पिछे इरिआवही पडिक्कमी, चैत्यवदन करके पडिक्कमणा शरु करे ॥ इति ॥

संथारा पोरिसीकी विधि

पहोर रात्री पर्यंत सजाय ध्यानकिये पिछे संथारा करनेके अवसर खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि कही खमासमेण देके इरिआवही पडिक्कमे पिछे खमा० इच्छा० 'बहु पडिपुन्ना पोरिसि राइय संथारए ठाउ ?' यों कहके चउक्कसायका चैत्यवंदन जय विय रायपर्यंत करना पिछे खमा० इच्छा० संथारा विधि भणनेकी मुहपत्ति पडि लेहु ? इछ कही मुहपत्तिपडि लेना 'निसिही निसिही नमो खमासमणाण गोयमाइण महामुणीण' इतना पाठ, कहके नवकार तथा करेमिभंते–त्रणवार कहना पीछे संथारा पोरसि बोलना (प्रतिक्रमणकी बुकमें छपगयाहै)

तिस्मे चौदमी गाथा तीनवार कहना पिछे तीन नवकार गुणना पिछे छेल्ली तीन गाथा कहेनी तत्पश्चात् निद्रा न आवे तहांतक सझाय ध्यानकरना

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको छींक आवे तो करनेकी विधि

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले छींक आवेतो सब पुन करना तत्पश्चात बृहच्छांति तकमे छींक आवे तो दुखक्खउके काउसग्गके पहिले इरिआवही पडिक्कमी लोगस्स कही खमासण देके इच्छा० क्षुद्रो

पद्रव उंडावणार्थं काउसग्ग करु? इच्छं कही अन्नत्थ कही चार लोगस्सका काउसग्ग सागरवरगंभिरा तक करना नीचेकी गाथा कहके पारना

सर्वे यक्षांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयतु नः ॥ १ ॥

पिछे प्रगट लोगस्स कहेना

छमासि काउस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११–१२–१३ तथा आसो सुदि ११–१२–१३ ए तीनतीन दिवसोमें हररोज देवसिक प्रतिक्रमणमें सझाय कहे पिछे ए काउस्सग करना प्रथम खमासमण देके इच्छा० सचित्त अचित्तरज उंहावणत्थं काउस्सग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थ कही चार लोगस्सका सागरवर गंभिरा तक काउस्सग्ग करना पारके लोगस्स कहेना

लोच करनेके समय काऊस्सग्ग करनेका विधि

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाउ इरिआवही पडिक्कमी खमा० इच्छा० सचित्तअचित्त रज उंहावणत्थं काउस्सग्ग करु? इच्छं करेमी काउस्सग्ग अन्नत्थ०कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवरगंभिरा तक करना पारके प्रगट लोगस्सकहेना

कोइ साधु काल करे तब साधुकों करनेका विधि

जो साधुने काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे–'कोटिक गण, वज्रीशा

खा, चंडकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंक्तिके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठाव णीआ करेमि काउस्सग्गं' अन्नथ० कही एक नव कार कहे पिछे तीन वार 'वोसिरे' कहे पिछे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय तत्पश्चात् जीर्ण कांचली प्रमुख जांगना जीर्ण वस्त्र परठवना पवित्र अचित्त पाणीसे नूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि कर ना पिछे श्रावक पास गोमूत्रादि छटायके अवले देव वंदाने तिसकी विधि नीचे प्रमाणे–

अंतिम देव वदन विधि

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा ल घु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (द्वारसे आसन तरफ) लेवे वस्त्रादि पहेरे उलटा पिछे काजा सवधी इरिआवही पडिक्कमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे

प्रथम कल्लाणकंदकी एक थोइ पिछे एक नवकारका काउस्सग्ग, पिछे अन्नत्थ० अरिहंत चे० जयवि० उव सग्ग० नमोर्हत्० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुथ्थुण० चैत्यवदन० लोगस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग्ग० अन्नत्थ० तस्सउ० इरिआ वही० खमा समण देके अविधि आशातना मिछामि डुक्कड कहे पिछे सीधा काजा लेके इरियावही पडिक्कमे

पिछे सत्रा समक्ष सर्व साधु साध्वीने आठ

थोड़सें सीधे देववंदन करना तिस्मे स्तवनके स्थान अजीसंता कहना और देव पूरा होनेसें खमा० इच्छा० क्षुद्रोपद्रव उडावणच काउस्सग्ग करुं ? इछ करेमि काउस्सग्गं अन्नत्र० कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवर गंभीरा तक करना स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना पिछे प्रगट लोगस्स कहना

दूसरे गामसें स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसेंभी उपर प्रमाणे आठ थोइसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसता वृध्धशांति कहना सा ध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओने देव वंदन करना

कोइ साधु कालधर्म पामे तब श्रावककों करनेका विधि

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उतरा ना जरा पगकी अगुलीको छेदकरना हाथ पगकी आगलीयोको वध करना शरीरपर चदन केशर व रासका विलेपन करना मृत्यु स्थानके तथा स्नान क रायके वेठानेके स्थानक लोखडकी खीली ठोकनी नये वस्त्र पहेनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण (चरव ली) मुहपत्ति रखना. बांही तर्फ झोली, उस्मे ज श पात्र एक लड्डु सहित रखना. रोहिणी, विशाखा पुनर्वसु तिन उत्तरा ए छ नक्षत्र मे दो पुतले दर्भ के करके रखना ज्येष्टा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, भरणी अश्लेषा ए छ नक्षत्रे पुतलें न करणा दूसरे १५ नक्षत्रेमें एक पुतला करणा वो पुतलेके जमणे

हाथमे उंघा (चरवला) मुहपत्ति देना उर वाम हा थमे नन्न पात्र तथा एक लकु सहीत झोली देनी दो पुतले होय तो दोनोकों देना पिछें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके च दनादि काष्टोसे अग्नि संस्कार करना प्रातमें सर्व अग्नि शात कर रक्षा योग्य स्यानकमे परठवणी पिछे गुरु पास आयके लघुशाति वा वृद्धशांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना साधु दररोज सात चैत्यवंदन करे सो नीचे प्रमाण

१ राइपडिक्कमणाके प्रारंभमें जग चिंतामणीका
२ राइपडिक्कमणाके अतमें विशाल लोचनका
३ मदरजीमे दर्शन करने जाय उहां करे
४ पच्चरकाण पारते जगचिंतामणीका.
५ आहार कररहे पिछे जगचितामणीका
६ दैवसिक प्रतिक्रमके प्रारंभमे.
७ सथारा पोरिसी भणावणमें चउकसायका

२४ साधु दररोज चारवार सझाय करे सोइस प्रमाणे,
१ सवेरकी पडिलेहणके अतमे धम्मो मगल० की
२ साजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की
३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अतमे कहतें हे सो
४ राइ पडिक्कमणाके प्रारंभमे भरहेसर की

सप्तम परिछेद समाप्त

॥ अथ अष्टम परिछेद प्रारंभः ॥

॥ अथ षोडश संस्कार प्रारंभ ॥

तत्व ज्ञान मयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥
केनापि हेतुना तस्मै, नम आद्याययोगिने ॥
गर्भाधानं पुंसवनं जन्मचन्द्रार्कदर्शनम् ॥
क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचि कर्म च ॥
तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥
कर्णवेधो मुण्डन च तथोपनयन परम् ॥
पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपोन्तकर्म च ॥
अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिता ॥

भाषार्थः—गर्भाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, चंद्र सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, नामकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुंडन ११, उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप १५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको करने चहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां संस्कार, साधुउने नही करणे

संस्कार कराने वाले गुरु विषे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मणः परमार्हतः ॥
क्षुल्लको वाऽऽसगुर्वाज्ञो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥१॥

अर्थ—अर्हन्मत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, और प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा क्षुल्लक

(श्रावक विशेप) जिसका स्वरूप आगे लिखेंगे इन दोनोमेंसे कोइ एक गृहस्थोंको सस्कार करावे

प्रथम गर्जाधान संस्कारका विधि

जव गर्जधारण को पाच मास होवे, तव गर्जाधानविधि, गृहस्थगुरु जैन व्राह्मणो ने कराना गर्जाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ ओर अत ५, इन पाच सस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दिनादिकोंकी शुद्धि न देखनी । श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र ओर रवि, मगल, वृहस्पति, येह वार पुसवनादिकमोंमें कहे हैं । ईसवास्ते पाचमे मासमें शुज तिथि, वार, नक्षत्रके दिनमे पतिको वलवान् चन्द्रादि देखकर, देशविरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी वाधी हैं, उपवीत ओर उत्तरासग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकक्षा धारण करा है, मस्तकमे चंदनका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर साविन्नीक प्रकोष्ठवद्ध पचपरमेष्ठि मत्रोद्दिष्ट पांच ग्रथियुक्त दर्जसहित कौसुज सूत्रका कंकण है जिसके, तथा जिसने रात्रिमें व्रह्मश्चर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्याख्यान करा है, सप्रासकरी है आजन्मसें यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेपणयुक्त, जैनव्राह्म

ण, अथवा क्षुल्लक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणेके योग्य होता है ॥

उक्त च ॥

शातो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासन ॥

अर्हत्साधुकृतानुज्ञ· कुप्रतिग्रहवर्जित. ॥

नापार्थ –शात, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोनका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोका जानकार, अविरोधी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसे देखनेवाला, प्राणोके नाश होते नी अपने आचारको न त्यागे सुदर चेष्टावाला होवे, अगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सद्गुरुकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, वुद्धिमान्, क्षांतिमान्, कृतज्ञ, दोप्रकारसे द्रव्यनावसे शुचि होवे, गृहस्थोंके सस्कार करनेमे ऐसा गुरु चाहिये

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्नाधान कर्ममे प्रथम गर्नवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे । और सो गर्नवतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासग करके, प्रथम शास्त्रोक्त वृहत्स्नात्रविधिसे अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुन नाजनमे स्थापन करे· । तिसपीछे शास्त्रोक्त विधिसें गध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे । पूजाके अंतमे गुरु, गर्भवतीको, अविध वायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अभिषेक करवावे । पीछे सर्व जलाशयोंके जलोंके जलोंको एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्भित स्तोत्रकरके मंत्रे. ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

"ॐ नमो निश्चितवचसे । जगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । जुवनजनपालनोद्यताय । सर्वडुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । डुष्टग्रहजूतपिशाचशाकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनाममत्रस्मरणतुष्टा । जगवती । तत्पदजक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । जगवति । विजये । जय २ । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जयावहे । सर्वसंघस्य जद्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय २ जव्यानां कृतसिद्धे । सत्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अजयप्रदे । स्वस्तिप्रदे जक्तानां जतूनां शुजप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्तियशोव

र्द्धिनि । सलिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । विषात् रक्ष २ । विषधरेभ्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेभ्यो रक्ष २ । राज जयेभ्यो रक्ष २ । रोग जयेभ्यो रक्ष २ । रण जयेभ्यो रक्ष २। राक्षसेभ्यो रक्ष २। रिपुगणेभ्यो रक्ष २ । मारिभ्यो रक्ष २ । चौरेभ्यो रक्ष २ । ईतिभ्यो रक्ष २ । श्वापदेभ्यो रक्ष २ । शिव कुरु २ । शांति कुरु २ । तुष्टि कुरु २ । पुष्टि कुरु २ । स्वस्ति कुरु २ । जगवति । गुणवति । जनाना शिवशांतितुष्टिपुष्टि स्वस्ति कुरु २ । ॐ नमो ॐ ह्र य क्षः ह्री फुट् २। स्वाहा ' ॥ इति ॥

शातिदेवी स्तोत्र ॥

"ॐ नमो जगवतेऽर्हते । शांतिस्वामिने । सकलातिशेषकमहासपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । नम शांतिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय । भुवनपालनो द्यताय । सर्वदुरितविनाशनाय । सर्वाशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिकाकिनी प्रमथनाय । नमो जगवति । विजये । अजिते । अपराजिते । जयति । जयावहे । सर्वसंघस्य । जद्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूना शिवशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति दे । जव्याना सिद्धिवृद्धिनिवृतिनिर्वाणजननि। सत्वाना अजयप्रदाननिरते । जक्तानां शुजावहे । सम्यग् दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन निरतानां श्रीसंपतृयशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष

विषधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चौरेतिश्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष २। शिवं कुरु २। शांति कुरु २। तुष्टि कुरु २। पुष्टि कुरु २। स्वस्ति कुरु २। भगवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति करु २। ॐ नमो नमो ह्रुँह्रू. य क्ष ह्रीँ फट् २ स्वाहा" ॥ इति ॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्त्र मूल चूर्ण सर्व जलाशयोके जलको सातवार मंत्रके, पुत्रवाली सधवा स्त्रीयोके हाथेंकरी मगलगीतोंके गातेहुए गर्भवंतीको स्नानकरावे, सुगधका अनुलेपन करी सदश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) पहिराके, सपत्तिअनुसार आभरण धारण करवाके, पतिके साथ वस्त्राचलका ग्रथिबधन करके, पतिके वामेपासे शुभ आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके, गर्भवतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं। स्वस्ति ससारसबधबद्धयो पतिभार्ययो.॥
युवयोरवियोगोस्तु भववासातमाशिषा ॥ १ ॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमत्रकरके दपतीका (स्त्रीभर्त्ताका) ग्रथिबधन करना। तदपीछे गुरु, तिस गर्भवंतीके आगे शुभ पट्टे ऊपर पद्मासन लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोमे जिनस्नात्रके जलसयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके, आर्यवेदमत्र पढके, कुशाग्र बिंदुयोकरके, गर्भवतीको सींचन करे

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"ॐ अर्हं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मबद्धोसि।जवभ्रांतोसि। जवविभ्रमिपुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्डोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपांङ्गोसि । स्थिरो जव नन्दिमान् जव । वृद्धिमान् जव । पुष्टिमान् जव । ध्यातजिनो जव । ध्यातसम्यक्त्वो जव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवास गर्जवास प्राप्नोषि । अर्हं ॐ ॥'

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमे धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक बिंदुयोंकरके गर्जवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे. । तदपीछे पच परमेष्टिमंत्र पठनपूर्वक दपतीको आसनसे उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास लेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोवे तदपीछे गर्जवती स्वसपत्तिके अनुसार वस्त्राजरण द्रव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे. । तदपीछे गुरु, पतिसहित गर्जवंतीको आशीर्वाद देवे यथा ॥

ज्ञानत्रय गर्जगतोपि विंदन् संसारपारैकनिबद्ध चित्त ॥ गर्जस्य पुष्टि युवयोश्च तुष्टि युगादिदेव' प्रकरोतुनित्यम् ॥ १ ॥

तदपीछे आसनसें उठायके ग्रंथिवियोजन करे ग्रथिवियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं । ग्रथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् स्नेहग्रथि स्थिरोस्तु वां ॥ शिथिलोस्तु जवग्रंथि कर्मग्रथिदृढीकृत॥१॥

इस मत्रकरके ग्रथि खोलके धर्मागारमे दंपतीको लेजाके गुरु को वंदना करवावे, और साधुयोंको निर्दोष जोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे ॥

तदपीछे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृहदेता, पुरदेवतादि पूजन जानना

॥ जैन वेद मन्त्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि,जैनवेदमंत्र,सो कथन करतेहैं यथा आदिदेव (ऋषजदेव) का पुत्र,अवधिज्ञानवान्, आदिचक्री, जरत राजा,श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने–सो जरत राजा–सांसारिक व्यवहारसस्कारकी स्थितिकेवास्ते, अर्हन्की आज्ञा पाकरके, धारे हैं ज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप तीनसूत्र–मुद्राकरके चिन्हितवक्ष स्थलवाले ब्राह्मणोंको (माहनोंको) पूज्यतरीके मानता हुआ, और तिस अवसरमे अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवाला होके, चार वेदोंको उच्चारण करता जया. तिनके नाम–सस्कारदर्शन १, सस्थापनपरामर्शन २, तत्त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारो वेदोको, माहनोको पठ न कराता हुआ । तदपीछे वह माहन, सात तीर्थ करोके तीर्थतक अर्थात् चंद्रप्रजतीर्थंकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहे । तदपीछे नवमे तीर्थंकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवछेद हुए, तिस वीचमें तिन माहनोंने परिग्रहके लोजी होके, स्वच्छंदसें तिन आर्यवेदों कि जगे कुठकसुनी सुनाइ वातो लेके नवीन श्रुतिया रची, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रची (क्रमसे ऋग्, यजु साम, अथर्व,) नाम कल्पना करके, मिथ्यादृष्टिपणेको प्राप्तकरे तव व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहित मन कल्पित हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोंसें पराङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिंसक वेदोंको ठोरूके, जिनप्रणीत आगमकोही प्रमाणचूत माने । तिन ब्राह्मणोमेंसें जी, जिन माहनोंने (ब्राह्मणोंने) सम्यक्त्व न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुन तीर्थंकरोके उपदेशसें सम्यक्त्व पाके दृढ रहे,तिनोके सप्रदायमें आजजी जरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते हे, सोही यहां कहते हैं

यत उक्तमागमे ॥
सिरिन्नरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउं कत्ता ॥
माहणपढणठमिण कहिअ सुहझाणववहार ॥ १ ॥
जिणतिछे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहि ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाण कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या,–श्रीन्नरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है न्नरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुन्न ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहारकेवास्ते । जिन तीर्थंकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असयतिहोंके तिनोंने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रथसे जानना ॥

इस गर्न्नाधानसस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्न्न ४, कौसुन्नसुत्र ५, ऊव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ९, शुन्नआसन १०, शुन्नपट्ट ११, स्वर्णताम्रादिन्नाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां १४ और गर्न्नवंतीका पति १५,

इति गर्न्नाधान सस्कार विधि

॥ अथ पुंसवन सस्कार वर्णन ॥

गर्न्नसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपाग गर्भके उत्पन्न हुए, तिसके श रीरमें पूर्णीभाव प्रमोदरूप स्तनोंमे दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना। मूल पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र, और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममे संमत है। रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथि यां वर्जके, गर्भांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे, सो ऐसें है। पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए ग र्भाधान कर्मके अनतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धा रण करे है, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्भवं तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तव मगलगीतगानपूर्वक आभरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके, अभ्यग उद्वर्त्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान करावे। तदपीछे प्रभात हुए नवीन वस्त्र गधमा ल्यभूषित गर्भवतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामे अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पचामृतकरके वृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे। तदपीछे सहस्रमू लीस्नात्र प्रतिमाको करे। पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोको सुवर्णरूप्यताम्रादि भाजनमे

स्थापन करके, शुज्ञासन ऊपर वैठी हुई साक्षीजू त करे हैं पनिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्जवंतीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविंडुयोंकरके स्नात्रोदकसे गर्जवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमत्रको पढे ॥

"॥ ॐ अर्हं । नमस्तीर्थंकरनामकर्मप्रतिबधसंप्राप्तसुरासुरेंद्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायु कर्मबधप्राप्य मनुष्यजन्मगर्जावासमवाप्नोपि तद्भव जन्म जरामरणगर्जवासविच्छित्तये प्राप्तार्हद्धर्म अर्हद्भक्त सम्यक्त्वनिश्चल कुलजूपण सुखेन तव जन्मास्तु । जवतु तव स्वन्मातापित्रो कुलस्याज्युदय । तत शांति पुष्टि तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धि कांति सनातनी अर्हॐ॥

इस वेदमत्रको आठवार पढता हुआ, गर्जवंतीको अजिपेचन करे । तदपीछे गर्जवती आसनसें उठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मुद्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे । तदपीछे गुरुके चरणोंको नमस्कार करके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तबोलसहित आठ सुपारी गुरुको देवे । तदपीछे धर्मागार (पोपधशाला) में जाकर साधुयोंको वंदना नमस्कार करे, और साधुयोंको यथाशक्तिसे शुद्ध अन्न वस्त्र पात्र देवे । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे ॥ तदपीछे स्वकुलाचारकरकें कुलदेवतादिपूजन जानना.

पचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५ रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ८, और रूपेकी ८ एवं षोडश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ८, मूलसहित दर्भ ९, तांबूल १०, सुगध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीया १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुसवनसंस्कारमे चाहिये ॥

इति द्वितीय पुसवन सस्कार विधि

अथ तृतीय जन्मनामा संस्कार वर्णन ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु,सूतिकागृह के निकट गृहमे एकांतस्थानमे जहा रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, वाल, पशु, जहां न आवे, तहा घटियत्र (घडी–कलाक) सहित उपयोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्ठिजापमे तत्पर हुआ थका रहे । यहां पहिलां तिथि वार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यो कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है ॥

वालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्यो तिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे तिसने भी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीछे वालकके पिता, पितृव्य (चाचा-काका) पितामहोनें, नाल विना छेद्या गुरुका, और ज्योति षिका वहुत वस्त्र आभूषणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल छेद्यांपीछे सूतक हो जाता है. । गुरु

वालके पिता, पितामह (दादा) आदिककों आशीर्वाद देवे ॥

यथा ॥

'ॐ अर्ह कुलं वो वर्द्धता । संतु शतशः पुत्रप्रपौत्रा । अक्षीणमस्त्वायुर्द्धनं यश च अर्हं ॐ ॥' इति वेदाशी ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्दैत्याधिनाथैस्सपरिच्छैश्च ॥ कुंभामृतैः सस्नपितस्सदेव आद्यो विदध्यात् कुलवर्द्धनंच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपति क्षितिसुत सौम्यस्तथा वाक्पति शुक्र सूर्यसतो विधुतुदशिखिश्रेष्टा ग्रहा पांतुव ॥ अश्विन्यादिनमण्डल तदपरो मेपादिराशिक्रम कल्याण पृथुकस्य वृद्धिमधिका सतानसप्यस्य च ॥१

तदपीछे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको, और दाईयोंको निर्देश करे । अन्य घरमें रहाही वालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलाभिमन्त्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अर्हं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्नपितो जिनेन्द्र ॥ स्नानोदक तस्य भवत्विदं च,शिशोर्महामङ्गलपुण्यवृद्धै ॥ १ ॥

इस मन्त्रकरके सात वार जलको मंत्रे, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयो बालकको स्नान करावे । और अपनेश्कुलाचारके अनुसार नालछेद करे तदपीछे गुरु स्वस्थानमें बैठाहूआ चदन, रक्तचदन, बिल्वकाष्ठादि दग्ध करके तिनकी जस्म श्वेतसर्षप और लवण मिश्रित करके पोट्टलिका बाधे

रक्षाजिमन्त्रणमत्रो यथा ॥

" ॐ ह्रीं श्रीअबे जगदबे शुजे शुजकरे अमुं बालं जूतेज्यो रक्ष २ । ग्रहेज्यो रक्ष २ । पिशाचेज्यो रक्ष २ । वेतालेज्यो २। शाकिनीज्यो रक्ष २। गगनदेवीज्यो रक्ष २ । दुष्टेज्यो रक्ष २ । शत्रुज्यो रक्ष २ । कार्मणेज्यो रक्ष २ । दृष्टिदोषेज्यो रक्ष । २ जय कुरु विजय कुरु । तुष्टि कुरु । पुष्टि कुरु । कुलवृद्धि कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ जगवति श्रीअबिके नम ॥

इस मंत्रकरके सातवार मत्रित रक्षापोट्टलीको काले सूत्रसें बाधके, लोहेका टुकमा, वरुणमूलका टुकडा, रक्तचंदनका टुकमा और कोडी, इनोसहित रक्षापोट्टलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोके पास बालकके हाथ ऊपर बधावे ॥

सावत्सर(पंचाग)घटीपात्र, चदन, रक्तचदन, समीपमे एकांत गृह,सरसव,लवण कौशेय कृष्णसूत्र,कौमीगीतमंगल, लोहा,रक्षा,वस्त्र,दक्षिणावास्ते धन, सूतिका, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधि, ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें,ज्येष्टामें,मूलमें,गंमांतमें जन्मामें बालकका जन्म होवे तो बालकको,बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र, शोक, मरणादि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुलज्येष्ट (कुलका बमा) शांतिकविधिमें कहे विधानके करेविना बालकका मुख न देखे ॥

इति जन्मसंस्कार विधि

अथ चतुर्थ सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्त चंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे तदपीछे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख लेजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विभावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियकरोऽसि । शिवकरोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्त्तंडोऽसि । द्वादशात्माऽसि । चक्रबांध

वोऽसि । नमस्ते भगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो भव अर्हं ॥"

ऐसें गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे गुरु पुत्रसहित माताको आशीर्वाद देवे ।

यथा । आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंद्य कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥
भूयात्रिजगच्चक्षुर्मंगलदस्ते सपुत्राया ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नही है । तदपीछे गुरु स्वस्थानमें आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको विसर्जन करे माता और पुत्रको सूतकके भयसें तहा जिनप्रतिमाके पास न लावे तिस दिनमें ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्फटिकरूप्यचदनमयी चद्रमाकी मूर्ति स्थापन करे, तिस चद्रमाकी मूर्तिका शांतिकादिक प्रक्रमोक्त विधिकरके पूजन करे तदपीछे तैसेंही सूर्य दर्शनरीतिसें चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चद्रसन्मुख माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता हुआ, मातापुत्र दोनोको चद्रका दर्शन करावे ॥

चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । चंद्रोऽसि । निशाकरोऽसि । सुधाकरोऽसि । चद्रमा असि । ग्रहपतिरसि । नक्षत्रपतिरसि । कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि । मदनमि

त्रमसि । जगज्जीवनमसि । जैवातृकोऽसि । क्षीरसागरोद्भवोऽसि । श्वेतवाहनोऽसि । राजाऽसि । राजराजोऽसि । श्रोपधीगर्जोऽसि । वंद्योऽसि । पूज्योऽसि । नमस्ते जगवन् अस्य कुलस्य ऋद्धिं कुरु । वृद्धिं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु जय विजयं कुरु । जद्र कुरु । प्रमोद कुरु । श्रीशशाकाय नम । अर्हं ॥"

ऐसे पढता हुआ, माता पुत्रको चंद्र दिखलाके खमा रहे । माता पुत्र सहित गुरुको नमस्कार करे । गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा । वृत्तम् ॥

सर्वौपधीमिश्रमरीचिजाल सर्वापदां संहरणप्रवीण॥
करोतु वृद्धिं सकलेपि वंशे युष्माकमिन्दु सततं प्रसन्न.

तदपीठे गुरु जिनप्रतिमा, और चद्रप्रतिमा दोनोंको विसर्जन करे । इसमें इतना विशेष है । कदाचित् तिस रात्रिके विषे चतुर्दशी अमावास्याके वशसें वा बादलसहित आकाशके होनेसें चद्रमा न दिखलाइ देवे तो जी पूजन तो तिस रात्रिकीही सध्यामे करना, और दर्शन तो और रात्रिमें जी चद्रमाके उदय हुए हो सक्ता है ॥ सूर्य और चद्रमाकी मूर्ति, तिसकी पूजाकी वस्तु, सूर्यचद्रदर्शनसस्कारमे चाहिये ॥

इति चद्रसूर्यदर्शनसंस्कारविधि ॥

॥ अथक्षीराशननामा पांचमा संस्कार ॥

तिसही जन्मसे तीसरेदिन, चन्द्रसूर्यके दर्शनके दिन मेंही, बालकको क्षीराशनसंस्कार करना । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, अमृतमंत्रकरके एकसौ आठ वार मंत्रित तीर्थोदकसें बालकको, और बालककी माताके स्तनोको अभिषेक करके, माताकी गोदी (अंक) मे स्थित बालकको दूध पावे पूर्णांगना शिकासंबंधि स्तन्य पहिलां चुघावे, स्तन्य (दूध) पीते हुए बालकको गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा वेदमंत्र ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । आत्माऽसि । पुरुषोऽसि । शब्दज्ञोऽसि । रूपज्ञोऽसि । रसज्ञोऽसि । गंधज्ञोऽसि । स्पर्शज्ञोऽसि । सदाहारोऽसि । कृताहारोऽसि । अभ्यस्ताहारोऽसि । कावलिकाहारोऽसि । लोमाहारोऽसि । औदारिकशरीरोऽसि । अनेनाहारेण तवाग वर्द्धता । बलं वर्द्धता । तेजोवर्द्धतां । पाटव वर्द्धतां । सौष्ठवं वर्द्धतां पूर्णायुर्भव । अर्हं ॐ ॥'

इस मंत्रकरके तीन वार आशीर्वाद देवे ॥

अमृतमंत्रो यथा ॥

"ॐ ॥ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥"

इति क्षीराशनसंस्कार विधि ॥

अथ षष्टमं षष्टीसंस्कारस्वरूप ॥

छठे दिनमें संध्याके समयमें गुरु प्रसूतिघरमें आकरके षष्ठीपूजन विधिका आरंभ करे, षष्टीपूजनमें सूतक नहीं गिणना यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये बलादपि ॥
षष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी भींत और भूमि दोनोको सधवायोके हाथसे गोवरसें लेपन करावे,। तदपीछे हश्य शुक्रबृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके भीतभागको खडी आदिसें धवल (श्वेत) करावे, और भूमिभागको चौकमंडित करावे । तदपीछे श्वेत भींतभागके ऊपर सधवाके हाथेकरी कुकुम हिंगुलादिवर्णोंसें आठमाताओंको ऊर्द्धा, (खडीयां) आठ बैठी, और आठ सुती, लिखवावे कुलक्रमांतरमें गुरुकर्मांतरमें षट् (६) षट् (६) लिखनीया । तदपीछे सधवा स्त्रीयोके गीतमंगल गाते हुए चौकमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनतरोक्त पूजाक्रम करके मातायोंको पूजे यथा ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके पुष्पकरके आह्वान करे॥तदपीछे॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त

कपद्माक्षसूत्रकरे। हंसवाहने। श्वेतवर्णे। मम सन्निहिता भव २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह तिष्ठ २ स्वाहा ॥'

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंध गृह्ण २ स्वाहा ॥"

चंदनादि गंध चढावे ॥

"ॐ ह्रीँ नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्प गृह २ स्वाहा ॥"

इसीतरें मंत्रपूर्वक ।

"धूप गृह्ण २ ।' दीप गृह्ण २ ।' 'अक्षतान् गृह्ण २ ।' 'नैवेद्य गृह्ण २ स्वाहा ॥"

ऐसें एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधादिवस्तुयोंकरके भगवतीको पूजे ॥ ऐसेंही अन्य सात मातायोकी पूजा करणी ।

विशेष मंत्रोंमें है, सो लिखते हैं ॥

"ॐ ह्रीँ नमो भगवति । माहेश्वरि । शूलपि[illegible]। चंद्रार्द्धललाटे। गजचर्मावृते।

शेपाहिवरूकांचीकलापे । त्रिनयने । वृषभवाहने । श्वेतवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥" शेषपूर्ववत्२

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । कौमारि । षण्मुखि । शूलशक्तिधरे । वरदाभयकरे । मयूरवाहने गौरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥' शेषपूर्ववत् ३

"ॐ ह्रींनमो भगवति।वैष्णवि । शंखचक्रगदा। सारंगखड्गकरे । गरुडवाहने । कृष्णवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ४ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । वाराहि । वराह मुहि । चक्रखड्गहस्ते । शेषवाहने श्यामवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । इन्द्राणि । सहस्र नयने । वज्रहस्ते । सर्वाभरणभूषिते । गजवाहने । सुरांगनाकोटिवेष्टिते । कांचनवर्णे इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्वत् ॥ ६ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । चामुंडे । शिराजालकरालशरीरे । प्रकटितदशने । ज्वालाकुंतले । रक्त त्रिनेत्रे । शूलकपालखड्गप्रेतकेशकरे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ७ ॥

'॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । त्रिपुरे । पद्मपुस्तक वरदाभयकरे । सिंहवाहने । श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ८ ॥

एवं जैसें ऊर्ध्व (खमी) मातृका पूजन करे, तैसेंही वेठी और सुत मातृयांका नी पूर्वोक्त मंत्रो सेंही तीनवार पूजन करे, । कितनेक चामुंना, त्रिपुरा, दोनोंको वर्जके षट्मातृकाही पूजन करते हे ॥

मातृका पूजन करके ऐसें पढे ॥

ब्राह्माद्यामातरोप्यष्टौ स्वस्वास्त्रबलवाहना ॥
षष्टीसंपूजनात्पूर्वं कल्याण ददता शिशो· ॥ १ ॥

तदपीछे मातृस्थापनाकी अग्रनूमिमें चंदनलेप स्थापना करके, अवारूप षष्टीको स्थापन करे. । और तिस स्थापनाको दधि, चदन, अक्षत, दूर्वा दिकरके पूजे ।

तदपीछे गुरु हस्तमें पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ ऐं ह्रीं षष्टि । आम्रवनासीने । कदंबवन विहारे। पुत्रत्रययुते । नरवाहने । श्यामाङ्गि । इह आगछ २ स्वाहा ॥ '

मातृवत् इसकी नी पूजा करणी । तदपीछे वाल कमातासहित अविधवा कुलवृद्धा स्त्रीया मंगलगी तगानमें तत्पर वाजंत्रोंके वाजते हुए षष्टीरात्रिको जागरणा करे । तदपीछे प्रात कालमें ॥

"॥ ॐ नगवति माहेश्वरि पुनरागमनाय स्वाहा ॥ '

ऐसें प्रत्येक नामपूर्वक गुरु, मातृको और षष्टीको विसर्जन करे । तदपीछे गुरु, वालकको पंचपरमेष्टि-

मंत्रपवित्रित जलकरके अभिषेक करता हुआ, वेद मंत्रकरके आशीर्वाद देवे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । अनादिरसि । अनादि कर्मभागसि । यत्त्वया पूर्वं प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैरा श्रवबृत्त्या कर्मबद्धं तद्बन्धोदयोदीरणासत्ताभिः प्रति भुङ्क्ष्व । माशुभकर्मोदयफलभुक्तेरुद्रेक दध्या. । नचा शुभकर्मफलभुक्त्या विषादमाचरेः । तवास्तु संवर वृत्त्या कर्मनिर्जरा अर्हं ॐ ॥"

सूतकमें दक्षिणा नही है ॥ चंदन, दधि, दूर्वा, अक्षत, कुंकुम, लेखिनी, हिंगुलादिवर्ण, पूजाके उप करण, नैवेद्य, सधवा स्त्रीयां, दर्भ, भूमिलेपन, इत नी वस्तु षष्ठीजागरणसंस्कारमें चाहिये ॥

इति षष्ठी संस्कारविधि समाप्त ॥

॥ अथ शुचिकर्मसंस्कार ॥

यहा शुचिकर्म स्वस्ववर्णानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए करणा, तद्यथा ॥

शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन बाहुज ॥
वैश्यस्तु षोडशाहेन शूद्रो मासेन शुध्यति ॥१॥
कारूणा सूतक नास्ति तेषा शुद्धिर्न चापिहि ॥
ततो गुरुकुलाचारस्तेषु प्रामाण्यमिच्छति ॥ २ ॥

तिस कारणसें स्वस्ववर्णकुलानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए, गुरु सर्वही, सोला पुरुषयुगसें उरे,

तिस कुलवर्गको बुलवावे. क्योंकि, सूतक सोलां पुरुषयुगसें ऊरे ग्रहण करिये है ॥ यदुक्तं ॥

नृषोडशकपर्यन्त गणयेत् सूतक सुधी ॥
विवाहं नानुजानीयाद्गोत्रे लक्षनृणां युगे ॥ १ ॥

जावार्थ.—सोलां पुरुषपर्यंत (बुद्धीवंत) पुरुष सूतक गिणे, । परंतु एकगोत्रमें लक्ष पुरुषयुग व्यतीत हुए जी, विवाह नही करे, । तिसवास्ते अपने गोत्रजको बुलवायके तिन सर्वको सांगोपांग स्नान और वस्त्रक्षालन करनेको कहे. । स्नान करके शुचि वस्त्र पहिनके गुरुको साक्षी करके, वे सर्व गोत्रज विविध प्रकारकी पूजासे जिन प्रतिमाका पूजन करे । तदपीछे बालकके माता पिता पचगव्यकरके अतस्नान करे । पुत्रसहित नखछेदनकरके गांठ जोमी दंपती जिनप्रतिमाको नमस्कार करे, सधवा स्त्रीयांके मंगलगीत गाते वाजंत्रोंके बाजते हुए । और सर्व चैत्योंमें पूजा नैवेद्य ढौकन करे । साधुयोंको यथाशक्ति चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र देवे, । और सस्कार करनेवाले गुरुको वस्त्र तांबूल जूषण इव्यादिदान देवे तथा । जन्म,चंद्रसूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, इनसंबधिनी दक्षिणा तिस दिनमें संस्कारगुरुकेताइ देणी । और सर्व गोत्रज स्वजन मित्र वर्गोंको यथाशक्ति जोजन तांबूल देनां । तथा गुरु तिस कुलके आचारानुसारकरके पंचगव्य, जिनस्ना

त्रोदक, सर्वौषधिजल श्रोर तीर्थजल, इनोंकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राजरणादि पहिनावे ॥ तथा स्त्रीयोको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएजी, श्रार्द्र नक्षत्रोंमे, श्रोर सिंह गजयोनि नक्षत्रोंमे सूतकस्नान नही करावणा । श्रार्द्र नक्षत्र दश है । कृत्तिका १, जरणी २, मूल ३, श्रार्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ए, श्रवण १०, ये दश श्रार्द्र नक्षत्र हैं, इनमे स्त्रीको सूतकस्नान न करावे यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाजाद्रपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने, श्रोर जरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमे इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसे कोइ नक्षत्र श्रावे, तब एक एक दिनके श्रतरे शुचिकर्म करणा ॥ पूजावस्तु, पंचगव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

श्रथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र श्रोर चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना श्रथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्ञान पुरुषोको सम्मत है ॥ शुचिकर्मदिनमे श्रथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुभ दिनमे वालकको चंद्रमाके बल हुए, ज्योतिषिकसहित गुरु तिसके घरमे शुभस्थानमे शुभासनके ऊपर बैठा हुआ, पचपरमेष्ठिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे. । तिस अवसरमे वालकके पिता, पितामहादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योतिषिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसें कहे हे भगवन् ! पुत्रका नामकरण करो । तव गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्म लग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे । तब ज्योतिषिक शुभपट्टेऊपर खटिका (खमी) करके तिस वालक के जन्मलग्नको लिखे, स्थान २ में ग्रहोंको स्थापन करे तब वालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे । तिसमे स्वर्णमुद्रा १२. रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक (सुपारी) १२, अन्य फल जाति १२, नालिकेर १२, नागवल्लीदल (पान) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे । इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे ऐसें लग्न के पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहे वेभी उपयोगसहित सुणे । तदपीछे व्याख्यानसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोंकरके पत्रे मे लिखके, कुलज्येष्टको सौंप देवे । वालकके पितादिकोंने ज्योतिषिका अपनी सपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सन्मान करणा और ज्योतिषिक
भी तिनोके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको
प्रकाश करके, स्वघरको जावे तदपीछे गुरु, सर्व
कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन
करके (विठलाके) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा
लेके परमेष्टिमंत्रपठनपूर्वक (कुलवृद्धाके) कानमें
जातिगुणोचित नाम सुणावे । तिसपीछे कुलवृद्धा
नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता
शिविकादि नरवाहनमे बैठी हुई, वा पादचारिणी
अविधवायोके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमे जावे ।
तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता
चौवीस २ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि
करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे । तदपीछे
देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीया बालकका नाम प्रकाश
करें चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे
यह विधि करना तदपीछे तिसही रीतिसे पौषध
शालामें आवे, तहां प्रवेश करके भोजनमंडली
स्थानमें मंडलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे
मंडलीपूजाका विधि यह है पुत्रकी माता "श्रीगौ
तमाय नम" ऐसा उच्चार करती हुई, गध, अक्षत,
पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मडलीपट्टकी पूजा
करे मंडलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रा १०,
क्रमुक १०८, नालिकेर २९, वस्त्रहस्त २९, स्थापन

करे. । तदपीछे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे । निरुंछना और आरात्रिका (आरती) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, "वासखेवंकरेह" ऐसा पुत्रकी माता कहे तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐकार ह्रीं कार श्रींकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्द्धमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोके शिरपर क्षेप करे तहां भी तिनके शिरमें ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरोंका सन्निवेश करे । तदपीछे बालकको अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे । तदपीछे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे । यतिगुरुयोंको शुद्ध आहार वस्त्र पात्रका दान देवे । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलकार स्वर्णदान देवे ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रभूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमें चाहिये ॥

इति अष्टम नामकरणसस्कार विधि

॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तरात्रय, धनिष्टा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रामे और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

वारोमे पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन (खाना) श्रेष्ट है. और बालकोंको अन्नजोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ट है । पुत्रको ठठे मासमें, और कन्याको पाचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषो ने कहा है । जे नक्षत्र कहे तिनमे और पूर्वोक्त वारमे सद्ग्रहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुज तिथीमें करणा. क्यों कि, लग्नमे रवि होवे तो, कुष्टी होवे, मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे, शनि होवे तो, वातव्याधि होवे, क्षीणचंद्र होवे तो, नीख मागनेमे रत होवे, बुध होवे तो, ज्ञानी होवे, शुक्र होवे तो, जोगी होवे, बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे, और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवा ला होवे कटक ४ । ७ । १० । अत्य १२ । निधन ८ । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमे शुजफल देते हैं । ठठे और आठमे घरमे चंद्रमा अशुज होता है, । केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमे सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे ॥ तिसवास्ते ठठे मासमे बालकको, और पाचमे मासमें कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोमें बालकको चंद्रबलके हुए अन्नप्राश नका आरज करे । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, तिसके घरमे जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसें जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और पट्टविकृयोंको ग्रहण करे । तदपीछे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृती योंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकों से पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोको पृथक् न्यारे २ करे । तदपीछे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधि सें (प्रतिष्ठा विधिमे लिखेंगे) पचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कल्पोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे सर्वजातके फलजी ढोवे । तदपीछे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिलावे । फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसें उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुयोंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृता श्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे, । तिससे उद्धरित वस्तुयोंको कुलदेवताके मन्त्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे, । तदपीछे कुल देवीके नैवेद्यमेंसें योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे । और गुरु यह वेद मंत्र पढे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं जगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजितः सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारसा हारितवान् । तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न जोजनात् परमानंददायकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी

रमातस्त्वमप्याहारय आहारं तत्ते दीर्घमायुरारोग्यमस्तु अर्हं ॐ ॥ "

यह मंत्र तीनवार पढे. । तदपीछे साधुयोंको षट् विकृतियांकरके षट्रससंयुक्त आहार देवे, यतिगुरुके मंडलीपट्टोपरि परमान्नपूरित सुवर्णपात्र चढावे, गृहस्थगुरुको द्रोण द्रोण प्रमाण सर्वजातका अन्न दान करे, । तुला २ प्रमाण सर्व घृत, तैल, गुड लवणादि दान करे, । सर्वजातके एक सौ आठ २ फल देवे, । तांबेकाचरु, कांसेका थाल, और वस्त्रयुगल देवे । सर्वजातिके अन्न, सर्वजातिके फल, सर्व विकृतियां, स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, कांस्य, इनोंके पात्र (भाजन) इतनी वस्तुयां इस संस्कारमें चाहिये ॥

इति नवमान्नप्राशनसंस्कार विधि

अथ दशमं कर्णवेधसंस्कारविधि ॥

उत्तरात्रय, हस्त, रोहिणी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसू मृगशीर्ष, पुष्य, इन नक्षत्रोंमें । रेवती श्रवण, हस्त, अश्विनी, चित्रा, पुष्य, धनिष्ठा, पुनर्वसू, अनुराधा, चरसहित इन नक्षत्रोंमें कर्णवेध करना, । लाभ ११, तृतीय ३, घरमें शुभ ग्रहोंकरके संयुक्त होवे, शुभ राशि लग्नमें क्रूर ग्रहोंकरकेरहित बृहस्पतिके लग्नाधिप, वा लग्नमें हुए कर्णवेध करणा जिसमे चर नक्षत्र, पुष्य, चित्रा, श्रवण, रेवती, जानने । मग

शुक्र, सूर्य, बृहस्पति, इन वारमें शुभ तिथीमें शुभ योगमे कर्णवेध करणा ॥ इन निर्दोष तिथि वार नक्षत्रमे बालकको चंद्रबलके हुए कर्णवेध आरंभ करे । उक्त च । "गर्भाधान, पुंसवन, जन्म, सूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, शुचि, नामकरण, अन्नप्राशन, मृत्यु, इन संस्कारोंमें अवश्य कार्य होनेसें पंडित पुरुषोंने वर्षमासादिकी शुद्धि न देखणी । कर्णवेधादिक अन्य संस्कारोंमे विवाहकीतरें वर्ष मास दिन नक्षत्रादिकोंकी शुद्धि अवश्यमेव विलोकन करणी। यथा । तीसरे पांचमे सालमे निर्दोष वर्षमें बालकको और बालककी माताको अमृतामंत्र अभिमंत्रित जलकरके मंगलगानपूर्वक अविधवायोंके हाथेकरी स्नान करावे । और तथा कुलाचारसंपदा अतिशय विशेषकरके तैलनिषेकसहित तीन पांच सात नव इग्यारह दिनांतक स्नानका विधि जाणना, । तिसके घरमें पौष्टिकको करणा, षष्ठीको वर्जके मातृअष्टकपूजन पूर्ववत् करणा, । तदपीछे स्व २ कुलानुसार अन्य ग्राममें कुलदेवताके स्थानमे पर्वतऊपर नदीतीरे वा घरमे कर्णवेधका आरंभ करे । तहां मोदक नैवेद्य करण गीतगान मंगलाचारादि स्व २ कुलागत रीति करके करणा. तदपीछे बालकको पूर्वाभिमुख आसनऊपर बिठलाके तिसके कर्णवेध करे तहां गुरु यह वेदमंत्र पढे । यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं श्रुतेनाङ्गोपाङ्गैः कालिकैरुत्कालिकैः पूर्वगतैश्चूलिकाभिः परिकर्मभिः सूत्रैः पूर्वानुयोगैः छन्दोभिर्लक्षणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विद्धकर्णौ भूयात्मर्हं ॐ ॥"

शुद्रादिकोको ॥ '॥ ॐ अर्हं तव श्रुतिद्वय हृदयं धर्मविद्धमस्तु ॥' ऐसें कहना ॥

तदपीछे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे, तहां पूर्वोक्त विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणां आगे लोटावे तब यतिगुरु विधिसें वासक्षेप करे। तदपीछे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाभरण पहिनावे। यतिगुरुयोंको शुद्ध चार प्रकारका आहार वस्त्र पात्र देवे। गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान देवे।

इति दशमकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ क्षौर करणसंस्कारविधि

हस्त, चित्रा, स्वाति, मृगशीर्ष, ज्येष्ठा, रेवती, पुनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, इन नक्षत्रोंमें ।१।२।३।५।७। १३।१०।११। इन तिथियोंमें। शुक्र, सोम, बुध, इन वारोंमें चंद्र वा तारेके बल हुए, क्षौरकर्म करणा। क्षौरनक्षत्रोंमें स्वकुलविधिकरके चूडाकरण करना मुनींद्र कहते हैं, पर गुरु, शुक्र और बुध यह तीन

ग्रह केंद्रमे १।४।७ । १० होने चाहिये । यदि केंद्रमे सूर्य होवे तो ज्वर होवे मंगल होवे तो शस्त्रसे नाश होवे । षष्ठी (६), अष्टमी (८), चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या) चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथीयोंमें और रवि, शनि, मंगल, इन वारोमे क्षौरकर्म न करा वणा । धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५ । ९, इन गृहोमें असद्ग्रह होवे तो, मृत्यु हुए भी क्षुरक्रिया सुंदर नही होवे, और इनही घरोमे शुभ ग्रह होवे तो क्षुरक्रिया पुष्टिकी करणहार जाणनी । तिसवा स्ते बालकको सूर्यबलयुक्त मासके हुए, चन्द्रताराब लयुक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमे कुलाचारा नुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममे, वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमें शास्त्रोक्त रीतिसे प्रथम पौष्टिक करे । तदपीछे षष्ठीपूजावर्जित मात्र पूजा पूर्ववत् । तदपीछे कुलाचारानुसार नैवेद्य देवपक्कान्नादि करणा । तदपीछे सुस्नात गृहस्थगुरु बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिंचन करे. तदपीछे कुलक्रमागत नापित (नाइ) के हाथसें मुंडन करावे । तीन वर्णके शिरके मध्यभागमें शिखा स्थापन करे और शूद्रको सर्वमुंडन । चूडा करण करते हुए यह वेदमंत्र पढे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हँ ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्य, ध्रुवा· श्रीयो, ध्रुवं कुलं, ध्रवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म्म, ध्रुवा च गुण संतति रस्तु अर्हँ ॐ ॥"

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदकक रके सींचे । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने।तदपीछे पच परमेष्टिपाठपूर्वक बालकको आसनसें उठायकर स्ना न करावे । चदनादिकरके लेपन करे । श्वेतवस्त्र पहिनावे । भूषणोकरके भूपित करे । तदनंतर धर्मागारमे लेजावे तदपीछे पूर्वरीतिसे मडलीपूजा गुरुवंदना वासक्षेपादि । तदपीछे साधुयोको शुद्ध वस्त्र, अन्न, पात्र और पम्ररस विकृति दान देवे· । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे । नापितको वस्त्र ककण दान देवे· ॥

॥ इति दशमचूडाकरणसस्कारवर्णनं ॥

अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहा उपनयन नाम मनुष्योको वर्णक्रममे प्रवेश करणेवास्ते संस्कारही वेषमुद्राके उद्वहनसें स्व १ गुरुयोके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सवद्य कारण पढमं ॥
संजमलज्जाहेऊ साह्वाण तहय साहूणं ॥ १ ॥

अर्थ –धर्माचारके आचरण करते हुए वेष जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है श्रावक तथा साधु यौंको संजमलज्जाका हेतु है ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्युक्तम् ॥ यथा

धम्मं रक्खइ वेसो संकइ वेसेण दिक्खिउंमि अहं
उम्मग्गेण पडतं रक्खइ राया जणवउव्व ॥ १ ॥

अर्थ –वेष धर्मकी रक्षा करता है क्योंकि, वेष होनेसें अकार्य करता हुआ मनमे शका करता है कि, मैं दीक्षितवेषवाला हू,मुझको देखके लोक निंदा करेंगे, इसवास्ते उन्मार्गमे पडते हुएकी भी वेष रक्षा करता है, जैसें राजा देशकी रक्षा करता है॥ तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदीच्य, इन वंशोके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जिनोपवीत धारण करणा । तथा क्षत्रीयवशमे उत्पन्न हुए जिन, चक्रि, वलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयासकुमार दशार्णभद्रादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश, विद्याधरवंश, इन वंशोमें उत्पन्न हुएको भी, उपनयन जिनोपवीतधारणविधि है । जिसवास्ते कहा है. । आगममें,

"देवाणुप्पिआ, न एअ भूअं, न एअं भव, न एअ भविस्सं, जन्न, अरहंता वा, वलदेवा वा, वासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, तुच्छकुलेसु वा, दरिद्दकुलेसु वा, भिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता वा, चक्कवलवासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा, भोगकुलेसु वा, राइन्नकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुद्ध जाइकुलवंसेसु आयाइसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्सति वा, अच्छि पुण एसेवि भावे, लोगच्छेय भूए, अणताहि उसप्पिणि ऊसप्पिणीहिं वइक्कंताहि समुपद्यइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स, अवेइयस्स, अणिद्धिणस्स, उदएण, जन्नं, अरहता वा, चक्कवलवासुदेवा वा, अतकुलेसु वा, पतकिविण तुच्छदरिद्द भिरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइसु वा, आयाइति वा, आयाइस्सति वा, नो चेवण, जोणी जम्मणनिरकमिसु वा, निरकमंति वा, निरकमिस्सति वा, त जीअमेअ, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण, देविंदाण, देवराईण, अरहते भगवंते, तहप्पगारे हितो, अतकुलेहितो, पंतकुलेहितो, तुच्छदरिद्दकिविण भिरकागमाहणकुलहितो, तहप्पगारेसु उग्गभोगराय न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तह प्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवसेसु साहराविक्तए. ॥"* तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योको भी उप

* इस पाठका भावार्थ यह है कि पुर्वोक्त अतादिकुलमें अरिहतादि नही उत्पन्न होते है, किंतु उग्रादि उपनयनादिसयुक्त कुलमें उत्पन्न होते हैं, शुद्ध होनेसें. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा । आनंदादि शुद्रो को भी उत्तरीय धारण करणा । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है जिनोपवीत जो है सो भगवान् जिनकी गृहस्थपणेकी मुद्रा है । सर्व बाह्य अभ्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रंथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्ताज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तद्भावनाभावितही होते है. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तियुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप बाह्य मुद्राको नही धारण करते है, तन्मय होनेसें. नही समुद्र, जलपात्रको हस्तमें करता है । नही सूर्य दीपकको धारण करता है यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ–अग्निहोत्रि ब्राह्मणोंका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविषेही देवबुद्धि है, और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है, क्योंकि, योगाभ्यासी मुनिजन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके बलसें अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते है, और जो अल्पबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि है, तिनोंको भगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेही पूजन, ध्यान, प्रभावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसें कल्याण है और जिनोंने आत्म स्वरूप जाना है, ऐसें यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव मालुम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन है । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयदेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते है । 'प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है । जैसें छद्मस्थको बाह्य अन्यतर तप का करणा है । तथा नवततुगर्जितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीमक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तियुक्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योंसें करावणे, अन्य करताको अनुमति देणी ॥ ब्रह्मगुप्तिगुप्ताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यकदर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते है, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यगदर्शन धर्मोपाशनादिकों करकें श्रद्धा करने वाले और अनुज्ञा मागनेवासे अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्जि रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोको जिनोपवीतमे तीन अग्र । और क्षत्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा और निजशक्तिसें न्यायप्रवृत्तिकरके अन्योसे आचरण करावणा योग्य हे परंतु तिन क्षत्रियोंको अन्य जनोको अनुज्ञा देनी योग्य नही हे क्योकि वे ठकुराइवाले प्रभुहोनेसे अन्योविषे नियमादिकी अनुज्ञा नही देतेहें इसवास्ते क्षत्रियोको जिनोपवीतमे दो अग्र । वैश्योंने ज्ञानशक्तिकरके सम्यक्त्व धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय आचरणा । तिन वैश्योको असामर्थ्य होनेसे अनुपदेशक होनेसे रत्नत्रयका करावणा और अनुमतिका देणा योग्य नही हे, इसवास्ते वैश्योंको जिनोपवीतमें एक अग्र । शूद्रोको तो ज्ञानदर्शनचारित्ररूप रत्नत्रयके करणेमें आपही अशक्त हे तो करावणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा तिनोंको अधमजाति होनेसें, नि सत्व होनेसें, अज्ञान होनसे, तिनोको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण है । तिनसें अपर वणिगादिकोको देवगुरुधर्मकी उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग मुद्राहे ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है ॥ स्तनांतर मात्रको चौराशी गुणा करिये तव एकसूत्र होवे तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको भी त्रिगुणा करके वर्त्तन करणां, (वटना) ऐसें एक तंतु हुआ

इसी रीतिसें दो तंतु ओर योजन करिये, तवतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है । तहा ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो ओर वैश्योंको एक । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमय सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥
द्वापरे ताम्रसूत्र च कलौ कर्प्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, द्वापरयुगमें तावेका ओर कलियुगमे कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ ' परतु जिनमतमे तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सौवर्णसूत्र, ओर क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र हीहै ॥ इतिजिनोपवीतयुक्ति ॥

अथ उपयनविधि कहते है.—उपनीयते वर्णकुमारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये, इत्युपनयन । श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृगशिर, अश्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलावध, ओर मोक्ष करणा, आचार्यवर्य्य कहते है । गर्भाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमे ब्राह्मणोको मौंजीवध उपनयनका प्रारभ कथन करते है, क्षत्रियोको इग्यारह (११) वर्षमें, ओर वैश्योंको वारमे वर्षमें । वर्णाधिपके वलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चद्र सूर्य वल

वान् हुए, हित है । बृहस्पतिवार होवे, बृहस्पति बलमान् होवे, वा केन्द्रगत होवे, तो, द्विजोंको उपनयन श्रेष्ठ है और बृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे । लग्नमे बृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमे चन्द्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे, शुक्रसहित सूर्य लग्नमे शनिके अंशमे स्थित होवे, तदा सीखी हुइ विद्या भूल जावे ऐसा कृतघ्न होवे । केंद्रमे बृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरमतियुत होवे शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे चन्द्रमा होवे तो, व्यापारी होवे शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे । शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यकेभागमे क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमे पाप बुद्धिहोवे, चन्द्रभागमे अति जडपणा होवे, बुधांशमे अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके भागमे सुज्ञपणा होवे, सुर्य सहित बृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चन्द्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रो

मे मगलविना अन्य वारोमे दिनशुध्धीमे, शुजग्रह युक्त लग्नमे, विवाह वत् त्याज नक्षत्रदिन मासा दिकको वर्जके, ग्रह निर्मुक्त पाचमें व्रत आचरे

" प्रथम यथा संपत्ति करके उपनेय (जिनोपवीत लेनेवाले) पुरुषकों सात, नव, पाच, वा तीन दिनतक सतैल निषेक स्नान (पीठी मर्दन) करावे तदपीठे लग्नदिनमे गृहस्थ गुरु तिसके घरमे ब्राह्म मूहुर्तमें पो ष्टिक करे तद नतर उपनेयके शिरपर शिखा वर्जके मु रुन करावे,पीठे वेदी स्थापन करे तिसके मध्यमे चोकी (वाजोट) स्थापन करे, वेदी प्रतिष्टा विवाहा धिकारसें जाणनां वाजोटके उपर समव सरणकी रीति मुज व चोमुख (चारजिन विंव) स्थापन करना, तिन की पूजा करके गृहस्थ गुरु, जिसने श्वेतवस्त्र पहि नाहे, वस्त्रका उत्तरासग करा हे, अक्षत श्रीफल सुपारी हाथमे लिएहे, एसे उपनेयको समवसरण को तीन प्रदक्षणा करावे, तदपीठे गुरु उपनेयको वामे पासे स्थापके पश्चिमदिशाके सन्मुख जिसका मुखहे तिस जिन विंवके सन्मुख बेठके प्रथम रूप च देवके स्तोत्र सहित शक्रस्तव (नमुथ्थुण) पढे फेर तीन प्रदक्षिणा करके उत्तराभिमुख जिनविंवके सन्मुख तेसेंहि शक्रस्तव पढे एसेंहि त्रिप्रदक्षिणा तरित पूर्वाभिमुख, दक्षिणा भिमुख जिन विंबोके आगेभी शक्रस्तव पढे मगल गीत वाजित्रादिकों

का तिसवखत विस्तार रखणा उन वखत आचार्य उपाध्याय साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप श्री सकल संघकों एकत्र करना। पीछे प्रदक्षिणा शक्र स्तव पाठके अनतर गृहस्थ गुरु उपनयनके प्रारंभ वास्ते जैन वेद मत्रका उच्चार करे उपनेय (जिनोप वीतलेनेवाला) अपने हाथमे दुर्वा फलादीकसे पूर्ण हस्त अंजलिकरके खमाखमासुने

उपनयारंभ जैनवेद मंत्रोयथा

उँ अर्हं अर्हद्भ्योनम, सिद्धेभ्योनम., आचार्येभ्योनम, उपाध्यायेभ्योनम, साधुभ्योनम, ज्ञानायनम, दर्शनायनम, चारित्रायनम, संयमायनम, सत्यायनम., शौचायनम, ब्रह्मचर्यायनम., आकिंचन्यायनम, तपसेनम, शमायनम., मार्दवायनमः, आर्जवायनम, मुक्तयेनम, धर्मायनम, संघायनम, सैध्धातिकेभ्योनम., धर्मोपदेशकेभ्योनम, वादिलब्धिभ्योनम, परांग निमित्तेभ्योनम', तपस्वीभ्योनम, विद्याधरेभ्योनम, इहलोकसिद्धेभ्योनम, कविभ्योनमः, लब्धिभ्योनम., ब्रह्मचारीभ्योनम', निष्परिग्रहेभ्यो नम। दयालुभ्यो नम,। सत्यवादिभ्यो नम। नि स्पृहेभ्यो नम। एतेभ्यो। नमस्कृत्याय प्राणी प्राप्तमनुष्यजन्मा प्रविशति वर्णक्रमं अर्हं उँ॥,,

ऐसे वेदमंत्रका उच्चार करके फिर भी पूर्ववत् तीन तीन प्रदक्षिणा करके चारो दिशामें युगादिदेव

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे । तिस दिनमें, जल जवान्न जोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे । तदपीछे उपनेयको वामे पाने स्थापके सर्वतीर्थोदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशाग्रोंसे सिंचन करे ।

तदनंतर परमेष्ठिमंत्र पढके

" नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्य '

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाजिमुख बैठावे, तदपीछे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अजिमंत्रण करे ॥ चंदनमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ नमो जगवते. चंद्रप्रजजिनेंद्राय, शशांक हारगोक्षीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्म्मलगुणाय, जव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्म्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरण विनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद जग वन् इह चंदनेनामृताश्रवण कुरु २ स्वाहा ॥ "

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें जिनो पवीतरूप, कटिमें मेखलारूप और ललाटमें तिल करूप, रेखाकरे, तदपीछे उपनेय "नमोस्तु २ ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पमके खमा होके हाथ जोडके ऐसें कहे ।

"॥ जगवन् वर्णरहितोऽस्मि । आचाररहितोऽस्मि । मंत्ररहितोऽस्मि । गुणरहितोऽस्मि । धर्म्मरहितोऽस्मि ।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृतिथिकर्म्मसु नियोजय मां ॥"

ऐसें कहकर फिर "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमे पके, गुरु जी इस मंत्रको पढके उपनेयको चोटीसें पकडके खडा करे। मन्त्रो यथा ॥

'ॐ अर्हं देहिन् निमग्नोऽसि भवार्णवे तत्कर्षति त्वांभगवतोऽर्हत प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ठ प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अर्हं ॐ ॥"

ऐसे पढके उपनेयको खडा करके अर्हत्प्रतिमाके आगे पूर्वाभिमुख खडा करे तदपीठे गृहीगुरु, त्रितंतुवर्त्तित–तीन ततुकी वुणी, एकाशीति (८१) हाथ प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनो हाथोमे लेके, इस वेदमत्रको पढे

"॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धोऽसि। दर्शनावरणेन बद्धोऽसि। वेदनीयेन बद्धोऽसि। मोहनीयेन बद्धोऽसि। आयुषा बद्धोऽसि। नाम्ना बद्धोऽसि। गोत्रेण बद्धोऽसि। अतरायेण बद्धोऽसि कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि। तन्मोचयति त्वां भगवतोर्हत प्रवचनचेतना तद्बुध्यस्व मामुह'मुच्यतां तव कर्म्मबधनमनेन मेखलाबधेन अर्हं ॐ ॥"

ऐसा पढके उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखला को बाधे। तदपीठे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमे पडे । मेखलाको एकाशी (८१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणततुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताइस (२७) हाथ तन्नसूत्रसूचनके वास्ते हे । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको ठगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इन्होंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबंधनके पीछे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके विलस्त (वेत) प्रमाण पृथुल (चौका) और तीन विलस्त प्रमाण दीर्घ (लंबा) कौपिन दोनो हाथोमें लेके ॥

" ॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मनःपर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन इन्द्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अर्हं ॐ ॥ "

इस वेदमंत्रको पढता हुआ, उपनेयके अंत कक्षा कौपीन पहरावे । तदपीछे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता हुआ, फिर भी गुरुके पगोंमे पडे । फिर तीन २ प्रदक्षिणा करके चारो दिशामे शक्रस्तव पाठ करे ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवीतको अपने हाथमे लेवे पीछे उपनेय फेर खमा होकर हाथ जोमके ऐसें कहे ॥

"॥ जगवन् वर्णोंचितोऽस्मि । ज्ञानोचितोस्मि । क्रियोच्तितो । तज्जिनोपवीतदानेन मा वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥ '

ऐसें कहके 'नमोस्तु २, कहता हुआ गुरुके पगों में पडे गुरु फिर पूर्वोक्त उछापनमंत्रकरके तिसको उगाके खमा करे । तदपीछे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

"॥ ॐ अर्हं नवब्रह्मगुप्ती स्वकरणकारणानुमती र्धारये. तदक्षयमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो नव अर्हं ॐ ॥ ' क्षत्रियको

' ॥ करणकारणाच्या धारये स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥ " वैश्यको

" ॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥ ' शेष पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पच परमेष्टिमंत्र पढता हुआ उपनेयके कंठमे जिनोपवीत स्थापन करे । पीछे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे गुरु जी "निस्तारगपारगो नव" ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीछे गुरु पूर्वाजिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे वेगके, सर्व जगत्मे सार, महा आगम रूप क्षीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्प द्रुम कामधेनु चिंतामणिके तिरस्कारका हेतु, निमे षमात्र स्मरण करनेसें मोक्षका दाता, ऐसें पंचपरमे ष्ठिमंत्रको गंधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीछे तीनवार तिसके मुखसें उच्चा रण करावे ॥ यथा ॥

"॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं ॥" पीछे उपनेयको मंत्रका प्रजाव सुणावे ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अक्खरेसु, इक्किक्क अक्खरं जगुज्जोअं ॥
नवसयसहस्स महणो, जम्मि ठिअं पंच नवकारो॥१॥
थन्नेइ जल जलण चिंतियमत्तो इ पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउलघोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पंचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रयं पुनरनं तगुणं परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वंदे महागुरुतरं परमेष्ठिमंत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाव्ररका अनंता । उत्सर्पिणीप्रभृतयः प्रययुर्वि वर्त्ता ॥ तेष्वप्ययं परतरः प्रथितः पुराऽपि । लब्ध्वै नमेव हि गताः शिवमत्र लोकाः ॥ ४ ॥ जग्मुर्जि नास्तदपवर्गपदं यदेव । विश्वं वराकमिदमत्र कथं विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य भुवनोद्धरणाय धीरैः ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इन्दुर्दिवा करतया रविरिन्दुरूप । पातालमंवरमिलासुरलोक एव ॥ किंजल्पितेन वहुना भुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति यन्न विपमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धातोदधि निर्म्मथान्नवनीतमिवोद्धृतम् ॥ परमेष्टिमहामत्र धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तारं सर्वंवांछितदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्यवान् ॥ ८ ॥ धार्योयं भवता यत्नात् न देयो यस्य कस्यचित् ॥ अज्ञानेपु श्रावितोय शपत्येव न संशयः ॥ ९ ॥ ❀ न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसंश्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन ॥ १० ॥ न वालाना नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणा नदुर्दशाम् ❀ नप्लुतानां न दुष्टानां दुर्ज्जातीनां न कुत्रचित् ॥ ११ ॥ अनेन मत्रराजेन भूयास्त्व विश्वपूजित ॥ प्राणान्तेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित् ॥ १२ गुरुत्यागे भवेद्दुःख मत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरुमंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरक व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

---

*॰ न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसश्रये इति पुस्तकातरे ॥ तथा अन्येपु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकौमुदीपचाशकादिपु शास्त्रेप्येवमुक्त यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्या नमस्कारो न स्मर्त्तव्य इति ॥

* नाऽप्लुताना न दुष्टाना दुर्ज्जाताना न कुत्रचित् । इति पुस्तकातरे ॥

ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मन्त्रममुं सदा ॥ सेत्स्यंति सर्वकार्याणि तवास्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे पीछे गुरुको स्वर्णका जिनोपवीत, सुवर्णमौजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसपदानुसारें देवे और सर्वसंघको भी तांबूल वस्त्रादि देवे ॥ इत्युपनयने व्रतबंधविधिः ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं ॥ तिसही अवसरमे, तिसही संघके संगममे, तिसही गीतवाजें आदि उत्सवमे, तिसही वेदचतुष्किकामे प्रतिमास्थापन संयोगमे, व्रतादेशका आरंभ करे तिसका यह क्रम है । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी अतरीय(उत्तरीय)वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत कौपीन, येह वस्तुयों तिसकी देहमे तैसेंही स्थापके, तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन (कालामृगचर्म) वा, वृक्षके वल्कलका वस्त्र पहिरावे । हाथमें पलाशका दंडा देवे और इस मंत्रको पढे

"॥ ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेषोऽसि अवधिब्रह्मचर्योसि । धृतब्रह्मचर्योसि । धृताजिनदंडोसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि दृढसम्यक्त्वोसि । पुंमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तदवधिब्रह्मव्रत आगुरुनिदेश धारये अर्हं ॐ ॥"

ऐसें पढके व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कल्पित काष्टमय आसनके उपर उपनीतको विठलावे तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अगुलीमे दर्भसहित काच नमयी षोरुश १६ मासे प्रमाण (पांच गुजाका एक मासा जाणना) पवित्रिका मुद्रा पहरावे । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

"पवित्र डुर्लन्न लोके सुरासुरनृवल्लन्नम् ॥
सुवर्ण हंति पापानि, मालिन्य च न सशय ॥ १ ॥

तदपीछे उपनीत, मुखसे पचपरमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, गध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारो दिशामे जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीछे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, हाथ जोमके ऐसें कहे ॥ "न्नगवन् उपनीतोहं" गुरु कहे "सुप्ठूपनीतो न्नव।" फेर उपनीत 'नमोस्तु, कहता हुआ नमस्कार करके कहे । "कृतो मे व्रतवध ।" गुरु कहे । "सुकृतोऽस्तु ।" फेर 'नमोस्तु' कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । "न्नगवन् जातो मे व्रतवध ।" गुरु कहे । "सुजातोऽस्तु ।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जातोऽह ब्राह्मण । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।" गुरु कहे । "दृढव्रतो न्नव । दृढसम्यक्त्वो न्नव ।" फेर शिष्य नमस्कार करके कहे । "न्नगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽह तदादिश

कृत्य।" गुरु कहे अर्हंकिरा दिशामि । " फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयममादिष्टं।" गुरु कहे । "आदिष्टं । फेर नमस्कार करके शिष्य । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रय मम समादिश।" गुरु कहे । "समादिशामि ।' फेर नमस्कार करके शिष्य जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्जं रत्नत्रय मम समादिष्ट।' गुरु कहे। "समादिष्ट।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्जं रत्नत्रय ममानुजानीहि "। गुरु कहे । "अनुजानामि " फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रय ममानुज्ञातं।" गुरु कहे। "अनुज्ञात "। फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्जं रत्नत्रय मया स्वय करणीय।" गुरु कहे। " करणीय।" फेर नामस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्जं रत्नत्रय मया अन्यै कारयितव्यं।" गुरुकहे"कारयितव्य" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्ज रत्नत्रयं कुर्वतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्या " गुरु कहे । "अनुज्ञातव्या. ' क्षत्रियको यह विशेष है ' जगवन् अह क्षत्रियो जात ' आदेश समादेश दोनो कहने, अनुज्ञा न कहनी करणकारणमे 'कर्त्तव्य' 'कारयितव्य ' ऐसे कहना, 'अनुज्ञातव्यं' ऐसे न कहना । और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने । 'कर्त्तव्य' कहना, 'कारायितव्य' अनुज्ञा तव्य यह न कहने । तदपीछे उपनीत हाथ जोम के कहे । 'हे जगवन् ! आदिश्यता व्रतादेशः ।' तब गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे । तहा प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥
निर्ग्रंथानां मुनींद्राणा कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥
त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥
शक्रस्तवेस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमा ॥ २ ॥
त्रिकालमेककालं वा स्नान पूतजलैरपि ॥
मद्यं मांसं तथा क्षौद्र तथोडुंवरपचकम् ॥ ३ ॥
आमगोरससंपृक्त द्विदल पुष्पितौदनम् ॥
सधानमपि संसक्त तथा वै निशि जोजनम् ॥ ४ ॥
शूद्रान्न चैव नैवेद्य नाश्नीयान्मरणेऽपि हि ॥
प्रजार्थे गृहवासेऽपि सजोगो न तु कामत ॥ ५ ॥
आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥
कर्षण पाशुपाल्य च सेवावृत्तिं विवर्जयेः ॥ ६ ॥
सत्य वच प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्जनम् ॥
कपायविपयत्याग विदध्या शौचजागपि ॥ ७ ॥
प्राय. क्षत्रियवैश्यानां न जोक्तव्य गृहे त्वया ॥
ब्राह्मणानामार्हतानां जोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिन' ॥
न नोक्तव्य गृहे प्राय स्वयपाकेन नोजनम् ॥ ए ॥
आमान्नमपि नीचाना न ग्राह्यं दानमंजसा ॥
भ्रमता नगरे प्राय कार्य स्पर्शो न केनचित् ॥१०॥
उपवीत स्वर्णमुद्रा नातरीयमपि त्यजे ॥
कारणातरमुत्सृज्य नोष्णीष शिरसि व्यधा ॥ ११ ॥
धम्मोपदेश प्रायेण दातव्य सर्वदेहिनाम् ॥
व्रतारोप परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥
निर्ग्रंथगुर्वनुज्ञात कुर्या पचदशापि हि ॥
शांतिक पौष्टिकं चैव प्रतिष्टामर्हदादिषु ॥ १३ ॥
निर्ग्रंथानुज्ञया कुर्या प्रत्याख्यान च कारये ॥
धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्र विवर्जये ॥१४॥
नानार्यदेशे गतव्य त्रिशुद्ध्याशौचमाचरे ॥
पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो नवावधि ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेश ॥

(नावार्थ) परमेष्टिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण करना, निर्ग्रंथ मुनींद्रोकी नित्य उपासना करनी। तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार सामायिक करनी, शक्रस्तवमे सातवार चैत्यवंदना करनी ठाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमे वा, एकका लमे स्नान करना, मदिरा, मास, मधु, माखण पाच जातिके उडुंबरफल, आमगोरससयुक्त अर्थात्

कच्चे विना गरम करे गोरस दूध दही ठाठके साथ द्विदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न, जीवोत्पत्तिसंयुक्त सधान अर्थात् तीन दिन उपरां तका आचार, रात्रिजोजन, शूद्रका अन्न, देवके आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें जी न खाना। सतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसें संजोग करना न तु कामासक्त होके। चारों आर्य जैन वेद विधिसें पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा वृत्ति (नौकरी) येह नहीं करने। शुचिमान् होके सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको त्यागने, प्राय क्षत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे जोजन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमे जोजन करना तुझको योग्य है। अपनी ज्ञातिका जो मिथ्या त्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें जी जोजन नही करणा। प्राय आपही पकाके जोजन करना। कच्चे अन्नका जी दान नीचोंकेहाथ का न ग्रहण करणा, नगरमें ज्रमण करतां किसीका जीप्राय. स्पर्श न करना। उपवीत, स्वर्णमुद्रा और अंतरीय, इनको त्याग न करने कारणांतरको वर्जके शिरके ऊपर उष्णीष (पगडी) धारण न करना। प्राय सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको वर्जके निर्ग्रंथ गुरुकी आज्ञासें पंचदश १५ संस्कार

गृहस्थोंको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठादि करावने। निर्ग्रंथकी आज्ञासें प्रत्याख्यान करना, और अन्यको करावना, सम्यक्त्वको दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी। अनार्य देशमें जाना नही, तीनों शुद्धिया गरके शौच आचरण करना, हे वत्स! तैनें पूर्वोक्त व्रतादेश जबतग ससारमें रहे तबतक पालना ॥ १५ ॥

इतिब्राह्मणव्रतादेश ॥ अथक्षत्रियव्रतादेश ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्टिमहामंत्र स्मरणीयो निरंतरम् ॥
शक्रस्तवैस्त्रिकाल च वंदनीया जिनेश्वरा ॥ १ ॥
मद्यं मास मधु तथा सधानोंडुंबरादि च ॥
निशि भोजनमेतानि वर्ज्जयेदतियत्नत ॥ २ ॥
दुष्टनिग्रहयुद्धादिवर्जयित्वा वधोंगिनाम् ॥
न विधेय स्थूलमृषावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥
परनारी परधन त्यजेदन्यविकत्थनम् ॥
युक्त्यासाधूपासन च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥
विक्रमस्याविरोधेन विधेय जिनपूजनम् ॥
धारण चित्तयत्नेन स्त्रोपवीतोत्तरीययो ॥ ५ ॥
लिंगिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥
प्रणामदानपूजादि विधेय व्यवहारत ॥ ६ ॥
सांसारिक सर्वकर्म्म धर्मकर्म्मापि कारयेत् ॥
जैनविप्रैश्च निर्ग्रंथैर्दृढसम्यक्त्ववासित ॥ ७ ॥ *

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥
युद्धे मृत्युजय नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ८ ॥
गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥
स्वदेशजगे युद्धेत्र सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ९ ॥
ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियाभेदोस्ति कश्चन ॥
विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥
दुष्टनिग्रहण युक्त लोभ भूमिप्रतापयो ॥
ब्राह्मणव्यतिरिक्त च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥
॥ इतिक्षत्रियव्रतादेश ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते है ॥ परमेष्ठिमहामत्र निरतर स्मरण करना शक्रस्तवोंकरके त्रिकाल जिनेश्वरको वंदन करना । मद्य, मास, मधु, सधान, पाच उंडुवरादि, (आदिशब्दसें अमगोरससंयुक्त द्विदल, पुष्पितौदन,) और रात्रिभोजन, इनको यत्नसें वर्जे । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि वर्जके प्राणियोका वध न करना, स्थूलमृषावाद न बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना, परकी निंदाका त्याग करे, युक्तिसे साधुयोकी उपासना करे, और बारा व्रत पालन करे । अपनी शक्ति अनुसार जिनपूजन करना चित्तयत्नसें अर्थात् उपयोगसें स्वउपवीत, और अंतरीयको धारण करना । लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयो में भी, प्रणाम दान पूजादि काम पडे तो, लोक

व्यवहारसें करने। संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रंथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे। शत्रुयोंकरके समाकीर्ण रणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमें मृत्युका नय सर्वथा नही करना। गौ ब्राह्मणके अर्थे, देवके अर्थे, गुरु और मित्रके अर्थे, स्वदेशके नग होते, और युद्धमें, मृत्यु नी सहन करना योग्य है। ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुछ नी नेद नही है, पर अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमे नेद हे दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, नूमि और प्रतापका लोन करना, ब्राह्मणसे व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (गृहण) करे ॥११॥ इति क्षत्रियव्रतादेश ॥ अथ वैश्यव्रतादेश ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तवेल जिनस्तव ॥
परमेष्टिस्मृतिश्चैव निर्ग्रंथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥
आवश्यक द्विकाल च द्वादशव्रतपालनम् ॥
तपोविधिर्गृहस्थार्हो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥
परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रम ॥
वाणिज्यपाशुपाल्याभ्यां कर्षणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥
सम्यक्त्वस्यापरित्याग प्राणनाशेपि सर्वथा ॥
दान मुनिभ्य आहारपात्राच्छादनसद्मनाम् ॥ ४ ॥

कर्म्मादानविनिर्मुक्तं वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥
उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नतः ॥ ५ ॥

॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवंदन करना, पंचपरमेष्ठिमंत्रका स्मरण करना, निर्ग्रंथ गुरुकी सेवा करनी । दो कालमें (प्रातः कालमें और साय का लमें) आवश्यक (प्रतिक्रमणादि) करना बारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निंदा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो भी, सम्यक्त्व नही त्यागना, मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान (उपाश्रय) का दान करना । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य (व्यापार) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसें करणे योग्य है ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्तं देवधर्म्मादिपालनम् ॥
देवार्चनं साधुपूजा प्रणामोविप्रलिंगिषु ॥ १ ॥
धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥
अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारत· ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च भोचनम् ॥३॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
नारीणां च नदीना च लोभिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुभिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
श्रुतशास्त्राकर्णन च तथा नाऽभक्ष्यभक्षणम् ॥
अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥७॥
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दान यथाविधि ॥
दरिद्राणां तथांधानामापन्नारम्भृतामपि ॥ ८ ॥
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहास कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥
अरिषड्वर्गविजय पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरण च भय पापापवादयो ॥ १० ॥
उद्वाह सदृशाचारैं समजात्यन्यगोत्रजै ॥
त्रिवर्गसाधन नित्यमन्योन्याप्रतिबधत ॥ ११ ॥
परिज्ञान स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्य दीर्घदर्शित्व कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥
परोपकारकरण परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रम परिभवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥ १३ ॥
जलाशयश्मशानाना तथा दैवतसद्मनाम् ॥

निद्राहाररतादीनां सध्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥
प्रवेशोल्लघनं चैव तटे शयनमेव च ॥
कूपस्य वर्जनं नद्यालघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥
गुर्वासनादिशय्यासु तालवृंदे कुजूमिषु ॥
दुर्गोष्ठिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥
न लघन च गर्त्तादेर्नदुष्टस्वामिसेवनम् ॥
न चतुर्थीदुनग्नस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥
हस्त्यश्वनखिनां चापवादिना दूरवर्जनम् ॥
दिवासंजोगकरण वृक्षस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥
कलह तत्समीपं च वर्जनीय निरतरम् ॥
देशकालविरुद्धं च जोज्य कृत्य गमागमौ ॥ १९ ॥
ज्ञापितं व्यय आयश्च कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् ॥
चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तम ॥ २० ॥
॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेश· ॥

अथ चारो वर्णोंका समान व्रतादेश कहते है ॥ अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्मण और लिंगधारीको प्रणाम करना । न्यायसें धन उपार्जन करना परकी निंदा वर्जनी, किसीका जी अवर्णवाद न वोलना, राजादिविषयक तो विशेषसें अवर्णवाद न वोलना । अपने सत्वको छोडना नही, धनके अनुसार दान देना, लाजानुसार खरच करना, जोजनके कालमें जोजन करना. । थोडे जल

स्वसत्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च भोजनम् ॥३॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
नारीणा च नदीनां च लोभिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुभिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
शुभशास्त्राकर्णनं च तथा नाऽभक्ष्यभक्षणम् ।
अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम्
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि
दरिद्राणां तथांधानामापन्नारभृतामपि ॥ ८ ।
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहास कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९
अरिषड्वर्गविजय पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरण च भय पापापवादयो ॥
उद्वाह सदृशाचारै समजात्यन्यगोत्रजै ॥
त्रिवर्गसाधन नित्यमन्योन्याप्रतिबधत ॥ १
परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्य दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥
परोपकारकरण परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रम परिभवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥
जलाशयश्मशानाना तथा देवतसद्मनाम् ।

लादिका चितन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना परोपकार करना, परको पीका न करनी, अपना परिजव (तिरस्कार) होवे तव पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति कर नी । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमे और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना । कूपमे प्रवेश, कूपका उल्लघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना, तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तारुवृक्षके हेठें, बुरी जूमिमे, दुर्गोष्टिमें, कुकार्यमे, बेठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नही, लोजी स्वामीकी सेवा, नही करनी, चौथका चन्द्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनु, इनको देखना नही । हाथी, घोमा, नखोवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना । दिन मे सजोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, जोजन, कार्य, गमन, आगमन, जाषण, व्यय (खरच) और आय (लाज) ये कदापि न करने यह पूर्वोक्त सम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ २० ॥ इति वर्णस्य समानोव्रतादेश ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश के, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

वाले देशमें वसना नही, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें जी नही वसना । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोजी, पूर्ववैरी, इनोका विश्वास नही करना । कार्यविना स्थावर जीवोंकी जी हिंसा नही करनी । असत्य अहितकारि वचन नही बोलना, गुरुओं (वको) के साथ विवाद नही करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्वकीतरें मान सत्कार करना । शुज अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना, अजदय (नही खाने योग्य) का जक्षण नही करना, जे त्यागने योग्य नही है, उनका त्याग नही कर ना, जे मारणे योग्य नही हे, तिनको मारणा नही अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना, दरिद्र, अंधे, फु खी, इनको जी यथाशक्ति दान देना । हीन अगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नही । जूख, तृष्णा,(तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए जी, गोपन करने । षट् (६) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमे पक्षपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अप वादका जय करना । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना, धर्म अर्थ कामको निरतर परस्पर अप्रतिबंधसें साधन करना । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना परोपकार करना, परको पीड़ा न करनी, अपना परिभव (तिरस्कार) होवे तव पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकाठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना, तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, ताड़वृक्षके हेठें, बुरी भूमिमें, डुर्गोष्टिमें, कुकार्यमे, बैठना सदा ही वर्जना । खाड़ कूदनी नही, लोभी स्वामीकी सेवा, नही करनी, चौथका चन्द्र, नग्न स्त्री, इन्द्रधनु, इनको देखना नही । हाथी, घोड़ा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना । दिन में संभोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, भोजन, कार्य, गमन, आगमन, भाषण, व्यय (खरच) और आय (लाभ) ये कदापि न करने यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेश ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

करावे फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढे । उस पीछे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडके ऐसे कहे, "भगवन् भवद्भिर्मम व्रतादेशो दत्त." तब गुरु कहे, "दत्त सुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर पर तारय संसारसागरात्" ऐसें कहके नमस्कार पढता हुवा ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें उसपीछे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें भिक्षाटन करना, क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना, और वैश्यने अन्नदान करना ॥

इत्युपनयने व्रतादेश ॥

अथ व्रतविसर्ग कथ्यते—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोलां वर्षपर्यंत, दंड और अजिन धारण करके, भिक्षावृत्ति करके भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है क्षत्रियने दंड अजिन धारण करके दश वर्षसे लेके सोलां वर्ष पर्यंत आपहि पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, भोजन करना, और वैश्यने दंड अजिन धारण करके स्वकृत भोजन करके बारां वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है । यदि कार्यव्यग्रतासें तितने दिन न रह सके तो, छ (६) मास पर्यंत रहना तदभावे एक मास पर्यंत, तदभावे पक्ष पर्यंत, तदभावे तीन दिन रहना यदि तीन दिन भी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहते हैं । उपनीत, तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशायोंमे जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढे तदपीछे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोडके ऐसें कहे ॥ "भगवन् देशका लाद्यपेक्षया व्रतविसर्गमादिश" ॥ गुरु कहे ॥ "आदिशामि॥" फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन्ममव्रतविसर्गं आदिष्ट ॥ गुरु कहे ॥ "आदिष्ट ॥' फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन् व्रतवधो विसृष्ट ॥' गुरु कहे ॥ "जिनो पवीतधारणेन अविसृष्टोस्तु स्वजन्मत षोडशाब्दीं ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठे ॥ उसपीछे पंचपरमे ष्ठिमंत्र पढता हुआ शिष्य, मौंजी, कौपीन, वल्कल, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तव गुरु तिस वारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्या ख्यान करे ।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रि यको, और बारां वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्भमास भी बीचमेंही गणने । तथाच ॥ "जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः."

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्भरत्नत्रय, येह पुरा, श्रीयुगादिदेवने गृहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतांइ कहा था । तदपीछे तीर्थके व्यवछेद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंने हिंसा प्ररूपणेसे चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासें प्राय· हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा मिथ्या दृष्टि यथेछासें प्रलाप करो । परन्तु जिनमतमे तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत तिसवास्ते तैंने इस जिनोपवीतको अछीतरे धारण करना माससमासपीछे नवीन धारण कराना, प्रमादसें जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना प्रेतक्रियामे दक्षिण स्कधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठें, ऐसे विपरीत धारण करना क्योंकि, सो विपरीत कर्म है । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमे तथाविध विपरीतही वस्त्र पहेनते हैं, जिसवास्ते, तू जन्मकरके शूद्र आजतक था साप्रत सस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणेसें ब्राह्मण, वा क्षतात्राणेन-रक्षणकरनेसें क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममे प्रवेश करनेसें वैश्य हुआ है, तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अछीतरे ग्रहण करना अछीतरें रखना तेरेको सत्कर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो एसे व्याख्यान करके पर मेष्ठिमंत्र पढकर दोनों गुरु शिष्य खडे होवे पीछे चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे ॥ इत्युपनयने व्रत विसर्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते है ॥ तदा व्रतविसर्गके अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन २ प्रदक्षिणा करके पूर्ववत् चारो दिशामे शक्रस्तवका पाठ करे पीछे गृहस्थगुरु, आसनपर वैठे तव शिष्य गुरुको तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोमके खमा होके, गुरुको विज्ञापना करे यथा ॥

"॥ जगवन् तारितोह, निस्तारितोह, उत्तम कृतोहं, सत्तम कृतोहं, पूत कृतोहं, पूज्यकृतोह, तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्मे, मम किंच नापि रहस्यजूत सुकृत ॥"

हे जगवान्! तारा मुझको, निस्तारा मुझको, उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ट) करा मुझको, पवित्रकरा मुजको, पूज्य करा मुझको, तिसवास्ते, हे जगवन्! प्रमादवहुल गृहस्थधर्ममे मेरेको कुछजी रहस्यजूत सुकृत कथन करो ॥ तव गुरु कहे ॥

"॥ वत्स! सुष्टनुष्ठितं सुष्टु पृष्टं तत श्रूयताम् ॥"

हे वत्स! अच्छा करा, जला पूछा, तिसवास्ते तूं श्रवण कर ॥

दानं हि परमो धर्म्मो दानं हि परमा क्रिया ॥
दानं हि परमो मार्ग्गस्तस्माद्दाने मनः कुरु ॥ १ ॥
दया स्यादभय दानमुपकारस्तथाविधः ॥
सर्वो हि धर्म्मसंघातो दानेन्तर्जावमर्हति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी च पाठेन भिक्षुश्चैव समाधिना ॥
वानप्रस्थस्तु कष्टेन गृही दानेन शुध्यति ॥ ३ ॥
ज्ञानिन परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥
व्रतकाले प्रयच्छन्ति दान सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥
गृह्णता प्रीणनं सम्यक् ददतां पुण्यमक्षयम् ॥
दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपर ॥ ५ ॥

अर्थ—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमे मन कर । अजयदानसे दया होवे है, दानसेंही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्जाव हो सक्ता है । ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है । तीन ज्ञानके धर्त्ता परमार्थके जाणकार, ऐसें अर्हंत जगवंत जगदीश्वर जी व्रतसमयमे सावत्सर दान देते हैं । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है, और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त करा ता है, तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमे नही है ॥ ५ ॥ जिसवास्ते हे

वत्स ! तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है, तिसवास्ते हे वत्स ! तू गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान देनेका प्रारंभ कर । तब नस्कार करके शिष्य कहे, हे भगवन् ! मुझको दानका विधी कहो । गुरु कहे 'आदिशामि' कहता हू । यथा ॥

गावो भूमि सुवर्णं च रत्नान्यन्न च नक्तका ॥
गजाश्वाइति दानं तदष्टधा परिकीर्त्तयेत् ॥ १ ॥
एतच्चाष्टविध दानं विप्राणा गृहमेधिनाम् ॥
देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्चनि स्पृहा ॥ २ ॥
यतिभ्यो भोजनं वस्त्र पात्रमौषधपुस्तके ॥
दातव्य द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थ –गौ १, भूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५, नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोरा ८, येह आठ प्रकारका दान कहा है । यह पूर्वोक्त आठ प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुयोको देना और नि स्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नही लेते है । साधवोको तो, भोजन, वस्त्र, पात्र, औषध पुस्तक, इनका दान देना साधुको द्रव्य (धन) का दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोनोंही नरकगामी होते हैं ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना. उपनीत, वछडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत रंगकी, स्नापित, चर्चित, भूषित, धेनुको, आगे स्था

यके पूठसे पकडके, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय शृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांइ देवे। गुरु तिस गौकी पूठको हाथमें धारण करकें, यह वेदमंत्र पढे। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं गोरिय धेनुरिय प्रशस्यपशुरिय सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेय पवित्रगोमयमूत्रेय सुधास्रा विणीय रसोद्भाविनीय पूज्येयं हृद्येयं अजिवाद्येय तद्दत्तेय त्वया धेनु कृतपुण्यो जव प्राप्त पुण्यो जव अक्षयं दानमस्तु अर्ह ॐ ॥"

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे शिष्य तिस गौकेसाथ डोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र पट् (६) रस और पुरुपतृप्तिमात्र पट् (६) विकृती (विगय) देवे॥ इतिगोदानम्॥ अन्य सर्व ज्रूमिर त्नादिदानोंविषे यह मंत्र पढना। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति लक्षमस्ति प्रयुतमस्ति को ट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसह स्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोटिलक्षमस्ति कोटिप्रयुत मस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनतानतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षय दानमस्तु ते अर्हं ॐ ॥" इति परेषा दानानां मंत्रपाठ ॥

यहां उपनयनमें गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा भी देना गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना निःस्पृह यतियोंको न देना तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, भेषज, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाभ.' यही मंत्र जाणना । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णानुज्ञा देके, चैत्यवंदन, और साधु वंदन करायके, तैसेंही संघके मिले हुए, मंगलगीत वाजत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुयोंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना । पीछे चतुर्विध संघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रादि दान करे ॥ इति गोदानविधि ॥

संपूर्णोयं चतुर्विधउपनयनविधिः ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिखते हैं ॥ सात दिन तैलनिषेकस्नान पूर्ववत् जाणना । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंडन, वेदिकरण, चतुष्किकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत् । पीछे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्रकारी पूजा करे चारोदिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे पीछे गुरु आसनऊपर बैठ जावे तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासंगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको

नमस्कार करके हाथ जोमके, खमा होयके कहे. "॥ जगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्यदेशार्यकुलस्य मम वोधिरूपा जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे "॥ ददामि ॥' शिष्य फिर नमस्कार करके कहे "॥ न योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥' गुरु कहे ददामि ॥" पीछे द्वादश (१२) गर्जततुरूप, जिनोपवीतप्रमाण दीर्घ (लवा) कार्प्पासका, वा रेशमका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनोपवीतवत् पहिरावे पीछे गुरु, पूर्वाजिमुख शिष्यको चैत्यवंदन करावे । पीछे शिष्य 'नमोस्तु २" कहता हुआ, सुखसें वैठे गुरुके पगोंमें पमके, फिर खडा होके, हाथ जोमके, ऐसें कहे "॥ जगवन् उत्तरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोह ॥" गुरु कहे "सम्यगारोपितोसि तर जवसागरम् ॥" पीछे गुरु सन्मुख वैठे शूद्रके आगे व्रतानुज्ञा देवे ॥ यथा ॥

सम्यक्त्वेनाधिष्ठितानि व्रतानि द्वादशैव हि ॥
धार्याणि जवता नैव कार्यं कुलमदस्त्वया ॥ १ ॥
जैनर्षीणां तथा जैनब्राह्मणानामुपासनम् ॥
विधेयं चैव गीतार्थाचीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥ २ ॥
न निंद्य कोपि पापात्मा न कार्यं स्वप्रशंसनम् ॥
ब्राह्मणेन्यस्त्वया मानं दातव्यं हितमिच्छता ॥ ३ ॥
शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकव्याख्यानमाचरेत् ॥
उत्तरीयपरिभ्रंशे जगे वाप्युपवीतवत् ॥ ४ ॥

कार्यं व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥
युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञाया च विधीयते ॥ ५ ॥
क्षात्राणामथ वैश्याना देशकालादियोगल ॥
त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासगयोजनम् ॥ ६ ॥
धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥
धार्यस्तथोत्तरासंग सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥
अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥
गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थ.—सम्यक्त्वके सयुक्त द्वादश व्रत तैंने धारण करने, और कुलका मद न करना । जैन ब्राह्मणोकी उपासना करनी, तथा गीतार्थाचीर्ण तप करना । किसी पापात्माको निंदना नही, अपनी प्रशसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान देना । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमे कहे आचारको आचरण करना, (उत्तरीयके परिभ्रंशमे, वा जगत्रै उपवीतवत् जाणना । व्रत करना, प्रेतकर्म करना,) हे वृषलशूद्र ! उत्तरासगकी अनुज्ञामें तैंने यह युक्ति करनी । देशकालादियोगसें त्याग किया है उपवीत जिनोंने, वैसे क्षत्रिय और वैश्योको, उत्तरासग योजन करना । धर्मकार्यमें, गुरुकी दृष्टिमें, देव और गुरुके मकानमें, तथा प्रेतकर्ममें, सूत्रकी तरें उत्तरासग धारण करना । और जी कारुओंको गुरुकी आज्ञाके विना जी गुरुधर्मादिकार्योंमे उत्त

रासंग इच्छते हैं । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे । परमेष्ठिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत् । इतना विशेष है शूद्रादि कोको 'नमो' के स्थानमे 'णमो' उच्चारण कराना इतिगुरुसंप्रदाय । पीछे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमे जावे तहां मंडलीपूजा, गुरु नमस्कार, वासक्षेपादि पूर्ववत् । पीछे मुनियोको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे और चतुर्विध सघकी पूजा करे ॥ इति उपनयने शूद्रादीना उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधि ॥

अथ वटूकरणविधि —अथ वटूकरणविधि लिखते हैं ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासयुक्त, दुष्प्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नभोजन करनेवाले, माहनोंके आचारमे रक्त, सर्व गृहस्थोकेसस्कारप्रतिष्ठादिक र्मोके करानेवाले, ऐसें ब्राह्मण, पूज्य होते है । परंक्ष त्रियादि राजायोको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अभ्युत्थान, चाटु —मनोहर वचन, प्रशसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृपि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषभादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहीहै इसवास्ते एसे ब्राह्मणो वा हरकोइ को शुद्ध ब्राह्मण वनानेके लिए "वटू करण" विधि करनाचहिये सो वतातेंहै उक्तं च यत ॥

च्युतव्रताना व्रात्यानां तथा नैवेद्यजोजिनाम् ॥
कुकर्म्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥
ग्राम्याणा कुलहीनाना विप्राणां नीचकर्म्मणाम् ॥
प्रेतान्नजोजिनां चैव मागधानां च वदिनाम् ॥ २ ॥
घाटिकाना सेवकानां गधतांबूलजीविनाम् ॥
नटाना विप्रवेपाणा पर्शुरामान्वयायिनाम् ॥ ३ ॥
अन्यजात्युद्भवानां च वदिवेपोपजीविनाम् ॥
इत्यादिविप्ररूपाणां वट्टकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थ–व्रतसे ज्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका जोजन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले, जैन वेदको नही जाणनेवाले, वेद मंत्रोका जप न करनेवाले, शस्त्रको धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले, कुलहीन, नीच कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका जोजन करनेवाले, मागध–स्तुतिपाठ पढनेवाले वदीराजादिकी स्तुति पढनेवाले, घंटिका वजानेवाले, सेवा करनेवाले, गधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेप धारण करनेवाले नट, पर्शुरामके सतानीय, अन्य जातिसे उत्पन्न हुए, वंदिवेपसे आजीविका करनेवाले, इत्यादि विप्ररूपको वट्टकरण इच्छते हैं । तिस का यह विधि है प्रथम तिसके घरमे गृहस्थगुरु, यथोक्त विधिसें पौष्टिक करे पीछे तिसको शिखा वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे । तिर्थो दकाभिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

" ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामुनमसि गौदावरमसि नार्म्मदमसि पौष्करमसि सारस्वतमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैंधवमसि चान्द्रभागमसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहितांशमसि सारेयवमसि हारिकातमसि हारिसलिलमसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूलमसि सौवर्णकूलमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नैमग्नसलिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्मसि महापाद्मसि तैगिंछमसि केशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि पावनमसि तदमु पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनं॥

इस मत्रसें कुशाग्रकरी सात वार अभिसिंचन करे पीछे नदीकांठे वा तीर्थऊपर, वा मंदिरमें, वा पवित्र गृहस्थानमे तिस बटूकरण योग्यको, प्रथम तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसे बांधे । मेखलाबंधमंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुगमोसि अजोसि शुरूजन्मासि तदमुं देहिन धृतव्रतमव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥"

इस मत्रका तीन वार पाठ करे ॥ पीछे कोपीन पहिरावे । कौपीनमत्रों यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥
व्रत कौपीनबंधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसे तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. । पीछे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहिरावे । मन्त्रो यथा ॥

" ॥ ॐ सधर्म्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकुलीनोसि सब्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्म्मनाअसि श्रद्धालुरसि अश्रद्धालुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि सांख्योसि चार्वाकोसि सलिंगोसि अलिंगोसि तत्त्वज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन भवंतु ते सर्वार्थसिद्धय ॥ "

इस मन्त्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. । पीछे तिसके हाथमें पलाशका दंड देवे, और मृगचर्म तिसको पहिरावे, और भिक्षा मागनी करावे भिक्षामागणकेपीछे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपीन, चर्मदंडादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

" ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीत धारय ॥ '

ऐसे तीन वार पढे । पीछे गुरु, धारण किया है श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे बिठलाके, शिक्षा देवे । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांछनम् ॥
मांसाशन म्लेछकदन्नदाण चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपट मा कृथाः कचित् ॥
ब्रह्मस्त्रीभ्रूणगोरक्षां देवर्षिगुरुसेवनम् ॥ २ ॥
अतिथीना पूजनं च कुर्याद्दानं यथा धनम् ॥
अथात्मघात मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥
उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्मविधिवत्त्वया ॥
शेष शिक्षाक्रम कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थ —परनिंदा, परद्रोह, परधनकी वांछा, मांस भक्षण, म्लेच्छकद लशुनादिभक्षण, इनको वर्जना। वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामे, कदापि कपट न करना, ब्राह्मण, स्त्री, गर्भ और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी। अतिथीयोंका पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात नही करना, परको पीडा न करनी । जन्मपर्यंत यावज्जीवे तवतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना, शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन करना ॥ पीछे सो वटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु, अन्न, दान करे । यहा वटुकरणमें वेदी, चतष्कि का, समवसरण, चैत्यवदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग, गोदान, वासक्षेपादि नही हे ॥ इति वटुकरणविधि ॥ इति द्वादशमोपनयनादिसस्कारवर्ण समाप्तम् ॥



॥ अथ अध्ययनारंभ संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतभिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंभमे शुभ है अर्थात् इनोंमें प्रारंभ करी विद्या प्राप्त होती है रवि और चंद्र, मध्यम है मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है । अमावास्या, अष्टमी, प्रतिपत् (एकम,) चतुर्दशी, रिक्ता, षष्ठी, नवमी, येह तिथिये विद्यारंभमे सदाही वर्जनी ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंभ संस्कारका आरंभ करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमे पौष्टिक करे, पीछे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे पीछे गुरु, अपने घरमे, वा पाठ शालामे वा पौषधागारमें, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मरूलीपूजापूर्वक वास क्षेप करवाके, पाठशालामें लेजावे पीछे गुरु शिष्यको आगे येह शिक्षाश्लोक पढे. । यथा ॥

अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विंदन्ति परं पदज्ञाः ॥ मनीषितार्थप्रतिपादकाभ्यो नमोस्तु ताभ्यो गुरुपादुकाभ्यः ॥ २ ॥
सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्यसति तु मनस्याप्यते नैव किंचित् ॥ पुंसामित्यप्यवगतवतामुन्मनीभावहेतो, रिच्छा वाढं नवति न कथं सद्गुरूपासनायाम् ॥ ३ ॥
इति मत्वा त्वया वत्स ! त्रिशुद्धोपासनं गुरोः ॥
विधेयं येन जायते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे. पीछे उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे, पीछे विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीछे षडंगी, पीछे न्याय व्याकर्ण धर्मशास्त्र पढावे, क्षत्रियको नी ऐसेंही चतुर्दश विद्या पढावे. पीछे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंड नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे. वैश्यको धर्म शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे. शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढावे, कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे. पीछे साधुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे।

इति त्रयोदशमविद्यारंनसंस्कारवर्णन समाप्त ॥

अथ विवाह संस्कार विधिलिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोकाही होता है यतउक्त ॥

ययोरेव समं शील, ययोरेव समं कुलम् ॥
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोंके, तिनका विवाहसवध जोडना योग्य है, तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नही करनी । विकृतकुल यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम वहुत होवे, अर्शरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्टि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी विकृत कुल होनेसें । कन्या विकृता यथा । वरसें लंवी होवे, हीन अगवाली होवे, कपिला होवे, ऊची दृष्टिवाली होवे, जिसका जापण और नाम जयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्याग ने योग्य है तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी नदी, वृक्षादिकके नामसें जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर वहुत रोम होवे, पिगाक्षी और घरघरास्वरवाली, ऐसी कन्या जी पाणिग्रहणमें वर्जनी ॥ कन्यादाने वरस्य विकृत कुल यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन (कष्ट) संयुक्त होवे, कन्यादानमें ऐसें कुल और पुरुषको वर्जना मूर्ख, निर्धन, दूर देशमे रहनेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षाभिलाषी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको भी कन्या न देनी तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंवध योग्य है तथा पांच शुद्धिये देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे है राशि १, योनि २, गण ३, नाडी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोकी देखके वरवधूका सयोग करना । कुल १, शील २, स्वामिपणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातो गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी आगे जो होवे, सो कन्याका भाग्य है गर्भसे आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना * तिसके ऊपरांत रजस्वला होती है तिसको राका भी कहते हैं तिसका विवाह शीघ्र होना चाहिये वरको पाकरके

* यह कथन प्राय लौकिकव्यवहारानुसार है क्योंकि, जैनागममें तो " जोवणगमणमणुपत्ता " इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तव विवाह करना और ' प्रवचनसारोद्धार ' में लिखा है कि, सोला वर्षकी स्त्री, और पच्चीस वर्षका पुरुष, तिनके सयोगसें जो सतान उत्पन्न होवे, सो वलिष्ठ होवे है इत्यादि मूलागमसें तो वाललग्नका और वृध्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है ॥

चंद्रबलके हुए, तुच्छ महोत्सवके भी हुए, विवाह करना उचित है यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धि राकाकरग्रहे ॥
नालोकयेच्चंद्रबलं वर प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ८० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये क्योंकि, अस्सीवर्ष उपरात प्राय' पुरुष शुक्ररहित होता है ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २ । आर्य विवाहके चार भेद हैं ब्राह्मविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्षविवाह ३, और दैवतविवाह ४ ये चारों विवाह मातापिताकी अज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमे धार्म्मिक विवाह गिने जाते हैं पापविवाहके भी चार भेद है गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४ ये चारों स्वेच्छानु सार करनेसें पापविवाह गिने जाते है ।

प्रथम ब्राह्म्याविवाहविधि लिखते है । शुभ दिनमें, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके सयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे ॥ मंत्रो यथा ॥

" ॐ अर्हं सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोभनाय तुभ्य वस्त्रगंधमाल्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णीष्व नद्रं नवतु ते अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके वस्त्रांचलदंपती–स्त्रीनर्ता, अपने घरमे जावे ॥ इति धार्म्यो ब्राह्मविवाह ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगतूमें प्रसिद्ध है, इसवास्ते विस्तारसें कहेगे ॥

आर्ष विवाहमे वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि, गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ बैलके साथ देते है तहां अन्य कोइ उत्सवादि नहीं होते है, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोमे नहीं है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए जैनोंके आचार कथन करनेवाले हे और ऐसें विवाह अकृत्य होनेसें जैनोकों कथन करनेकी जरुर नही हे दैवत। विवाहमे नी ऐसेंही जाणना। इन दोनो विवाहोके मत्र पर समयसें जाणने ॥ इति धार्म्य आर्षविवाह ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमे तो, पिता, अपने पुरोहितकों इष्ट पूर्त्त कर्मके अतमे अपनी कन्याको दक्षिणाकी तरें देवे यह कार्य नी जैनोंकों सम्मत नहीं होनेसें इस्के मंत्रनी कथन करतें नहीं हें ॥ इति दैवत धार्म्य विवाह ॥ ४ ॥ ये चार धार्म्यविवाह हैं ॥

पितादिकोंकी सम्मतीविना, अन्योन्यप्रीतिकरके जो विवाह होता है, सो गाधर्वविवाह ॥१॥

पणवंध, सो आसूरविवाह ॥ २ ॥ हठसें कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसे, पैशाच विवाह कहा जाता है ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसे इन चारो विवाहोको विवाहज्ञ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्राह्म १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दुखमका लकलियुगमें प्रवर्त्तते नही हैं । चारों पापविवा होका वेदोक्तविधि जी नही है अधर्म होनेसे ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कह ते है ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमे लग्न करना । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नही करना । तथा युति, क्रांति, साम्य, दोषमें जी नही करना । तीन दिनको स्पर्श नेवाली तिथिमें, (अवम् क्षय तिथिमे,) क्रूर तिथि में, दग्ध तिथिमे,) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, षष्टी, द्वादशी इनमे विवाह नही करना । जन्मामे, गर्भांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि वार योगो, व्यतिपातमें, वैधृतिमे और निंद्यसमयमें विवाह नही करना सूर्यके क्षेत्रमे बृहस्पति होवे और बृहस्पतिके क्षेत्रमे सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रति ष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने । चौमासेमे, अधिकमा

जोगोपजोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय ददाति गृहाण अर्हं ॐ ॥"

पीछे सर्व लोकोंकेतांइ कन्याके पक्षी तांबूल देवे । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए, सो कन्या अन्यको न देवे

उक्तंच ॥

"सकृज्जल्पन्ति राजानस्सकृज्जल्पन्ति पण्डिता. ॥ सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥१॥"

राजाओ एकवार बोलते हैं, पण्डित जन एक वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिइजाती है पूर्वोक्त तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं ॥ तथा वर जी, तिस कन्याको वस्त्र, आजरण, गधादिउत्सवसहित, तिसके पिताके घरमें देवे । कन्याका पिता जी, परिजनसयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुद्रि कादिक देवे ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें. वा पक्षमें, अवकासानु सारें दोनों पक्षोके स्वजनोंको एकठे करके, सांवत्स र–ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर बिठलाके, तिसके हाथसें विवाहलग्न जूमिके ऊपर लिखवावे, और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्म लग्नवत् विवाहलग्नको पूजे । पीछे ज्योतिषिको

दोनों पक्षोंके वृद्धनें वस्त्रालंकार तांबूलदान देना इति विवाहारंभ ॥

पीछे कोरे शरावलोंमें यव बोवने। पीछे कन्या के घरमें मातृस्थापना, और षष्ठीस्थापना, षष्ठी पूजनविधिके प्रकारसें करना । वरके घरमें मातृ स्थापन, और कुलकरस्थापन करना । परमतमे गण पति, कंदर्प स्थापन करते हैं सो सुगम, और लोक प्रसिद्ध है ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं ॥ गृहस्थ गुरु भूमिपर नही पडे गोमय (गोबर) करके लीपी हुई भूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे । पट्टकस्थापन मंत्र.

"॥ ॐ आधाराय नम आधारशक्तये नम. ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसें अभिषिचन करके । पीछे चदन, अक्षत, दूर्वाकरके पट्टेको पूजे । पीछे आदिमें

"॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्या मवर्ण चंद्रयश प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चा रख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाभिधानाय, इह विवाहमहोत्सवादौ आगछ २, इह स्थाने तिष्ट २, सन्निहितो भव २, क्षेमदो भव २, उत्सवदो भव २, आनंददो २ भोगदो भव २, कीर्तिदो

अपत्यसंतानदो नव २, स्नेहदो नव २, राज्यदो नव २, इदमर्घ्यं पाद्य बलि चर्चा आचमनीय गृहाण २, सर्वोपचारान् गृहाण ॥ " २, पीछे ॥

"॥ ॐ गंध नम । ॐ पुष्प नमः । ॐ धूपं नम. । ॐ दीप नम. । ॐ उपवीतं नम । ॐ भूषणं नम । ॐ नैवेद्यं नम । ॐ तांबूलं नम· ॥ "

पूर्वोक्त मंत्रकरी आव्हान सस्थापन करके, इस मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, बलि, चर्चा, आचमनीय, दान देवे. यह छोटे मंत्रोंसें गधके दो तिलक, दो पुष्प, दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥१॥ पीछे दूसरे स्थानमें ॥

"॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचन्द्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, चक्षुष्मदभिधानाय, ॥" शेष पूर्ववत् ॥ २ ॥

"॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, यशस्वअभिधानाय ॥ " ॥ शेष पूर्ववत् ॥

"॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकरमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, अभिचन्द्राभिधानाय ॥" शेष पूर्ववत् ॥

"॥ ॐ नम. पचमकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचक्षु कांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्या

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदनिधानाय ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥

"॥ ॐ नम षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवानिधानाय, ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ६ ॥

"॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, काचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाजीअनिधानाय ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधि ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीछे नी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये । पीछे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे और कन्याके घरमे मातृपूजा पूर्ववत् । पीछे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमे वधूवरको अपने २ घरमे, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाजिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाजिषेकदिनसें, वरके घरसें कन्याके घरमें, तैल, शिर प्रसाधनगधड्व्य, डाक्षादि खाद्य, शुष्कफल, जेजने । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरसें, तैल, धान्य, ढौकन करें। वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तैल धान्यढौकनेवाली नारीयोंको, पूडे आदि पक्वान्न देवें। तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना । तैलाजि

पेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारादिक सर्व, वधूवरको चंद्रबलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना । तथा धूलिभक्त, कोर भक्त, सौभाग्यजलव्यावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना । पीछे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमे होवे तो, तिसकी गमनयात्रा (जान जनेत वरात) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी, तिसका विधि यह है ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको भोजन देना, पीछे दूसरे दिन सुस्नात होके, चदन का लेपन करके, वस्त्रगधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट भूपित शिरको करके, घोडेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानबीडे चावे हुए, सवधी ज्ञातिजन, अपनी २ सपदानु सार घोडेआदि ऊपर चढे हुवे, वा पगोसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें । दोनों पासे, मंगलगानमे तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चलें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, गृहशातिमत्र पढते हुए चलें ॥

"ॐ अर्हं आदिमोर्हन्, आदिमो नृप, आदि मो यता, आदिमो नियता, आदिमो गुरु, आदिम स्रष्टा, आदिम कर्त्ता, आदिमो भर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिम. शिल्पी, आदिमो विद्वान्, आदिमो जल्पक, आदिम. शास्ता, आदिमो रौद्र, आदिम. सौम्य, आदिम. काम्य, आदिम, शरण्य, आदिमो दाता, आदिमो वंद्य., आदिम स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेय, आदिमो ध्येय., आदिमो भोक्ता, आदिम सोढा, आदिम एक, आदिमोऽनेकः, आदिम स्थूल, आदिम कर्म्मवान् आदिमोऽकर्म्मा, आदिमो धर्म्मवित्, आदिमोऽनुष्टेय., आदिमोऽनुष्ठाता, आदिम सहज, आदिमो दशावान् आदिम सकलत्र., आदिमो नि कलत्र, आदिमो विवोढा, आदिमः ख्यापक, आदिमो ज्ञापक, आदिमो विदुर, आदिम कुशल, आदिमो वैज्ञानिक, आदिम सेव्य, आदिमोगम्य., आदिमो विमृश्य, आदिमो विम्रष्टा, सुरासुरनरोरग प्रणत., प्राप्तविमलकेवलो यो गीयते, सकलप्राणिगणहितो, दयालुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योति, परंब्रह्म, परमैश्वर्यभाक्, परंपर, परापरो, जगदुत्तम, सर्वग., सर्ववित्, सर्वजित्, सर्व्वीय., सर्व्वप्रकाश्य सर्ववंद्य, सर्वपूज्य, सर्वात्माऽससारोऽव्ययोऽवार्यवीर्य, श्रीसंश्रय, श्रेय, सश्रय, विश्वावश्यायहृत्, संशयहृत्, विश्वसारो, निरजनो, निर्मम्मो, नि कलको, नि पाप्मा, नि.पुण्य., निर्मना, निर्वाचा, निर्देहो, नि सशयो,निराधारो,निरवधि प्रमाणं,प्रमेय,प्रमाता,

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जराबंधमोक्षप्रकाशकः, स एव भगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, ऋद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें। पीछे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंडलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे, पीछे पथसे चलें। तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना। तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका भी, यही विधि जाणना। तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंभ सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना। पीछे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसे आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले तिस की बहिन विशेषकरके लूणआदि उत्तारण करे। पीछे वर, आम्बवर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके घरके द्वारमें आवे तहा खडे हुए वरको, तिसके सासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक (आरति) करे। पीछे अन्य स्त्री, जलते हुए अगारे, और लवणकरके सयुक्त, त्रट त्रट ऐसे शब्द करते हुए, सरावसंपुटको, वरको निरुंछन करके, प्रवेशमार्गके वामे पासे स्थापन करे। पीछे अन्य स्त्री कौसु

त्रसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे । पीछे वर, वाहन सें नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अग्निलवण संयुतसंपुटको खण्डित करे (तोडे) पीछे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसु त्रवस्त्रको वरके कंठमे डालके, खेंचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे तहां विजूपाकरके, कौतुकमग लकरके, प्रथम आसनऊपर बैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको विठलावे । पीछे गृहस्थगुरु लग्नवेलामे शुभांशके हुए, पीसी हुई समी (खेजडी) की छाल, और पीपलिकी छाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोडे । ऊपर कौसुंत्रसूत्रसे बांधे ॥ हस्तबंधनमंत्र ॥

"॥ ॐ अर्हं आत्मासि, जीवोसि, समकालोसि, समचित्तोसि, समकर्म्मासि, समाश्रयोसि, समदेहोसि, समक्रियोसि, समस्नेहोसि, समचेष्टितोसि, समाभिला पोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, समविषादोसि, समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचाअसि, सम क्षुत्तृष्णोसि, समगमोसि, समागमोसि, समविहा रोसि, समविषयोसि, समशब्दोसि, समरूपोसि, समगंधोसि, समस्पर्शोसि, समेंद्रियोसि, समाश्रवो सि, समबंधोसि, समसंवरोसि, समनिर्जरोसि, सम

मोक्षोसि, तत् एहि एकत्वमिदानी अर्ह ॐ ॥"
इति हस्तवधनमंत्र ॥

यहा समयातरमे (वेदिक मतमें) मधुपर्क नक्षण, देशातरमे वरको दो गोयां देनी, और कुलांतरमें कन्याको आजरण पहिरावणे, इत्यादि करते हैं। पीछे वधुवरको मातृघरमें बैठे हुए, कन्याके पक्षी, वेदिकी रचना करें, तिसका विधि यह है ॥ कितनेक काष्टस्तन काष्टाच्छादनोकरके चौकूणी वेदी करते हे, और कितनेक चारो कूणोमे स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, वा माटीके सात सात कलशोको ऊपर लघु, लघु, अर्थात् प्रथम वडा उसके ऊपर गेटा, उसके ऊपर फिर गेटा, एव स्थापन करके चारों पासे चार चार आर्द्र वांसोसें वाधके वेदि करते हे चारों वारणोमें वस्त्रमय, वा काष्टमय तोरण, और चदन मालिका वांधते हे, और अंदर त्रिकोण अग्निका कुन्ड करते हैं। वेदी वनाया पीछे गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त वेप धारण करके वेदिकी प्रतिष्टा करे। तिसका विधि यह है ॥

वास पुष्प अक्षतों सें हाथ नरके ॥

"॥ ॐ नम· क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षॉ क्षीं क्षुं क्षौं क्षः इह विवाहमडपे आगच्छ २ इह वलिपरिन्नोग्य गृह्ण २ नोग देहि, सुख देहि, सतति देहि यशोदेहि,

शुद्धिं, देहि, वृद्धिं देहि, बुद्धि देहि, सर्वसमीहितं देहि, २ स्वाहा ॥"

ऐसे पढके चारो कोणोमे न्यारेन्यारे वास, माल्य, अक्षत, क्षेप करना, तोरणकी प्रतिष्ठाभी ऐसेंही करनी तन्मंत्रो यथा ॥

"ॐ ह्रीं श्रीं नमो द्वारश्रिये, सर्वपूजिते, सर्व मानिते, सर्वप्रधाने, इह तोरणस्थासर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा ॥"॥ इतितोरणप्रतिष्टा ॥

पीछे वेदिके मध्यमे अग्निकोणेमे अग्निकुंडमे मंत्रपूर्वक अग्निको स्थापन करे । अग्निस्थापन मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ र रां रीं रूं रौं र नमोऽग्नये, नमो बृह द्भानवे, नमोनंततेजसे, नमोनंतवीर्याय, नमोनंतगु णाय, नमो हिरण्यरेतसे, नमछागवाहनाय, नमो हव्यासनाय, अत्र कुंडे आगच्छ २ अवतर २ तिष्ट २ स्वाहा ॥"

समयांतरमे, देशांतरमें वा कुलांतरमे, वेद्यंतर मेंही, हस्तलेपन करते हैं देश कुलाचारादिमें मधु पर्क प्राशनके अनंतर, वेदि, और हस्तलेपसे पहि ले परस्पर कंवायुद्ध, वधूवरास्फालन, वेकानयन, मणिग्रथन, स्नान, चाष्टकर्म, पर्याणकर्म्म, वस्त्रकोसु म्भसूत्राल कर्पणप्रमुख, कर्म्म करते हैं वे देशविशे षलोकोंसें जाण लेने व्यवहार शास्त्रोंमें नही कहे

हे परंतु स्त्रीयोको सौभाग्यप्राप्तिवास्ते, शोक आदि न होवे तिसके वास्ते, वरको वशीभूत करनेके वास्ते करते हे ॥

पीछे युक्त हाथवाले, नारी और नरकी कटी ऊपर चढे हुए वधूवर दोनोको, गीतवाजत्रादि बहुत आडंबरसें दक्षिण द्वारसें प्रवेश कराके वेदिके मध्यमे लावे । पीछे देशकुलाचारसें काष्ठासनोंके ऊपर, वा वेत्रासनोके ऊपर, वा सिंहासनके ऊपर, वा अधोमुखी शरमय खारीके ऊपर, वधूवरको पूर्व सन्मुख बिठलावे । तथा हस्तलेपमें, और वेदिकमेंमे कुलाचारके अनुसार दसियां सहित कौरवस्त्र, वा कौसुंभवस्त्र, वा स्वभाववस्त्र वधूवरको पहिरावे पीछे गृहस्थगुरु, उत्तरसन्मुख मृगचर्म ऊपर बेठाहुआ, शमी, पिप्पल, कपित्थ (कवठ–एतवेल) कुटज (कुडची–जिस वृक्षका फल इंद्रयव होता है,) बिल्व, आमलकके इंधनकरके अग्निको जगाके, इस मंत्रकरके घृत मधु तिल यव नाना फलोंका हवन करे ॥ मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं अग्ने प्रसन्न , सावधानो भव, तवाय मवसर , तदाहारयेंद्र यम नैरुत वरुण वायु कुवेरमीशानं नागान् ब्रह्माणं लोकपालान् ग्रहांश्च सूर्यशशिकुजसौम्यबृहस्पतिकविशनिराहुकेतून् सुरांश्चअसुरनागसुपर्णविद्युदग्निद्वीपोदविदिक्कुमारान् भुवनपतीन्

पिशाचनूतयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वान् व्यंतरान् चन्द्रार्कग्रहनक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान् सौध र्म्मेशान् सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलांतकशुक्रसहस्रारान तप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरजवान् वैमानिकान् इन्द्रसामानिकपार्षद्यत्रायस्त्रिंशल्लोकपालानीकप्रकीर्णक लोकांतिकाभियोगिकभेदभिन्नांश्चतुर्णिकायानपि स नार्यान् सायुधवलवाहनान् स्वस्वोपलक्षितचिह्नान् अप्सरसश्च परिग्रहितापरिग्रहितभेदभिन्ना सस खिका सदासिका सानरणा रुचकवासिनीदिक्कुम रिकाश्च सर्वा समुद्रनदीगिर्याकरवनदेवतास्तदेतान् सर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं वलिं चरु हुतं न्यस्तं ग्राह्य २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हं ॐ॥"

पीछे अग्नीतरे हुत करके प्रदीप्त अग्निके हुए, गृहस्थगुरु, तहांसें उनके दक्षिणपासे स्थित हुई वधूके सन्मुख बैठके, ऐसा कहे ॥

"॥ ॐ अर्हं इदमासनमध्यासीनौ, स्वध्यासीनौ, स्थितौ, सुस्थितौ, तदस्तु वा, सनातन संगम, अर्हं ॐ ॥"

ऐसें कहके कुशाग्रतीर्थोदककरके दोनोंको सींचन करे । पीछे वधूका पितामह, वा पिता, वा चाचा, वा भाइ वा मातामह, वा कुलज्येष्ठ, धर्मानुष्ठान करके उचित वेषवाला, वधूवरके आगे बैठे । शांतिक पौष्टिकसें आरंभके विवाहसें मासपर्यंत मंगल

गान, वादित्रवादन, भोजन तांबूल वस्त्र सामग्री सदैव करनेचहिये ॥ पीछे गुरु ॥

"॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य. ॥"

ऐसे कहके, प्रथम अक्षतपूर्ण हाथवाला होके वधूवरके आगे ऐसा कहे ॥

"विदितं वां गोत्रं संबंधकरणेनैव ततःप्रकाश्यतां जनाग्रत. "

जाना है तुमारा गोत्र, सबंध करनेसेंही, तिस वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे। तब प्रथम वरके पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने अन्वय-वंशको प्रकाश करे,। पीछे वरकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश करे। पीछे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे। फिर कन्याकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। पीछे गुरु ॥

"॥ ॐ अर्हं अमुकगोत्रीय, इयत्प्रवर, अमुकज्ञाति, अमुकान्वय, अमुकप्रपौत्र, अमुकपौत्र अमुकपुत्र, अमुकगोत्रीय, इयत्प्रवर अमुकज्ञातीय, अमुकान्वय, अमुकप्रदौहित्र, अमुकदौहित्र, अमुक सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुकपौत्री, अमुकपुत्री अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुक

ज्ञातीया,अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्रीअमुका वर्य्या तदेतयोर्वर्य्यावरयोर्वरवर्य्ययोर्नि विको विवाहसंवधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हँ ॐ॥" ऐसें कहे ॥

पीछे गुरु, वरवधूके पाससें गध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे । पीछे वधू लाजांजलिको अग्निमे निक्षेप करे । पीछे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर वैठे । पीछे गुरु वेदमत्र पढे

"॥ ॐ अर्हँ अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादिकाल , अनादिकर्म्म, अनादिसंवधो, देहिनां, देहानुमतानुगतानां, क्रोधोहंकारछद्मलोभै , संज्वलनप्रत्यारयानावरणाप्रत्यारयानानंतानुवधिभि शब्दरूपरसगंधस्पर्शैरिछानिछापरिसकलितैः संवधो अनुवध. प्रतिवध सयोंग सुगम सुकृत स्वनुष्टित सुनिवृत्त. सुप्राप्त सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हँ ॐ॥ " यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे

"॥ तदस्तु वा सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्ष जनप्रत्यक्ष मातृप्रत्यक्ष पितृप्रत्यक्ष मातृपक्षप्रत्यक्ष पितृपक्षप्रत्यक्ष ज्ञाति

"॥ अद्य अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्त्ते, पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्रगंधमाल्यालंकृतां सुवर्णरूप्यमणिभूषण भूषिता ददात्यय प्रतिगृह्णीष्व ॥"

ऐसें कहके वधूवरके योजित हाथमे जलक्षेप करे। तब वर कहे "प्रतिगृह्णामि" तदनंतर गुरु कहे

"सुप्रतिगृहीतास्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, ॥"

पीछे प्रथम तीन लाजामे कन्याके हाथ ऊपर थे अब कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीछे वरवधूको आसनसें उठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीछे करे। पीछे लाजाकी मुष्टि अग्निमे प्रक्षेप करकेगुरु ऐसे कहे "प्रदक्षिणीक्रियता विभावसु" वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ट, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, भूमि, निष्क्रय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, बैल, पल्यक, तूलिका, उत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाकके भांडे, आदि सर्व वस्तुको वेदिमे ल्यावे। और भी तिसके भाइ, संबंधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसे देने योग्य वस्तुयें वेदिमे ल्यावे। पीछे प्रदक्षिणाके अंतमे वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर वैठें नवर इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा । पीछे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वास करके हस्त पूर्ण हुआ थका, ऐसें कहे.

" ॥ शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो जोग्यफलकर्मजोगाय संसारिजीवव्यवहारमार्गसदर्शनाय, सुनंदासुमंगले पर्यणेपीतु,ज्ञातमज्ञात वा तदनुष्टानमनुष्टितमस्तु '

ऐसें कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे । पीछे गुरुके कहनेसें वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसे कहे सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तव वर कहे "प्रतिगृह्णामि प्रतिगृहीत परिगृहीतं" गुरु कहे "सुगृहीतमस्तु सुपरिगृहीतमस्तु" पुन तैसेंह। वस्त्र, ऊषण, हस्ति, अश्वादि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है.। पीछे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसें कहे

" ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्म्मानुवंधेन, निविडेन, निकाचितवद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अश्लथेन, अवश्यजोग्येन, विवाह प्रतिवद्धो वजूव, तदस्त्वखण्डितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्यावाध, सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु,ऋद्धिरस्तु,वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ '

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसे सिंचन

पूर्वोक्त रीतिसें अचलमथन करके अनेक वस्तुदान पूर्वक तिसही आरूवरसे स्वगृहको पहुंचावे । पीछे सात रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ठ मासपर्यंत, वा वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव करना सात रात्रिके अनतर, वा मासअनंतर, कुलाचारानुसारकरके कन्याके पक्षमे पूर्वोक्त रीतिकरके मातृविसर्जन करना –गणपतिमदनादिविसर्जन विधि लोकमे प्रसिद्ध है–और वरपक्षमे कुलकर विसर्जनविधि लिखते है । कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुलकरकी पूजा करनी । विसर्जनकालमे कुलकरोंका पूजन करके, गुरु पूर्ववत् "ॐ अमुककुलकराय" इत्यादि संपूर्णमत्र पढके "पुनरागमनाय स्वाहा" ऐसें सर्वकुलकरोंको विसर्जन करे ॥ पीछे यह पढे.

"आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मत्रहीन च यत्कृतं ॥
तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ "

इतिकुलकरविसर्जनविधि. ॥

पीछे मडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत् । साधूओंको वस्त्र पात्र देना । ज्ञानपूजा करणी । जैन ब्राह्मणोको याचकोकों अपर मागनेवालोको यथासपत्तिसें दान करणा ।

तथा देशकुलसमयातरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए, वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, षट् (६) आचार करते हे प्रथम अगणमें आसन देना । श्वशुर कहे

"विष्टरं प्रतिगृह्णाण" तब वर कहे "ॐ प्रतिगृह्णामि" ऐसे कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसे तिलक करे ॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसयोग और परस्पर दोनोका नामग्रहण, शेष पूर्ववत् ॥

इति चतुर्दशम विवाह सस्कार समाप्त ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कार प्रारभ्यते ।

इहा जैनमतमे गर्भाधानसे लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोकरके सस्कृत भी पुरुष, व्रतारोपसंस्कारविना इस जन्ममे प्रशसा पात्र नही होता है और परलोकमे आर्यदेशादिभावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका भाजन नही होता है इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है यत उक्तमागमे ।

"बभणो खत्तिओ वावि, वेसो सुद्दो तहेवय ॥
पयई वावि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स भायण॥१॥"

अर्थ—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्त हुआ, मोक्षका भाजन होता है ॥ १ ॥

बहत्तर कलाकुशल जी, विवेकसहित जी होवे, तो जी वो नर कुशल नही हैं, जो, सर्वकला योंमे प्रधान जो धर्मकला तिसको नही जाणताहो ॥ १ ॥ परमतमे जी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि जार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं । तिसका विधि यह हैं

पीछले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा क्षुल्लकने कराने परंतु व्रतारोपसस्कार तो, निर्ग्रंथ यतिनेही करावणा प्रथम गुरुकी गवेषणा करणी

गुरू कैसे होना !

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पाच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पाच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं छत्तीस गुणोवाला गुरु होता है । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गजीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नही, सोमप्रकृतिवाला होवे, शिष्यादिका सग्रह करनेवाला होवे, इत्यादि अजिग्रहमे जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले, चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है । कितनेही जिनवरेंद्र अजरामर पदका पथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए है, परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है ॥

अव प्रकारांतरकरके गुरुके छत्तीस गुण कहते हैं । आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति करनेवाले गुरु होवे । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र, इनप्रत्येकके आठ २ भेद हैं, एवं २४, और तपके द्वादश १२ भेद हैं, ऐसें आचार्यके छत्तीस गुण होते हैं ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकल्प १० द्वादश १२ तप और षडावश्यक ६ ये छत्तीस गुण आचार्यके हैं ।

अथवा संविग्न १, मध्यस्थ २, शात ३, मृदु–कोमलस्वभाववाला ४, सरल ५, पडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जाननेवाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदेनेमे निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुछ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंभीर स्वरवाला २४, तप करणेमे रक्त २५, सुदर शरीरवाला २६, शुभ भली प्रतिज्ञावाला २७, वादियोको

जीतनेवाला २८, परिषदादिको आनंदकारक २९, शुचि–पवित्र ३०, गंभीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं ॥

ऐसें पितापरपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अभावमे पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है ॥ चतुर्दश संस्कारोंकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है ।

कहा है की

अक्षुद्र १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, भीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कथी १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घ दर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है, अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमें होवे, अथवा प्राय नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी और थोडेसें थोडे इकीस गुणोंमेंसें चाहे कोइ दश गुण जीवमें होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११–१२–१३–१४–१५–१६–१७–१८–१९–२० शेष गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना इन इकीस गुणोका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरजास्करके द्वितीय खंमके ४६ पृष्ठसें लेके ७३ पृष्ठपर्यंतहे जहांसे देख लेना

योगशास्त्रमे श्रीहेचंद्राचार्यनेन्नी एसाहि कहाहे की

न्यायसें धन उपार्जन करनेवाला, शिष्टाचारकी प्रशसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवालेके साथ विवाह किया है जिसने, पापसे मरनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको करनेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लघन नही करनेवाला, किसी जगे न्नी अवर्णवाद नही बोलनेवाला, राजादिकोंमे विशेषसें अवर्णवाद वर्जनेवाला, । अतिप्रकट, वा अति गुप्त स्थानमे नही रहनेवाला, अच्छा पामोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवे तिस घरको वर्जनेवाला, । सदाचारोसे संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा न्नक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्में जो कर्म निंदनीक होवे तिसमे प्रवृत्त नही होनेवाला, । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेप रखनेवाला, बुद्धिके आठ गुणोसे सयुक्त निरंतर धर्मोपदेश श्रवण करनेवाला, अजीर्णमे न्नोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासें नोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसें धर्म अर्थ कामको सेवने वाला, । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रति पत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्ष पाती, । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ नी कार्य करनेमे अपना बलाबल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमे स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा नक्ति करनेवाला, पोषणेयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवल्लन, ल ज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणेमें समर्थ, काम, क्रोध, लोन, मान, मद, हर्ष, इन षट ६ अत रग वैरियोंके त्याग करनेंमे तत्पर, पाच इंद्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कल्पता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चहिये । प्राय करके व्रतारोपमे गुरु शिष्यके वचन प्राकृत नाषामे होते हैं, क्यों कि गर्नाधानादि विवाहपर्यंत सस्कारोंमें प्राय करके गुरुकेही वचन हैं, शिष्यके नहीं और गुरु प्राय शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते सस्कृतही बोलते हैं । इहां व्रतारोपमे बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको सस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसें प्राकृत वाक्य है तिसकी साहचर्यतासें तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन भी, प्राकृतही है ॥ यत उक्तमागमे ॥

' ॥मुत्तूण दिठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंत ॥
थीबालवायणठ्ठपाइयमुइयं जिणवरेहिं ॥ १ ॥'

अर्थ—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कालिक अंगसिद्धांतको स्त्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोंने प्राकृत कथन करे है ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणा नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञे सिद्धात प्राकृत कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद बारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पचविध सस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय नही है संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीतार्थोंकोंही पठनीय है शेष एकादशांग कालिक उत्कालिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संयमी बालकोंके पढने योग्य हैं इसवास्तेही अरिहंत भगवतोंने एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमे करे है. तिसवास्ते, व्रतारोपमे भी, गृहस्थ बाल स्त्री मूर्ख जनोके उपकारार्थ और, तैसे यतियोंकेभी, वचन, प्राकृतमें कहे है ॥

अथ मृदु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम शिक्षा, तप, नदी, आलोचनादि कार्य करणे शुभ है और मंगल, शनि, विना सर्व वारोमे । वर्ष,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुभ लग्नमे गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमे, शुभ आश्रममे, अन्यत्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे। पीछे स्नान करके स्वघरमे महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाभिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकक्ष श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चदनका मस्तकमे तिलक करा है जिसने, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं।

"सम्मत्तमि उलद्धे, थइयाइ नरयतिरियदाराइ॥
दिव्वाणि माणुसाणि अ, मुरकसुहाइं सहीणाइ॥१॥"

अर्थ—सम्यक्त्वके लाभ हुए, नरकतिर्यचगतिके द्वार ढाके है, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन है। पीछे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नालिकेर अक्षत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे। पीछे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोही इर्यापथिकीपडिक्कमे। पीछे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे॥

"इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मछएण वंदामि ॥ जगवन् इच्छाका रेण तुम्हे अहं सम्मत्ताइतिगारोवणिअनंदिकढ्ढाव णिय वासक्खेवं करेह ॥"

पीछे गुरु, वासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अनिमंत्रके, परमेष्ठि और कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाजिमुख खमा होके, वामे पासे रहे श्रावकके शिरमे निक्षेप करे । तिस के मस्तकके उपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा करे गुरु आसनउपर बैठ जावे, और श्राद्ध पूर्व वत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे क्षमा श्रमण देके कहे

"॥ इच्छाकारेण तुम्हे अह्म सम्मत्ताइतिगारोव णिअ चेइआइ वदावहे ॥"

पीछे गुरु और श्रावक दोनो, चार वर्द्धमानस्तु तियो करके चैत्यवंदन करें । जो छदसें वर्द्धमान होवे, और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे, तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे । पीछे चारस्तुतिके अतमें "श्रीशांतिदेवाराधनार्थ करेमि कासग्गं वद णवत्तियाए पूअणवत्तियाए सक्कारव० स० जावअ प्पाए वोसिरामि" सत्ताइस उच्छ्वासप्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंजीरा' तक चतुर्विंशतिस्तव चितवन करे । पीछे 'नमो अरिहंताण' कहके पारे । पार

केहे ' नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहैं ।

" श्रीमते शांतिनाथाय, नम शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥" अथवा " शांति शांतिकर , श्रीमान् शांति दिशतु मे गुरु ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥" पीछे

" ॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न त्थ ऊससिएणयावतअप्पाण वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमे एक नवकार चितन करे पीछे 'नमो अरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कहके स्तुति ॥ यथा ॥

' ॥ सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघाय ॥, तेसिं खवउ सयय, जेसिं सुयसारे भत्ती ॥ १ ॥ " अथवा

" अमलसुरभिगधालब्धभृंगी कुरंगं, मुखशशि नमजस्र बिभ्रति या बिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चै सास्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुतागी ॥ १ ॥ "

" क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्नत्थ ऊससिएणयावतअप्पाण वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमे एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे ' नमो अरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्ह कहके थूई पढे ॥

यस्या क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभि॰ साध्यते क्रिया ॥
सा क्षेत्रदेवता नित्य, नूयान्न सुखदायिनी ॥ १ ॥

"॥ भुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न त्थ उससिएण–यावत्–अप्पाण वोसिरामि ॥"

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताण' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कह के स्तुति पढे ॥

"ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥"

" शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न त्थ॰ " कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चितन करे, पीछे ' नमोअरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत्सि द्धा॰ ' कहके स्तुति पढे

" या पाति शासने जैन, सद्य प्रत्यूहनाशिनी ॥
साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थ, नूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥"

" समस्तवैयावृत्त्यकराराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्नत्थ॰ ' कायोत्सर्गमे एक नमस्कार चितन करे, पीछे ' नमो अरिहताण ' कहके पारे, पारके ' नमो र्हत्सिद्धा ' कहके स्तुति पढे

" ये ये जिनवचनरता वैयावृत्त्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥
ते सर्वे शांतिकरा नवंतु सर्वाणुयक्षाद्याः ॥ १ ॥"

' ' नमो अरिहताणं ' कहके बैठके " नमुथ्थुणं॰

जावंतिचेइयाइ० " और ' अर्हणादिस्तोत्र " पढे सो लिखते हे
अरिहाण नमो पूअ, अरहताण रहस्स रहिआणं ॥
पयओ परमिठिण, अरुहताण धुअरयाण ॥ १ ॥
निद्दह्व अठकम्मिधणाण, वरनाणदंसणधराणं ॥
मुत्ताण नमो सिद्धाण, परमपरमिठिभूयाण ॥ २ ॥
आयारधराण नमो, पचविहायारसुठियाण च ॥
नाणीणायरियाण, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
बारसविह अपूव्वं, दिताण सुअ नमो सुअहराण ॥
सययमुवज्झायाण, सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसि साहूण, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥
तवनियमनाणदसण, जुत्ताण बजयारीण ॥ ५ ॥
एसो परमिठीण पचन्हवि भावओ नमुक्कारो ॥
सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
भुवणेवि मंगलाण, मणुयासुरअमरखयरमहियाण ॥
सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामगल पढम ॥ ७ ॥
चत्तारि मगलं मे, हुतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥
साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिलोयमगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुति ॥
अरिहत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥९॥
चत्तारिवि अरिहते, सिद्धे साहू तहेव धम्म च ॥
ससारघोररक्खस, भएण सरण पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ जगवओ, महइ महा वद्धमाणसामिस्स

पणयसुरेसरसेहर, नियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्क, दिणयरबिंबव्व भासुरच्छाय ॥
तेएण पज्जलतं, गच्छइ पुरओ जिणदस्स ॥ १२ ॥
आयास पायालं, सयलं महिमंडलं पयासतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिएहपि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताण ॥
रक्क रक्कसडाइणि, पिसायगहजक्खभजरकाण ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे भावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ राय, गणे अ विजय विसुरूप्पा ॥ १५॥
पच्चूसपओसेसु, सयय भव्वो जणो सुहज्झाणो ॥
एअं झाएमाणो, मुक्क पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेआलरुद्ददाणव, नरिंदकोहंडिरेवईण च ॥
सव्वेसिं सत्ताण, पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जुव पज्जलती, सवेसुवि अक्करेसु मत्ताओ ॥
पचनमुक्कारपए, इक्किके उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्नियं बिंदु॥
जोयणसहस्सप्पमाण, जालासयसहस्सदिप्पतं ॥ १९ ॥
सोलमसु अक्करेसु, इक्कििक अक्कर जगज्जोअ ॥
भवसयसहस्समहणो, जमि ठिओ पच नवकारो॥२०॥
जो गुणइ हु इक्कमणो, भविओ भावेण पच नवकारं ॥
सो गच्छइ सिवलोय, उज्जोअतो दसदिसाओ ॥२१॥
तवनियमसजमरहो, पचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ॥
नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुड परमनिवाणं ॥ २२ ॥

पणयसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्क, दिणयरबिंबव्व भासुरच्छाय ॥
तेएण पज्जलतं, गच्छइ पुरओ जिणदस्स ॥ १२ ॥
आयास पायालं, सयलं महिमण्डलं पयासंतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिण्हपि लोयाण ॥ १३ ॥
सयलमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥
रक्ख रक्खसडाइणि, पिसायगहभूअजक्खाण ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे भावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ राय, गणे अ विजय विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूसपओसेसु, सयय भव्वो जणो सुहज्झाणे उपा
एअं झाएमाणो, मुक्ख पइ साहगो होइ शक्रस्तव
वेयावच्चगराणं, नदिका देशांतरे करे । चैत्यवंदनके
सव्वेसि सत्ताणं, क्षमाश्रमणदानपूर्वक कहे
विज्जुव भगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदे
पचनरत्नसामायिकआरोवणिअ नदिकड्ढावणिअं काउ
सग्गि करेमि ॥"

गुरु 'कहे करेह" तव श्रावक "सम्मत्ताइतिगारोव
णिअ करेमि काउसग्ग अनत्थ०" इत्यादि कहके
सत्ताइस उद्यास प्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंभीरा
लग कायोत्सर्ग करे । पीछे नमो अरिहंताण कहके
चउवीसतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे ।
पारके ॥ १ ता प्रतिलेखनपूर्वक श्रावक द्वादशा
पीछे वार फेर क्षमाश्रमण "नग
सुरवरि

वन् सम्मत्ताइतिग आरोवेह" गुरु कहे "आरो वेमि" पीठे श्रावक गुरुके आगे खमा होके, अज लि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाछादन करके, तीनवार परमेष्ठिमत्र पढे। पीठे सम्यक्त्वदंरूक पढे सयथा॥

"॥ अहण नते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडी कमामि सम्मत्त उवसंपज्जामि। तजहा दवओ खित्तओ कालओ नावओ। दवओण मिछत्तकार णाइ पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइ उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अद्यप्पनिई अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थिअदे वयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइ आणि वंदित्तए वा नमसित्तए वा पुव्वि अणालत्तेणं आलवित्तए वा सलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाण वा खाइमं वा साइम वा दाउ वा अणुप्पयाउं वा। खित्तओण इहेव वा अन्नह वा। कालओण जाव जीवाए। नावओण जाव गहेण न गहिज्जामि जाव छलेण न छलिज्जामि जाव सन्निवाएण नाभि नविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअ...

अन्नह रायाभिओगेण वला...

गेण देवयाभिओगेण ...

वोसिरामि॥"

ऐसे तीनवार दडक पा...

"॥ अहण नते तुह्माण समीवे मिछत्ताओ पकि क्कमामि सम्मत्त उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्ज प्पनिई अन्नउछिए वा अन्नउछियदेवयाणि वा अन्न उछियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेण आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असण वा पाण वा खाइम वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउ वा अन्नत्थ रायाभिओगेण गणाभिओगेण बलाभिओगेण देवयाभिओगेण गुरुनिग्गहेण वित्तीकतारेण त चउविहं। तंजहा। दवओ खित्तओ कालओ नावओ। दवओ ण दसणदवाइ अगीकयाइ। खित्तओण उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा। कालओण जाव ज्जीवाए। नावओण जाव गहेण न गहिज्जामि जाव छलेण न छलिज्जामि जाव सन्निवाएण नाभिनविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवङ्गइ ताव मे एसा दसणपकिवत्ती॥

इति गुरुविशेपेण द्वितीयो दण्डक॥ प्रथम दण्डक दोनोमेंसें कोइ एक दण्डक तीन वार उच्चारण करे पीछे गाथा॥

"इअ मिछत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म नणइ गुरुपुरओ॥ अरिहंतो निस्संगो, मम देवो दक्खणा साहू॥ १॥"

गुरु तीन वार यह गाथा पढके श्राद्धके मस्तको

परि वासक्षेप करे । पीछे गुरु, आसन ऊपर बैठके गंध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसें, वा गणिविद्यासें मंत्रे । पीछे गंधाक्षत वासाको हाथमे लेके जिन चरणोको स्पर्श करावे । पीछे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओको देवे ते साधुआदि, मुठीमें लेवे । पीछे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ ' जयवं तुम्हे अह्म सम्मत्ताइयतीअ आरोवेह ।" गुरुकहे " आरोवेमि " फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके कहे " संदिसह कि जणामि " गुरु कहे " वंदित्तु पवेयह " फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "जयव तुज्झेहि अह्म सामाइयतिअमारोविअ " गुरु कहे " आरोविय २ खमासमणेण हछेण सुत्तेणअछेण तडुजएण गुरुगुणेहि वद्धाहि निछारगपारगो होहि" श्रावक कहे " इछामो अणुसठि " पुन श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे ' तुह्माण पवेइय सदिसह साहूणं पएवेमि" गुरु कहे " पवेयह " पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे । और सघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे । गुरु आसनऊपर बैठे, वहासें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन वार इसहि रीतिसें करना । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माण पवेइय ' फिर क्षमाश्रमण देके कहे ' साहूण पवेइय सदिसह काउसग्ग करेमि "

" करेह " पीछे श्रावक-सम्मत्ताइतिगस्सथिरीकर णच करेमि काउसग्ग अन्नथ०-सागरवरगंजीरातक कायोत्सर्ग करे पारके सपूर्ण लोगस्स कहे । पीछे चारथुइवर्जित शक्रस्तवसें चैत्यवदन करे । पीछे श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे पीछे आसन ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके निय म देवे ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, प्लक्षण, काकोडुंबरि, वट और पिप्पल, ये पाच जातिके फल ५ मास, मदिरा, माखण और मधु, ये चार विकृति ४-एव ए-अज्ञात फल १० , अज्ञात पुष्प ११, हिम (बरफ) १२, विष १३, करहे (ओले-गडे) १४, सर्वसचित्तमट्टी १५, रात्रिजोजन १६, घोलवमा-काचे दूध दहि ठाठमे गेरा हुआ विदल १७, वइंगण १०, पपोटा-खसख सका दोमा १ए, सिंघाडे २०, वायगण २१, और कायवाणि २२, येह बावीस द्रव्य श्रावकोको जक्ष ण करने योग्य नहीं है अन्य प्रकारसे २२ अजक्ष्य यह हे की पाच जातिके उंबरादि फल ५ चार महा विगइए, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका १३, रात्रि जोजन १४, बहुवीज वाले फल १५, अनं त काय १६, अचार १७, घोलवमा १०, वेङ्गण १ए, अज्ञात फल फूल २०,तुछ फल२१,चलितरस २२ ऐसें नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

" अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपण्णत्त तत्त, इअ समत्त मए गहिअ ॥ १ ॥ "

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी गुरू प्ररूपकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोको भावसें अर्थात् मोक्षलाभ जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सप्त तत्त्वको वर्जके तत्वांतरकी श्रद्धा करनेका, नियम करना

अन्य देव और अन्य लिंगि विप्रादिकोंको नमस्कार और दान,लौकिकव्यवहारकेवास्ते करना और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन भी, ऐसेंही जानना । पीछे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे ॥ सोव ताते है ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जाति. सर्वाक्षपाटवम् ॥
आयुश्च प्राप्यते तत्र कथचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥
प्राप्तेषु पुण्यत श्रद्धा, कथक. श्रवणेष्वपि ॥
तत्त्वनिश्चयरूप तद्बोधिरत्न सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महण सम्मत्त जस्स सुठिअं हियए ॥
तस्स जगुज्जोयकरं नाण चरण च भवमहण ॥ १ ॥

अर्थ —मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वइन्द्रि संपूर्ण ४, आयु ५, ये कथचित् कर्मकी लाघवतासें प्राप्त होते है पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुद्ध प्ररूपकका योग २, और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३, ये अतिही डुर्ल्लन है ॥ कुत्सितसमयएकांतवादियोंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथन करनेवाला सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अच्छीतरें स्थित है, तिस पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और नव-संसारको मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं ॥

॥ श्लोका ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामति ॥
धर्मे च धर्मधी शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥
अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
अधर्म्मे धर्म्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥
सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजित ॥
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वर ॥ ३ ॥
ध्यातव्योयमुपास्योयमय शरणमिष्यताम् ॥
अस्यैव प्रतिपत्तव्य शासन चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥
ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादिरागाद्यककलंकिता ॥
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥
नाट्याट्टहाससंगीताद्युपप्लवविसंस्थुला ॥
लंभयेयु पद शातं प्रपन्नान् प्राणिन कथ ॥ ६ ॥
महाव्रतधरा धीरा भैक्ष्यमात्रोपजीविन ॥
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मता. ॥ ७ ॥
सर्वाभिलाषिण सर्वभोजिन सपरिग्रहा. ॥

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ८ ॥
परिग्रहारंभमग्नास्तारयेयु कथ परान् ॥
स्वय दरिद्रो न परमीश्वरी कर्त्तुमीश्वरः ॥ ९ ॥
दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणाद्धर्म उच्यते ॥
संयमादिर्दशविध सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १० ॥
अपौरुपेय वचनमसंभवि भवेयदि ॥
न प्रमाण भवेद्वाचां ह्याप्ताधीना प्रमाणता ॥ ११ ॥
मिथ्यादृष्टिभिराख्यातो हिंसाद्यै कलुषीकृत ॥
स धर्म इति वित्तोपि भवभ्रमणकारणम् ॥ १२ ॥
सरागोपि हि देवश्चेद्गुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
कृपाहीनोपि धर्म स्यात् कष्ट नष्ट हहा जगत्॥ १३ ॥
शमसवेगनिर्वेदानुकपास्तिक्यलक्षणै. ॥
लक्षणै पचभि सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १४ ॥
स्थैर्य प्रभावना भक्ति. कौशल जिनशासने ॥
तीर्थसेवा च पचास्य भूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १५ ॥
शका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशसनम् ॥
तत्संस्तवश्च पचापि सम्यक्त्व दूषयत्यमी ॥ १६ ॥

अर्थ—साचे देवमे जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्ध सूधी निश्चल सदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहते है । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोडे वखत भी जिसको आजा वेगी, सो प्राणि अर्द्धपुद्गलपरावर्तकालमेही ससार

से निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाण ना यत उक्तम् ॥

अतोमुहुत्तमित्तपि फासिय जेहि हुज्ज सम्मत्तं ॥
तेसि अवट्ठ पुग्गलपरिअट्टो चेव ससारो ॥ १ ॥

भावार्थ –अतर्मुहूर्तमात्र भी जिनोंने सम्यक्त्व स्पर्श किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसार जाणना, तदनतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमे देवके गुण नही है, ऐसे अदेवमे देवकी बुद्धि–जैसें तममे उद्योतकी बुद्धि । जिसमे गुरुके गुण नही है, ऐसें अगुरुमे गुरुकी बुद्धि–जैसें नींवमें आम्र की बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विपे धर्म की बुद्धि–जैसें सर्पके विपे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो मिथ्यात्व है सम्यक्त्वसें विपर्यय होनेसें, अर्थात् साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसें कौशिक (घूअड) की सूर्यके तेजऊपर अधकारकी बुद्धि, साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसें श्वेतशखके ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशखकी बुद्धि । तिसको मिथ्यात्व कहतेहै । सो मिथ्यात्व पाच प्रकारका है १ आभिग्रहिक, २ अनाभिग्रहिक, ३ आभिनिवेशिक, ४ साशयिक, ५ अनाभोगिक ॥

(१) प्रथम आभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिस्को

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढनेसें कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊप र आस्था दृढ है, जिससें ऐसा जानता है कि, जो कुछ मैने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ ठीक नही है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने का अब मन भी नहीं है, और जो सत्यासत्यका विचार भी नही करता है यह मिथ्यात्व, दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोको होता है वे अपने मनमे ऐसें जानते हैं कि, जो मत हमने अंगिकार किया है, वोही सत्य है, और सर्व मत झूठे हैं ऐसे जिसके परिणाम होवे, सो आभिग्र हिक मिथ्यात्व है

(२) दूसरा अनाभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोसें मोक्ष है, इस वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोको नम स्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाभिग्र हिक मिथ्यात्व कहते हैं यह मिथ्यात्व जिनोंने कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसे जो गोपाल बाल कादि तिनको है क्योंकि, यह अमृत और विषको एकसरिखे जाननेवाले हैं

(३) तीसरा अभिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो पुरुष जानकरके झूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसें किसी शास्त्रार्थको भूल गया, पीछे जब कोइ विद्वा न् कहे कि, तुम इस विषयमें भूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ भी, झूठे पक्षका कदाग्रह, ग्रहण करे, जात्यादि अभिमानसें कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियो बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो भी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है ऐसा मिथ्यात्व, प्राय. जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस मे होता है, गोष्टमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा साशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुद्गलादिक पदार्थोमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं तथा क्या यह जीव असख्य प्रदेशी है ? वा नही है ? इसतरे जिनोक्त सर्व पदार्थमें शका करनी । "सांशयिक मिथ्यात्वं तदशेपया शका सदेहो जिनोक्ततत्वेष्वितिवचनात् ॥"

(५) पांचमा अनाभोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नही कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसें जे एकेंद्रियादि विशेपचैतन्यरहित जीव, तिनको अनाभोगमिथ्यात्व होता है ॥ २ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परतु जैसें लौकिक मतमे विनायकका मस्तक ईश्वरने छेदन कर दिया, पीछे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, पर किसी जगे भी

मस्तक न देखा, तब हाथीके मस्तकको लायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चेप दिया, जिसवास्ते विनायकका (गणेशका) नाम " गजानन " प्रसिद्ध हुआ इत्यादि–यदि ईश्वर (महादेव) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कभी न छेदन करता यदि छेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा ? इसवास्ते ऐसें अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये । तथा ' जित रागादिदोष ' जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते है, निर्मूल किये हैं, तिसको देव कहिये जिस मे रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहिये, तिसमें देवपणा न होवे । तथा 'त्रैलोक्यपूजित ' स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इन्द्रादिक परम भक्तिकरके जिसको वांदे, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसे, वा पूजनादिकसे देवपणा नही होता हैं । तथा ' यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य २ मिले नही, सो देव न कहिये ॥ देवो र्हत् परमेश्वर ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नही है ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिछानके आराधना, सोही कहतें हैं । ध्यातव्योयमित्यादि–पूर्व जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणो सयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसे ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया । तिस ध्यानके प्रजा वसें आगमी चउवीसीमे श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण, संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनान्न,' नाम प्रथम तीर्थंकर होगा इसीतरे औरोनें नी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणिकादिवत् । तथा इसी देवका, ससारके नयको टाल नहार जाणके, शरण वांछना । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे ? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहतें है ॥ ये स्त्री० ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाला आदि शब्द

से कमण्डलुप्रमुख होवे, ये कैसें हे ? रा० रागादि कके अक–चिन्ह हे, सोही दिखावे हें स्त्री रागका चिन्ह हे, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि, इसमें राग हें । शस्त्र रूपका चिन्ह हे, जो पासे हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने किसी वैरीको मारना चूरना हे, अथवा किसीका नय हें, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये हें । अक्ष सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न हे यदि होवे तो, मणके विना गिणतीकी सग्या जाणलेवे अथवा तिससें अधिक वडा अन्य कोइ हे, जिसका वो जाप करता हे ? । कमण्डलु अशुचिपणेका चिन्ह हे, यदि हाथ में कमण्डलु पाणीका नाजन देखीए तो, ऐसा जाणिये की, यह अशुचि हे शौच करणेके वास्ते यह कमंडलु धारण करता हे यतजक्तं ॥

स्त्रीसगः काममाचष्टे रूप चायुधसंग्रह ॥
व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौच च कमंडलु ॥ १ ॥

इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित हे, तथा निग्र हा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह (वधनमरणादिक) करें, श्रोर, जिसके उपर तुष्ट मान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर) देवे, तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नहीं होते हें ॥५॥

ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोको मोक्ष नहीं दे सकते हे, सोही वात फिर कहते हें । नाट्याट० जे

देव नाटकके रसमें मग्न है, अट्टाट्टहास करते है, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर हैं, लम्नयेयु —जे आपही ऐसे है, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शातपद, (ससार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादि कपद,) कैसें प्राप्त कर सकते हैं? जैसे एरंमवृक्ष कल्प वृक्ष कीतरें इछा नही पूर सकता है, यदि किसी मूढ पुरुपने एरंमको कल्पवृक्ष मान लिया तो, क्या वो कल्पवृक्षकीतरें मनोवाछित दे सकता है ? ऐसेंही कीसी मिथ्या दृष्टीने पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंको देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्ष दाता हो सकते हैं ? कदापि नही हो सकते है ॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते है ॥ महाव्र० अहिंसादि पाच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामे नी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नहीं बेतालीश (४२) दूषण रहित निक्षावृत्ति (माधुकरी वृत्ति) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते नोजन करे, नोजन नी ऊनोदरतासयुक्त करे, नोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुछ नी सग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे । सामा० रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वर्त्ते । धर्मोप० जो

धर्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्ररूप जगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योतिषशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्त शास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र, जिनसे धर्मको वाधा पहुचे तिनका उपदेश न करे, ऐसे गुरु कहियें । काष्ठमय वेरुीसमान आप जी तरें, और औरोको जी तारें. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षण कहते हैं ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतु पदादिक अनेक प्रकारके पशु, इन सर्वकी अजिलाषा है जिनको, सर्व जोजिन । मधु, मांस, मांखण, मदिरा, अनंतकाय, अजक्ष्यादिक सर्व वस्तुके जोजन करनेवाले, सपरिग्रहा । जे पुत्र, कलत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, क्षेत्रादि सहित हैं, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी है । मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करे, ज्योतिष, निमित्त, वेदक, मंत्र तत्रादिकका उपदेश देवे, वे गुरु नहीं लोहमय वेरुी (नावा) समान, आप जी बुवें, औरोंको जी बुवावे ॥ ८ ॥

पूर्वोक्त वातही कहते हैं ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर, लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृषी, व्यवसायादि आरंज इनमे जे मग्न है, आपही जवसमु

द्रमें डुवे हुए, हैं, ता० वे, किसतरेंसें दूसरे जीवोंको संसारसागरसें तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टांत कहते हैं । जो पुरुष आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवत करनेको समर्थ नही है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही ससारमें डुवे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसें तार सके ? ॥ ए ॥

धर्मलक्षणमाह ॥सत्य धर्मका स्वरूप कहते है॥ दुर्गति० नरक, तिर्यंच, कुमनुष्य,कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसें धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्रकार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षकेवास्ते होता है । सयमादि दश प्रकार ये है संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्मचर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंकारता ८, सरलता ए, निर्लोभता १०, ॥ इससे उलटा हिंसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुपेय० अपौरुपेय वचन, असंभवि—संभवरहित है क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुपके वोलनेसेंही है, विना वोले नही वचू परिभाषणे इति वचनात् और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो भी पुरुपकोंही होते है. इस वास्ते वचन पुरुपके विना संभवे नही । भवेद्य

॥ अथ सम्यक्त्वके पांच नूषण कहते हैं ॥ स्थैर्य०-स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता । १ । जिन धर्मकी प्रनावना । २ । जिनधर्ममें नक्ति । ३ । जिन शासनमें कुशलता । ४ । और तीर्थसेवा । ५ । ये पांच सम्यकत्व के नुषण हैं ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते हैं ॥ श का० शका धर्म है, वा नही ? इत्यादि सदेह । १ । आकांक्षाअन्य १ धर्मकी अनिलाषा । २ । विचि कित्साधर्मके फलका संदेह । ३ । मिथ्यादृष्टिकी प्रशसा । ४ । और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय । ५ । ये पांच सम्यक्त्वको दुषित करते हैं ॥ १६ ॥

ऐसे पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, सप्रति, दशार्ण नद्रादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोंके व्याख्यान करे । उस दिनमे श्रावक एकनक्त आचाम्लादि तप करे । साधुयोको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य देवे । मङ्गलीपूजा करनी । चतुर्विधसघवात्सल्य करना । और सघपूजा करनी ॥

इतिव्रतारोपसस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधि ।

देशविरतिसामायिकारोपणविधि

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिस की वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके

देशविरतिसामायिक आरोपण करना है । तहां नंदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी

परंतु सर्वत्र सम्यक्त्वसामायिकके स्थानमें देशविरतिसामायिककानाम ग्रहण करना । सर्वत्र तैसें करके फिर दूसरी नंदि दंडकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परिमाण टिप्पनक(फहरिस्त–नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु, देशविरतिसा मायिकदंडक उच्चरावे ॥ सयथा ॥

"॥ अहण्ण जंते, तुह्माण समीवे, थुलग, पाणाइवाय, संकप्पओ, बीइंदिआइजीवनिकायनिग्गहनियट्टिरूवं, निरावराहं, पच्चरकामि जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण, न करेमि, न कार वेमि, तस्स जंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण, वोसिरामि, ॥'

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरे सर्व व्रतोंमे तीन २ वार पाठ पढना ॥

"॥ अहण्ण जंते, तुह्माण, समीवे, थूलग, मुसावाय, जीहाछेयाइनिग्गहहेऊअ, कन्ना, गोजूमि, निरकेवावहार, कूम सरकाइ, पचविह, दरिकन्नाइ अविसए, अहागहिअ जंगएण, पच्चरकामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण, मणेण वायाए, काएण० ॥ २ ॥ "

' ॥ अहण, नंते, तुह्माण, समीवे, थूलग, अदिन्नादाण, खत्तखणणाइचोरकारकर, रायनिग्गहकरं, सच्चित्ताचित्त वत्थुविसय, पच्चक्कामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण० ॥ ३ ॥ "

' ॥ अहण, नते, तुह्माण, समीवे, थूलगमेहुणं, उरालिय, वेउव्वियनेग्रं, अहागहिअ नगएणं, तत्थ डुविहं तिविहेणं दिवं, एगविहं तिविहेण तेरिछ, एगविहमेगविहेणं माणुस्स, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण० ॥ ४ ॥ "

" ॥ अहण नते तुह्माण, समीवे, अपरिमिअं, परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चक्कामि, इछापरिमाण, अहागहिअ नगएण, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविह, तिविहेण० ॥ ५ ॥ "

"अहण नंते, तुह्माण, समीवे, पढम गुणवयं, दिसिपरिमाणरूवं, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेण ॥ ६ ॥ '

" ॥ अहण नते, तुह्माणं, समीवे, उवनोगपरिनोगवय, नोयणर्ज, अणतकाय, वहुवीय राईनोयणाइंबावीसवत्थुरूव, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण, इंगालकम्माइवहुसावज्जं, खरकम्माइ, रायनिर्जगं च, परिहरामि, परिमिअ, नोगउवनोग, उवसपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविह, तिविहेण० ॥ ७ ॥'

" ॥ अहण नते, तुह्माण समीवे, अणत्थदमगु

णवय, अट्टरुद्दझाण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण,पमा यकरणरूव, चउविहं, जहासत्तीए, पमिवज्जामि, डुविहं तिविहेण ॥ ८ ॥ '

" ॥ अहण नते तुह्माण समीवे, सामाइय, जहासत्तीए, पमिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेण ॥ ९ ॥ "

" ॥ अहण नते, तुह्माण समीवे, देसावगासिअ, जहासत्तीए पमिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविह तिविहेण० ॥ १० ॥ '

" ॥ अहणं नते, तुह्माण समीवे, पोसहोववास, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं० ॥ ११ ॥ "

" ॥ अहणं नते, तुह्माण समीवे, अतिहिसंवि नाग, जहासत्तीए, पमिवज्जामि' जावज्जीवाए, डु विहं' तिविहेण० ॥ १२ ॥ "

" ॥ झ्चेय सम्मत्तमूलं पचाणुवइय, तिगुणवइय, चउसिरकावइय, डुवालसविहं, सावगधम्म, उवसं पज्जित्ताण, विहरामि ॥ इति ॥

दंमकोच्चारणानतर कायोत्सर्ग, वंदनक, कमाश्र मण, प्रदक्षिणा, वासदोपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥

नापार्थ –अमुक जिनेन्द्रको नमस्कार करके, अमु

क श्राविका, वा अमुक श्रावक अमुक गुरुके पास, गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता हे. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न करु, जिनमतके सुसाधुकों गेमके अन्य लिंगिको धर्मार्थे नमस्कार न करु ॥ २ ॥ जिन वचन स्याद्वादयुक्त सप्त वा नव तत्त्व को सत्य कर जानता हु, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुझको नियम हो । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद, स्तवन, नक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय, वर्जु–न करु । ४। धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप, स्नान, होमादिक नहीं करु तिनके उचित करने योग्य कर्ममें जयणा मुझको हो । ५। तीन, वा पांच, वा सातवार यथाशक्तिसें चैत्यवंदन करुं, एक, वा दो वा तीन वार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार करुं, और तिसकी सेवा करु । ६। एक, वा दो, वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करु, और पर्व दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करु इति सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें जीववध होते जयणा करु । ७। विना प्रयोजन एकेंद्रियका नी वध न करुं, प्रयोजनके हुए जयणा करु, । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमकरके वर्जता हु । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पडे, और राजदंड होवे, ऐसा धन वर्जुं, अर्थात् चोरी वर्जुं । इतितृतीयव्रतम्।

दो करण तीन योगसें देवतासंबधि, एकविध त्रिविधे करी तिर्यंच संबधि, मैथुनका नियम करता हुं । ९। अनुजव करके स्तजसमान ब्रह्मव्रतको अपने मनमें धारण करु, और जावजीव मनुष्य सबधि मैथुनकायाकरके वर्जुं । १०। परनारीको, और परपुरुषको (स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित) वर्जुं इनके उपरात अन्यक्रियाकी मुफको जयणा । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमे परिग्रहकी सरयाका प्रमाण यह है । ११। इतने मात्र रुपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें । १२। इतने गिण तिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु ।१३। हाथ अगु लसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुफको संग्र ह करना कल्पे, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपइयोंके मोलके रखने । १४। इतनी खांडी अन्नकी एक वर्षमें रख नी, इतनी मुफको परिग्रहमें भूमि रखनी कल्पे, इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुफको कल्पे । १५। इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांवा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमे रखना । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक—नोकर और इतने दासचेटकोंकी संख्यां मुझको रखनी कल्पे । १७ । इतने हाथी, इतने घोडे, इतने बलद, इतने ऊंट, इतने गाडे, इतनी गौ, इतनी महिषी (भैंस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी भेडे, और इतने हल रखने मुझको कल्पे और अमुक अमुक कर्मका मुझको नियम हो । १९ । इति पचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमे अपने वशसे इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना, और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें भोगोपभोगमे, खरकर्ममे, पंदरा कर्मादानमे, डुप्पोल आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जुं । २१ । पाच ऊंवर ५, चार महाविगइ ४, हिम १०, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिभोजन १४, बहुबीजा १५, अनंतकाय १६, स धान (बोल आचार) १७ । २२ । घोलवडा (विदल) १८, वृताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुछ फल २१ और चलितरस २२, ये बावीस वस्तुओंको वर्जुं । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणातमें भी, भक्षण न करू २४ । इतने मात्र प्रासुक अनतकायकी मुझको जयणा हो, इतने

अपक्व फल और अखंमित जी जक्षण न करु ।२५।
आ जन्मतक इतनी सचित्त वस्तुओ मेरेको जक्षण
करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक ऋव्य और इतने
व्यजन शाकादि मुझको कल्पे, तथा घृत, छुग्ध
दहि प्रमुख ।२६। इतनी विगइ मुझको कल्पे
इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने
प्रधान रथोंकी मुझको जयणा हो ।२७। इतनी
सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची)
जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कल्पे
सूतके, रेशमके,ऊनके, औरके,इन चार प्रकारके।२७।
वस्त्रोमें जी इतने वस्त्र पहिरने मुझको कल्पे, और
इतनी जातिके फूल मेरे अंगके जोगवास्ते कल्पे ।
२ए । आसन, सिंहासण, पीठ, पट्टे, बाजोठ,
पल्लंक, गदेला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व
इतने प्रमाण मुझको कल्पे ।३०। कर्पूर, अगर,
कस्तूरी, चदन केशरादि मात्र मेरे अगके वास्ते
इतने कल्पे, और पूजामे जयणा ।३१। इतनी
नारी मेरे सजोगमे इतने कालमात्र, इतने घडे,
ठाणे हुए जलके और प्रासुक जलके मेरेको स्नान
वास्ते कल्पे ।३२। इतनी वार दिनमें इतनी जातिके
तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके न्हान
रोटी आदिक जोजन, और दिनमे इतनी वार जोन
न करना।।३३। ——————ादिका जोग परिजोग

जात्रजीवतक है, इनका जी फेर प्रमाण दिनदिनमें करुं, ❀ । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती जूषण, अंगऊपर धारण करुं इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजत्र, मुझको उपजोगवास्ते कल्पे । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौद्र, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जु । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोपकरणादि देना तथा कामशास्त्रकापढना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरु । ३७) हिंमोलेका विनोद, जक्त (जोजन), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा, पशु पक्षीका युद्ध, अकालमें नींद लेनी, सपूर्ण रात्रिमे सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंडनामक गुण व्रत में वर्जुं । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करुं । इतिनवमव्रतम् ॥

इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमे दशोदिशाओमे जाना आना कल्पे । इतिदशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पौषध करु इत्येकादशव्रतम् ॥

साधुओको सविजाग जोजन वस्त्र आदिकसे करु ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीछे

❀ दिन २ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशिकव्रतातर्गत जाणना ॥

आप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके जोजन करुं । ४१ । इतिद्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पालु, विना गलएया जलका पान और स्नान, मरणांतमें जी न करु । ४२ । कदर्प, दर्प, थूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्यादि जिनमंरूपमे वर्जु । ४३ ।

अमुक महागछमे, अमुक गुरु सूरिके संतानमे, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादातमें ४४ । अमुक सवत्सरमे, अमुक मासमें, अमुक पक्षमे, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमे, अमुक नगरमें । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता हे अमुककी पुत्री आमुककी जार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती हे । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्यानमे प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमे, चैत्य, गुरु, साधु, सघको उपसर्ग देनेवालेको हटानेमे, तथा दुष्टके निग्रहमे, जीवके वध हुए मुऊको दोष नही । ४९ । जनोंके, और देशके रक्षणवास्ते सिंह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमे मुऊको

दोष नही, अर्थात् इन कामोके लिए हिंसा करनेसें मेरा व्रत भंग न होवे। जल पीनेमे गणना, अन्यत्र स्नानादिमे यथाशक्ति । ४८ । इनमे प्रमादके होनेसें, गुरुके वचनसें यह तप करुं, अल्प बहुत भांगेसें, तिससें मेरी विशुद्धि होवे । ४९ ॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधि ॥

इन बारह व्रतोमेंसें कोइ कितनेही व्रत अंगीकार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने । जिसको ठ मासिक सामायिक व्रत आरोपते हैं, तिसका यह विधि है ॥ चैत्यवंदना, नंदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अभिलाप करके, । और विशेषयह है, । कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना । तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट् (६) मासपर्यंत उभयकाल सामायिक ग्रहण करे । पीछे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दमक पढावे सयथा ॥

" ॥ करेमि भंते सामाइय, सावज्ज जोग पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेण वायाए काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण, वोसिरामि, । से सामाइए चउविहे तंजहा दवर्ज खित्तर्ज कालर्ज जावर्ज दवर्जण सामाइअं पडुच्च, खित्तर्जण इहेव वा अन्नह वा, कालर्जए जाव छम्मास, जाव

ठेण जाव गहेण न गहिज्जामि,जाव ठलेणं न ठलिज्जामि, जाव सन्निवाएण नाभिजविज्जामि, ताव मे एसासामाइय पमिवत्ती ॥ "

ऐसे तीनवार पढावना । मस्तकोपरि वासक्षेप करना, अक्षतवासाको अभिमत्रणा, ओर संघके हाथ मे वासक्षेप देना, यहां नही है परतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी । इतिपाएमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, ओर द्वादश व्रतोंका नी इसही दंमकसें तिस २ अभिलापसें मास, षट्(६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना । नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अवधिमे ' जावज्जीवाए ' यह पाठ न कहना किंतु, ' मास ठम्मासं वरिस ' इत्यादि कहना शेष व्रतोंमें नी जावज्जीवाएके स्थानमे ' मास ठम्मास वरिस ' इत्यादि कहना ॥

अथ प्रतिमोद्वहनविधि ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो हे, तिसको प्रतिमा कहते है तिनमें कालादिमे नियमव्यवछेद नही है । ते प्रतिमा एकादश (११) गृहस्थोंकी हे । तद्यथा ॥

" ॥ दसण १, वय २, सामाइय ३, पोसह ४ पमिमाय ५, बंन ६, अचित्ते ७,॥ आरंन ८, पेस ए, उद्दिठ, वज्जाए १०, समणभूए य ११, ॥ १ ॥ "

अर्थः–तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक निःशंकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १ व्रतधारी द्वितीया २ कृतसामायिक तृतीया ३ अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४ पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अंगीकार करनी, अस्नान, प्रासुकनोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें नी ब्रह्मचारी, इति पंचमी ५ सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६ सचित्ताहारवर्जक सप्तमी ७ आप आरंज नहीं करना, अष्टमी ८ नौकरोंसें आरंज नहीं करावना, नवमी ९ उद्दिष्टकृताहारवर्जक, क्षुरमुंडित, शिखासहित, वा निराधारीकृतधनका, पुत्रादिकोंको वतलानेवाला, इति दशमी १० क्षुरमुंडित, लुंचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इतिएकादशी ॥ ११ ॥

यहा पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीसरी तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा श्रद्धानादि करना, सो अतिचार है । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नंदि, चैत्यवदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विधि

दर्शनप्रतिमाके अभिलापसें सोही पूर्वोक्त रीतीसें जाननाः और दंडक ऐसें है।

"॥अहण्णं भंते तुह्माणं समीवे, मिछत्तं, दव्वओ भावओ, पच्चरकामि, दंसणपडिमं, उवसंपज्जामि, नो मे कप्पइ,अज्जप्पभिई अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहंतचेइआणि वा, वंदित्तए वा, नमसित्तए वा, पुव्विअणालत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा दाउं वा, अणुप्पयाउं वा, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते अं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चख्खामि, अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं, अप्पसक्खिअं, वोसिरामि, तहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं एसा दंसणपडिमा, खित्तओणं इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओणं जाव मासं, भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव छलेणं न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविज्जामि, ताव मे एसा दंसणपडिमा ॥"

शेष पूर्ववत्। प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थ कायोत्सर्गादि यहां अभिग्रह मासांतिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनो संध्यामे विधिसें देवपूजन करणा पार्श्व

स्यादिवंदनका परिहार करना शकादि पाच अतिचारोंका त्याग करना राजाभियोगादि ७ (६) कारणोंसें भी यह दर्शन प्रतिमा नही त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पालनविषया, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनका पालना भी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पालना यहां नंदिक्रमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अभिलापसें पूर्ववत्। प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तेसेंही जानने दंडक भी तिसके अभि लापसें सोही जानना ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उभयसंध्यामें सामायिक करनेसें होती है शेष नदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जान ना और दंडक सामायिकके अभिलापसें कहना ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार [illegible] नेसें होती है ऽव्यादिभेदसें दो [illegible] कथनसें यथाशक्ति सूचन कि[illegible]

दिविधि सोही और दंमक तिसके (पौषधप्रतिमाके) अनिलापसें कहना ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसें पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमे नी यही पूर्वोक्त विधि है नदिक्षमाश्रमण दंमकादि तिसतिस प्रतिमाके अनिलापसे व्रतचर्या सोही है, पर संप्रतिकालमे, पर्यायसें, वा सहननकी शिथि लतासें, पांचमी प्रतिमासें लेके इग्यारहमीतक प्रति माके अनुष्टानका विधि शास्त्रोंमे नहि दिखताहै प्रतिमाका आरंज शुज मुहुर्तमें करना.॥ इति देश विरतिसामायिकारोपणविधि ॥

उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते है ॥ तहां यति योकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्वहनविधिसें होता है उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसें होता है और योगोद्वहन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुत सामायिकारोपण, उपधानोद्वहनसें होता है सो श्रु तारोपण, परमेष्टिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्त व, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं–जि ससें ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान कहते है अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप सुखशय्यामें उत्तम होनेसें उत्तसीर्षक स्थानमें उप

धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये तिस उपधानमे ८ (६) श्रुतस्कधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते है परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथिकीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५ श्रुतस्तवका ६

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है सिद्धनमस्कृति· रूप दूसरा पद पांच अक्षरोका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोला (१६) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ (८) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव (९) अक्षरोंका है तहा पचपरमेष्ठिमंत्रमें पाचो पदोंमें तीन उद्देशे है, और चूलिकामें भी उद्देशे [illegible] एवं उद्देशे ६ ॥ प्रथमके [illegible] पैंती[illegible] अक्षर है, और चूलिकामें तेत[illegible] पाच अध्ययन ऐसें है ॥

नमो अ[illegible]हंता

आयरिआण ३ । नमो उवझायाणं ४ । नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताण । नमोसिद्धाण ॥ १ ॥ ,,

नमो आयरिआण । नमो उवझायाण ॥ २ ॥ ,,

नमो लोए सवसाहूण ॥ ३ ॥ ,,

एसो पच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो ॥ ४ ॥,,

मंगलाणं च सवेसि । पढमं हवइ मगल ॥ ५ ॥,,

सात २ अक्षरके तीन पद यह हैं ॥

नमो अरिहंताण । ७ । नमोआयरिआण । ७ । नमो उवझायाण । ७ । ॥ १ ॥ ,,

पांच अक्षरोंका तीसरा पद "नमो सिद्धाणं। ,,२

पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण "नमो लोएसवसाहूण।३,,

चूलिकामें (१६) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक॥

एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणा सणो ॥ १ ॥

चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक,,

मंगलाणं च सवेसिं ॥ २ ॥,,

चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक

"पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥,,

सर्व अक्षर अडसठ (६८) तिसका उपधान ऐसें है ॥

नदि, देववंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमण, वंद नक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अभिलापसें पूर्व वत् जाणना और अभिमंत्रित वासक्षेप भी पूर्व वत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामे एकभक्तके अंतरे उपवास पांच, एव दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिन मे एकभक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एक भक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकभक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकभक्त ऐसें द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिविना भी देनी शक्रस्तवका पढना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोका पढना, सर्व वाचनाओंमें जाणना । तहां श्रेणिवरू आठ आचा म्ल करने, ऐसें एकोनविंशति (१९) दिन पीछे वीसमे दिन एकभक्त, इकवीसमे दिन उपवास, बावीसमे दिन एकभक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौवीसमे दिन एकभक्त, पच्चीसमे दिन उपवास । ऐसें अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीछे चूलिकाकी वाचना एसो पच महांसें लेके हवइ मगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं॥ पीछे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है ॥ पहिला सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीछे मुखवस्त्रिकासें मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहिय) पमिक्कमके क्षमाश्रमण पूर्वक कहैं ॥

"॥ जगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणिय वाय णालेवावणिय वासरकेवं करेह। चेइयाइ च वंदावेह ॥"

ऐसें नदि करके छठ्ठीसमें दिन एकजक्त करें, वाचना देनी -चूलिकाके चारों पदोंके सर्व उपधानोंमें प्रति दिन अव्यापार पौषध करना, सवेरे २ पौषध पारके पुन. २ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका जी उपधान ऐसेंही है आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके-ऐर्यापथिकीके अजिलापसें करनी। तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,-एक पाच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी, पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

"॥ इछामि पडिक्कमिउ इरिआवहिआए विरा हणाए। १। गमणागमणे। २। पाणक्कमणे, वीयक्कमणे हरीयक्कमणे।३। ओसाउत्तिगपणगदगमट्टीमक्कडास ताणासकमणे। ४। जे मे जीवा विराहिया।५। यह एक वाचना, द्वादशम तपके पीछे देते है ॥ १ ॥

"॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया। ६। अजिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइ या, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, गणाओ गण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिछामि डुक्करु । ७ । तस्सउत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाण कम्माण निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्ग ।८। यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्लके अंतमे देनी ॥ २ ॥ इसके पीछे ॥

" ॥ अन्नथ्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जम्भाइएणं उड्डूएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुछाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ।२। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । ३ । जाव अरिहंताण, भगवंताण, नमुक्कारेण, न पारेमि । ४ । ताव काय, ठाणेणं, मोणेण, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि । ५ ।" यह चूलिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी ॥ इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं ॥ तहां नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अभिलापसें पूर्ववत् । तथा प्रथम दिनमें एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास,॥सातमे दिन एकभक्त, । तहां तीन सपदायोंकी प्रथम वाचना देते हैं ॥ यथा ॥

"॥ नमुथ्थुणं अरिहंताणं जगवंताणं । १ । आइ गराण तिथ्थयराण सयसंबुद्धाण । २ । पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिसवरपुम्मरीआणं पुरिसवरगंधह थ्थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुथ्थुण । यह पद जिन्न है । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद वाली है । पीछे एकश्रेणिकरके निरंतर सोलां (१६) आचाम्ल करने । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन सपदाकी वांचना देते हैं ॥ यथा ॥

॥ लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहिआण लोगप ईवाणं लोगपज्जोअगराण । ४ । अजयदाण चखुद याण मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं ।५। धम्म दयाण धम्मदेसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । ६ । यह दूसरी वाचना॥२॥

पीछे फिर जी तिसही श्रेणिकरके सोलां आचा म्ल करने । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन सप दाकी वाचना देनी- ॥ यथा ॥

॥ अप्पमिहयवरनाणदंसणधराण विअट्टछउमा णं । ७ । जिणाणं, जावयाण तिन्नाणं तारयाण, बुद्धा ण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाणं । ८ । सवन्नूण सव दरिसिण सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुण राविति,सिद्धिगइनामधेय,ठाणं संपत्ताण,नमो जिणा णं जिअजयाण । ए ।" यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

"॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ नविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि ॥" इस अंतिमगाथाकी वाचना नी, तीसरी वाचनाके साथही देनी ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम्॥३॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते हे ॥ नंदिआदिपूर्ववत् । प्रथम दिने एक नक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एक नक्त, पीछे श्रेणिकरके तीन आचाम्ल करने अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी समकालें एक वाचना देनी ॥ यथा ॥

"॥ अरिहंतचेइआण, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलानवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वढ्ढमाणीए, ठामिकाउस्सग्ग । २ । अन्नथ्थऊससिएण–यावत्–वोसिरामि ॥ ३ ॥" यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं ॥ नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथम दिने एकनक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकनक्त, चौथे दिन उपवास, पाचमे दिन एकनक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकनक्त । एसें अष्टम तप । अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना यथा ॥

"॥ लोगस्स उज्जोअगरे,

अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली । १ ।" यह
एक वाचना ॥ १ ॥

पीछे श्रेणिकरकेही वारां (१२) आचाम्ल कर
ने तिसके अंतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसन्नमजिय च वंदे, संन्नवमन्निणंदणं च सुमइ
च। पउमप्पहं सुपासं, जिण च चंदप्पहं वंदे ।२। सुवि
हिं च पुप्फदंत, सीअलसिज्जास वासु पुज्ज च ॥ विमल
मणतं च जिणं, धम्मं सतिंच वंदामि ।३। कुंथु अरं च
मल्लिं, वंदे मुणि सुवय नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठ्ठनेमिं,
पासं तह वद्ध माणं च ।४। यह दूसरी वाचना. ॥२॥

पीछे तिस श्रेणिकरकेही तेरा (१३) आचाम्ल
करने तिसके अंतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर
मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथ्थयरा मे पसीयंतु
। ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा
सिद्धा । आरुग्गवोहिलान्नं समाहिवरमुत्तमं दिंतु
। ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयास
यरा । सागरवरगन्नीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु
॥ ७ ॥" यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥ इति चतुर्विं
शतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं । नंदि, दो
पूर्ववत् । प्रथमदिने एकन्नक्त, दूसरे दिन उपवास,
तीसरे दिन एकन्नक्त, पीछे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल

करने तिसके अंतमैं दो गाथाओंकी और दोनों वृत्तों की समकालही वाचना। तिसमें पांच अध्ययन है। तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा ॥

"॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसडे अ जंबुदीवेअ। जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि।१। तम तिमिरपमलविद्धसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स।२। तीसरा अध्यायन वसततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणव नरिंदगण च्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्न करे पमायं।३। चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूवार्द्धसें। यथा

॥ लोगो जह्य पइडिअं जगमिण तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।४। ॥५॥" इति श्रुतस्तवोपधानम् ।६। ऽति पडुपधानानि।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचवा यथा

"सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाण परपरगयाण। लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सवसिद्धाण।१। जो देवाणविदेवो, ज देवा पजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअ, सिरसा वदे महावीरं।२। इक्कोवि नमुकारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। ससार सागराउ, तारेइ नर व नारिं वा ॥३॥" शेष दो गाथा ॥ यथा ॥

॥ उज्जितसेलसिहरे, दिरका नाणं च निसीहि
आ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टि, अरिठनेमि नमंसामि
। ४ । चत्तारि अठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा
चउव्वीसं । परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसं
तु ॥ ५ ॥" इत्युपधानवाचना स्थिति ॥ अथ
विस्तार, निशीथसिद्धातसें उद्धृत उपधानप्रकरणसें
जानना ॥

जावार्थ.-पांच नमस्कारमे पांच उपवासका उप
धान होता है, आठ आचाम्ल तथा अंतमें एक
अष्टमतप, और बत्तीस आचाम्ल चैत्यस्तवमे एक
उपवास, और तीन आचाम्ल करणे । चतुर्विंशति
स्तवमें एक षष्टतप, एक उपवास, और पचवीस
(२५) आचाम्ल करणे । श्रुतस्तवमे एक उपवास,
और पांच आचाम्ल । तीर्थंकर गणधरोंने चैत्यवं
दनादि सूत्रमे यह उपधान कथन करा है ॥ ५ ॥
व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित,
विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥
यह उत्सर्ग कहा अब अपवाद कहते हैं अथ
कदापि उपधानवाही बालक होवे, वा वृद्ध होवे,
वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण
उपधान प्रमाण पूर्ण करे । रात्रिजोजनकी विरति,
चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्या
ख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पच्चरकाण कर

के । एक शुद्ध आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबि लकरनेसें, एक उपवास होता है पणतालीस (४५) नवकारसहि करनेसें एक उपवास होता है चौवी स (२४) पोरसि करनेसें, और दश (१०) साढपो रसी करनेसे, एक उपवास होता है तीन निवि करनेसे, और चार एकलठाणे करनेसें, एक उपवास होता हैं आचरणासे सोलां (१६) पुरिमढ कर नेसें उपवास होता है चार एकासनेसें, और आठ बियासणे करनेसे भी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्राय पूर्वोक्त तपका फल है इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोमेसें किसी भी तपके करनेसें उपधान प्रमाण पूर्ण करे ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं हे भगवान् ! ऐसें करते हुए प्राणीको वहोत काल होवे तो, कदापि नवका रवर्जित भि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसे प्राप्त करे ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होवे ॥ १३ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार (उपधानारंभ) करे, तिसही समयमें, तू जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा है व्रतार्थ जिसने, ऐसा तिसको जाण ॥ १४ ॥ ऐसें जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी नवांतरमे सुलनबोधि होतेंहैं और उपधानके अध्यवसायवाले नी, हे गौतम ! आराधक होतें है परतु हे गौतम ! नक्ति वाला नी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण करे, तिसको नही ग्रहण करनेवालेके सदृश जाण ना तथा सो जीव, तीर्थंकरकी, तीर्थंकरके वच नोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता है सो आशातना बहुल प्राणी, हे गौतम ससा रमें भ्रमण करता है उपधानवीना नवकार जिसने पढ लिया है, तिसको नी उपधान पीछेसेनी कर नेसें बोधि, (जिनधर्मप्राप्ति) सुलन कही है यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, सपूर्ण नी वंदन विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके पढना तिस पच मंगलको स्वर, व्यजन, मात्रा, बिंदु, पदछेद, स्थानोंकरके शुद्ध पढके, चैत्यवंदन सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना तिसमे जहा सूत्रविषे, वा अर्थविषे, सदेह होवे तो, तिस को बहुश विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना ॥२१॥

अथ शुनतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग, लग्नमें, चंद्रबलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रश स्त समयमें, अपने विनवानुसार नगवान्का पूजन कर, परम नक्तिसें विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलान के, अतिसमूह ..., हर्षवशसें खडे हुवे है,

पुलक (रोम) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निवृत्तरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन जगवानकी प्रतिमामें स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हूं ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते (विचारते) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुजचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण सयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसयुक्त, विशेषसें निजवधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी ॥ ३० ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम जक्तिसें वंदना करे तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे पीछे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक जक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका जारी सन्मान करना ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अधीतरे जान्या है गजीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, सवेदिनी, और निर्वेदिनी, यह चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रबंध करके करनी ॥ ३३ ॥

पीछे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैंनें आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी क्योंकि, क्षणजगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराह्णमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही ॥ ३० ॥

ऐसें अजिग्रहवधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अजिमंत्रके गुरु साल मुष्टीप्रमाण गध (वासक्षेप) ग्रहण करे पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर "निथ्यारगपारगो हविज्ञ तुम" ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे (माले) इस विद्याके प्रजावके जोगसे निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तू, निस्तारक पारग हो,

तूं धन्य है सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे ॥ ४२ ॥

पीछे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरजिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों सें तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वचन कहे ॥ ४४ ॥

अछीतरें प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिजारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसें जो जो जव्य ! तेरी नरकगति, और तिर्यग् गति, अवश्यमेव बंद होगई हे सुंदर ! आजसें लेके, तू, अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नहीं है तथा जन्मांतरमें जी, यह पंचनमस्कार तुऊको डुर्लज नहीं है पांच नमस्कारके प्रजावसें जन्मांतरमें जी तुऊको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाए प्राप्त होवेगी और इसके प्रजावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेष्य, डुर्जग, नीच और विकलेंड्रिय नहीं होते हैं किं बहुना जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचारमें–क्रिया करे, वे, यदि तिसही जवमें उत्तम निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर ग्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान ऋद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसं युक्त, कामजोगोंसें विरक्त, सपूर्ण धर्मके अनुष्ठांनसें, शुन ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इधन को दग्ध किये हैं–जिनोंनें, ऐसें महासत्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसें रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके वहोत मान देने योग्य जो देव, सोही जये सूरि, ऐसें जो जिन तिनके वचनसें यह उपधान महानिशीथ सूत्रसें सिद्ध करो –इस अतिम गाथामे प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने जगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्स' इस विशेपणद्वारा अपना जी नाम, सूचन करा है ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणजावार्थ.॥

॥ इत्युपधानविधि ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं ॥ तहां पिठलाही नंदि क्रम जाणना । और इतना विशेप है कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनातरमे होता है तहा यह विधि है ॥ मालारोपणसें पहिले दिनमे साधुओंको अन्न पान वस्त्र पात्र वसति पुस्तक दान देवे, सघको जोजन देवे, वस्त्रादिकसें सघकी पूजा करे, शुन तिथि वार नक्षत्र लग्न में, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें वृहत्स्नात्र विधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीछे मालाग्राही कृतउचित वेष, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसें जिनोपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अक्षत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे । पीछे गुरुके समीप क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ "इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं पंचमंगलमहासुअरकध इरिआवहिआ सुअरकध, सक्कथ्थयसुअरकंध,चेइअथ्थयसुअरकध,चउवीसथ्थयसुअरकध, सुयथ्थयसुअरकध, अणुजाणावणिअ, वासरकेवं करेह" ॥ पीछे गुरु जी अभिमंत्रित वासक्षेप करे । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे "चेइआइ च वंदावेह" पीछे वर्द्धमानस्तुतियोंसें चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत् फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना पूर्ववत् । पीछे ऊठके "पंचमगलमहासुअरकध पडिक्कमणसुअरकध जावारिहं तथ्थय ठवणारिहंतथ्थय चउवीसथ्थय नाणथ्थय सिद्धथ्थय अणुजाणावणिअ करेमि काउस्सग्ग अन्नथ्थ उससिएण–यावत्–अप्पाण वोसिरामि कह के चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंशतिस्तव पढे । गुरु तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, सघ और परिजनसहित श्राद्धको जो जो देवाणुपिया, संपाविअ निययजम्मसाफल्ल ॥ तुमए अज्जप्पभिई, तिक्काल जावजीवाए ॥ १ ॥

घदे अवाइ चेइआइ, एगग्गसुथिरचित्तेण ॥
खणजगुराओ मणुअ, त्तणाउं इणमेव सारंति ॥ २ ॥
तथ्य तुमे पुवण्हे, पाणपि न चेव ताव पायवं ॥
नो जाव चेइआइ, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥३॥
मज्झण्हे पुणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए जुत्तु ॥
अवरण्हे पुणरवि, वदिऊण निअमण सुअणंति॥४॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गाथामें कही हुई देशना देके, तीन सध्यामे चैत्यवंदन साधुवंदन करनेके अभिग्रह विशेषोंको देवे पीछे वासमंत्रके सात गधकी मुष्टी " निथ्यारगपारगो होहि " ऐसें कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे । पीछे अक्षतसहित वासक्षेपको मत्रे । तिस समयमें सुर त्रिगध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसें ग्रथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे। सूरि खमा होके अभिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्राविका सबको गधाक्षत देवे. । श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे । तव गुरु ' नित्थारग पारगो होहि गुरुगुणेहि वुड्ढाहि " ऐसे कहे और जन (सघ) " पूर्णमनोरथवाला तू हुआ है, तू धन्य है, तू पुण्यवान् है " ऐसें कहते हुए उनके उपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे। पीछे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे। पीछे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीछे गुरुसंघसहित समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीछे नमस्कारादिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोगसकाकाउसग करें, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे माला धारण करनेवाला तिसके स्वजनोकेसाथ प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके "आणुजाणउ मे जयवं अरिहा ' ऐसें कहके जिनपादऊपरि पूर्व स्थापित मालाको लेके निजवधुके हाथमे स्थापन करके नदिके समिप आय कर, श्राद्ध मालाको गुरुसें मंत्रित करावे, । पीछे गुरु खडा होकर उपधानविधिका व्याख्यान करे सो श्राद्ध जी, खडा होके श्रवण करे "परमपयपुरिपत्ति" इत्यादि मालाकी गाथा महिमां दर्शकसें गुरु देशना करे ।

तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरनिगवह्र ॥
अमिलाण सिअदाम, गिण्हिअ गुरुणा सहत्थेण॥१॥
तस्सोजयखंधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥
निसदेहं गुरुणा,वत्तव एरिस वयण ॥ २ ॥
जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुन्नपझार॥
नारयतिरिअगईओ, तुझावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥
नो वधगोसि सुदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताए ॥
नो डुल्लहो तुह जम्म, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥
पंचनमुक्कारजावओ अ जम्मंतरेवि किर तुझ ॥
जाईकुलरूवग्ग, सपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्न च इमाओ चिअ,न हुंति मणुआ कया वि जीअलोए
दासा पेसा डुजगा,नीआ विगलिंदिआ चेव ॥ ६ ॥
किं वहुणा जे इमिणा, विहिणा एअ सुअ अहिजित्ता॥
सुअजणिअ विहाणेणं, सुरूं सीले अजिरमिज्ञा॥७॥
नो ते जइ तेणचिअ, जवेण निव्वाणमुत्तम पत्ता ॥
तोणुत्तर गेविज्ञाइएसु सुइरं अन्निरमेउ ॥ ७ ॥
उत्तमकुलम्मि उक्किठ,लठसववगसुदरापयरूा ॥
सवकलापतठा, जणमणआणदणा होउं ॥ ए ॥
देविंदोवमरिद्धी, दयावरा दाणविणयसंपन्ना ॥
निविणकामजोगा, धम्म सयल अणुठेउ ॥ १० ॥
सुहझाणानलनिदड्ढ, घाइकम्मिंधणा महासत्ता ॥
उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमला जत्ति सिझति ॥११॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथायोका जावार्थ उपधानप्रकरणजावार्थमें लिख दिया है ॥

पीछे तिसके स्कधमें मालाप्रक्षेप करनी ॥ पीछे श्राद्धवर्ग आरात्रिक (आरती) गीननृत्यादि वहुत करे । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचाम्लादि तप करना, यदि पौषधशालामे मालारोपण होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमे जावे, चैत्यवंदना करके फिर पोपधागारमें आयकर मरूलीपूजादि करे ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानिशीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंनेश्रुतसामायिकसमान माना है और निशीथ महानिशथके तिरस्कार

करनेवालोंने नही अंगीकार करा है तिनोंने तो प्रतिमोद्वहनविधिकोही श्रुतसामायिक कथन करा है ॥ माला जी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी (रेशमी) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्जित, आरोपते है और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं तिसमें तो, अपनी सपत्तिही प्रमाण है

॥ इति श्रुतसामायिक विधि ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता उठे, मल मूत्रकी शका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसे परमेष्ठि महा मत्रका जाप करे पीछे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन करके, अपने घरमे, वा पौपधशालादि मे स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे । पीछे प्रत्युप कालमें अपने घरमे स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, ससारिक सुख, और मोक्ष देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे । तिसवास्ते [illegible] अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हैं [illegible]

॥ अर्हत् कल्पो [illegible]

श्राद्ध [illegible]
रमे, शि [illegible]

करी, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासग धारी, मुखकोश वांधी, एकाग्रचित्त, एकातमें जिन पूजन, करे । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गधादिकोको नि पापता करे ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मत्र ॥

‘ ॥ ॐ आपोऽप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजाया निर्व्यथाः सतु, निरपाया संतु, सद्गतय सतु, न मेस्तु संघट्टनहिसापापमर्हदर्च्चने ॥ ’ इति जलाभिमंत्रणम् ॥

‘ ॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथा संतु, निरपाया सतु, सद्गतय सतु, न मेस्तु सघट्टनहिसापापमर्हदर्च्चने ॥ ” इतिपत्रपुष्पफलधूपचदनाद्यभिमंत्रणम् ॥

‘ ॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथा सतु, निरपाया सतु, सद्गतय सतु, नमेस्तु सघट्टनहिसा पापमर्हदर्चने ॥ ’ इति वन्हिदीपाद्यभिमंत्रणम्॥ सर्वका अभिमत्रण वासक्षेपसे तीनवार करना ॥ पीछे । पुष्पगधादि हाथमें लेके ॥

“ ॥ ॐ त्रसरूपोह, ससारिजीव ,सुवासन., सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो भूयासं, नि पापो भुयासं, निरुपद्रवो भुयास, मत्सं श्रिता अन्येपि ससारिजीवा निरवद्यार्हदर्च्चने निर्व्यथा भूयासु ,नि पापाभूयासु ॥ ’

ऐसे कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पा दिकरके अपना शिर अर्चन करना ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमे लेके ॥

"ॐ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकद्वि त्रिचतु पचेंद्रियास्तिर्यद्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्च तुर्दशरज्वात्मकलोकाकाशनिवासिन इह जिनार्च ने,कृतानुमोदना, संतु, नि पापा संतु,निरपाया. संतु, सुखिन संतु प्राप्तकामा संतु, मुक्ता संतु, बोध माप्नुवंतु ॥"

ऐसे पढके दशोदिशाओंमे गध, जल, अक्षतादि क्षेप करना पीछे ।

शिवमस्तु सर्वजगत ,परहितनिरता भवंतु भूतगणा॥
दोषा प्रयांतु नाश, सर्वत्र सुखीभवंतु लोका ॥ १ ॥
सर्वेपि संतु सुखिन , सर्वे संतु निरामया ॥
सर्वे भद्राणि पश्यतु, मा कश्चिद्दु खभाग् भवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्टुप् छद पढने ॥ पीछे ॥

"ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रो षितास्तु ॥" ऐसें पढके प्रथम लीपी हुई भूमिमे जलसें सेचन करे ॥ पीछे ॥

"ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नम ॥"

ऐसे पढके धोयके चदनसें लेपन करके स्वस्ति कसे अकित ऐसा पूजापट्ट (स्थालादि) स्थापन करे, और चैत्यमें तो स्थिरबिंब होनेसे इन दोनों

मंत्रोंसें ऋमिजलपट्टादि अधिवासन करने पीछे ॥

"॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हतो, रूपार्हतो, द्रव्यार्हतो, नावार्हंत समागता, सुस्थिता, सुनिष्ठिता, सुप्रतिष्ठिता संतु ॥"

ऐसें पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलविवके हुए, चरण अधिवासन करे ॥ पीछे अजलि मे पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ नमोर्हद्भ्य सिद्धेभ्यस्तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यो बुद्धेभ्यो बोधकेभ्य सर्वजंतुहितेभ्य इह कल्पन बिंबे नगवंतोर्हंतः सुप्रतिष्ठिता संतु ॥"

ऐसें मौन करके कहके नगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे । फिर नी जलाद्धि फूलोसे पूजापूर्वक कहे ॥ यथा ॥

"॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥"

पीछे फिर पुष्पान्निपेक करके ॥

"॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारें पूजास्तु ॥" इन वचनोंकरके वारवार जिनप्रतिमाके ऊपर जलाद्धि पुष्पारोपण करे ॥ पीछे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवन तर्पण हृद्य, प्राणद मलनाशन ॥
जल जिनार्चनेत्रैव, जायता सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसें प्रतिमाको अन्निपेक करे

पीछे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हलं । इदं गंध महामोदं, बृहणं प्रीणनं सदा ॥ जिनार्चने च सत्कर्म्म, संसिद्ध्यै जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके विविध गंध जिनप्रतिमाको विलेपन करे ॥ पीछे पुष्पपत्रादि हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हं क । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवल्लभ जिनार्चनेत्र संसिद्ध्यै, पुष्प भवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय त्रिविध वर्णके पुष्प चढावे ॥

ॐ अर्हं त । प्रीणनं निर्मलं वश्य, मांगल्य सर्वसिद्धिदं॥ जीवनं कार्यसंसिद्ध्यै, भूयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमें लेके जायफल स्वर्गफलं, पुण्यमोक्षफल फल ॥ द्याज्जिनार्चनेत्रैव, जिनपादाग्रसस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनपादाग्रे फल ढोवे ॥ पीछे धूप लेके ॥

ॐ अर्हं र । श्रीखंडागरुकस्तूरी, द्रुमनिर्याससंभव ॥ प्रीणनं सर्व देवाना, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढके अग्निमें धूपक्षेप करे ॥ पीछे फूल लेके।

"॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्योर्हद्भ्यो जलगंधपुष्पाक्षत फलधूपदीपै सप्रदानमस्तु ॐ पुण्याहं प्रीयंतां भग

वंतोर्हतस्त्रिलोकस्थिता नामाकृतिद्रव्यभावयुता स्वाहा ॥ ' यह पढके फिर जिनपूजन करे ॥ पीछे वासक्षेप लेके ॥

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहा इह जिनपादाग्रे समायांतु पूजा प्रतीछंतु ॥ " ऐसें पढके जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे ॥ पीछे ॥

" ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका पूजन करे ॥ पीछे अंजलिमें फूल लेके ।

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहा सुपूजिता संतु, सानुग्रहा संतुं, तुष्टिदा संतु, पुष्टिदा संतु, मांगल्यदा संतु, महोत्सवदा. संतु ॥ " ऐसें कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण करे. ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

" ॥ ॐ इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशानना गब्रह्मणो लोकपाला सविनायका सक्षेत्रपाला इह जिनपादाग्रे समागछंतु पूजा प्रतिछंतु ॥ " ऐसें कहके पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे ॥ पीछे ॥

" ॥ आचामनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके

क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें लोकपालोंका पूजन करे ॥ पीछे अंजलिमें पुष्प लेके।

"॥ ॐ इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशाननाग ब्रह्माणो लोकपाला· सविनायका· सक्षेत्रपाला सुपूजिता संतु, सानुग्रहा संतु, तुष्टिदा सतु, पुष्टिदा संतु, मांगल्यदा· सतु, महोत्सवदा सतु ॥' यह पढके लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे ॥ पीछे पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंभवा देवगतिगता सुपूजिता· सतु, सानुग्रहा संतु, तुष्टिदा संतु, पुष्टिदा सतु, मागल्यदा सतु, महोत्सवदा संतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे पुष्पांजलिक्षेप करे ॥ पीछे फिर भी पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्टनवत्युत्तरशतदेवजातय सदेव्य पूजा प्रतिच्छतु सुपूजिता संतु, सानुग्रहा· सतु तुष्टिदा· संतु, पुष्टिदा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा सतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे अंजलिक्षेप करे ॥

पीछे अंजलिके अग्रभागमे पुष्प धारण करके अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो अरहंताण, ॐ अर्हं नमो सय सबुद्धाण, ॐ अर्हं नमो पारगयाण ॥"

यह त्रिपद मंत्र श्रीमत् अर्हन् भगवंतोके आगे नित्य स्मरण करे कैसा है मंत्र ? देवलोकादि सुख और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने वाला है•। विशेष इतना है कि, यह मंत्र अपवित्र पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोने, नही स्मरण करना तथा उच्चशब्दसें नही स्मरण करना, नास्तिकोंको और मिथ्यादृष्टियोको नही सुनाना । यह पूर्वोक्त अर्हन्मंत्र एकसौआठ (१०८) वार, वा तदर्द्ध ५४ वार जपना ॥ पीछे दो पात्रोमे नैवेद्य धरे पीछे एक पात्रमे जल लेके ।

' ॐ अर्हं । नानापड्रससंपूर्णं, नैवेद्य सर्वमुत्तमं। जिनाग्रे ढौकित सर्व, सपदे मम जायता ॥ १ ॥

यह पढके जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

" ॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्या सर्वेग्रहा सर्वे दिक्पाला• सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवा सर्वे अष्टनवत्युत्त रशत देवजातयः सदेव्योऽर्हद्भक्ता अनेन नैवेद्येन संतर्पिता सतु, सानुग्रहा सतु, तुष्टिदा• सतु, पुष्टि दा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा• सतु ॥ "

ऐसें कहके दूसरे नैवद्यके पास जल ढोकन करे ॥

यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृगे कृतमज्जनैश्च ॥ देवै प्रदत्त कुसुमाजलिस्स,ददातुसर्वाणिसमीहितानि राज्याभिषेकसमये त्रिदशाधिपेन ।
छत्रध्वजाक तलयो पदयोर्जिनस्य ॥

क्षिप्तोतिभक्तिभरतः कुसुमांजलिर्यः ।
स प्रीणयत्वनुदिनं सुधिया मनांसि ॥ २ ॥
देवेंद्रै कृतकेवले जिनपतौ सानंदभक्त्यागतै ।
सदेहव्यपरोपणक्रमशुभव्याख्यानवुद्ध्याशयै ॥
आमोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।
मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां भद्राणि पुष्पांजलि ।३।
इन तीनो वृत्तोंकरके तीन वार पुष्पांजलिक्षेप करे ॥
लावण्यपुण्याङ्गभृतोर्हतोय,स्तद्वृष्टिभावं सहसैव धत्ते।
सविश्वभर्तुर्लवणावतारो,गर्भावतार सुधिया विहृत्तु।१।
लावण्यैकनिधेर्विश्व, भर्तुस्तद्वृद्धिहेतुकृत् ॥
लवणोत्तारण कुर्या, भवसागरतारणम् ॥ २ ॥
इन दो वृत्तोंकरके दो वार लवण उत्तारना. ॥
साक्षारतां सदासक्तां, निहंतुमिव सोयम. ॥
लवणाब्धिर्लवणाबु, मिषात्ते सेवते पदौ ॥१॥
यह पढके लवणमिश्र जल उत्तारना ॥
भुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारण गरीयः॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसस्पर्शिसुखावहं जनानाम् ॥ १॥
यह पढके केवल जलक्षेप करे ॥
सप्तभीतिर्विघाताहं सप्तव्यसननाशकृत् ॥
यत् सप्तनरकद्वारसप्तारिलुला गतम् ॥ १ ॥
सप्तांगराज्यफलदानकृतप्रमोद ।
सत्सप्ततत्त्वविदनतकृतप्रबोधम् ॥

तछक्रहस्तधृतसगतसप्तदीप, ।
मारात्रिक नवतु सततमसज्जुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे ॥

विश्वत्रयनवैर्जीवै, सदेवासुरमानवै ॥
चिन्मंगल श्रीजिनेंड्रात्, प्रार्थनीय दिने दिने ॥ १ ॥
यन्मंगल नगवत प्रथमार्हत श्री,
संयोजने प्रतिबनूव विवाहकाले ॥
सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमान ।
सर्वर्पिनिश्च सुमनोनिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥
दास्यगतेपु सकलेपु सुरासुरेपु ।
राज्येर्हत प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥
सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।
पादानिपेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥
यद्विश्वाधिपते समस्ततनुनृत्ससारनिस्तारणे ।
तीर्थे पुष्टिमुपेयुपि प्रतिदिनं वृध्धि गतं मगलम् ॥
तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हता ।
नूयान्मंगलमक्षय च जगते स्वस्त्यस्तु सघाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मगल प्रदीप करे । पीछे शक्रस्तव पढे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि

॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हद्भक्तिवाला श्रावक, नित्य, वा पर्वदिनमे, वा कीसी कार्यांतरमे, जिनस्नात्र करनेकी इछा करे, तिसका विधि यह है ।

प्रथम स्नात्रपीठके ऊपर, दिक्पालग्रह अन्य देवतपूजन वर्जके, पूर्वोक्त प्रकारकरके जिनप्रतिमा को पूजके, मंगलदीप वर्जित आरात्रिक करके, पूर्वोपचारयुक्त श्रावक, गुरुसमक्ष संघके मिले हुए, चार प्रकारके गीतवाद्यादि उत्सवके हुए पुष्पांजलि हाथमे लेके ।

"॥ नमो अरहंताणं नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ॥" यह पढके दो वृत्त पढे ।

कल्याणं कुलवृद्धिकारि कुशलं श्लाघार्हमत्यद्भुतं ।
सर्वाघप्रतिघातनं गुणगणालंकारविभ्राजितम् ॥
कांतिश्रीपरिरंजणं प्रतिनिधिप्रख्यं जयत्यर्हतां ।
ध्यानं दानवमानवैर्विरचितं सर्वार्थससिद्धये ॥ १ ॥

भुवनजविकपापध्वांतदीपायमानं ।
परमतपरिघातप्रत्यनीकायमानम्
धृतिकुवलयनेत्रावश्यमंत्रायमानं ।
जयति जिनपतीनां धाममत्युत्तमानाम् ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेपण करे. ॥ इतिपुष्पांजलिक्षेप ॥

कर्प्पूरसिल्हाधिककाकतुरु,कस्तुरिकाचंदनवंदनीय ॥
धूपो जिनाधीश्वरपूजनेऽत्र, सर्वाणि पापानि दहत्व जस्त्रम् ॥ १ ॥

यह पढके सर्वपुष्पांजलियोंके बीचमे धूपोत्

क्षेप करे ॥ और शक्रस्तव पढे ॥ पीछे जलपूर्ण कलश लेके, दो श्लोक पढे ॥

केवली जगवानेक, स्याद्वादी भंगनैर्विना ॥
विनापि परिवारेण, वदित प्रजुतोर्जित ॥ १ ॥
तस्येशितु प्रतिनिधि सहजश्रियाढ्य. ।
पुष्पैर्विनापि हि विना वसनप्रतानैं ॥
गधैर्विना मणिमयाजरणैर्विनापि ।
लोकोत्तरं किमपि दृष्टिसुख ददाति ॥ २ ॥

यह पढके प्रतिमाको कलशाजिषेक करे ॥ इति प्रतिमाया कलशाजिषेक ॥ पुष्प अलंकारादि उत्तारके, कलशाजिषेक करके, पीछे फिर पुष्पांजलि लेके, दो काव्य पढे ।

विश्वानदकरी जवांबुधितरी सर्वापदा कर्तरी ।
मोक्षाध्वैकविलंघनाय विमला विद्या परा खेचरी ॥
दृष्टया जावितकल्मपापनयने वज्राप्रतिज्ञा दृढा ।
रम्यार्हत्प्रतिमा तनोतु जविनां सर्वं मनोवाञ्छितम्॥१॥
परमतररमासमागमोत्थप्रस्तमरहर्पविजासिसन्निकर्पा
जयति जगति जिनेशस्य दीति. प्रतिमा कामितदायिनी जनानाम् ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे पीछे पूर्वोक्त 'कर्प्पूरसिल्हा' वृत्तकरके धूपोत्क्षेप करे, और शक्रस्तव पढे । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके, दो काव्य पढे. ॥ यथा ॥

न दु खमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।
न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां दुस्थता ॥
न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद क्षयो ।
जिनार्चनकृता भवे भवति चैव नि संशयम् ॥ १ ॥
एतत्कृत्य परममसमानंदसपन्निदानं ।
पातालौक' सुरनरहितं साधुभि' प्रार्थनीयम् ॥
सर्वास्त्रापचयकरण श्रेयकां सं निधान ।
साध्य सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वभर्तु ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे । पीछे धूप हाथमें लेके पढे ।

कर्प्पूरागरुसिल्हचदनवलामांसीशशैलेयक ।
श्रीवासद्रुमधूपरालघुसृणैरत्यतमामोदित: ॥
व्योमस्थप्रसरद्दशाककिरणज्योति प्रतिच्छादको ।
धूपोत् क्षेपकृतो जगत्रयगुरोस्सौभाग्यमुत्तसतु ॥ १ ॥
सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पच गुरून् सर्वदेवगणमधिकम् ॥
क्षेत्रे काले धूप. प्रीणयतु जिनार्चने रचित. ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे । शक्रस्तव पढे ॥ पीछे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनतसुखदे भुवनेश्वरस्य ।
सुत्रामभि कनकशैलशिर शिलायाम् ॥
स्नात्रं व्यधायि विविधांबुधिकूपवापी ।
कासारपल्वलसरित्सलिलै सुगधै: ॥ १ ॥

ता बुद्धिमाधाय हृदीहकाले, स्नात्र जिनेंद्रप्रतिमाग णस्य ॥ कुर्वंति लोका शुजजावजाजो, महाजनो येन गत स पथा. ॥ २ ॥ यह पढके पुष्पाजलि क्षेप करे ॥ २ ॥

परिमलगुणसारसद्गुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्विरे फा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य जव त्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसे लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रति माको पुष्पारोपण करे। पीछे 'कर्पूरसिल्हाधि०' इसकरके धूपोत्क्षेप करे । पीछे शक्रस्तव पढे । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमे लेके ।

साम्राज्यस्य पदोन्मुखे जगवति स्वर्गाधिपैर्गुंफितो । मंत्रित्वं बलनाथतामविकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥ विघ्नघ्नि कुसुमाजलिर्विनिहितो जक्त्या प्रजोः पाद योर्डुःखौघस्य जलांजलि सतनुतादालोकनादेव हि॥१॥ चेत. समाधातुमनिंद्रियार्थं, पुण्यं विधातु गणनातिर तीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाग्रे, पुष्पाजलि. प्रोज्ञ लजक्तिजावै ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पाजलिक्षेप करे । सर्व पुष्पांजलि योके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य करना ॥ तदनतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे । पीछे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु, माटीमय, कलशे स्नात्रकी चोकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोके पानी स्थापन करे चदन केसर कपूरादि सुगधी द्रव्य करके वासित करे. चदनादि और पुष्पमालासें, कलशोंको पूजे. जल पुष्पादिअभिमंत्रणकेमत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने। पीछे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त वेष शौचवाले गधसें हस्तको लेपन करके, मालार्पित कठवाले तिन कलशोको हाथऊपरि रक्खे पीछे स्वबुद्धिअनुसारसें जिनजन्माभिषेकचिन्हित स्तोत्रोको जिनस्तुतिगर्भित षट्पदादि (छप्पयआदि) को पढे। पीछे शार्दूलवृत्त पढे।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिन्द्रादयो निर्जरा।
नीत्वा तं करसपुटेन बहुभि सार्द्धं विशिष्टोत्सवै॥
शृगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानददेवीगणे।
स्नात्रारभमुपानयति बहुधा कुभांबुगधादिकम्॥१॥
योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्भचितान्
दधते कलशान् सख्या तेषा युगपद्रखदतिमिता॥२॥
वापीकूपह्रदाबुधितडागपल्वलनदनिझरादिभ्य॥
आनीतैर्विमलजलै स्नानाधिक पूरयति च ते॥३॥
कस्तूरीघनसारकुकुममुराश्रीखण्डकक्कोलकै।
ह्रीवेरादिसुगधवस्तुभिरलकुर्वंति तत्सवरम्॥
देवेन्द्रा वरपारिजातवकुलश्रीपुष्पजातीजपा।
मालाभि कलशाननानि दधते सप्रासहारस्रज॥४॥
ईशानाधिपतेर्निजाकक्कुहरे सस्थापित स्वामिन।

सौधर्माधिपतिर्म्मिताकृतचतु'प्रांशुद्दष्भृगोत्फते. ॥
धारावारिजैरे शशांकविमलै. सिचत्यनन्याशयः ।
शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वतिकौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणामृदंगतिमिलाड्कटाऊनूर ।
ढक्कहुडुक्कपणवस्फुटकाहलाजि. ॥
सडेएणफर्झरकडुडुजिपुपुणीजि-
र्वाद्ये स्रजति सकलाप्सरसो विनोदनू ॥ ६ ॥

शेषा सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसपुटे ॥
कलशाञ्जिजगन्नाथ, स्नपयति महामुद ॥ ७ ॥

तस्मिस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसवासिनो ।
भ्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधिय. ॥
जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना सप्राप्य तत्पूजनं ।
स्मृत्वैतत्करवाम विष्टपविज्ञो स्नात्र मुदामास्पदम्॥८॥

बालत्तणम्मि सामिश्र, सुमेरुसिहरम्मि कणयकल सेहिं ॥ तियसासुरेहिं एहविश्रो, ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ए ॥

यह पढके कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अजिपेक करे । पीछे वडे छोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष स्त्रि जी गधोदकोंसें स्नात्र करे । पीछे अजिपेकके अतमें गधोदकपूर्ण कलश लेके वसततिलकावृत्त पढे । संघे चतुर्विध इह प्रतिजासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत प्रतिजासमाने ॥ गधोदके पुनरपि प्रजवत्वजस्र, स्नात्र जगत्रयगुरोरतिपूतधारे ॥ १ ॥

यह पढके जिनपादोपरि कलशाभिषेक करके स्नात्रनिवृत्ति करे पीछे पुष्पांजलि लेके पढे ।

इंद्राग्नि यम निर्ऋते जलेश वायो
वित्तेशेश्वर भुजगा विरंचिनाथ ॥
सघट्टाधिकतमभक्तिभारभाज
स्नात्रोस्मिन् भुवनविभो श्रीय कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कल्पित दिक्पालपीठऊपरि, पुष्पांजलिक्षेप करे । पीछे प्रत्येक दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोंको स्थापन करे ।

पीछे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।
सुराधीश श्रीमन् सुदृढतरसम्यक्त्ववसते ।
शचीकांतोपातस्थितविबुधकोव्यानतपद ॥
ज्वलद्वज्राघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।
प्रभो स्नात्रे विघ्नं हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

"ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ । इदं जल गृहाण २ । गध गृहाण २ । पुष्प गृहाण २ । धूप गृहाण २ । दिप गृहण २ । नैवेद्य गृहाण २ । विघ्न हर २ । दुरितं हर २ । शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । ऋद्धिं कुरु २ । वृद्धिं कुरु २ । स्वाहा ॥" इति पुष्पगधादिभिरिंद्रपूजनम् ॥ १ ॥

वह्निरतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसगति ॥
जिनपूजनआशुशुक्षणे, कुरु विघ्नप्रतिघातमजसा॥१॥

"॥ ॐ अग्ने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इत्यग्निपूजनम् ॥ २ ॥

दीप्तांजनप्रजतनो तनुसंनिकर्षे।
वाहारिवाहनसमुकुरदक्षपाणे ॥
सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्म ॥
कीनाश नाशय विपद्धिसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

"ॐ यम इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति यमपूजनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहृतशत्रो ॥
स्नात्रोत्सवेत्र निर्ऋते, नाशय सर्वाणि दुःखनि ॥ १ ॥

"॥ ॐ निर्ऋते इह० शेप पूर्ववत् ॥" इति नैर्ऋतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलोलाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपंच ।
प्रोद्भूतौर्वाग्निशोचं वरमकरमहापृष्ठदेशोक्कसानम् ॥
चचचीरिक्षिशृगिप्रभृतिकपगणैरर्चितं वारुण नो ।
वर्ष्मेछिद्यादपाय त्रिजगदधिपते. स्नात्रसत्रे पवित्रे॥१॥

"॥ ॐ वरुण इह० शेप पूर्ववत् ॥" इति वरुणपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्तिस्फूर्तिदीप्यद्विमान ।
प्रसृमरवहुवेगत्यक्तसर्पोपमान ॥
इह जिनपतिपूजासन्निधौ मातरि॰

"॥ ॐ वायो इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति वायु पूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलसत्कमलाविलास ।
सद्गुरुहासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥
श्रीमत्कुबेरजगत्स्नपनेत्र सर्वं ।
विघ्न विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

"॥ ॐ कुवेर इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति कुबेर पूजनम् ॥ ७ ॥

गगातरगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंभित पार्श्वदेशम् ॥ नित्य जिनस्नपनहृष्टहृद. स्मरारे, विघ्न निहतु सकलस्यजगत्रयस्य ॥ १ ॥

"ॐ ईशान इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इतीशान पूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विभासमाना । कृतयमुनाजलसंश्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाभिषेककाले । बलि भवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

"ॐ नागा इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति नाग पूजनम् ॥ ९ ॥

विशदपुस्तकशस्तकराढय । प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः॥ भगवत स्नपनावसरे चिर । हरतु विघ्नभरं द्रुहिणो विभु ॥ १ ॥

"॥ ॐ ब्रह्मन् इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति ब्रह्मण' पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसे क्रमसें दिकपालपूजन करे। पीछे फिर नी हाथमें पुष्पांजलि लेकर आर्या पढे ॥

दिनकरहिमकरनूसुत, शशिसुतवृहतीशकाव्यरवित नया ॥ राहो केतो देत्रप, जिनार्चने नवत सन्नि हिता. ॥ १ ॥

यह पढके ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिक्षेप करे। पीछे पूर्वादिक्रमसें सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चड्र, बुध, वृहस्पति, इनको स्थापन करे हेठ केतु को, और ऊपर क्षेत्रपालको स्थापन करे पीछे प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे.।

विश्वप्रकाशकृतनव्यशुनावकाश ।
ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्विकाश ॥
आदित्य नित्यमिह तीर्थकरानिषेके ।
कल्याणपल्लवनमाकलय प्रयत्नात् ॥ १ ॥

' ॥ ॐ सूर्य इह० शेष पूर्ववत् ॥ " इति सूर्य पूजनम् ॥ १ ॥

स्फटिकधवलशुक्लध्यानविध्वस्तपाप ।
प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद ॥
त्रिभुवनजनशश्वज्जंतुजीवानुविद्य ।
प्रथय नगवतोर्चा शुक्र हे वीतविघ्नाम् ॥ १ ॥

" ॥ ॐ शुक्र इह० शेष पूर्ववत् ॥ " इति शुक्र पूजनम् ॥ २ ॥

प्रबलबलमिलितबहुकुशल, लालनाललितकलित

विघ्नहृते । सोमजिनस्नपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं सर्वम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ मंगल इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति मंगलपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्ताह सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥
सिंहिकासुत पूजाया, मन्त्र संनिहितो नव ॥ १ ॥

"ॐ राहो इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति राहुपूजनम् ॥ ४ ॥

फलिनीदल लीलयात., स्थगितसमस्तवरिष्ठविघ्नजात । रवितनय प्रबोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसावधानान् ॥ १ ॥

"ॐ शने इह० शेष पूर्ववत् ॥ इति शनिपूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविष शशलाछन ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापजरस्य जिनार्चने ॥ १ ॥

"॥ ॐ चंद्र इह० शेष पूर्ववत ॥" चंद्रपूजनम् ॥ ६ ॥

बुधविबुधगणार्चितांघ्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनीतदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मतिमवधातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ बुध इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति बुधपूजनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश जास्वन् ॥ जिनपतिचरणाभिषेककाले, कुरु वृहती वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ गुरो इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति गुरु पूजनम् ॥ ७ ॥

निजनिजोदययोगजगत्त्रयी, कुशलविस्तरकारण तां गत ॥ जवतुकेतुरनश्वरसंपदा, सततहेतुरवारि तविक्रम ॥ १ ॥

"॥ ॐ केतो इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति केतु पूजनम् ॥ ए ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मस दा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, जविकजनं विघ्नहरणेन॥१॥

"॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीछे गध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसें पूर्व कहे मंत्रोंसेंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे पीछे हाथमें वस्त्र लेके वसततिलकावृत्तपाठ पढे ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकजूरिराज्य
नि सगतामुपगतो जगतामधीश ॥
जिक्षुर्जवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-
मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे इति वस्त्रपूजा ॥

पीछे नानाविध खाद्य, पेय, जक्ष्य, लेह्यसंयुक्त

नैवेद्य दो स्थानमें करके तिनमेंसें एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढे ।

सर्वप्रधानसद्भूत, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥
अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु न सदा ॥ १ ॥

यह पढके जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे पीछे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिक्पाला दिकोको श्लोक पढके नैवेद्य देवे ।

जोजो सर्वे ग्रहालोक, पाला सम्यग्दृश सुरा ॥
नैवेद्यमेतद्गृह्णन्तु, जवतो जयहारिण ॥ १ ॥

स्नात्र करायाविना जी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना ॥ पीछे आरात्रिक मगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव जी पढना ॥ जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुछ तहांही करना ॥

श्रीखडकर्पूरकुरगनाजि, प्रियगुमासीनखकाकतुडे ॥ जगत्त्रयस्याधिपते सपर्या, विधौ विदध्यात्कुशलानि धूप ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपुष्पाजलियोके विचाले धूपोत्क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढना ॥

प्रतिमा विसर्जन यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो जगवतेर्हते समये पुन पूजां प्रतीच्छ स्वाहा ॥" इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जन ॥

"॥ ॐ क्ष इन्द्रादयोलोकपाला सूर्यादयो ग्रहा

सक्षेत्रपाला सर्वदेवा सर्वदेव्य पुनरागमनाय स्वाहा ॥ ' इति पूर्व्वादिनिर्दिक्पाल ग्रहविसर्ज्जनम् ॥
आज्ञाहीन क्रियाहीन, मत्रहीन च यत्कृतम् ॥
त्सर्व कृपया देवा, क्षमंतु परमेश्वरा ॥ १ ॥
आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्ज्जनम् ॥
पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणमम ॥ २ ॥
कीर्त्ति श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव देव ॥ मत्प्रार्थनीय जगवत्प्रदेय स्वदासता मां नय सर्वदापि ॥ ३ ॥
इति सर्वकरणीयाते जिनप्रतिमादेवादिविसर्ज्जनविधि
अर्हत् अर्चनविधिमे जी ऐसेंही विसर्ज्जन जानना ॥ इति लघुस्नात्रविधि ॥

पीछे (गृहचैत्यपूजानतर) वडे देवमंदिरमे जाकर, शक्रस्तवादिस्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना करके, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चितवन करे । पीछे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशाला (उपाश्रय) मे जाकर, देवकीतरे वडे आनंदसें साधुओंको वंदन करे सुंदरबुद्धिवाला होकर, पूजा सत्कार करे । पीछे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुखसे धर्मदेशना श्रवण करे पीछे मनमे धारा हुआ प्रत्याख्यान करे पीछे गुरुको नमस्कार करके कर्मादानको अच्छीतरें त्यागके, धन उपार्जन करे यथा योग्य स्थानमे ... कुत्सित बुरा

प्राणोंके नाश हुए न्नी न करे । पीठे अपने घरदेह रामें अर्हत्की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समाचरे नक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथीयोंकी पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्गणगणको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित नोज्य वस्तुका नोजन करे ॥ साधुको आमंत्रण ऐसें करे ॥ क्षमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहे ।

"॥ हे नगवन् फासुएण एसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण वथ्थकवलपायपुछणपडिग्गहेणं ओसहनेसज्जेण पाडिहेररूवेण सिज्जासंथारएण नयवं मम गेहे अणुग्गहो कायवो ॥"

नोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे, पढे, सुने । पीठे धन उपर्जन करके घरको जाकर संध्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घमी पहिले, निजवांछित नोजन करे सायकालमें धर्मागारमे सामायिककरके षमावश्यक प्रतिक्रमण करे पीठे अपने घरमे आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जव एक पहर रात्रि जावे तव अर्हत्स्तवादिक पढके प्राय ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसे निद्रा लेवे जव निद्राका अंत आवे तव परमेष्ठिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन, चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे और व्रतादिकोंके मनोरथ अपनी इच्छासें करे, ऐसें अहोरात्रिकी [illegible] होके [illegible] हुआ, और

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, गृहस्थ जी कल्याण जागी होता है. । इति व्रतारोपसंस्कारे गृहिणा दिनरात्रिचर्या ॥

वासनागुरुसामग्री, विजवो देहपाटवम् ॥
संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥
वरकुसुमगधअक्कय, फलजलनेवज्जधूवदीवेहि ॥
अठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अठाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

॥ अथ अंत्य संस्कार विधि. ॥

श्रावक यथावत् व्रतोंकरके निज जवको पालके कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस का विधि यह है । जिन अरिहंतोंके कल्याणक स्थानोंमे, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंमिल–जगामे, वा अरण्यमे, वा अपने घरमे, विधिसें अनशन करना । तहां शुजस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना करावनी । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवेगा ऐसें ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचङबलादि न देखना । तहां सघका मीलना करना । गुरु, ग्लान को जैसें सम्यक्त्वारोपणमे तैसेंही नंदि करे । नवरं इतना विशेष है सर्व नदि देववंदन कायोत्सर्गादि पूर्वोक्त विधि ' सलेहणा आराहणा ' इन नाम करके करावणा और वैयावृत्त्य कर कायोत्सर्गानंतर।

" ॥ ।ाधन [illegible] आराधनार्थं करेमि

स्सग्ग अन्नथ्थऊससिएणं० जाव—अप्पाण वोसिरामि ॥" कहके कायोत्सर्ग करना कायोत्सर्गमे चार लोगस्स चितवन करना, पारके आराधना स्तुति कहनी ॥ सा यथा ॥

यस्या सान्निध्यतो भव्या, वांछितार्थप्रसाधका श्रीमदाराधना देवी, विघ्नव्रातापहास्तु व ॥ १ ॥ शेप पूर्ववत् ॥

पीछे तिसही पूर्वोक्तविधिसें सम्यक्त्वदंमकका उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा । वासक्षेपकायोत्सर्गादि भी, 'सलेखना आराधना' के आलापककरके तैसेंही जाणना । प्रदक्षिणा करनी, ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे भी, और नही भी होवे । दंमकादिमें 'जावनियमपज्जुवासामि' के स्थानमे 'जावज्जीवाए' ऐसें कहना । पीछे सर्व जीवो केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी। पीछे श्रावक परमेष्ठिमत्रोच्चारपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहे खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभूएसु वेर मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहे

"॥ खामेह जो खमइ तस्स अथ्थी आराहणा जो न खमइ तस्स नथ्थि आराहणा ॥" पीछे श्रावक क्षमाश्रमणपूर्वक कहे। "जयव अणुजाणह ।" गुरु कहे "। अणुजाणामि ।" श्रावक परमेष्ठिमत्र पाठपूर्वक कहे ।

"॥ जे मए अणंतेणं नवप्रमणेणं पुढविकाइआ आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइकाइआ एगिंदिआ सुहमा वा, बायरा वा, पजात्ता वा, अपजात्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेण वायाए काएण, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेरे जीवने अनत नव नमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एकेंड्रिय जीव, सुक्ष्महो वादरहो पर्याप्तेहो अपर्याप्तेहो क्रोधसें, मानसें, मायासें, लोनसें, पचेंड्रियपणे, राग सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीक्ति किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिछामि डुक्कड हो ॥" फिर परमेष्टिमत्र पढके।

"॥ जे मए अणतेण नवप्रमणेण वेइंदिआ वा सुहमा वा वायरा वा० शेष पूर्ववत् ॥' जो मेरे जीवने अनत नव नमते थके वेरिंड्रिय जीव, सुक्ष्म मवादर क्रोधादिकसें घातित पीक्ति कीए होय तिनका त्रिकोटी मि०" फिर परमेष्ठिमत्र पढके।

"॥ जे मए अणतेण नवप्रमणेण तेइंदिया सुहमा वा, वायरा वा,० शेष पूर्ववत् ॥" जो मेनें अनंत नव नमते थके तेरिंड्रि जीव सुक्ष्म वा वादर क्रोधादिकसे घातित वा पीक्ति किए होय सो त्रिकोटी मि० ॥ फिर परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे

जे मए अणंत नवन्नमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहमा वा बायरावा, शेष पूर्ववत् । जो मेंनें अनत नव नमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीडित किए होय तिनका त्रिकोटी मिछा मि डुक्कड हो "॥ जे मए अणतेणनवन्नमणेणं पचिंदिआ देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर क्खजोणिआ वा, जलयरा वा, थवलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, बायरा वा०शेष पूर्ववत् ॥ जो मेंने अनंत नव नमते थके पचेंद्रिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलच र थलचर, खेचर, संज्ञी,असंज्ञी, सुक्ष्म बादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीडित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो ॥ फिर परमेष्ठिमत्र पाठपूर्वक श्रावक कहे ।

"॥ ज मए अणतेणं नवन्नमणेण अलिअं नणि अ कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पचिंदिअटेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेण वायाए काएण तस्स मिछामि डुक्कड ॥ जो मेंने अन त नव नमते थके असत्य नाषण कियाहो, क्रोधा दिक करकें सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके कहे ।

"॥ ज मए अणतेण नवन्नमणेण अदिन्नं गहि अ कोहेण वा, माणेण वा० शेष पूर्ववत् ॥ जो मेंनें

अनंत नव नमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधा दि करके सो त्रिकोटीसे मिथ्याडुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मए अणंतेण नवप्नमणेण दिव्व माणुस्सं तिरिछं मेहुण सेविअ कोहेण वा माणेण वा० शेष पूर्ववत् ॥ जो मेने अनत नव नमते थके देव संबधी, मनुष्य सवधी, तिर्यंच सवधी, क्रोधादि कसें मैथुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मए अणतेण नवप्नमणेण अठारस्स पावठाणाइ कयाइं 'कोहेण वा, माणेण वा,० शेष पूर्ववत् जो मेने अनत नव नमते थके अठारह पापस्थानक सेवन किए हो सो त्रिकोटी मिथ्याडु ष्कृत हो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करास न्हावालुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीर पाणि वहे पाणिसघट्टणे पाणिपीरूणे पाववद्दणे मिछत्तपो सणे ठाणे सलग्ग त निंदामि गरिहामि वोसिरामि॥" जो मेराजीव पृथवी कायगत होके शिला पत्थर काक रे रेती वालुका मट्टी सुवर्णादि सप्त धातु रूप शरी र वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीरून, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोपक स्थानमे लगा होय

तिनको निंदताहु गर्हा करताहुं और तिन पापोको त्याग करताहु"

"॥ ज मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाईमहाधाउरूवं सरीर अरिहतचेइएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जतुरक्खणठाणेसु धम्मो वगर णेसु सलग्ग त अणुमोआमि कल्लाणेण अभिनंदेमि॥ जो मे पृथ्वीकायगत शिल्ला पत्थर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहत चैत्यमे अरिहत बिंबमे, धर्म स्थानमे, जीव रक्षण स्थानमे, धर्मोपकरणमे, लगा होउ तो तिनको अनुमोद ताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ ज मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआ ओस्साहिमहरतणुरूव सरीर पाणिवहे पाणिसघ ट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे संल ग्ग त निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ "

जो में अपकायगत पानी करा हिम ठार औस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघात, प्राणि पीडक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होउ तो तिनपापको निंदा गर्हा करके त्यागताहु'

"॥ ज मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओ स्साहिमहरतणुरूवं सरीर अरिहतचेइएसु अरिह

तविंवेसु धम्मठाणेसु जतुरक्कणठाणेसु धम्मोवगर णेसु जिणन्हाणेसु तन्हदाहावहरणेसु संलग्ग तं अणु मोआमि कल्लाणेण अजिनदेमि ॥ जो में उपरोक्त अप्काय होके अर्हत् चैत्यमे, अर्हत् बिंबमे, धर्म स्थानमें, जीव रक्षाकाममे, धर्मोप करण कार्यमें, स्नात्रादिपे कर्म, तृषादाह शमनमे, लगा होउ तो तिनकों अनुमोदताहु ॥ ' फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ ज मे तेउकायगयस्स अगणिइगालमम्मुर जालाअलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीडणे पाववद्दणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे संसग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥" "जो में अग्नी कायगत अग्नि इगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्र सहित विद्युत उल्का रूप शरीर होके प्राणिवधमे, प्राणि सघातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषकके स्थानमें, लगा होउ तिनकों, निंदा गर्हासें त्यागताहु"

"॥ ज मे तेउकायगयस्स अगणिइगालमम्मुर जाला अलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीर सीआवहारे जिणपूआधूवकरणे नेवेज्जपाए दुहाहरणाहारपाए संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अजिनदेमि ॥" "जो में अग्नीकाय गत अग्नि इगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्रसहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके, ठंढी दूर करनेमे, जिनराजके आगे धूप करनेमे, पूजाके उप

योगमे, नैवेद्य काममे, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमे, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

“॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउऊसासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसघट्टणे पावबढुणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्ग त निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो मे वायु कायगत शुद्धवायु ऊश्वायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि सघातनमे, पापवर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउ तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहु ॥ ”

“॥ ज मे वाउकायगयस्स वाउऊसासरूवं सरीर पाणिरक्कणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो मे वायुकायगत, शुद्धवायु ऊश्वायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममे, गर्मीकी शांतिके कारणमे, लगाहोउ तिन को अनु मोदताहु, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हु ” फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

“॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंठल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूव सरीर पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीडणे पाववहुणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ट पत्र पुष्प फल वीज रस थरू रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनको निंदा गर्हा करके त्याग करता हु"

"॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकट्ठडलिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीर ठुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेण अज्जिनदेमि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट ठाल पत्र पुष्प फल वीज रस थरू रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु" फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअट्ठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूव सरीर पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिठ्ठत्तपोसणे ठाणे सलग्ग तनिदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संधातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

योगमे, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमे, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनदित होताहुं ' फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

" ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउफ़ासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसघट्टणे पावबट्टणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि " जो में वायु कायगत शुद्धवायु फ़ंफावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि सघातनमे, पापवर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनको निंदा गर्हा करके त्यागताहु ॥ "

" ॥ ज मे वाउकायगयस्स वाउफ़ासासरूवं सरीर पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेण अभि नदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु फ़ंफावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमें, प्राणि जीवनके कारणमे, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शातिके कारणमें, लगाहोउ तिन को अनु मोदताहु, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं " फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

" ॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंदबल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्झासरूवं सरीर पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीडणे पावबट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ट पत्र पुष्प फल बीज रस थम रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोंमे, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं"

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकट्ठवल्लिपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं जुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनदेमि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट ठाल पत्र पुष्प फल बीज रस थम रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमे, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"ज मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीर पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे संलग्ग तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

पोषणमे लगा होउं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं"

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठि मज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीर अरिहंतचेइएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जंतुरक्कणठाणेसु धम्मोवगरणेसु संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस हाड चरवी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् बिंवमे, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षामे, धर्मो पकरणमें लगा होउं तिनको अनु मोदके आनंदित होता हु ॥" फिरपरमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ ज मए इह भवे, मणेण वायाए काएणं डुठ चिंतिअ, डुठ भासिअ, डुठं कय, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेनें इह भवमें अनंत भव भ्रमणमें मन वचन काया करके डुष्ट विचार कियाहो डुर्वचन बोलेहो, डुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकों निंदा पूर्वक त्याग करताहु"

"॥ ज मए इह भवे, मणेण वायाए काएणं सुठु चिंतिअ, सुठु भासिअ, सुठु कय, तं अणुमोएमि कल्लाणेण अभिनंदेमि ॥ जो मेने इह भवमें, अनत भव भ्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ट विचार कियाहो, श्रेष्ट भाषा बोली हो, श्रेष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहु, कल्याण कारक जानके आनदित होताहुं ॥"

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको भी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको भी अंतकालमे सम्यत्व व्रतारोप करना योग्य है । जिसको पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत समयमे एकशोचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करानी । वे अतिचार आवश्यकादि सूत्रोंसें जान लेने ' पीछेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना । पीछे गुरु सर्व सघसहित वासअक्षतादि ग्लानके शिरमें निक्षेप करे ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीछे ग्लान (रोगी—बीमार) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे ॥

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सवस्स समणसघस्स, भगवओ अजलि करियसीसे॥
सव खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥ २ ॥
सवस्स जीवरासिस्स,भावओ धम्म निहियनियचित्तो॥
सव खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयपि ॥ ३ ॥

" ॥ जयवं ज मए चउगइगएण देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएण पचिंदिअवसट्टेण इहम्मि भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ सताविआ अभिताइया तस्स

मिच्छामि दुक्कडं जेहिं अहं अभिदूमिओ संताविओ अभिहओ तमहंपि खमामि ॥ "

पीछे गुरु दंडकसहित इन तीनो गाथाका विस्तारसे व्याख्यान करे। पीछे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकायोंको प्रत्येकक्षामणा करे । यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना ॥ इत्यतसंस्कारे क्षामणाविधि ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादिकोसें जिनचैत्योंमे महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमे धन लगावे.। पीछे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पढे ।

जे मे जाणतु जिणा, अवराहा जेसु २ ठाणेसु ॥
तेह आलोएमि, उवठिओ सवकालपि ॥ १ ॥
छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि सत्तरइ जीवो ॥
जं च न सुमरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥२॥
ज ज मणेण वद्धं, ज ज वायाइ भासिअं किंचि ॥
ज जं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ३ ॥
खामेमि सवजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सवभूएसु वेरं मझ न केणइ ॥ ४ ॥

पीछे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहे ।

" ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो, मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगु

त्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगु त्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पव ज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहू सरणं पव ज्जामि, केवलिपन्नत्त धम्मं, सरण, पवज्जामि ॥'

यह पाठ तीन वार पढे। पीछे गुरुके वचनसें अष्टादश (१८) पापस्थानकोको वोसरावे यथा

"॥ सव्व पाणाइवाय पच्चक्कामि। सव्व मुसावाय पच्चक्कामि। सव्व अदिन्नादाण प०। सव्व मेहुण प०। सव्व परिग्गहं प०। सव्व राईभोअणं प०। सव्व कोहं प०। सव्व माणं प०। सव्व माय प०। सव्व लोह प०। पिज्जं प०। सव्व दोस कलहं अप्भक्काण अरईरईपेसुन्न परपरिवाय मिच्छादसंणसल्ल इच्चेइआइं अठारस पावठाणाइ दुविहं तिविहेण वोसिरामि अपच्छिमम्मि ऊसासे तिविहं तिविहेण वोसिरामि॥"

पीछे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पाचमे प्रकाशके कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्लानके आयुका क्षय जानके* (भक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोइ तथ्यज्ञानी कहे, अथवा कोइ सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदिन तेरा अवश्य मरण है, तवतो अपना संहननधृतिवल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परन्तु, जो कोइ मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पचेंद्रियघाती है,) (कालज्ञानके विषयमे कितने
क शास्त्रोमे एसे लक्षण लिखेहैं कि निरंतर पंदरे
दिन सूर्यनाडी प्रात काल वहे तो पनरे दिनका आयु
एक मास तक प्रात.काल सूर्यनाडी वहे तोपट् मासायु.
पांचदिन अखंड सूर्य नाडी वहे तो ८ मासायु वायु
की नाडि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नाडी कफके
स्थानमे,कफ कंठमे आवे तो रोगी बचेगा नही मस्तक
गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो
मरण उश्वास गरम व नीश्वास ठंडा वहे तो मर
ण अंग कप, गतिभंग, शरीरका वर्णका वदलना,
स्वाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना,
हाथ पावकी घुटी,कपोल,गलेके पासकी नाडी चलनी
रुक जाय वा मद पडजाय तो मरण कहना जो अपनी
जिव्हाग्र, नासाग्र, भ्रुकुटी, न देखेतो मरण अपनी
तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण भ्रुकुटी न
दीखे तो सातदिन, कर्णश्वर न सूने तो पाच दिन
कों मरण होना समजना जिव्हा काली पडे वा,
मुख लाल हो जाय तो मरण पिसावकी धारामे
विंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन
मरण नाडीयोंका मंद पडना, इन्द्रियोंके विषयका
न समजना,गतीका भंग होना,कंठमें कफका रुकना,
नाशिकाके पवनका ठंडा वहना, नाशिका टेडी
होना, जमणी भूजा मे उर्द्ध श्वासका वहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमे अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे भरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्टा, आर्द्रा, शत भिषा, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमे मांदा पडेतो रोगी न बचे जिस्का बलगम चिकना होके गलेसें छुटे नहीं तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम हे जिस्को छीक आनेके साथ झाडा पेसाब हो जावे तो, जिस्की जबानपर कांटे आ जावे, वा काली पडजावे व अवाज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहे जिस्की नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रो सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक हे जिस्के हाथ फेरके वीसोनख काले पडजाय, हाथ पेरमें ठडाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया जिस्का उच्चार शुद्ध न हो, नेत्रोमे रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुश बो लेना, बंध हो जाय, अनामीका उंची नजपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक हे यद्यपि यह लक्षणोंसे प्राय मरणका निश्चय होजोता हि हे तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आज्ञानहीहे इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहे) सघ की, ग्लानके संबधियोकी, तथा नगरके राजादिकी अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमेष्ठिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे । यथा

" ॥ चवचरिमं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइम अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥" इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना॥ यथा ॥

" ॥ चवचरिमं निरागार पच्चक्खामि, सव्व असणं, सव्व पाणं, सव्व खाइमं, सव्व साइमं, अन्नात्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, अईय निंदामि, पडिपुन्न संवरेमि, अणागय पच्चक्खामि, अरिहंतसक्खिय, सिद्धसक्खिय, साहुसक्खिय देवसक्खियं, अप्पसक्खिय, वोसिरामि ॥" जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥ आहारमुवहिदेह, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु "नित्थारगपारगो होहि" ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे । शांतिके वास्ते 'अठावयमि उसहो' इत्यादि स्तुति पढे और, 'चवण जम्मणभूमी' इत्यादि स्तव पढे । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनभुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारा भावनाका व्याख्यान करे, अनादिभवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे । ग्लान जीवितमरण की इछाको त्यागके समाधिसहित रहे । पीछे अतर्मुहूर्त्तके आयां, ग्लान "सव आहारं, सवं देहं, सवं उवहिं, वोसिरामि" ऐसें कहें । पीछे ग्लान पचपरमेष्ठिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधि ॥

॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमे ग्लानको कुशकी शय्याऊपर स्थापन करना । " । जन्ममरणे भूमावेव इति व्यवहारः । "

अथ सर्वश्रावके भोक्ता कर्मके जोमनेवाले चेतनारूप जीवके गये हुए, अजीव पुजलरूप तिसके शरीरको सनाथता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते हें । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूछ मुमन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको जी कहते हैं । तथा शवका सस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नही करना । पीछे गंध तैलादिसें और जले गंधोदकसें शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसें विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राजरणासे विभूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुमन नही । पीछे नवीन काष्टकी पगविनाकी कुश सथरी जले वस्त्रसें ढांकी

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शबको स्थापन करना। यहांगृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्रपूतलेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकीतरें जानना नवरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे * वर्णानुसार तिसके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्रका करा प्रासाद (मांमवी) स्थापन करना। पीछे स्वज्ञातीय चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शवको, स्मशानमे ले जावे । तहां उत्तरनागमें शवका शिर रखके चितामे स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्कार करे । अन्न नही खानेवाले वालकोंको भूमिसंस्कार करना । तहां प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना। पीछे सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घरको आवे तीसरे दिनमें चितानस्मका, पुत्रादि नदीमे प्रवाह करावे । तिसके हाम तीर्थामें स्थापन करे । तिसके अगले दिनमे स्नान करके शोक दूर करे । जिनचैत्योंमे जाके, परिजनसहित जिनबिंबको विना स्पर्शे, चैत्यवंदन करे । पीछे उपाश्रयमे जाके गुरुको नमस्कार करे गुरु नी ससारकी अनित्यता

* रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, ... नी, उत्तरा नाद्रपद, ए छ नक्षत्रमेंसे कोइनी एक नक्षत्र मरण समय होय तो दर्नके दो पुतले बनाके नीनामीके साथ रखणा जेष्टा, आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा, नरणी ... अमेंसें कोइनी होय तो पुतले न करना ... मेंसें कोइ नक्षत्र होय तो एक पुतला